TATA STEEL FOUNDATION

TATA

Tolong Siki Kũṛux Katthpu:n

तोलोङ सिकि कुँड़ुख़ कत्थपून

(तोलोङ सिकि कुँड़ुख़ साहित्यमाला)

Prepared by :

Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya
Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

In Association with:

TRIBAL CULTURAL SOCIETY, JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of TATA STEEL FOUNDATION

Tolong Siki Kũṛux Katthpu:n

तोलोङ सिकि कुँडुख़ कत्थपून

(तोलोङ सिकि कुँडुख़ साहित्यमाला)

Research & Foundation :
Dr. Narayan Oraon "Sainda"

प्रकाशक :
अद्दी कुँडुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा),
करमटोली चौक, राँची, झारखण्ड, पिन – 834008
In Association with
TRIBAL CULTURAL SOCIETY, JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of TATA STEEL FOUNDATION

Tolong Siki Kurux Katthpu:n

तोलोङ सिकि कुँड़ुख़ कत्थपून

(तोलोङ सिकि कुँड़ुख़ साहित्यमाला)

प्रथम संस्करण : मार्च 2023

प्रतियाँ : 2000 (दो हजार)

Research & Foundation : Dr. Narayan Oraon "Sainda"

Publiction © : Addi Akhra, Ranchi, Jharkhand

Editorial Board :-

1. Dr. Narayan Oraon
2. Dr. Bindu Pahan
3. Dr. Narayan Bhagat
4 Dr. Ramkishor Bhagat
5. Dr. (Smt.) Jyoti Toppo
6. Dr. (Smt.) Shanti Xalxo
7. Fr. Augustin Kerketta
8. Shri Saran Oraon
9. Shri Jita Oraon
10. Shri Bipta Oraon
11. Shi Mahadeo Toppo
12. Shri Kislay Jee

प्रकाशक :

अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा),

करमटोली चौक, राँची, झारखण्ड, पिन – 834008

In Association with

TRIBAL CULTURAL SOCIETY, JAMSHEDPUR

An Ethnicity Wing of TATA STEEL FOUNDATION

विषय सूची

क्रम संख्या – विषय – पृष्ठ

1. प्राक्कथन – 04
2. पुन्दचका कत्था (प्रस्तावना) – 05
3. कुँड़ुख़ भाषा, द्रविड़ भाषा परिवार की एक प्राचीन भाषा है! – 06
4. छात्र आन्दोलन के दौरान छात्रों एवं नेताओं के बीच परिचर्चा की बातें साकार हुईं – 07
5. लिपि, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक विचारों और एकजुटता को सुदृढ़ भी करता है ..... – 08
6. मातृभाषा : माँ के जुबान की भाषा – 09
7. कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि (लिपि) का आधार8. कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि तोड़पाब (वर्णमाला) – 11
9. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि (लिपि) का मूल आधार है आदिवासी जीवन–दर्शन – 12
10. कुँड़ुख़ कत्था अरा तोलोङ सिकि : एक परिचय – 13
11. नई लिपि की परिकल्पना एवं लिपि विकास की महत्वपूर्ण घटनाक्रम – 21
12. लगभग 6 महीने के जद्दोजहद के बाद 1989 के अंत–अंत तक एक वर्णमाला तैयार – 22
13. ई लिपि हुँ स्कूल नु पढ़ाई मनो होले ओरमर सिखिरओर .... एन्ने मनी, होले दव ले नना – 23
14. समाचार था – डॉ. मुण्डा संयुक्त राष्ट्र पहुँचे – 24
15. लिपि विकास में झारखण्ड अलग प्रांत आंदोलनकारियों का समर्थन – 25
16. नई लिपि का नाम तोलोङ सिकि रखे जाने का समर्थन आदिवासी शिक्षाविदों द्वारा – 26
17. तोलोङ सिकि, पहली बार 24 सितम्बर 1993 को समाज के सामने प्रदर्शित – 26
18. तोलोङ सिकि के बारे में पहली बार समाचार पत्र में 07 अक्टुबर 1993 को छपा – 26
19. जनवरी 1994 में, उषा इंडस्ट्रीज, भागलपुर से तोलोंग सिकि का प्रथम पुस्तक प्रकाशित – 27
20. लिपि का तकनीकी मानकीकरण हेतु 22 सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम का निर्माण एवं प्रदर्शन – 28
21. TRACE संस्था का TRACE बुलेटिन में तोलोंङ सिकि का प्रचार–प्रसार 1994 में – 28
22. भाषाविद डॉ० फ्रांसिस एक्का से 1996 में पटना (बिहार) में साक्षात्कार एवं सुझाव प्राप्त – 31
23. पहली पुस्तक कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि अरा बक्क गढ़न पर सामाजिक विरोध एवं सुझाव – 32
24. राजी पड़हा, भारत का वार्षिक सम्मेलन 1997 में असहमति एवं आवश्यक सुझाव – 32
25. वर्ष 1997 में ग्राफिक्स ऑफ तोलोङ सिकि नामक पुस्तक का प्रकाशन – 33
26. वर्ष 1994 एवं 97 में छपी प्रस्तावित लिपि पुस्तक के आधार पर शिक्षाविदों का सुझाव एवं निर्णय – 33
27. डॉ० रामदयाल मुण्डा द्वारा समारोह में लिपि प्रस्तुति पर असहमति एवं दिशा निर्देश – 34
28. 22 जून 1997 एवं 21 जुलाई 1997 को तोलोङ सिकि वर्णमाला का संशोधन विषयक विमर्श – 37
29. डॉ० फ्रांसिस एक्का, के०भा०भा०सं०,मैसूर को लिखे गये पत्र के जबाब में 27.11.1997 को पत्र – 41
30. नई लिपि, सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली एवं तकनीकी संगत हो, की घोषणा – 42
31. बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, रांची में कुँड़ुख भाषा विषयक कार्यशाला – 43
32. तोलोङ सिकि लिपि 15 मई 1999 ई0 को जनमानस के व्यवहार के लिए लोकार्पित – 44
33. तोलोङ सिकि (लिपि) का कम्प्यूटर वर्जन 'केलि तोलोङ फॉन्ट' का विकास हेतु बैठक – 45
34. नवम्बर 20, 2002 को तोलोंग सिकि का कम्प्यूटर फॉण्ट Kellytolong लोकार्पित – 45
35. तोलोङ सिकि (लिपि) के संबंध में भाषाविदों, शिक्षाविदों एवं आंदोलनकारियों के विचार – 46
36. कुँड़ुख़ लिपि तोलोंग सिकि गही ख़ी:री – 50
37. झारखण्ड अलगप्रांत आंदोलनकारियों की नजर में : आन्दोलन की उपलब्धि है तोलोंग सिकि – 51

38. कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) के संबंध में सरकारी एवं विभागीय अधिसूचना — 52
39. कुँडुख़ भाषा की ध्वनियाँ एवं उदाहरण — 66
40. Tribal Standard Code for Information Interchange (TSCII) & it's uses — 74
41. कुँडुख़ व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली विषय पर कार्यशाला एवं उद्घोषणा — 77
42. पारम्परिक उराँव (कुँडुख) समाज की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत — 83
43. देवनागरी में कुँडुख़ भाषा की लेखन समस्या और समाधान तथा गणित के अंक — 87
44. कुँडुख़ गिनती का मानकीकरण : परिचर्चा एवं वर्तमान स्वरूप — 90
45. कुँडुख़ में संख्या का विकास के संबंध में विशप डॉ० निर्मल मिंज का सुझाव — 93
46. अड्डा मुल्ली (स्थानीय मान) — 94
47. कुँडुख़ पहाड़ा — 95
48. धुमकुड़िया गिनती डण्डी — 96
49. धुमकुड़िया पड़हरा डण्डी — 97
50. संस्कृत, हिन्दी एवं कुँडुख़ भाषा की ध्वनियाँ — 98
51. कुडुख़ लिपि दर्शन — 100
52.. संस्कृत–हिन्दी शब्दों को तोलोंग सिकि में लिप्यन्तरण हेतु मानकीकरण — 102
53. तोलोङ सिकि वर्णमाला का साहित्यिक विवेचना — 108
54. नई लिपि की विकास यात्रा की महत्वपूर्ण प्रश्नावली — 110
55. तोलोंग सिकि विकास गाथा और उसकी गवाही — 112
56. झारखण्ड आन्दोलन की देन है तोलोंग सिकि लिपि ! — 113
57. आदिवासी जीवन–दर्शन और कुडुख़ भाषा की तोलोंग लिपि — 114
58. तोलोङ सिकि की विकास यात्रा और राःजी पड़हा, भारत — 115
59. तोलोङ सिकि की प्रतिस्थापना : एक सामाजिक सह सांस्कृतिक धरोहर — 117
60. आदिवासी भाषा एवं लिपि विकास में पद्मश्री डॉ० रामदयाल मुण्डा के उत्प्रेरक विचार — 121
61. राज्य सरकार की मातृभाषा शिक्षा योजना : तब और अब — 122
62. तोलोङ सिकि का कम्प्यूटरी अवतार 'केलि तोलोङ' की उद्भव यात्रा — 130
63. तोलोंग सिकि और कुँडुख भाषा का विकास — 131
64. **[illegible]** — 132
65. **[illegible]** — 132
66. कुँडुख़ तोलोङ सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती हैं!'' का लोकार्पण — 133
67. कुँडुख़ भाषा–तोलोंग सिकि विषयक, विभागीय एवं राजकीय सम्मान — 134
68. कुँडुख़ भाषा–तोलोंग सिकि के संरक्षण एवं संवर्द्धन संबंधी विशिष्ट योगदान — 135
69. टाटा स्टील फाउण्डेशन द्वारा सम्पोषित कुँडुख़ भाषा–तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र — 147
70. कुँडुख़ भाषा सह तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण कार्यशाला की तैयारी बैठक मुड़मा में — 151
71. टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर द्वारा कुँडुख़ भाषा तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण — 152
72. ऑल कुँडुख़ स्टूडेन्ट यूनियन, असम द्वारा आयोजित ''तोलोंग सिकि कार्यशाला'' — 154
73. 'धुमकुड़िया सैन्दा'' (सिसई, गुमला, झारखण्ड) सुसर संगोठ — 155

1. प्राक्कथन

भारत देश में निवास करने वाली आदिवासी समूह अपनी विशिष्ट भाषा एवं विशिष्ट संस्कृति के माध्यम से पहचानी जाती है। उनकी विशिष्ट भाषा एवं संस्कृति आदिवासियों के पहचान की धरोहर है। इस विशिष्ट धरोहर को आधार बनाकर कुँड़ुख़ भाषी उराँव आदिवासी समूह के लोगों द्वारा अपनी विशिष्ट भाषा कुँड़ुख़ की लिपि का विकास किया गया है जिसका नाम तोलोंग सिकि है। इस कुँड़ुख़ (उराँव) पहचान को बनाये रखने के लिए पेशे से चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव ने अपने सहयोगियों के साथ कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि नामक लिपि को स्थापित किये जाने में महती भूमिका निभायी है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। वर्तमान में, झारखण्ड एवं प0 बंगाल सरकार में कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा (तोलोंग सिकि के साथ) राजकीय भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किया गया है। साथ ही झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा वर्ष 2009 में एक विद्यालय के लिए तथा वर्ष 2016 में सार्वजनिक रूप से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा, तोलोंग सिकि से लिखने की अनुमति प्रदान की गई है और कई विद्यालयों से वर्ष 2009 से कुँड़ुख़ भाषा विषय की मैट्रिक परीक्षा अपनी भाषा की लिपि तोलोंग सिकि में लिख रहे हैं।

नई लिपि विकास के इस कार्य को पेशे से चिकित्सक डॉ० नारायण उराँव द्वारा वर्ष 1989 में आरंभ किया गया। ततपश्चात, डॉ० रामदयाल मुण्डा एवं डॉ० (श्रीमती) इन्दु धान जैसे शिक्षाविदों ने वर्ष 1999 में समाज के लोगों के व्यवहार के लिए लोकार्पित किया। इस कार्य को पहली बार समाज के सामने 1993 में प्रदर्शित किया गया, जिसे पहली बार हिन्दी दैनिक ''आज'' में ख़ब़र छापा। इस कार्य को भारत सरकार के ''केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर'' के भाषाविद, प्रोफेसर एवं निदेशक डॉ. फ्रांसिस एक्का द्वारा 28 जुलाई 1996 को मार्ग दर्शन दिया गया। उसके बाद भाषाविद डॉ० रामदयाल मुण्डा जी द्वारा 05 मई 1997 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के एक लोकार्पण समारोह में लिपि विकास में महत्वपूर्ण सुझाव दिया गया। 15 नवम्बर 2000 को नया राज्य झारखण्ड बनने के बाद पहली बार 2003 में कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को मान्यता मिला। उसके बाद 2009 में पहली बार झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा वर्ष 2009 के मैट्रिक परीक्षा में एक स्कूल के लिए कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा, तोलोंग सिकि से लिखने की अनुमति प्रदान की गई है तथा वर्ष 2016 में सार्वजनिक रूप से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा, तोलोंग सिकि से लिखने की अनुमति प्रदान की गई है। दूसरी ओर प०बंगाल में 2018 में कुँड़ुख़ भाषा एवं तालोंग सिकि को मान्यता मिला है। इसी कड़ी में टाटा स्टील फाउण्डेशन के द्वारा गुमला, लोहरदगा एवं राँची जिला क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि की पढ़ाई–लिखाई करायी जा रही है।

आदिवासी उराँव समाज प्रचलित एवं स्थापित कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा एवं उसकी लिपि, तोलोंग सिकि को टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर की ओर से आदिवासी भाषा, लिपि एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत, आदिवासी समाज के स्वयं सेवी संगठनों को तकनीकि सहयोग प्रदान करते हुए कार्य किया जाता है। इस तरह का कार्य संताली, हो, मुण्डारी, खड़िया, भूमिज एवं कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा विकास हेतु भी कार्य किया जा रहा है।

अंत में मैं डॉ0 नारायण उराँव एवं तोलोंग सिकि लिपि के विकास से जुड़े सभी सहयोगियों तथा शुभचिंतकों को उनके इस अमूल्य कृति ''तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ कत्थपूःन (तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ साहित्यमाला)'' वर्ष 1989 से 2022 तक का इतिहास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

JIREN XEVIER TOPNO
HEAD, TRIBAL IDENTITY
TATA STEEL FOUNDATION

DATED : MARCH 15, 2023

2. पुन्दचका कत्था (प्रस्तावना)

20वीं सदी के अंतिम दशक में झारखण्ड अलग प्रांत आंदोलन के विचारक एवं वरिष्ठ नेता पद्मश्री डॉ० रामदयाल मुण्डा कहा करते थे – जब ले आदिवासी समाज कर धुमकुड़िया नी जागी अउर अख़ड़ा नी गहजी तब ले आदिवासी मनकर उबार नखे। एखन कर बेरा में अखड़ा जगन धुमकुड़िया होवे अउर धुमकुड़िया में किताब–कॉपी, पुस्तकालय संगे समाचार पत्र अउर छोटमोट सर्दी–बुखार कर टिकिया संगे–संग मरहम पट्टी कर सामान भी उ ठाँव में रहे।

21वीं सदी के आरंभ में भारत देश में ''अमृत महोत्सव'' मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू हो कर दिया गया है। इसके तहत झारखण्ड सरकार ने वर्ष 2022 में, आदिवासी बहुल क्षेत्रों में मातृभाषा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा दिये जाने का अवसर प्रदान किया है। भाषा शिक्षा विषय में हिन्दी एवं अंगरेजी के अतिरिक्त झारखण्ड में कुँड़ुख़ (उराँव), मुण्डारी, खड़िया, हो, एवं संताली मातृभाषा में से क्षेत्रवार किसी एक से प्राथमिक शिक्षा प्रारंभ किये जाने हेतु अधिसूचना जारी हुआ है तथा 1ली से 3री कक्षा की पुस्तकें प्रकाशित हैं।

मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा का निर्णय, केन्द्र एवं राज्य सरकार की ओर से शिक्षा व्यवस्था का भारतीयकरण किया जाना तथा किसी समाज की भाषा–संस्कृति का संरक्षण और संवर्द्धन तथा रोजगार के अवसर के रूप में समझा जाना चाहिए। यह पाठ्यक्रम योजना 5+3+3+4 के रूप में प्रारूपित है। इसमें से प्रथम 5 को 3+2 के रूप में विस्तारित किया गया है। इन 5 में से पहला 3 वर्ष का समय, पूर्वशिक्षा को सूचित करता है तथा बाद वाला 2 वर्ष, क्रमशः 1ली एवं 2री कक्षा का समय सूचक है। अर्थात अब अभिभावक अपने बच्चों को 3 वर्ष का उम्र पूरा करने के बाद सरकार द्वारा नियोजित पूर्वशिक्षा केन्द्र में भेजेंगे, जहाँ वे नर्सरी में 1वर्ष, एल.के.जी में 1 वर्ष तथा यू.के.जी में 1 वर्ष पूर्व शिक्षा केन्द्र भेजा करेंगे। इस तरह उक्त 5 बर्ष तक सरकार द्वारा प्रायोजित केन्द्र में बच्चा 2री कक्षा उतीर्ण करेगा। वर्तमान समय के ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकतर विद्यालयों में पूर्व शिक्षा योजना हेतु 3 साल के बच्चे के लिए विशिष्ट स्कूली व्यवस्था नहीं है। तब इस नई व्यवस्था के अंतर्गत 4 वर्ष से 6वर्ष के बच्चों को आंगनवाड़ी या शिक्षा वाटिका से जोड़ने की बात कही जा रही है। इस तरह यदि पूर्व शिक्षा योजना को आंगनवाड़ी से जो जोड़ा जाता है तो यह प्रश्न उठेगा कि क्या, सभी (कुँड़ुख़/उराँव बहुल क्षेत्र) क्षेत्र के आधे से अधिक आंगनवाड़ी सेविकाएँ कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा या लिपि नहीं जानती है। क्या, समाज के लोग इस संबंध में कोई निर्णय ले पाएंगे! अब समाज को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं मातृभाषा शिक्षा योजना पर सहृदयता से विचार–विमर्श एवं निर्णय करने की आवश्यकता है।

ऐसी परिस्थिति में परम्पारिक सामाजिक कौशल विकास केन्द्र, धुमकुड़िया का पुनर्जागरण, आदिवासी समाज की आवश्यकता है। प्राचीन काल में, यह गाँव का एक शिक्षण शाला सह कौशल विकास केन्द्र के रूप में हुआ करता था, जो गाँव के लोगों द्वारा ही चलाया जाता था। धुमकुड़िया से शिक्षित व्यक्ति जो मानव जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान सीखे हुए को सुसंस्कृत एवं प्रशिक्षित **(Trained Person)** कहा जाता था। बच्चों को खेल–खेल में गाना–बजाना–नाचना सीखलाने के लिए बुजूर्ग या दादा–दादी अपने पोते–पोतियों को बच्चों को कहा करते हैं – गुचा नतिया, धुम ताअ़ बेःचा/लगे धुम ताअ़ बेःचा। दूसरे शब्दों में कहें कि – वह पद्धति या माहौल जहाँ बच्चे बचपन में खेल–खेल में गाना–बजाना–नाचना सीखा करते हैं। कुड़िया का अर्थ छोटा घर अथवा केन्द्र होता है। इस प्रकार – धुम्म ताअ़ + कुड़िया में से ताअ़ का लोप होने पर धुमकुड़िया शब्द बना। ताअ़ शब्द खण्ड, प्रेरणार्थक क्रिया का मजही लटखु (मध्य प्रत्यय) है अथवा प्रेरणाश्रोत है। मांदर का बायाँ छोर, धुम्म का प्रतिनिधि तथा दायाँ किनारा ताअ़ का प्रतिनिधि है। इस तरह धुमकुड़िया वह है जहाँ बच्चे अपने जीवन के आरंभिक जीवन में गाना–बजाना–नाचना सीखते हुए कठिन रास्तों से गुजरकर अपने व्यक्तित्व में निखारपन लाते हैं तथा कुड़िया का अर्थ केन्द्र या छोटा घर होता है।

कुँड़ुख़ (उराँव) समाज की भाषा, संस्कृति, परम्परा इत्यादि को संजोने एवं निखारने के उदेश्य से टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर की ओर से कई कार्यख जैसं – पाठ्य सामग्री का निर्माण, कुँड़ुख़ टाईम्स बेब पत्रिका का प्रकाशन, भाषा एवं लिपि शिक्षण केन्द्र का संचालन एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था इत्यादि किये जा रहे हैं। इन तमाम कार्यों के लिए टाटा स्टील फाण्डेशन का हार्दिक आभार। अंत में, 'तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ कत्थपूःन'' पुस्तक के नंत्रग्राह्य रूप तक पहुँचाने में जुड़े सभी साथियों तथा पाठकों को ढेर सारी शुभकामनाएँ।

– डॉ० नारायण उराँव

दिनांक : 12 फरवरी 2022

एम.जी.एम.मेडिकल कॉलेज अस्पताल, जमशेदपुर।

3. कुँड़ुख़ भाषा, द्रविड़ भाषा परिवार की एक प्राचीन भाषा है

"कुँडुख़ भाषा, द्रविड़ भाषा परिवार की एक प्राचीन भाषा है। इस भाषा का व्याकरण एवं शब्द रचना भी विशिष्ट है। इस भाषा की अपनी लिपि है, जिसका नाम तोलोङ सिकि है। साधारणतया भाषा का तीन स्वरूप होते हैं – 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा 3. सांकेतिक भाषा। इनमें से प्रथम दो अधिक विकसित है। मौखिक भाषा की प्रकृति परिवर्तनशील होती है, किन्तु लिखित भाषा अधिक दिनों तक स्थायी रहती है। कुँडुख़ समाज के पास लिखित रूवरूप नहीं होने से यह परिवर्तनशील प्रकृति की ओर बढ़ते हुए चिंतनीय अवस्था तक पहुँच गई। इसे स्थायित्व प्रदान करने हेतु लिपि चिन्ह के साथ लिखाई–पढ़ाई करना आवश्यक है। वर्तमान में झारखण्ड सरकार, के पत्रांक – 8/रा0–8/2001 का0–129 दिनांक 18.09.2003 के माध्यम से "तोलोङ सिकि" को कुँडुख (उराँव) भाषा की लिपि के रूप में स्वीकार किया है तथा जैक, के विज्ञप्ति सं0 17/2009, DPO - 20.02.2009 द्वारा 2009 सत्र में सर्वप्रथम, मैट्रिक परीक्षा में कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा लिखने की अनुमति दी गयी। उसके बाद, जैक, राँची के अधि0 सं0 – JAC/गुमला/16095/12–0607/ 16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा वर्ष 2016 से मैट्रिक में कुँडुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखने की अनुमति प्राप्त हुई। राँची विश्वविद्यालय, राँची ने भी अधि0 सं0 – B/1236/16 दिनांक 26. 09.2016 द्वारा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष की देखरेख में एक विशेष सेल का गठन किया है, जो आदिवासी भाषाओं के लिपियों में पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेगी। इसके आलोक में वि0वि0 द्वारा गठित विशेष समिति की ओर से तोलोङ सिकि में पठन–पाठन किये जाने की अनशंसा की गई है।

कुँडुख़ भाषा की संरचना अति विशिष्ट है। इसकी संरचना को समझने के लिए वैदिक व्याकरण की संरचना को समझना होगा। वैदिक व्याकरण में किसी एक मूल क्रिया धातु से 90 क्रिया शब्द बनता है। यह 90 की गनना, 10 x 3 x 3 = 90, जो 10 लकार, 3 पुरूष एवं 3 वचन के गुणनफल के बराबर है। किन्तु लौकिक व्याकरण अर्थात वर्तमान समय में मात्र 45 क्रिया शब्द की ही पढ़ाई–लिखाई होती है। यह 45 की गनना, 5 x 3 x 3 = 45, जो 5 लकार, 3 पुरूष एवं 3 वचन के गुणनफल के बराबर है। परन्तु संस्कृत की तुलना में कुँडुख़ भाषा का क्रिया शब्द रचना, संख्या में कम नहीं है। इसमें एक मूल क्रिया धातु से लगभग 250 से अधिक (100 से अधिक मूल रूप तथा 150 से अधिक संयुक्त रूप) क्रिया शब्द बनते है और व्यवहार में हैं। इसी तरह Tense या काल के भेद, संस्कृत या हिन्दी की तरह ही तीन हैं। पर, संस्कृत में continuous tense का रूप नहीं होता है, जबकि कुँडुख़ में इसका प्रयोग अत्यधिक है। कुँडुख़ में वर्तमान काल के वाक्य – 1. मंगरस टूड़दस, 2. मंगरस टूःड़ा लगदस, 3. मंगरस टूःड़का रअदस, 4. मंगरस टूःड़नुम रअदस। संस्कृत में अनुवाद – 1. मंगरा लिखति 3. मंगरा अलिखत्।

प्राचीन भाषाओं के व्याकरण के संबंध में यह अवधारणा है कि उनमें कर्ता कारक का कारक चिन्ह नहीं होता है। पर कुँडुख़ जैसी प्राचीन भाषा में कर्ता कारक का कारक चिन्ह होता है। कुँडुख में कर्ता कारक का चिन्ह 'अस, अय, अद, अर' व्यवहार में है और संज्ञा के अंत में जुड़ने से बने संज्ञा पद का रूप बदलने से क्रिया का भी रूप बदल जाता है। साथ ही आःलो अथवा मानवेतर लिंग के साथ कर्ता कारक का सिर्फ अद चिन्ह लगता है। जैसे – करमस (पु०) बरआ लगदस। करमी (स्त्री०) बरआ लगी। घोड़ो (मानवेतर लिंग) बरआ लगी। आ कुकोय काःला लगी। आ कुक्कोस काःला लगदस। एकवचन स्त्रीलिंग एवं मानवेतर लिंग की क्रिया एक जैसी होती है, पर बहुवचन में दोनों के लिए अलग–अलग क्रिया रूप का व्यवहार होता है। इसलिए कुँडुख़ भाषा में व्यवहार के अनुसार, gender या लिंग के तीन भेद होते हैं – 1. आःले मेःद (पु०), 2. आःली मेःद (स्त्री०), 3. आःलो मेःद (मानव इतर लिंग)। जैसे – सुकरा गर (बहुवचन) बरआ लगनर। सुकरी बगय (बहुवचन) बरआ लगनय। घोड़ो गुट्ठी बरआ लगी।

तोलोंग सिकि (लिपि) की वर्णमाला में कम से कम चिन्हों से अधिक से अधिक ध्वनियों को लिखा जाता है जो एक सार्थक उपलब्धी है। यह अर्न्तराष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत पर आधारित है। लिपि चिन्हों का संकलन कुँडुख़ समाज एवं संस्कृति पर आधारित है, जिससे यह सुग्राह्य तथा आत्मसात करने योग्य है। इसका कम्प्यूटर फोन्ट विकसित हो चुका है।

तोलोङ सिकि कुँडुख़ कत्थपून पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा'' एवं उनकी पत्नी डॉ० (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव को बहुत–बहुत बधाई तथा तोलोंग सिकि (लिपि) के विकास में जुड़े सभी भाई–बहनों को हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है, आप सभी इस सचित्र विवरणिका पुस्तक का आनंद लेंगे।

डॉ० नारायण भगत
विभागाध्यक्ष, कुँडुख़
डोरण्डा कॉलेज, राँची।

दिनांक : 10 मई 2022

4. छात्र आंदोलन के दौरान छात्रों एवं नेताओं के बीच परिचर्चा की बातें साकार हुईं

आज से लगभग 30–35 वर्ष पूर्व छात्र जीवन में तथा छात्र आन्दोलन के समय आदिवासी छात्रों एवं छात्र नेताओं के बीच आदिवासी भाषा और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन की चर्चा बार–बार उठती थी, किन्तु इसका तरीका क्या और कैसे हो, यह तय नहीं हो पाया था। छात्रों एवं छात्र नेताओं के बीच चर्चा–परिचर्चा की वह बातें आज साकार हुईं हैं। पेशे से चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' ने अपने सामाजिक शोध आधारित कार्य को तोलोङ सिकि (लिपि) के रूप प्रस्तुत किया, जिसे कुँड़ुख़ समाज एवं झारखण्ड सरकार द्वारा कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में स्वीकृति प्रदान किया जा चुका है। कुँड़ुख़ भाषा–भाषियों ने इसे अपनी भाषा की लिपि स्वीकार करते हुए, पठन–पाठन का कार्य आरम्भ कर दिया है। ज्ञातव्य है कि कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार, राँची के पत्रांक – 8/रा0–8/2001 का0–129 दिनांक 18.09.2003 के माध्यम से "तोलोङ सिकि" को कुँड़ुख (उराँव) भाषा की लिपि के रूप में स्वीकार किया गया है तथा केन्द्र सरकार, को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किए जाने हेतु अनुशंसा किया गया है। साथ ही, अधिसूचना संख्या – . JAC/ गुमला/16095/ 12–0607/16/राँची, दिनांक – 12.02.2016 द्वारा मैट्रिक परीक्षा 2016 से कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि (लिपि) में लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

सामाजिक प्रयास से सरकार तक पहुँचने में कुछ सामाजिक संस्थाओं यथा कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, डुमरी, गुमला, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा, अखिल भारतीय कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा तथा विष्वविद्यालय के माननीय षिक्षकों का योगदान काफी सराहनीय रहा है। सृजन के इस डगर में स्व० डॉ० फ्रांसिस एक्का, स्व0 डॉ० रामदयाल मुण्डा, स्व० आर० इलांगियन, स्व0 डॉ० बहुरा एक्का, स्व0 डॉ० इन्दु धान, डॉ० प्रकाष चन्द्र उराँव, प्रोफेसर डॉ० करमा उराँव, बिषप डॉ० निर्मल मिंज, फा० प्रताप टोप्पो, फा० जेम्स टोप्पो, फा० अगुस्तिन केरकेट्टा, फा० जेफ्रेनियुस बखला उर्फ डॉ० एतवा उराँव, डॉ. नारायण भगत, श्री अजित मनोहर खलखो, श्री जिता उराँव, श्री विनोद कुमार भगत, पूर्व विधायक श्री शिवशंकर उराँव, पूर्व मंत्री श्रीमती गीताश्री उराँव, सांसद श्री समीर उराँव आदि से महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

झारखण्ड के पूर्व विधान सभा अध्यक्ष डॉ0 दिनेश उराँव जी का कुँड़ुख़ समाज बहुत आभारी है जिनके नेतृत्व में आदिवासी भाषा–संस्कृति के बचाव हेतु वर्ष 2016 में इस लिपि परीक्षा लिखने की अनुमति का कार्य पूरा किया गया। इस कार्य में, झारखण्ड सरकार में सुषोभित तत्कालीन वरीय पदाधिकारी श्रीमती सुनिला बसन्त, आई0 ए0 एस0, श्रीमती मृदुला सिन्हा, आई0 ए0 एस0, श्रीमती अराधना पटनायक, आई0 ए0 एस0, डॉ0 राजीव अरूण एक्का, आई0 ए0 एस0, श्री गौरीषंकर मिंज, आई0 ए0 एस0, एवं झा.अधि.परि. राँची के अध्यक्ष, श्री अरविन्द कुमार सिंह, सचिव श्री पोलिकार्प तिर्की तथा श्री मोहन चांद मुकिम, उपसचिव श्री यूजिन मिंज के साथ जैक बोर्ड के सभी सदस्यों का कुँड़ुख़ समाज आभारी रहेगा, जिन्होंने अपने कार्यकाल में आदिवासी भाषा–संस्कृति के बचाव हेतु साहसिक कदम उठाया और नई लिपि को मान्यता दिलायी।

लिपि विकास के क्रम में कम्प्यूटर तकनीक में खरा उतारने के लिए श्री किसलय जी को बधाई, जिन्होंने लिपि का कम्प्यूटर वर्जन (kellytolong font) तैयार कर इसे निःषुल्क, tolongsiki.com वेवसाइट तक पहुँचाया। साथ ही केलिफॉरनियाँ विष्वविद्यालय, अमेरिका के भाषा विज्ञानी श्री अंषुमन पाण्डेय को ढेरों बधाई, जिन्होंने तोलोङ सिकि लिपि का यूनिकोड विकसित करने हेतु वर्ष 2010 में निबंधन कराया है। अंत में, डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा'' एवं उनकी पत्नी डॉ० श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव को हार्दिक षुभकामनाएँ कि आपलोग सपरिवार, लिपि विकास में जुड़े साथियों के साथ समाज के लिए एक अनुपम भेंट प्रदान करने में अतुलणीय योगदान दिया है। अब बारी समाज के नई पीढ़ी की है कि वे इसे आगे कैसे ले जाएँ।

डॉ० रविन्द्र नाथ भगत
प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग
बी.आई.टी. मेसरा, राँची
पूर्व कुलपति, वि.भा.वि. हजारीबाग।

दिनांक : 15 मई 2021

5. लिपि, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक विचारों और एकजुटता को सुदृढ़ भी करता है

किसी भी समुदाय के पहचान और अस्तित्व के लिए कई तरह के तत्व माने जाते हैं। खान–पान, वेशभूषा, भौगोलिक क्षेत्र, आस्था, जीने के तरीकों से लेकर भाषा के माध्यम से किसी समुदाय की पहचान बनती है. जो भाषाएँ विकसित मानी जाती है। उनके प्रयोगकर्ता अधिकांश अवसरों पर ऊँचे स्तर के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन जी रहे होते हैं, जबकि लिपि विहीन समुदाय इन बढ़े हुए समाज का अनुकरण करने के लिए बाध्य हो जाते हैं और उनकी पहचान, अस्तित्व, आत्मविश्वास प्रायः दबा–दबा सा रहता है। इस तरह वे कई बार अपनी कई सांस्कृतिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक आशाओं, आकांक्षाओं, कार्यक्रमों को पूरा करने में असमर्थ होते हैं.

इसलिए अब कई विद्वान मानने लगे हैं कि यदि किसी समुदाय की अपनी लिपि यदि उसी समुदाय के लोग आविष्कृत करते हैं और उस लिपि में इनकी सांस्कृतिक, भाषिक विशिष्टता झलकती है, तो इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए. ऐसे में वह समुदाय अपनी हर प्रकार की सुरक्षा के लिए ज्यादा सजग, सतर्क और जागरूक हो जाता है। तब वे अपनी सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक सुरक्षा–कवच विकसित कर देश व जनहित में ज्यादा आत्मविश्वास के साथ, प्रभावी एवं अभिनव ढंग से काम कर पाते हैं। आज कई शैक्षिक संस्थाएँ और विद्वान इस दिशा में कार्य करते, अल्पसंख्यक या लुप्तप्राय भाषाओं में उसी समुदाय से उभरते लिपियों के प्रयोग को प्रोत्साहन दे रहे हैं, जबकि देखा गया है कि विकसित भाषाओं को अपनाकर हम कई तरह की गुलामी में जकड़कर, उनके उपभोक्ता, अनुयायी या भक्त बने रहते हैं.

अब इस नई सामाजिक सोच को देखें, समझें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी समुदाय के आविष्कृत लिपि से ही उस समाज की वास्तविक, मौलिक और जमीनी विकास संभव है। कुँडुख लोग चाहें तो अपनी भाषा की लिपि – तोलोंग सिकि को अपनाकर बहुत कुछ कर सकते हैं।

शुभकामनाएँ।

– श्री महादेव टोप्पो
सेवानिवृत बैंक अधिकारी एवं साहित्यकार,
सम्प्रति : सदस्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,
हरमू बाईपास रोड, राँची (झारखण्ड)
दिनांक : 15 मार्च 2023

"मातृभाषा : माँ के जुवान की भाषा"

उपर फोटो में – दायें से राँची विश्वविद्यालय, राँची के कुलपति डॉ०एल०एन०भगत, विनोबा भावे विश्वविद्यालय,हजारीबाग के कुलपति डॉ०आर०एन०भगत, महामहीम राज्यपाल झारखण्ड डॉ० सैयद अहमद, महापौर राँची श्रीमती रमा खलखो।

"बच्चा जब जन्म लेता है तो उसकी कोई जुबान (भाषा) नहीं होती है। धीरे–धीरे वह अपनी माँ की जुबान सीखता है। उसके लिए वह अपना सबसे ताकतवर अंग, ओठ का इस्तेमाल करता है और ओठ के सटने से निकलने वाली ध्वनि पा, बा, मा इत्यादि का उच्चारण करता है। बच्चा अपनी माँ से जिस जुबान को सीखता है, वही उसके लिए माँ की भाषा अर्थात mother tongue होती है।" (दिसम्बर 15, 2012 को अंतर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन के मुख्य अतिथि, झारखण्ड के राज्यपाल डॉ० सैयद अहमद के सम्भाषण का अंश।)

फोटो – राजेन्द्र आयुर्विज्ञान संस्थान, राँची (झारखण्ड) में विभागाध्यक्ष नवजात एवं शिशु रोग विभाग सह नॉडल ऑफिसर,एस०सी०एन०यू० (Special Care Newborn Unit) का कार्यालय। बायें से – सिस्टर ज्योत्सना लकड़ा, डॉ० मिनी रानी अखौरी (एसोसिएट प्रोफेसर), डॉ० अरूण कुमार शर्मा (प्रोफेसर सह एच.ओ.डी. नवजात एवं शिशुरोग विभाग तथा नॉडल ऑफिसर एस.सी.एन.यू), एवं डॉ० नारायण उराँव।

नवजात एवं शिशु विशेषज्ञों का मानना है कि एक सामान्य बच्चा अपने माता–पिता के साथ रहते हुए, जब बोलना सीखता है, तो सर्वप्रथम, सबसे आसान एक आक्षरिक (Monosyllablic पा, बा, मा) शब्द, 6वें महीने में सीखता है। उसके बाद, 9वें महीने में द्वी आक्षरिक (पपा, बबा, ममा) शब्द एवं 1ले वर्ष में दो शब्द वाला अर्थ सहित सीखता है। प्राकृतिक रूप से बच्चा प वर्गीय शब्द से ही सीखना आरंभ करता है। वह इसलिए होता है कि जब बच्चा स्तनपान करता है तो उसके दोनों ओठ सक्रीय होते हैं और ओठ के सटने से उत्पन्न ध्वनि, सीखने में बच्चे के लिए आसान हो जाती है। एक शिशु चिकित्सक के रूप में डॉ० नारायण उराँव ने अपने साहित्यिक शोध में, एक आदिवासी भाषा की लिपि (तोलोंग सिकि) के वर्णमाला को स्थापित करने में इस सिद्धांत को आधार बनाया है, जो विशिष्ट एवं अद्भुत है।

– डॉ० अरूण कुमार शर्मा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, नवजात एवं शिशुरोग विभाग, रिम्स, राँची, दिनांक : 22 जून 2018

तोलोङ सिकि (लिपि) का आधार
तोलोङ पोशाक
हल–चलाना
चाला अयंग अड्डा
जता चलाना
रोटी पकाना
नृत्य
अभिवादन
जीव–जन्तुओं द्वारा बनाये गये चिन्ह
मृत्यु संस्कार
देबी अयंग अड्डा
पृथ्वी की सूर्य परिक्रमा
गणितीय चिन्ह
डण्डा कट्टना अनुष्ठान
लत्तर का डाली पर चढ़ना
सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठान चिन्ह
सिन्धु लिपि (Indus Script)
डण्डा कट्टा सिस्टम
तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा, विज्ञान एंव आध्यात्म का अद्भुत प्रस्तुतिकरण

(कुँड़ुख तोलोङ सिकि तो:ड़पाब)
Tolong Siki Alphabet / तोलोङ सिकि वर्णमाला
(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)
इ i
ए e
उ u
ओ o
अ a
आ ā
: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ' (पेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
(एर्वी) = नासिक्य स्वर सूचक, (रेवी) = लुप्ताकार र, । (हेयका) = व्यंजन ञ
(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)
Numerals
प p
फ ph
ब b
भ bh
म m
त t
थ th
द d
ध dh
न n
ट ṭ
ठ ṭh
ड ḍ
ढ ḍh
ण ṇ
च ch
छ chh
ज j
झ jh
ञ ñ
क k
ख kh
ग g
घ gh
ङ ṅ
य y
र r
ल l
व w
ञ ż
स s
ह h
ख़ x
ड़ ṛ
ढ़ ṛh
0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
खद्दर गही कत्थलूर अरा कत्थ बेयाँखो = बच्चों का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान
(पा), (बा), (मा), (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (जा)
(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।
(पल्ल) = दाँत, (बई) = मुँह, (मेलखा) = Epiglottis, उप कण्ठ।
(ततखा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।
ता:का एमसा:र'ई, पल्ले बई मेलखा, होलेम चीं:खनर खद्दर।
ततखा, दुदहिन, नरटी तरा नतगी, होलेम उज्जनर खद्दर।।
(कुंडुख भाषा, संस्कृति, सामाजिक एंव प्राकृतिक अवदान तथा भाषा विज्ञान आधारित लिपि)
साभार : बककड़ुही (कुँड़ुख पत्रिका), अद्दी अखड़ा प्रकाशन, अंक 6, 2018, राँची।
Published by :
Visit www.kurukhtimes.com, www.tolongsiki.com , Contact No : 9771163804

9. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि (लिपि) का मूल आधार है आदिवासी जीवन–दर्शन

तोलोंग सिकि एक वर्णात्मक लिपि है। इससे, उच्चारण के अनुसार लिखा एवं पढ़ा जाता है। इसमें हलन्त का प्रयोग नहीं होता है। इस लिपि को कुँड़ुख़ भाषियों ने, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की सामाजिक स्वीकृति प्रदान की है तथा झारखण्ड सरकार द्वारा कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की वैधानिक मान्यता देकर, विद्यालयों में पठन–पाठन का अवसर प्रदान किया गया है। कुँड़ुख़ भाषा एक योगात्मक भाषा है। बोलचाल में, योगात्मक तरीके से खण्ड–ब–खण्ड उच्चरित किया जाता है। इस लिपि के अधिकतर वर्ण वर्तमान घड़ी के विपरीत दिषा (anti clockwise) में व्यवस्थित है। इस लिपि का आधार पूर्वजों द्वारा संरक्षित, प्रकृतिवादी सिद्धांत है। हवा का बवण्डर (बईर'बण्डो), समुद्र का चक्रवात, अधिकांश लताओं का चढ़ना आदि प्राकृतिक चीजें, घड़ी की विपरीत दिशा में सम्पन्न होती है। प्रकृति के इन रहस्यों को, आदिवासी पूर्वजों ने अपने जीवन में उतारा और जन्म से लेकर मृत्यु तक के अनुष्ठान, घड़ी की विपरीत दिषा में सम्पन्न करने लगे। हल चलाना, जता चलाना, छिरका रोटी पकाना, अभिवादन करना, नृत्य करना, चाःला टोंका की पूजा करना, देबी अयंग स्थल की पूजा विधि, डण्डा कट्टना अनुष्ठान आदि क्रियाएँ घड़ी की विपरीत दिशा में निहित है। खगोलीय तथ्य है कि संसार में, अधिक से अधिक प्राकृतिक घटनाएँ घड़ी की विपरीत दिषा में ही सम्पन्न होती है। ब्रह्मांड में पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर घड़ी की विपरीत दिषा में परिक्रमा किये जाने से प्रकृति के सभी क्रिया–कलाप इससे प्रभावित होती हैं। इन प्राकृतिक क्रिया–कलापों एवं सामाजिक सह सांस्कृतिक अवदानों को आदिवासी पोषाक तोलोङ की कलाकृति से जोड़कर, भाषाविज्ञान के सिद्धांत पर यह लिपि स्थापित है।

– डॉ॰ नारायण उराँव 'सैन्दा' (तोलोंग सिकि विषयक शोध–अनुसंधान) :

10. कुँड़ुख़ कत्था अरा तोलोङ सिकि : एक परिचय

कुँड़ुख़ कत्था, उतरी द्रविड़ (ख़ेड़्ड चप्पो द्रविड़) भखा खोन्दहा ता ओन्टा अद्‌दी कत्था तली। मना उङगी का एकअम बेड़ा नु इदि गही हुदा अक्कुन ती बग्गे रहचा हअन। मुन्दा अक्कुन ता बेड़ा नु ईःद उल्ला गइनका खतरते काःला लगी। इदिन टूड़र की उइय्या गे नमहँय पुरखर उरजिस नंज्जर हअन पहें बग्गे परदआ पोल्लर। अक्कुन हूँ नाम परदआ गे पोलका रअ़दत। अद्‌दी कत्था मंज्जका ती मना उङगी का ई कत्था गही एकअम बेड़ा नु सिकि (लिपि) रहचा हअन, मुन्दा अक्कुन आद ख़न्न एःख़ा गे हूँ मल इथिर'ई। ई चड्‌डे नमहँय लूरगरियर तमहँय बेड़ा सिरे ता नन्ना सिकि तिके टूड़ा ओःरे नंज्जर। मुन्ध नु पुरखर रोमन लिपि ती कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ा ओरे नंज्जर अदि ख़ोःख़ा देवनागरी लिपि ती टूड़ा हेल्लरर। रोमन अरा देवनागरी लिपि नु कुँड़ुख़ कत्थन टूड़ा गे ठउका–ठउका सिकि चिनहाँ मलका चड्‌डे इबड़ा सिकि ती कुँड़ुख़ कत्थन फुरचारना बेसे टूड़ा पोलताइ'ई। ई गे कत्थन दव कुना ख़ोःजर दरा उइय्या गे मलता इदिन बर'उ ख़द्‌दर गूटी पुरखर गही खुर्जिन अँड़स्त'आ गे नलख ननना अकय चाँड़ रअ़ईं। इन्ने नंज्जका ती अयंग कत्था गही मइनता अरा मरजाइद बछरओ दरा नमहँय खोंड़हा मुंदभारे परदो, मला होले एका बेसे बेड़ा बरआ लगी का एका बेसे बेड़ा बरना गही हहाँस ख़खरआ लगी अदी गही ताःका ती नाम उढ़ियारओत काःलोत। गोट्‌टे ख़ेःख़ेल राःजीन एःरना ती लग्गी का उरमी गुसन कोंहा कत्था सन्नी कत्थन नुलख़ा लगी, जे लेखा का कोंहा इंज्जो, सन्नी इंज्जोन नुलख़ी। भखा पंडितर बअ़नर – ओरे नु गोट्‌टे बेलख़ा नु 16000 कत्था रहचा मुन्दा अक्कुन ता बेड़ा नु ईद 6900 लेखआ बछरकी रअ़ई। अबड़ा 6900 नु 3500 कत्था एबसेरना गही पांःती नु रअ़ई। इबड़ा 3500 गोटंग एबसेरना कत्था गही डींड़ नु कुँड़ुख़ कत्था हुँ संग्गे रअ़ई। ईद नमागे अकय एलेचना गही कत्था तली।

अवंगे कत्थन अरा खोंड़हन बछाबअ़आ गे नमन संग्गे मनर, इन्दिर'ईम मला इन्दिर'ईम उरजिस नननम मनो। अक्कुन ता बेड़ा नु भूमण्डलीकरण मलता ग्लोबलाइजेषन बअर की एलेचना बेसे ओन्टा बइरबण्डो बरआ लगी। ईद बेगर पसअम अरा बेगर नुंजताचकम अकय ससईत चिअ़ई। ईद एन्ने जिनिस तली का इत्तु के ओरमर एकअम मला एकअम रूपे नु धर्रकर रअ़नर अरा अदी तरा नतगरनुम काःला लगनर। नमहँय अयंग कत्था हूँ इदी गही ताःका ती बछर'आ पोल्ला लगी। नमहँय कत्था – हिन्दी, अंगरेजी अरा नगपुरिया ती अरब'रा दरा पुटसी निनास होअ़आ लगी। अवंगे कत्था अरा खोंड़हन बछाबअ़आ गे नमन खोंड़हा मइनतन टूड़र क़ी उइनम मनो, तबेम नाम इबड़न बछाबआ ओंग्गोत। गोट्‌टे ख़ेःख़ेल राःजी नु एका खोंड़हा तमहँय कत्थन टूड़ियर उइय्यर आःरिम इन्ना ता बेड़ा नु परिदका खोंड़हा बाःतारआ लगनर अरा एका खोंड़हा तर तमहँय कत्थन टूड़र उइय्या पोल्लर आर गही कत्था मेटेरआ लगी। ई चड्‌डे तंगआ अयंग कत्थन ख़ोःजा अरा अदी गही महबन पर्दआ गे ओन्टा जुदम कत्थ एःख़ (लिपि) गही मइनता चिअ़ना हूँ अकय चाँड़ रअ़ई।

लिपि एका बेसे मनना चही ?

अक्कुन ता बेड़ा विज्ञान ता बेड़ा तली। अक्कुन ता नलख मशीन गही मदइत ती चाँःड़े–चाँःड़े दव कुना मनी। नमन अक्कुन ता बेड़ा नु डहरे एःका ओंग्गना दरा मषीन गने धरतारना बेसे नलख ननना चही। इदी गनेम तंगआ मूली कत्थन, मूली चाःलोन उइना मनो। परिदका राजी ता आलर ओन्टा एन्ने कम्प्यूटर कमचका रअ़नर का आद आलर गही कत्थन मेनर की टूड़ी चिअ़ई (वर्ल्ड दिस वीक, दिनांक 11.03.1994 ई0)। कत्थन टूड़ा गे मषीन नु ख़ेक्खन बेःचताअ़ना गही दरकार मल मनी। ईद ओन्टे सड़ा ओन्टे चिनहाँ, आईन नु र'ई। अवंगे भखा पण्डितर बअ़नर का पुना लिपि एन्ने मनना चही का आद ओन्टे सड़ा ओन्टे चिनहाँ आईन नु ओक्कनन नेकआ। टूड़ा गे आद सरनन नेकआ। अदी गही एःख़ किय्या का मइय्या मल ओक्कना चही अरा टूड़ो बारी ओण्टा ख़ोःख़ा ओण्टा ओक्कना (one by one) चही। अख़आ गे देवनागरी लिपि नु लिपि बक्क टूड़ा गे मुन्ध नु लि अदी ख़ोःख़ा पि टूड़ना मनी। मून्धता लि नु उरमी ती

मुन्ध ह्रस्व इ ही मात्रा (ि) टूड़ना मनी अदी ख़ोःख़ा ल टूड़तार'ई एकदन भाखा विज्ञान दव मल बद'ई, एन्देरगे का लि फुरचारना नु ल ही ख़ोःख़ा इ हहस बरई, पँहेस टूड़ो बाःरी ि (इ) ही ख़ोःख़ा ल टूड़तार'ई। एन्नेम, बग्गे ती बग्गे हहसन जुक्की चिनहाँ ती टूड़ा ओङगना बेसे चिन्हाँ उइतारना चही। अदी गने ई पुना चिन्हा तुरू, खोंड़हा चाःलोन उजगो ननना बेसे मनना चही। मुंज्जा नु एन्ने मनना चही का कत्थन एका बेसे कछनखरतार'ई अन्नेम टूड़ताःरना चही अरा एका बेसे टूड़का रअ़ई अन्नेम कछनखरताःरना चही। इदी गनेम ईःद मषीन नु हूँ दव कुना ओक्कतारआ ओङगनन नेकआ।

तोलोङ सिकि (तोलोङ लिपि) :–

तोलोङ सिकि मलता तोलोङ लिपि ओण्टा वर्णात्मक लिपि तली। ई लिपि तिके कुँड़ुख़ कत्थन दव कुना टूड़ा अरा बचआ ओङतार'ई। इदिन बेद्द ओथोरआ गे कुँड़ुख़ खोंड़हा ता नेःगचार, चाःलो अरा मइनतन डींड़ उईका रअ़ई। कुँड़ुख़ खोंड़हा ता आःलर एका बसे नितकी उल्ला गोहला उइनर का एका बेसे असमा मेक्खनर, का एका बेसे गुण्डा कसनर, का एका बेसे पुजा–धजा ननो बारी ख़ेक्खन किन्दराअ़नर, अबड़न दिम एःरर की लिपि चिनहाँ उइतारकी रअ़ई। डण्डा कट्टना नेग नु एका बेसे चिनहाँ कमतार'ई अदी लेखम नेंव अरा डींःड़ उइका रअ़ई। खोंड़हा ता इबड़ा चिनहन तोलोंग अत्तना–पुन्दुरना नु एका बेसे चिनहाँ कमतार'ई आ बेसेम उरमिन हेःचका रअ़ई।

ई लेखे ख़ल्ल–उखड़ी, पद्दा–ख़ेप्पा, टोड़ंग–परता, टोला–पड़ा, एड़पा–पल्ली, अखड़ा–खूरी, नाल–टोंका गुट्ठी अड्डा ती अनआ–मनआ चिनहाँ ख़ोःजतारा। अदी ख़ोःख़ा मूली हहसन ख़ोंःड़'अर, अदी गही बराबरी नु ओन्टा चिनहाँ उइताःरा। मूली सड़न ख़ोंःड़आ गे अक्कुन गूटी ता कुँड़ुख़ लूरगरियर गही टूड़का पुथिन डींड़ उईतारना मंज्जा। इदी ख़ोःख़ा ध्वनि विज्ञान गही अईन लेखेम इदिन सरियाअ़ना की उइना मंज्जकी रअ़ई। मशीन नु ओकत'आ गे 22 Segment Display System नाःमे ही ओण्टा फरमा कमअर अइय्या चिनहन ओकताचका रअ़ई। ई फरमन कमआ गे कुँड़ुख़ खोंड़हा ता ''डण्डा कट्टना नेःग चिनहन डींड़ उइका रअ़ई। इदी ख़ोःख़ा एका सड़ा गही बेहवार बग्गे मनी अदी गे सेब्बा चिन्हाँ उइका रअ़ई अरा बग्गे ती बग्गे चिनहन इन्नलता घड़ी ही किन्दरारना ती बिड़दो (anticlockwise direction) उईका डहरे नू उइका रअ़ई। एन्देर गे का कुँड़ुख़ खोंड़हा नु उज्जना गूटी ता उरमी नेःगचार घड़ी ही बिड़दो डहरे नु ननतार'ई। ख़ेःख़ेल हूँ बीःड़ी गही चउगुड़दी किन्दरारओ बाःरी घड़ी ही बिड़दो डहरे नु किन्दरार'ई। लड़ंग हूँ डाःड़ा नू अरगो बाःरी घड़ी ही बिड़दो डहरे नु किन्दरारनुम अरगी। बइरबण्डो हुँ घड़ी ही बिड़दो डहरे नुम किन्दरार'ई अरा अम्म भँवरी हुँ इन्नलता (आधुनिक) घड़ी ही बिड़दो नुम किन्दरार'ई। इबड़न दिम एःरर की कुँड़ुख़ पुरखर उरमी नेःगचार गुट्ठिन तीःना ती डेब्बा, घड़ी ही बिड़दो डहरे नु ननना ओःरे नंज्जर। तोलोङ नाःमे ही पइत्त नु बातार'ई का – एका बाःरी कुँड़ुख़ पुरखर तमहँय जिया–कयन बछाबआ गे मलता लज्जे डबआ गे अतख़ा का बोकला गुट्ठीन पोजोरआ हेल्लरर आ बाःरी ती इन्नलता अत्तना–पुन्दुरना किचरी–डोड़्डो कमरना गूःटी ही इतिङख़ीरी ख़ोःजर'की रअ़ई। कुँड़ुख़ खोंड़हा नु तोलोङ एँड़ मधे मनी – 1. सरङाधरी तोलोङ अरा 2. ढंका तोलोङ।

ढंका तोलोङन कड़मा नु पोजोरना ती एका बेसे किचरी ही छया–भया ईथिर'ई, आ बेसेम सिकि चिनहाँ इथिर'ई अवंगे आ बेसेम सिकि चिनहाँ उईतारकी बि'ई। ई लेखे ई पुना सिकिन (लिपि) इंजिरओ बाःरी कुँड़ुख़ ख़ोंड़हा ही इतिङख़ीरी, नेःगचारन, मशीन गही अईनन अरा भखा विज्ञानन दव कुना गुनईन ननर किम डहरे ओथोरतारकी रअ़ई

हुदा कत्था (विशेषताएँ) :–

(1) तोलोङ सिकि (लिपि) सँवसे कुँड़ुख़ खोंड़हा अरा कुँड़ुख़ चाःलोन डींःड़ उईयर ख़ोःजतारकी रअ़ई। नाम भारत देश नु ढेर बग्गे भखा अरा लिपि ती अरबरका रअ़दत। अवंगे, कुँड़ुख़ खोंड़हा गही एकता अरा परदना गे

कुँड़ुख़ कत्था अरा कुँड़ुख़ लिपि गही हुही दिम कुँड़ुख़ारिन ओन्टे मेःर नु हेओ।

(2) इदी गही तोड़न (वर्णमाला) भाषा विज्ञान नु तिङगका डहरे बेसेम उईतारकी रअ़ई।

(3) कुँड़ुख़ कत्था गही 72 गोटङ मूली हहस (सरह – 36 अरा हरह – 35+1) रअ़ई अदिन 41 गोटङ मूली सिकि (लिपि) चिनहाँ अरा 36 गोटंग पँड़सु चिन्हाँ ती दव कुना टूड़तार'ई। कुँङख़ कछनखरना नु 35 गोटंग हरह गने 1 (ओन्टे) हेचका हरह अरा 36 गोटंग सरह हहस मनी। ई सिकि नु मूली चिन्हाँ 41 गोटङ एका मनी। इदिन जोक्खा नना गे डण्डा कट्टना नेग चिन्हा नु कमरका चिन्हा नु नतगरका डींड़ (30 गोटंग) अरा हेःरका अड़्डा (11 गोटंग), जोःड़ना ती 30 + 11 = 41 दिम मनी। अन्नेम पुजा ननो बाःरी बिरही अरा संजगी लग्गी, अबड़द संगरा चिन्हा ही जोक्खा तली।

(4) ई सिकिन पर्दआ गे केन्दीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर अरा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची, विष्वविद्यालय राँची ता लूरगढ़ियर ती सलहा ख़खरकी रअ़ई।

(5) इदि गे झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची ती सलहा ख़खरकी रअ़ई।

(6) ई सिकि गही कम्प्यूटरीकरण मंज्जा दरा इदी ही सॉफ्टवेयर, इन्टरनेट नु ख़खरआ लगी। इदिन www.tolongsiki.com मलता www.kurukhtimes.com ती डाउनलोड ननतारआ उंग्गी।

(7) तोलोङ सिकि झारखण्ड अरा पष्चिम बंगाल राःजी नु कुँड़ुख़ कत्था गही लिपि बअर अंगियारतारा अरा स्कूल नू टूड़ना–बचना ओःरे ननतारआ लगी।

(8) इदिन कार्मिक, प्रषासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार ही पत्रांक 129 दिनांक 18.09.2003 तुले ''कुँड़ुख़ कत्था ही लिपि तोलोङ सिकि तली'' बअर मइनता ख़खरकी रअ़ई दरा संविधान ही 8वीं अनुसूची नु मंक्खा गे केन्द्र सरकार, गृह विभाग गुसन तईका रअ़ई।

(9) इदिन, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची गही प्रेस विज्ञप्ति संख्या 17/2009 दिनांक 19.02.2009 तुरू ओण्टा स्कूल (कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला) गे, उरमी ती मुंद्ध वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 नु परीक्षा टूड़ा गे मईनता चिताःरा।

(10) झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची ही अधिसूचना सं0 – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 नेड़्डा 12.02.2016 तुरू वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2016 ती परीक्षा टूड़ा गे मईनता चितारकी रअ़ई। मइनता ख़खरका ती एँड़ गोटंग मेच्छा लूरकुड़िया तर कुँड़ुख़ भखा गही परीक्षा तोलोंग सिकि नुम लिखचर दरा मैटरिक पास नंज्जर।

(11) नेड़्डा 29.05.2016, उल्ला – एतवार गे कुँड़ुख़ (उराँव) कत्था गही परदना तूक ती कुँड़ुख़ लूरगरियर तरती तोलोङ सिकि कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि, झारखण्ड ही संगोठ मंज्जकी रअ़ई। ई संगोठ ही बईसकी नु बेड़ा सिरे ता उरमी कत्थन गुनईन ननर की टेक्स्टबुक कमिटि सराजमा कत्थन इंजिरताःरा दरा नलख चलाबअ़उ कमची ही गढ़ईन ननताःरा।

(12) राँची विष्वविद्यालय, राँची गही अधिसूचना संख्या – B / 1236 / 16 दिनांक 26.09.2016 ती जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग ही विभागाध्यक्ष गही एःरना ख़ोजना नु ओण्टा विषेष सेल गही गढ़ईन (गठन) मंज्जकी रअ़ई, एकदद संताली भाषा ही लिपि – ओल चिकि, हो भाषा की लिपि – वराङ चिति अरा कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा ही लिपि – तोलोङ सिकि नु टूड़ना–बचना गही डहरेन पंग्गे नना गे नलख ननो।

(13) प0 बंगाल सरकार, फरवरी 2018 नु कुँड़ुख़ कत्थन ऑफिसियल लैंगवेज गही मइन्ता चिच्चा अरा कुँड़ुख़ कत्था गही लिपि तोलोंग सिकि बअर इंज्जरा।

(14) ई सिकि ती जमषेदपुर अरा चाईबासा ता कुँड़ुख़र, टिस्को कम्पनी ही साक्षरता अभियान नलख गने जोड़ोरअर कुँड़ुख़ कत्था अरा तोलोंग सिकिन सिखिरआ दरा बींःड़आ लगनर।

(15) असम, प0 बंगाल, ओड़िसा, छतीसगढ़, मध्यप्रदेष अरा महारष्ट्र (नागपुर) ता कुँड़ख़र ई सिकि नु तमहय अड्डा लेखआ पुथी कमअर, ई सिकिन बींःड़आ लगनर। ।

तोलोङ सिकि : एक परिचय

तोलोङ सिकि एक लिपि है। इसे आदिवासी भाद्दााओं के विकास के लिए विकसीत किया गया है। लिपि के प्रारूपण में मध्य भारत के मुख्य आदिवासी भाषाओं की ध्वनियों को आधार माना गया है। लिपि चिह्नों के संकलन हेतु हल चलाते समय बनी हुई आकृतियाँ, परम्परागत पोषाक तोलोङ, पूजा अनुष्ठान में खींची गयी आकृतियाँ, डण्डा कट्टना पूजा अनुष्ठान चिह्न तथा दीवारों में बनायी जाने वाली आकृतियाँ एवं खेल–खेल में खींची जाने वाली रेखाएँ, लिपि चिह्न का मुख्य आधार है। साथ ही आधुनिक तकनीक में खरा उतरने हेतु गणितीय चिह्न जोड़, घटाव, गुणा, भाग, वृत, आयत, वर्ग आदि को भी आधार माना गया है। तोलोङ एक प्रकार का मर्दाना पोषाक है, जिसे कमर में लपेट–लपेट कर पहना जाता है। यह तोलोङ शब्द कुँड़ुख़, मुण्डा, खड़िया, हो, संताली आदि सभी भाषाओं में उभयनिष्ट है। सिकि का अर्थ लिपि है। इस प्रकार तोलोङ सिकि का अर्थ तोलोङ लिपि है।

कुँड़ुख़ भाषा के लिए नई लिपि की आवश्यकता क्यों ?

भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि किसी भी भाषा के दो विकसित रूप हैं :–

(1) Verbal Speech या कान की भाषा।
(2) Visual Speech या आँख की भाषा।

कान की भाषा प्रकृति प्रदत है तथा यह परिवर्तनषील है। आँख की भाषा सभ्यता की देन है तथा यह किसी भी भाषा को स्थिरता प्रदान करता है। वैज्ञानिकों का मानना है स्थिर स्वरूप के बिना बोली का स्थायित्व नहीं होता है। स्थिरता प्रदान करने वाला रूप ही आँख की भाषा है। अतएव आँख की भाषा अर्थात लिपि चिह्न का विकास किया जाना आवष्यक है। जिस किसी समाज ने आँख की भाषा को अपनाया, वह वर्तमान समाज में अगली पंक्ति पर खड़ा है।

कुँड़ुख़ भाषा के पास अबतक सिर्फ प्रथम स्वरूप है, जिसके चलते यह भाषा अपनी परिवर्तनषील प्रकृति के अनुसार ही गतिषील है। अर्थात यदि इसे स्थिरता प्रदान करने का उपाय नहीं किया गया तो यह अपनी प्राकृतिक मौत

की ओर अनायास ही बढ़ती चली जायेगी। अतः जबतक भाषा को स्थिरता प्रदान करने वाला रूप यानि लिपि नहीं दिया जायेगा तबतक इसे बचा पाने में कठिनाई होगी।

तोलोङ सिकि (लिपि) ही क्यों ?

उपलब्ध कुँड़ुख़ साहित्यों के अवलोकन से पता चलता है कि पूर्व में ईसाई मिषनरियों ने कुँड़ुख़ भाषा के लिए सर्वप्रथम रोमन लिपि का व्यवहार किया। उसके बाद देवनागरी लिपि का व्यवहार किया जाने लगा। वर्तमान में महाविद्यालों में कुँड़ुख़ भाषा का पठन–पाठन का माध्यम देवनागरी लिपि रहा है। इस परिस्थिति में एक नई लिपि तोलोङ सिकि को स्वीकार करने की बात जनमानस को कचोटती है कि – एक नई लिपि की षुरूआत क्यों की जाय ? इस समस्या का समाधान, निम्न प्रष्नों के उत्तर में निहीत है। हम सभी स्वयं से प्रष्न करें :–

(1) क्या, उपरोक्त लिपियाँ (रोमन एवं देवनागरी) कुँड़ुख़ भाषा के लिए उपयुक्त हैं ?

(2) क्या, ये दोनों लिपियाँ कुँड़ुख़ भाषा की सभी ध्वनियों को प्रतिनिधित्व करती हैं ?

(3) क्या, ये दोनों लिपियाँ कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति की मूलता को बरकरार रख पाएंगी ?

(4) क्या, उपरोक्त लिपियाँ कुँड़ुख़ समाज एवं संस्कृति हो प्रतिविम्बित करती हैं ?

(5) क्या, उपरोक्त लिपियों से कुँड़ुख़ भाषा एवं समाज को भूमण्डलीकरण का दबाव एवं आदिवासी समाज के चारों तरफ का revers force के दबाव से बचाया जा सकेगा ?

इन सभी प्रष्नों का उत्तर है – नहीं। यदि इन प्रष्नों का उत्तर उपरोक्त लिपियाँ नहीं है, तो सही उत्तर क्या है ? इन सभी प्रष्नों का सही उत्तर है – ''तोलोङ सिकि''।

तोलोङ सिकि का आधार कुँड़ुख़ भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज एवं मान्यता है। इसमें कुँड़ुख़ भाषा की सभी मूल ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्न (लिपि चिह्न) है। यह कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति की मूलता को बरकरार रखने में सक्षम है। यह भूमण्डलीकरण के कुप्रभाव से बचने के लिए प्रतिरोधक का कार्य कर सकता है। साथ ही यह भूमण्डलीकरण के दबाव के बीच कुँड़ुख़ सभ्यता, संस्कृति को दूसरे बड़े समुदाय के बीच नेत्रग्राह्य बनाएगा। इतिहास की ओर मुड़कर देखने से पता चलता है कि रोमन लिपि का इतिहास रोमन सभ्यता से है तथा देवनागरी लिपि का इतिहास वैदिक सभ्यता से। इस प्रकार इन दोनों में कुँड़ुख़ सभ्यता अथवा आदिवासी सभ्यता की झलक लेष मात्र भी नहीं है। अतएव वर्तमान में रोजगार एवं तकनीकी षिक्षा हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी को अपनाया जाना आवष्यक है तथा अपनी भाषा–संस्कृति को बरकरार रखने के लिए अपनी मातृभाषा को पठन–पाठन का आधार बनाकर आगे बढ़ना भी आवष्यक है।

इन तीनों के लिए राष्ट्रीय षिक्षा नीति मे त्रिभाषा फार्मूला को स्थान दिया गया है। साथ ही झारखण्ड सरकार ने भी इस फार्मूला को लागू किया है। अब बारी समाज की है कि आगे कैसे बढ़ें ?

विषेषताएँ :–

(1) तोलोङ सिकि या तोलोङ लिपि, कुँड़ुख़ समाज एवं कुँड़ुख़ संस्कृति को आधार मानकर विकसित हुई है।

(2) इस लिपि का वर्णमाला का निर्धारण, अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान में बतलाये गये दिषा–निर्देष के अनुसार किया गया है।

(3) कुँड़ुख़ भाषा के बोलचाल में लगभग 72 ध्वनियों का व्यवहार होता है। जिसे 41 मुख्य लिपि चिह्न एवं 36 सहायक चिह्न के योग से लिखा जा सकता है। इनमें से 36 व्यंजन ध्वनि (35 मूल व्यंजन तथा 1 व्यंजन अ़ ध्वनि) एवं 36 (मूल एवं संयुक्त) स्वर ध्वनि है।

(4) इसे जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची, विष्वविद्यालय राँची के प्राध्यापकों का मार्ग दर्षन प्राप्त है।

(5) इसे झारखण्ड जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, राँची के विद्वत्‌जनों का मार्गदर्षन प्राप्त है।

(6) इस लिपि का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है तथा सॉफ्टवेयर, इन्टरनेट में उपलब्ध है। सॉफ्टवेयर डिजाएनर श्री किसलय जी ने वर्ष 2002 में KellyTolong Font के नाम से कम्प्यूटर वर्जन विकसित किया तथा वर्ष 2020 में अद्यतन रूप प्रकाषित किया गया है, जो आदिवासी समाज तथा पूरे मानव समाज को निःषुल्क समर्पित है। इसे www.tolongsiki.com से डाउनलोड किया जा सकता है।

(7) इसे झारखण्ड के कुँड़ुख़ लोग, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप स्वीकार किया है तथा वर्ष 1999 से ही गैर सरकारी स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई किया जाता रहा है।

(8) इसे झारखण्ड सरकार ने सितम्बर 2003 में कुँड़ुख़ भाषा में मान्यता देते हुए केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को संविध ाान की 8वीं अनुसूची में षामिल किये जाने हेतु भेजा जा चुका है।

(9) इस नई लिपि से मैट्रिक परीक्षा में परीक्षा लिखने के लिए झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा 19 फरवरी 2009 को एक स्कूल को मान्यता प्राप्त हुआ।

(10) झारखण्ड अधिनियम संख्या 29, 2011 विधि विभाग, अधिसूचना, दिनांक 18 नवम्बर 2011 द्वारा झारखण्ड में 12 द्वितीय राजकीय भाषाओं में से कुड़ुख़ (उराँव) भाषा की भी द्वितीय राजकीय भाषा की मान्यता प्राप्त है।

(11) इसे झारखण्ड सरकार युवा, संस्कृति एवं खेल मंत्रालय की ओर से 28 अक्टुवर 2011 को ''तोलोंग सिकि'' लिपि के अनुसंधान हेतु डॉ0 नारायण उराँव सैन्दा को सांस्कृतिक सम्मान – 2011 प्रदान किया गया है।

(12) दिनांक 30.11.2015, दिन सोमवार को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची के सभागार में बिषप डॉ. निर्मल मिंज की अध्यक्षता में कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक शब्दावली शब्द भण्डार का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में डॉ. के. सी. टूडू, डॉ. हरि उराँव, डॉ. (श्रीमती) उषा रानी मिंज डॉ. फ्रांसिस्का कुजूर, डॉ. एच. एन. सिंह, डॉ. नारायण भगत, डॉ. रामकिषोर भगत, डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा', फा. अगस्तीन केरकेट्टा, श्री अषोक कुमार बाखला, श्री जिता उराँव श्री सरन उराँव, श्री बन्दे खलखो, श्री तेतरू उराँव एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के बहुत सारे छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। उपस्थित सभी भाषा विषेषज्ञों एवं षिक्षाविदों ने पारिभाषिक षब्दावली (तीन लिपि – देवनागरी लिपि, रोमन लिपि एवं तोलोंग सिकि में लोकार्पित) के गुण–दोषों एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए इसकी आवष्यकता आदि तथ्यों पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए जनसाधारण के व्यवहार के लिए कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक षब्दावली षब्द भण्डार को लोकार्पित किया गया।

(13) झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अधिसूचना संख्या – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 दिनांक 12. 02.2016 द्वारा वर्ष 2016 से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा पत्र को तोलोङ सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई है।

(14) दिनांक 29 मई 2016, दिन रविवार को कुँडुख़ (उराँव) भाषा के विकास हेतु कुँडुख़ भाषी बुद्धिजीवियों द्वारा तोलोङ सिकि कुँडुख़ (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि, झारखण्ड का गठन किया गया। बैठक में, सभी संबंधित विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए टेक्स्टबुक कमिटि के प्रस्ताव को अनुमोदित एवं स्वीकृत किया गया तथा कार्यकारिणी कमिटि का गठन किया गया।

(15) वर्ष 2016 की मैट्रिक परीक्षा में कुँडुख़ विषय को तोलोङ सिकि (लिपि) में लिखने की अनुमति मिलने पर दो उच्च विद्यालय के छात्रों ने तोलोङ सिकि में परीक्षा लिखी और वे पास हुए।

(16) राँची विष्वविद्यालय, राँची के अधिसूचना संख्या – B/1236/16 दिनांक 26.09.2016 द्वारा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष के देखरेख में एक विषेष सेल का गठन हुआ है, जो संताली भाषा की लिपि – ओल चिकि, हो भाषा की लिपि – वराङ चिति तथा कुँडुख़ (उराँव) भाषा की लिपि – तोलोङ सिकि में पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेगी।

(17) दिनांक – 21 फरवरी 2017 दिन मंगलवार को अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने कोलकाता में कुँडुख़ भाषा एवं तोलोङ सिकि, लिपि को आधिकारिक तौर पर सरकारी कामकाज की भाषा का दर्जा दिये जाने की घोषणा कर दुनियाँ के लगभग 50 लाख कुँडुख़ (उराँव) लोगों के भाषायी एवं सांस्कृतिक धरोहर को संजोने में अभूतपूर्व फैसला लिया है। कुँडुख़ भाषियों ने, आदिवसियों के हित में किये गये फैसले का स्वागत किया और सरकार के कार्य को धन्यवाद ज्ञापित किया।

(18) दिनांक 08 फरवरी 2017 को पष्चिम बंगाल सरकार ने पष्चिम बंगाल भाषा अधिनियम, बिल पास कर दिया, जिसके अनुसार राज्य में आधिकारिक तौर पर बंगला, उर्दू, ओड़िया, हिन्दी, नेपाली, संताली, पंजाबी के साथ कुँडुख़ भाषा एवं तोलोङ सिकि (लिपि) को आधिकारिक दर्जा दिये जाने की घोषणा कर दुनियाँ के लगभग 50 लाख कुँडुख़ (उराँव) लोगों के भाषायी एवं सांस्कृतिक धरोहर को संजोने में अभूतपूर्व फैसला लिया है।

(19) दिनांक 17 मार्च 2018 को तोलोङ सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म : लकीरें बोलती हैं! का लोकार्पण।

(20) Shri. James Kujur (Minister, Tribal Development, West Bengal) & his speech - On 21st Feb, 2018 International Mother Tongue Day/ Bhasa Diwas was celebrated in Nuniadaga, Hooghly (West Bengal) being organized by Shri. Supriyo Kora (Toppo) & Friends. At 8 A.M. more than 5000 Adivasi took out rally in their traditional attire. The entire day cultural programme was being observed and thoroughly enjoyed till 8P.M. Shri. James Kujur-Minister, was the Chief guest and gave his speech in Kurukh Language praising Dr. Narayan Oraon Sainda for inventing Tolong Siki, i.e., Kurukh Script and Mamata Banerjee, Chief Minister, West Bengal for her unconditional support for giving recognition to Kurukh Language as one of the official language. Other Guests were from Kurukh Literary Society of India (KLSI), Kolkata Chapter namely Smt. Sushila Lakra (Chapter Chief), Shri. Mahesh Minz (Secretary), Shri. Thaddeus Lakra (Ex- Chapter Chief) delivered their valuable speeches. Shri. Francis Tirkey, Shri. George Tirkey, Shri. Manik Kishore Tirkey (Vice-President), Kuldeep Minz (Assistant Treasurer), Shri. & Smt. Sukirti Tirkey, Binita Lakra, Smt. Mariam Tirkey were also present on that occasion.

(21) प. बंगाल सरकार में 01 जून 2018 से कुँडुख़ भाषा को राज्य का 8वाँ official language का दर्जा प्राप्त है।

(22) दिनांक 28 दिसम्बर 2018 को तोलोङ सिकि पर बनी मोबाईल एप्प का लोकार्पण हुआ।

(23) दिनांक 21.02.2019 दिन गुरूवार को, अद्दी अखड़ा (संस्था) के संयोजन में आधुनिक कुँड़ुख़ व्याकरण नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। सांसद, श्री समीर उराँव ने पुस्तक की समीक्षा की। इस पुस्तक के लेखक डॉ0 नारायण भगत एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' है।

(24) दिनांक 02.06.2019 दिन रविवार को, आदिवासियों की घटती जनसंख्या एवं भाषा सेमिनार में झारखण्ड सरकार, कल्याण विभाग द्वारा तोलोङ सिकि में प्रकाषित पुना चन्ददो भाग–1 का लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक का संकलन कुड़ुख़ टेक्स्टबुक कमिटी द्वारा किया गया है।

(25) दिनांक 15.07.2019 दिन सोमवार को सांसद श्री समीर उराँव ने राज्यसभा में कुँड़ुख़ भाषा को संविधान की 8वी अनुसूची में षामिल किये जाने की मांग की। उन्होने कहा कि कुँड़ुख़ की अपनी विषिष्ट संस्कृति एवं लिपि है।

(26) दिनांक 15.10.2019 दिन मंगलवार को ऐतिहासिक मुड़मा जतरा के समापन समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास द्वारा कुँड़ुख़ भाषा के विकास हेतु विकसित प्राथमिक पुस्तक पुना तुंगुल (नया स्वप्न) का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक देवनागरी लिपि, रोमन लिपि एवं तोलोंग सिकि में लिखी गई है। इस पुस्तक के लेखक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' है।

(27) दिनांक 18 दिसम्बर 2020 को तोलोङ सिकि पर बनी kurukhtimes.com वेब पत्रिका का लोकार्पण एवं पुना बीनको भाग 2 से भाग 5 तक तोलोंग सिकि तथा देवनागरी लिपि में छपे पुस्तक का विमोचन डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची एवं अद्दी अखड़ा, राँची के संयुक्त तत्वाधान में लोकार्पित हुआ।

(28) 16 फरवरी 2022 को ग्राम सैन्दा, सिसई, गुमला में धुमकुड़िया प्रवेश दिवस मनाया गया। तथ्य है कि पूर्व में प्रत्येक उराँव (कुँड़ुख़) गाँव में पड़हा, अखड़ा धुमकुड़िया हुआ करता था। यहाँ बच्चे 7 वें साल के उम्र से विवाह पूर्व तक उठते–बैठते तथा अपना जीवन जीने के तरीके अथवा ज्ञान सीखते थे। आधुनिक स्कूल के विकास के बाद यह केन्द्र सिमट गया। पर वर्तमान में इसकी आवश्यकता है। यहाँ मौखिक भाषा के साथ लिखित भाषा के रूप का प्रचलन होने से यह जगेगा और लोग गाँव घर में पहते हुए अपने भाषायी ज्ञान से हिन्दी तथा अंगरेजी शिक्षा में पहूँच पाएंगे।

(29) दिनांक 12 मार्च से 14 मार्च 2022 तक ऐतिहासिक पड़हा जतरा खुटा शक्तिस्थल, मुड़मा, राँची में अवस्थित सांस्कृतिक भवन में तीन दिवसीय कार्यषाला मातृभाषा षिक्षा सह कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया सम्पन्न हुआ। इस कार्यषाला में झारखण्ड, प०बंगाल, ओडिसा, छतीसगढ़ तथा पड़ोसी देष नेपाल से कुँड़ुख़ भाषा प्रेमी उपस्थित थे। यह कार्यषाला टाटा स्टील फाउण्डेषन, जमषेदपुर के तकनीकी सहयोग तथा अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), राँची एवं राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, भारत, मुड़मा, राँची के संयुक्त संयोजन में सम्पन्न हुआ।

(30) दिनांक 03 अक्टुबर 2022 दिन सोमवार को ऑल कुँड़ुख़ स्टूडेन्ट यूनियन, असम द्वारा आयोजित एक दिवसीय ''तोलोंग सिकि प्रशिक्षण कार्यशाला'', तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ० नारायण उराँव की उपस्थिति में सम्पन्न।

(31) दिनांक 20.11.2022 दिन रविवार को अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), राँची की विशेष बैठक अद्दी अखड़ा उप कार्यालय, चिरौन्दी में माननीय अध्यक्ष श्री जिता उराँव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि के विकास हेतु यूनिकोड विकास के लिए डॉ. नारायण उराँव द्वारा तैयार किया गया फॉनेटिक चार्ट को कैलिफॉरनियाँ विष्वविद्यालय, अमेरिका के यूनिकोड डिजाइनर श्री अंशुमन पाण्डेय को भेजे जाने का निर्णय लिया गया।

*****

11. नई लिपि की परिकल्पना एवं लिपि विकास का महत्वपूर्ण घटनाक्रम

. .....वर्ष 1989 में जिस समय डॉ0 नारायण उराँव, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में एम.बी.बी.एस. की परीक्षा पास कर इंटर्नशीप कर रहे थे। उनका इंटर्नषीप अवधि फरवरी 1989 से फरवरी 1990 तक था। उस समय उन्होंने आदिवासी समाज के कई सामयिक प्रष्नों के प्रत्युत्तर में एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है – सरना समाज और उसका अस्तित्व। इन्टर्नशीप के दौरान ही उन्होंने वर्ष 1989 में ही उक्त पुस्तक का प्रकाशन करवाया। इस पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन के मध्य नई लिपि की आवश्यकता एवं उपयोगिता महषूस हुई। इस पुस्तक को लिखते समय उनके मन में कई प्रश्न उठे – 1. साधारणतया लोग आदिवासियों को छोटी जाति और कमजोर क्यों समझते है ? 2. ऊँची जाति कहलाने वाले लोग कौन हैं और उनकी पहचान क्या है ? 3. आदिवासी लोग, मानसिक कुण्ठा का शिकार क्यों हो जाते हैं ?

इन ग्रंथियों को दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक था कि आदिवासियों को छोटा समझने वाले लोग कौन हैं और उनकी पहचान क्या है ? कहीं, यह सामंतवादी ताकत का असर तो नहीं ? दूसरी ओर यह तथ्य है कि आदिवासी समाज के पास अभी भी बहुत सारे ज्ञान भण्डार हैं, जिसे पूरी दुनियाँ को बतलाया नहीं जा सका है। जिस दिन इस ज्ञान उर्जा को संचित एवं विकसित कर विकसित समाज के समक्ष रखा जाएगा, उसी दिन यह हीन ग्रंथि हम सभी से दूर होगी।

इस उधेड़बुन में अस्पताल में कार्य करते हुए उनका ध्यान दो चीजों पर पड़ा –

1. माला डी – गर्भ निरोधक गोली की पर्ची।
2. 100 रूपया का नोट।

(इसमें कई लिपियों में एक ही नाम को अलग–अलग तरीके से लिखा हुआ था। इसे देखकर उनका हृदय रोमांचित हो उठा और सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे आदिवासी भाषा एवं सांस्कृतिक धरोहर को बचाने की कड़ी की माला में एक फूल पिरोने का कार्य आरंभ किया।

ईश्वरीय प्रेरणा से उनको आभास हुआ कि यदि आदिवासियों की भाषा की भी अपनी लिपि होती तो इन पर्चियों में आदिवासियों की भाषा भी दर्ज होती।)

12. ''वर्ष 1989 में मेरी एक पुस्तक ''सरना समाज और उसका अस्तित्व'' दरभंगा, बिहार से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के छपते–छपते तथा अस्पताल में कार्य करते हुए मेरे मन में एक विचार आया कि यदि हमारी भाषा की भी लिपि होती तो हमलोग भी अपनी भाषा की लिपि के माध्यम से किताबें छापते। यह विचार मेरे मन में बैठ गया और अपनी डायरी में अनायास ही कुछ आकृतियाँ बनाने लगा और 6 महीने के जद्दोजहद से एक वर्णमाला तैयार किया, परन्तु इसे समाज के सामने लाने में हिचकिचाहट थी। ये बातें किताब के रूप में आगे नहीं बढ़ पाया। मैं अपने रोजगार की तलाश में जुड़ गया और 06 नवम्बर 1990 को चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में बिहार सरकार, स्वास्थ्य विभाग में योगदान दिया। इस तरह 1990 का अधिकतर समय अपने रोजगार प्राप्ति में बिता, किन्तु समय निकालकर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि विषय पर कार्य कर लिया करता रहा।'' – डॉ० नारायण उराँव, डी.एम.सी.एच. लहेरियासराय।

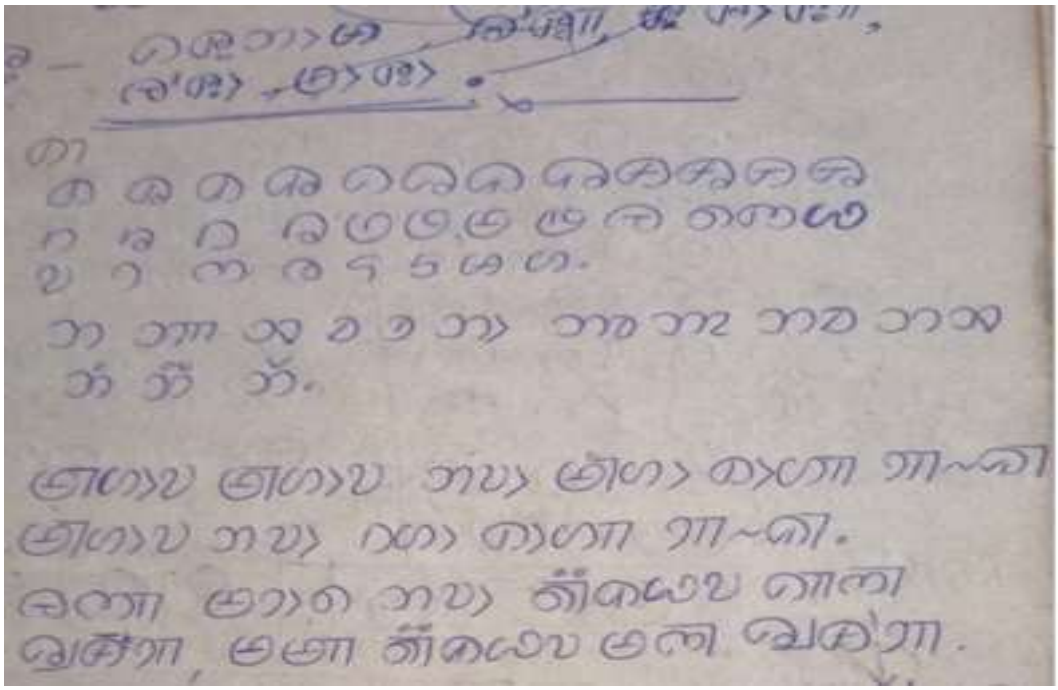

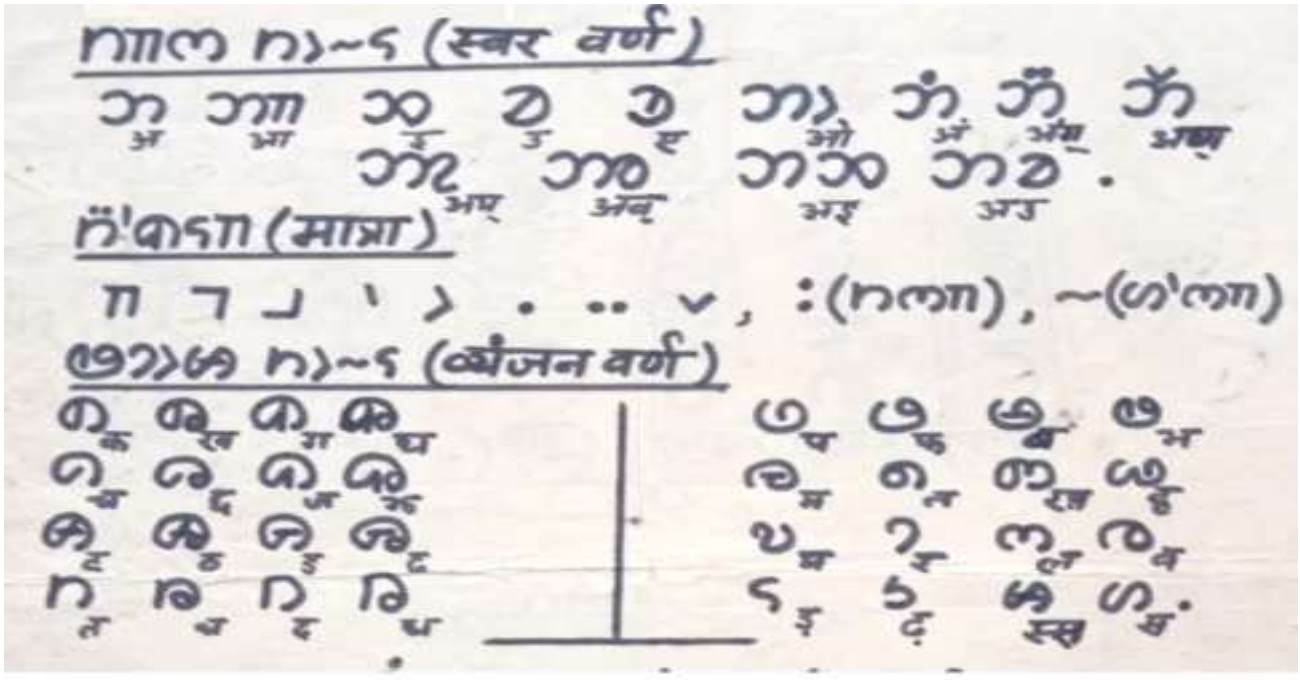

13. श्री भुनेश्वर उराँव, अपने पुत्र डॉ0 नारायण उराँव को कागज–कलम में गोल–मोल तथा टेढ़ी–मेढ़ी लकीर खींचते देखकर बोले – बेटा, एन्देर नना लगदय ? ख़ने तंगदस बाःचस – कुँड़ुख़ कत्था गे लिपि गढ़आ लगदन। तंगदस गही चिहुँटन एःरर तम्मबस मेंज्जस – इबड़न ने बुझ्रुओ ? तम्मबस गही कत्थन मेनर तंगदस किरताचस – नीन टूड़ा–बचआ एकसन सिखिरकय। ख़ने बबस गच्छरस – स्कूल नु जुनू सिखिरकन। तम्मबस गही किरताचकन मेनर तंगदस बिड़दाचस – ई लिपि हुँ स्कूल नु टूःड़ना–बचना मनो होले ओरमर सिखिरओर का मला ! कत्थन बुझ्रुर'अर बबस आःनियस – एन्ने मनी, होले दव कुना नना।

श्रद्धेय भूनेश्वर उराँव
(डॉ0 नारायण उराँव के पिता)
ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई,
जिला – गुमला (झारखण्ड)

**श्रीमती फूलमनी उराँव, अपने पुत्र डॉ0 नारायण उराँव को अपने पिताजी के साथ बाद–विवद में उलझते देख सामने आयीं और बोलीं – निंग्गन नेखअय ती हुँ एलेचना मल्ला। निम्बस सम्भड़आ पोल्लोस, होले एःन संभड़ओन ! खोंड़हा गही दव नलख खतरी नीन दव नलखन दव कुना नना। धरमे अरा धरमी सवंग निंग्गन डहरे एःदओ दरा पड़हा समाज अरा पड़हा पंच निंगहय नलखन मुन्दहारे होओ।

दरअसल डॉ0 नारायण की माँ एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं और राजी पड़हा, भारत की तत्कालीन उप बेल थीं। जिसके चलते समाज को लोगों के साथ उठने–बैठने से उनको बल मिलता था। डॉ0 उराँव बतलाते हैं कि उनके मजदूर किसान पिताजी मेडिकल कॉलेज में एडमिषन के लिए मना कर दिये थे, क्योंकि मेडिकल का खर्चीला पढ़ाई का खर्च पूरा नहीं कर पाते। इस पर, उनकी माँ ने कहा – नीन कला अउर नाःमे लिखतआ, एःन झरा बीःसा–बीःसा निंग्गन पढ़तोओन। माँ ने अपना वचन पूरा किया और उनका बेटा एम.बी.बी.एस. पढ़ाई पूरा कर डॉक्टर बन गया।

श्रीमती फूलमनी उराँव
(डॉ0 नारायण उराँव की माँ)
ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई,
जिला – गुमला (झारखण्ड)

14. ** वर्ष 1991 में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका में चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर कार्य करते हुए – 'हिन्दी दैनिक – 'हिन्दुस्तान', दिनांक 13 अगस्त 1991 पढ़ा गया। समाचार था – डॉ. मुण्डा संयुक्त राष्ट्र पहुँचे – राँची विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व झारखण्ड आन्दोलन के नेता डॉ. रामदयाल मुण्डा ने अब आदिवासियों के विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा खटखटाया है। दूसरी तरफ भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ में यह कहा कि उसके यहाँ आदिवासी नामक कोई चीज नहीं है। जेनेवा में आदिवासियों के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में भाग लेकर वापस लौटने के बाद डॉ. मुण्डा ने यह जानकारी दी। यह समाचार, डॉ. उराँव के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस उधेड़बुन में उनके मन में तरह–तरह के प्रष्न उठने लगे, जिसका उत्तर ढूँढ़ने हेतु वे आगे बढ़ते गए और रास्ता निकलता गया। (साभार – सरना फूल, सरहुल विषेषांक, राँची, 25 मार्च 1993 ई0।)

प्रश्न – भारत सरकार की नजर में अगर हम आदिवासी नहीं हैं तो क्या हैं ???

1. क्या, हमारे पूर्वज आर्य हैं ?	उत्तर मिला – नहीं।
2. क्या, कुँड़ुख़ भाषा आर्य भाषा परिवार की है ?	उत्तर मिला – नहीं।
3. क्या, हम हिन्दु (धर्म के अर्थ में) हैं ?	उत्तर मिला – नहीं।
4. क्या, आदिवासी शूद्र है ?	उत्तर मिला – नहीं।
5. हमारी भाषा (कुँड़ुख़), कौन सी भाषा परिवार की है ?	उत्तर – द्रविड़ भाषा परिवार।
6. भारतीय संविधान में हमारी पहचान क्या है ?	उत्तर – अनुसूचित जनजाति।
7. दुनियाँ हमें किन–किन नामों से जानती है ?	उत्तर – Tribe, Indigenous.

(Tribe एवं Indigenous का हिन्दी अनुवाद भी उनके हृदय को स्पर्श नहीं कर पाया और वे अपनी पहचान ढूँढ़ने आगे बढ़े। उन्हें अपनी अन्तर्रात्मा से उत्तर मिला – अपनी भाषा–संस्कृति को दुनियाँ के सामने स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ो और वे आगे बढ़ते गए।)

**अखिल भारतीय कुँड़ुख़ कत्थ जतरा, गुमला, दिनांक 17–18 अक्टूबर 1992 को प्रो0 बेर्नाड मिंज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस जतरा में तीन लिपियाँ समाज के सामने आयीं –

(क) कुँड़ख़ लिपि – श्री सामुएल रंका, 1937 ई0।
(ख) कुँड़ख़ लिपि – फादर बेन्जामिन कुजुर।
(ग) बराती लिपि – डॉ0 अनन्ती जेबा सिंह, 1991 ई0।

इस जतरा में हुए कार्यवाही का संकलन, सरना फूल, पत्रिका के सरहुल विशेषांक के 'हलचल' शीर्षक में प्रकाशित है, जिसमें उल्लिखित मुख्य बातें इस प्रकार हैं –

(क) प्रो० हरी उराँव ने अबतक कुँडुख भाषा में उपलब्ध समस्त पुस्तकों एवं लेखकों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

(ख) डॉ० बिशप निर्मल मिंज ने डॉ. अनन्ती जेबा सिंह की बराती लिपि के विषय में विस्तार से चर्चा की और बताया कि इस लिपि को कम्प्यूटर ने कुँड़ुख़ भाषा के लिए उपयुक्त बतलाया है।

(ग) श्री महादेव टोप्पो ने प्रतिनिधियों से कहा कि वे विभिन्न लिपियों को जाने, समझें जरूर लेकिन जब भी लिपि के चुनाव की बात आये, सर्वसम्मति से किसी एक को ही स्वीकार करें।

(घ) श्री उपेन्द्र नारायण उराँव ने लिपि समस्या पर बोलते हुए ऐसी लिपि की खोज पर बल दिया जो अधिक वैज्ञानिक, सर्वग्राह्य एवं सर्वमान्य हो। इसके लिए उन्होंने देवनागरी लिपि को काफी हद तक उपयोगी बतलाया।

(साभार – सरना फूल, सरहुल विशेषांक,
प्रकाषन – सरना नवयुवक संघ, राँची, 25 मार्च 1993 ई0। शीर्षक : हलचल।)

15. कुँडुख़ कत्थ जतरा, गुमला में लिपि के अग्रेतर विकास हेतु चयनित ''बराती लिपि'' के अध्ययन के बाद पायी गई त्रुटि ने आदिवासी समाज–संस्कृति आधारित विचारधारा वाली लिपि विकास के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए *ऑल झारखण्ड स्टूडेन्टस यूनियन (आजसू)* के तत्कालीन वरीय छात्र नेताओं में से श्री विनोद कुमार भगत (अध्यक्ष), श्री प्रभाकर तिर्की (पूर्व अध्यक्ष), डॉ. देवशरण भगत (उपाध्यक्ष), श्री प्रवीण उराँव (उपाध्यक्ष), श्री जयराम उराँव (उपाध्यक्ष), अमर शहीद श्री सुदर्षन भगत आदि द्वारा नई लिपि के विकास हेतु छात्र जीवन में आदिवासी छात्रावास, राँची के अंतेवासी रहे डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' को आंदोलनकारी छात्रों की ओर से वर्ष 1993 में जिम्मेदारी सौंपी गयी।

– ऑल झारखण्ड स्टूडेन्टस यूनियन (आजसू) के तत्कालीन अध्यक्ष सह छात्र नेता श्री विनोद कुमार भगत।

**लिपि विकास में झारखण्ड अलग प्रांत आंदोलनकारियों का समर्थन :–

डॉ. नारायण उरॉव 'सैन्दा' स्वर्णरेखा आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची जाया करते थे। 1993 की एक शाम की बात है, डॉ. नारायण, आजसू अध्यक्ष विनोद कुमार भगत से मिलने उनके कमरे पहूँचे। खाना खाने के बाद, दोनों समाज और आन्दोलन के कई गंभीर मुद्दों पर विचार–विमर्श करने लगे। इसी क्रम में विनोद कुमार भगत बोलते–बोलते भावुक हो गये और उनका गला रूंधने लगा। इस पर डॉ. उरॉव ने कहा – आखिर ऐसी कौन सी बात है जो आप रो रहे हैं। आप (आजसू अध्यक्ष) इतने बड़े आन्दोलन का नेता हैं और नेता ही रोये तो आन्दोलन का क्या होगा ? इस पर विनोद कुमार भगत के मुख से निकला – आन्दोलनकारी संगठन में, बुद्धिजीवियों की कमी है। हम किनसे कार्य करायें ? अगर कल के दिन झारखण्ड बनेगा तो सिस्टम वही रहेगा, जो बिहार में है। यानि मंत्री से लेकर संतरी तक और टेक्नोक्रेट से लेकर व्यूरोक्रेट तक वही पुरानी व्यवस्था रहेगी तो फिर यह आन्दोलन किसके लिए हैं। पढ़ा–लिखा वर्ग तो कहीं भी नौकरी या व्यापार कर लेगा। हमारे गाँव–समाज के लोगों को क्या मिलेगा, जो इस आन्दोलन में जूझ रहे हैं। आदिवासी समाज के पास अपनी भाषा है, संस्कृति है, अपना रीतिरिवाज है। अगर आन्दोलन के माध्यम से यह धरोहर बच जाता है तो हम आन्दोलन को सफल मानेंगे। इसके लिए भाषा को बचाना होगा। भाषा बचेगी तो संस्कृति भी बचेगी और भाषा तभी बचेगी जब भाषा की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से विष्वविद्यालय स्तर तक होगी। साथ ही यह भी तथ्य है कि आज के भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी आदिवासी भाषा को बचाने एवं निखारने के लिए अपनी भाषा की लिपि का होना भी आवष्यक है।

फोटो : झारखण्ड अलगप्रांत आन्दोलन के दौरान आमरण अनषन पर बैठे लालधारी पट्टी में दायें से डॉ0 देवषरण भगत, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, श्री संजय बसु मल्लिक एवं श्री बिनोद कुमार भगत।

16. नई लिपि का नाम तोलोङ सिकि चुने जाने एवं इसे स्थापित किये जाने में डॉ. नारायण उराँव की परिकल्पना को श्रद्धेय डॉ० बहुरा एक्का, श्रद्धेय डॉ० रामदयाल मुण्डा एवं श्रद्धेय डॉ० बासुदेव बेसरा ने अपने उत्कृष्ट विचारों का बहुमुल्य योगदान दिया।

17. तोलोङ सिकि को पहली बार सामाजिक प्रदर्षनी हेतु रखा जाना :–
दिनांक 24 सितम्बर 1993 ई0 को सरना नवयुवक संघ द्वारा आयोजित, करम पूर्व संध्या, के अवसर पर पहली बार जनमानस के अवलोकन हेतु तोलोङ सिकि को राँची कॉलेज, राँची के सभागार में रखा गया।

18. तोलोङ सिकि के बारे में पहली बार किसी समाचार पत्र में छपना :–
हिन्दी दैनिक 'आज', दिनांक 07 अक्टुबर 1993 ई0 को *तोलोङ सिकि* के विषय में समाचार पत्र में पहली बार छपा। पत्रकार श्री गिरजा शंकर ओझा द्वारा इस संबंध में विस्तृत समाचार छापा गया।

उरांव जातिकी कुँड़ुख़ लिपिका अविष्कार

छः महीनेके अथक प्रयासका नतीजा

आज (राँची)-7 अक्टूबर 1993

19. डॉ० नारायण उराँव द्वारा लिखित प्राथमिक पुस्तक कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि अरा बक्क गढ़न, उषा इन्डस्ट्रीज, भागलपुर (बिहार) से माह जनवरी 1994 में प्रकाशित हुआ। यह पूर्व में 1989 से दिसम्बर 1993 तक हस्त लिखित रूप का छः बार संशोधन के बाद इस रूप में प्रकाशित हुआ। वर्णमाला तैयार करने में कई चुनौतियाँ आयीं –

(क) वर्णमाला के लिए कौन–कौन सी ध्वनियों के लिए चिह्न रखा जाय ?

(ख) मूल ध्वनियों के लिए चिह्नों या आकृतियों का चुनाव कैसे किया जाय ?

इस उपापोह में देवनागरी की लेखन पद्धति के अनुसार वर्णों को सजाया गया, किन्तु ङ, ञ, ष, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ऋ, ऐ औ आदि संस्कृत–हिन्दी के ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्न नहीं रखा गया, क्योंकि इन ध्वनियों का व्यवहार कुँड़ुख़ भाषा में नहीं होता है। ध्वनि चिह्न के लिए समाज के अन्दर दिनचर्या में किये जाने वाले क्रिया कलापों को आधार मानकर वर्णमाला निर्धारण किया गया। आरंभिक दौर में देवनागरी वर्णमाला के वर्णों में से ङ एवं ञ ध्वनि को संयुक्ताक्षर मानते हुए इन ध्वनियों के लिए अलग से वर्ण चिह्न नहीं रखा गया। समझा गया कि इससे दोहराव होगा। जैसे – क्ष = क + ष / त्र = त + र / ज्ञ = ज + ञ / श्र = श + र आदि। इसी निर्णय पर यह पुस्तक छपा।

कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न
(कुँड़ुख़ तोलोंग लिपि एवं शब्द रचना)
भाग-१
लेखक :-
डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा'
एम० बी० बी० एस० (दरभंगा)
सर्वाधिकार सुरक्षित - लेखक
सातवाँ संस्करण
प्रकाशक - 'सिरासिता प्रकाशन'
मोरहाबादी रोड, करमटोली-चौक, राँची - 834008
SPONSORED BY :-
TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION (TRACE), RANCHI-8.
Rs. 5'00

20. तोलोङ सिकि डिस्प्ले सिस्टम (22 सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम) का निर्माण एवं पहली बार सामाजिक प्रदर्शन :–

दिनांक 18 – 25 फरवरी 1994 तक आयोजित हिजला मेला, दुमका में 22 Segment Display System / Tribal Standard Code for Information Interchange (TSCII) / Tolong Siki Display System का निर्माण एवं प्रदर्शन तथा तोलोङ सिकि को पहली बार एक राजकीय मेला के प्रदर्शनी मे शामिल।

फोटो में : हिजला मेला के तोलोंग सिकि प्रदर्षनी प्रभाग में डॉ. नारायण उराँव के साथ इंजिनियर श्री देवेष भगत कार्यपालक अभियन्ता, दुमका एवं समस्त परिवार।

18–25 फरवरी 1994, हिजला मेला दुमका में तोलोंग सिकि को प्रदर्षित करते हुए डॉ. नारायण उराँव एवं प्रखण्ड प्रसार पदाधिकारी।

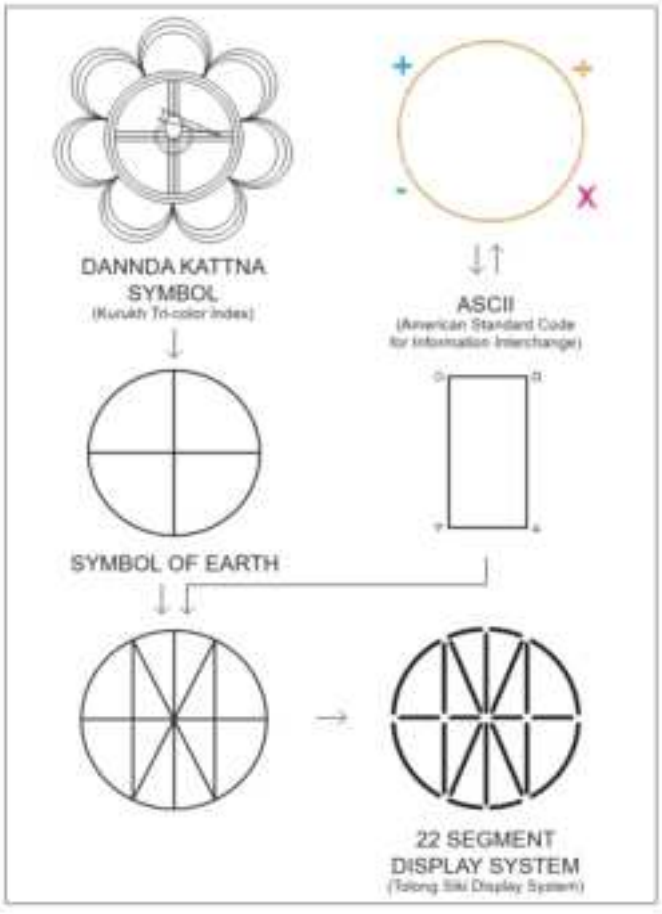

Tribal Standard Code for Information Interchange (TSCII) / TOLONG SIKI DISPLAY SYSTEM

21. TRACE बुलेटिन नामक पुस्तक, अप्रैल 1994 में छपी।

** हिन्दी दैनिक 'आज', दिनांक 24 जून 1994 ई0 को कुँडुख़ भाषा की तोलोंग लिपि को कम्प्यूटर पर उतारने की तैयारी षीर्षक लेख छपा।

कुँड़ुख भाषाकी 'तोलोंग' लिपिको कंप्यूटरपर उतारनेकी तैयारी

** दिनांक 27 जून 1994, दिन सोमवार को अंगरेजी दैनिक Hindutan Times में यह बड़ी ख़बर छपी।

THE HINDUSTAN TIMES

PATNA, MONDAY, JUNE 27, 1994

Now they can write, too

**मासिक पत्रिका, निष्कलंका, अप्रैल 1995 अंक में तोलोंग सिकि एवं बराती लिपि में तुलनात्मक अध्ययन एवं *बराती लिपि* को कुँडुख़ भाषा के लिपि के रूप में अस्वीकार किये जाने की अपील। बराती लिपि को अस्वीकार किये जाने का तथ्य है – यह लिपि, ब्राह्मी, देवनागरी, गुजराती एवं तमिल लिपि (इनमें से तीन आर्य भाषा परिवार की लिपि तथा एक दक्षिण द्रविड़ परिवार की लिपि है) को आधार मानकर तैयार किया हुआ था। जिसके चलते इस लिपि से आदिवासी समाज एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व नहीं होता था।

कुँड़ुख़ भाषा की "तोलोंग लिपि" का आविष्कार

**आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि लिपि का संषोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सम्पन्न हुई और संषोधित स्वरूप तैयार किया गया। बैठक में डॉ0 रामदयाल मुण्डा एवं डॉ0 फ्रांसिस एक्का के सुझाव के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप आसान से कठिन की ओर के मानक के आधार पर वर्णमाला स्थापित किया गया, जिसे आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी में सर्व सहमति से स्वीकार कर लिया गया। बैठक सत्यभारती, राँची में हुई।

प्रभात खबर

23 जून 1997 सोमवार

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

22. डॉ0 फ्रांसिस एक्का जुलाई 1996 में पटना में साक्षात्कार एवं ध्वनि विज्ञान विषय पर सुझाव प्राप्तः—

नई लिपि विकास के क्रम में मैं (डॉ0 नारायण उराँव) भाषाविद डॉ0 फ्रांसिस एक्का (निदेशक,सी.आई. आई.एल., मैसुर) के साथ बिहार की राजधानी पटना के होटल 'सम्राट' में 27 एवं 28 जुलाई 1996 ई0 को मुलाकात किया। डॉ0 एक्का, ACTION AID नामक संस्था के सेमिनार में आये हुए थे। उनके साथ मैंने कई प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा किया। परिचर्चा के दौरान डॉ0 एक्का के विज्ञान, तकनीकी तथा कम्प्यूटर की बातों में मैं उलझ गया। इसी तरह गाँव—समाज की बातों में डॉ0 एक्का भी उलझ गये। मैंने कहा — आदिवासी समाज अपने सभी नेगचार—अनुष्ठान, संस्कार—संस्कृति आदि घड़ी की विपरीत दिशा में सम्मन्न करते हैं। आधुनिक मशीन द्वारा इन बातों को नजर अंदाज किया जाता है। इसलिए नई लिपि संस्कृति आधारित हो। दूसरे दिन, *28 जुलाई* को इन बातों पर फिर नये सिरे से परिचर्चा हुई और प्रकृति विज्ञान आधारित रहस्यों, सामाजिक सह सांस्कृतिक अवदानों एवं भाषा वैज्ञानिक सिद्धातों के आधार पर झारखण्ड आन्दोलन को को देखते हुए डॉ0 एक्का ने सुझाव दिया — दुनियाँ में कोई भी लिपि 100 प्रतिषत सही नहीं है तथा दुनियाँ की सभी लिपियाँ, समाज एवं संस्कृति पर आधारित हैं। मानव, सर्वप्रथम बोलना सीखा, उसके बाद लिखना एवं पढ़ना। वर्तमान परिवेष में आदिवासी समाज को भी अपनी भाषा—संस्कृति को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने हेतु सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली लिपि तैयार करनी होगी। नई लिपि में निम्न प्रकार के गुण होने चाहिए —

डॉ. फ्रांसिस एक्का

(क) नई लिपि, आदिवासी समाज और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला हो।

(ख) नई लिपि, एक ध्वनि, एक संकेत के अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप हो।

(ग) आदिवासी भाषा के सभी मूल ध्वनियों का संकेत चिन्ह हो, संयुक्ताक्षर ध्वनि का नहीं।

(घ) नई लिपि के अक्षर का नाम और ध्वनिमान में समानता हो।

(ङ) International Phonetics Alphabet (IPA) के अनुरूप 6 मूल स्वर पर आधारित हो।

(च) नई लिपि में, लिखने और पढ़ने में समानता होनी चाहिए।

(छ) नई लिपि, लिखने और समझने में आसान तथा सरल हो।

(ज) अक्षर सिखलाने का तरीका आसान से कठिन की ओर होना चाहिए।

(झ) नई लिपि में *phoneme* के लिए ध्वनिचिन्ह होने चाहिए, *allophones* (स्वनिम) के नहीं।

(ञ) नई लिपि, अपने भाषा परिवार के अनुरूप *Sitting Script* समूह के होने चाहिए।

(ट) नई लिपि, वर्णात्मक लिपि हो तथा अधिक से अधिक लिपि चिन्ह का घुमाव दायें से बायें होते हुए दायें की दिशा में बढ़ने वाला हो क्योंकि अधिकतर लोग दायें हाथ से लिखने वाले होते हैं।

डा. नारायण उराँव

पटना में, वर्ष 1996 में डॉ. एक्का से मुलाकात से पहले मैं कई बार पत्र लिखा तथा व्यक्तिगत रूप से भेंट कर बातचीत करने की इच्छा प्रकट की। इसी क्रम में मैं सितम्बर 1994 में एक पत्र लिखा जो उन्हें 30.09.1994 को मिला। इस पत्र के उत्तर में उन्होंने सुझाव दिया कि मैं पटना या राँची आने पर खबर कर दूँगा। 13 जनवरी 1995 को लिखा गया उनका पहला पत्र प्राप्त हुआ। इसी तरह जानकारी मिली कि वे पटना आ रहे हैं। तब मैं पटना जाकर मिला और लिपि विकास में उठ रही समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्षन प्राप्त किया। डॉ0 एक्का ने सुझाव दिया कि — मैं International Phonetic Alphabet के सिद्धांत पर कार्य करूँ।

दिनांक : 28.07.1996 — डॉ0 नारायण उराँव

23. कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि अरा बक्क गढ़न, पुस्तक के प्रस्तुति को श्री विवेकानन्द भगत (पूर्व बैंक पदाधिकारी), लोंडरा, सिसई–भरनो, गुमला एवं साथियों द्वारा 1996 में इस पुस्तिका में प्रस्तुत वर्णमाला को अपूर्ण मानना तथा गाँव में गाये जाने वाले मौसमी गीतों के माध्यम से, विषेष रूप में करम गीत के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं परम्पारिक धरोहरों के संरक्षण हेतु तथा आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए परम्पारिक अवधारणाओं के आधार पर आवश्यक संशोधन किये जाने के लिए अपील किया गया। श्री भगत जी के सलाह पर वर्णमाला में सुधार हुआ जिसमें वर्णमाला क्रम – क ख ग घ/च छ ज झ/त थ द ध/ट ठ ड ढ/प फ ब भ/म न ख़ ह/य र ल व/स स़ ड़ ढ़ में समीक्षोपरान्त सुधार करते हुए – क ख ग घ ङ/च छ ज झ ञ/ट ठ ड ढ ण/त थ द ध न/ प फ ब भ म/य र ल व ञ़/स ह ख़ ड़ ढ़ का क्रम रखा गया।

स्व० विवेकानन्द भगत
(पूर्व बैंक पदाधिकारी)

24. राजी देवान श्री भिखराम भगत, राजी पड़हा, भारत के नेतृत्व में 3–5 जनवरी 1997 को राजी पड़हा का वार्षिक सम्मेलन, बमनडिहा, लोहरदगा में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में डॉ० नारायण उराँव द्वारा प्रस्तावित लिपि, तोलोंग सिकि को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में उपस्थित समूह ने स्वीकार कर लिया, परन्तु राजी देवान श्री भिखराम भगत एवं श्री इन्द्रनाथ भगत (ततकालीन माननीय सांसद, लोहरदगा) के आपसी विमर्श के पश्चात् निर्देश दिया गया कि लिपि के साथ इसका व्याकरण भी जरूरी है। अतएव व्याकरण के लिए भाषाविदों तथा शिक्षाविदों के साथ मिलकर लिपि के साथ व्याकरण भी तैयार करें और पड़हा के सामने लायें, क्योंकि लिपि की पूर्णता या अपूर्णता तथा इसका आधार विषयक बातों के लिए शिक्षाविदों का मंतव्य मिले तभी इसकी सामाजिक मान्यता पर विचार होगा। यह सुनकर डॉ० नारायण निराश हुए, पर मेहनत से आगे बढ़े और आज कहते हैं – शायद वह ईश्वरीय कृपा थी, जो बाबा भिखराम भगत के मुख से एक सुझाव का शब्द निकला अन्यथा व्याकरण की समझ के बिना लिपि विकास अधुरा ही रहता।

राजी पड़हा महाधिवेशन
ग्राम - बमनडीहा, लोहरदगा
दिनांक 3, 4 एवं 5 जनवरी 1997 ई०

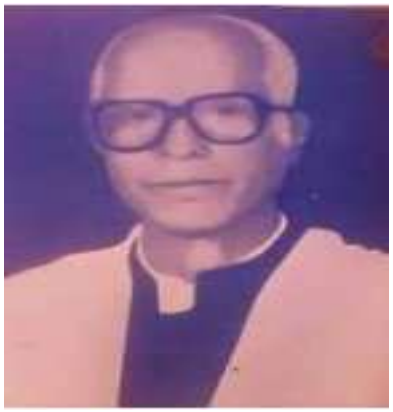

राजी पड़हा देवान
स्व० भिखराम भगत,
राजी पड़हा, भारत

पूर्व सांसद
स्व० इन्द्रनाथ भगत
लोहरदगा, लोकसभा

25. भाषाविदों द्वारा दिए गए सुझाव एवं भाषा विज्ञान के तथ्यों पर आधारित आम जनों को आसानी से समझा पाने योग्य बातों के अनुसार डॉ0 नारायण उराँव द्वारा ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि नामक पुस्तक लिखा गया और उसे 1997 के आरंभ में छपवाकर समाज के लोगों तक पहूँचाया गया।

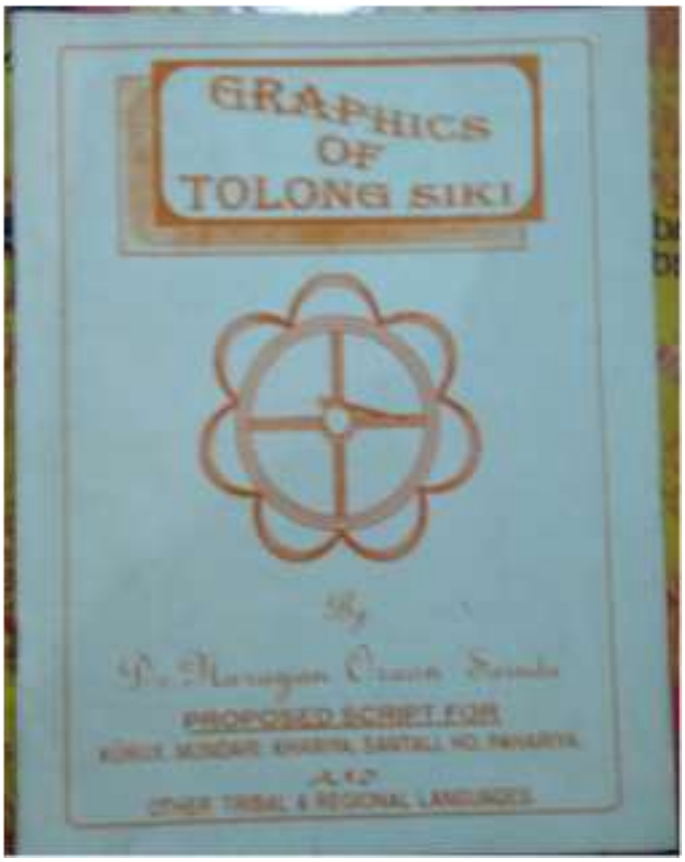

26. नई लिपि को स्थापित करने में डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 बहुरा एक्का, डॉ0 बासुदेव बेसरा, फा0 प्रताप टोप्पो एवं फा० डा० बेनी एक्का ने सुझाव दिया कि हृस्व ध्वनि एवं लम्बी ध्वनि के लिए अलग–अलग चिह्न न रखे जाएँ, जिससे इसे समझने तथा समझाने में देवनागरी की तरह मस्तिस्क में खींचाव होने से बचा जा सके। जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान या International Phonetic Alphabet (IPA) के तरीके को अपनाया गया, जहाँ उपविराम का प्रयोग लम्बी ध्वनि के लिए होता है। अंगरेजी में जहाँ मात्र 5 स्वर चिन्ह से लिखा एवं पढ़ा जा रहा है। पर International Phonetic Alphabet (IPA) में 6ठे स्वर के रूप में a के उपर पड़ी लकीर ā देकर लिखा जाता है। वैसे हिन्दी–संस्कृत का ए ओ आ ध्वनि उच्चारण जो दीर्घ अथवा संयुक्त है, को कुँड़ुख़ भाषा में ह्रस्व की तरह उच्चारण किया जाता है। कुँड़ुख़ भाषा की इन ध्वनियों को रेखांकित करने के लिए देवनागरी लिपि में अलग चिन्ह नहीं हैं। इसी तरह कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित ध्वनि ड़ ढ़ ख़ ञ़ अ़ संस्कृत–देवनागरी में लिपि चिन्ह नहीं हैं, परन्तु हिन्दी–देवनागरी में ड ढ ख ञ अ अक्षर के नीचे तल विन्दु देकर लिखा जाता है। इसलिए कुँड़ुख़ लिपि के विकास में यथासंभव IPA का मार्गदर्शन लिया जा सकता है।

27. ग्राफ्रिक्स ऑफ तोलोङ सिकि का लोकार्पण एवं आवश्यक संशोधन हेतु मार्गदर्शन :–

डॉ0 नारायण उराँव द्वारा वर्ष 1997 में एक पुस्तक की रचना की गई, जिसका नाम – Graphics of Tolong Siki रखा गया। इसे सामाजिक सहयोग से छपवाया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण दिनांक 05.05.1997 को राँची विष्वविद्यालय, राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में हिन्दी दैनिक, प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक श्री हरिवंष जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह में श्री हरिवंष जी ने कहा – वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में पूरे विष्व में, भाषाएँ सिमटती जा रही हैं। आकलन है कि विष्व में लगभग 16000 हजार भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो इस सदी के अंत तक मात्र 6000 हजार रह जायेंगी। यह, समस्त मानव जाति के लिए घोर संकट का विषय है। आज का यह समारोह भाषा बचाने के कार्य के रूप में इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा। इस लिपि की प्रस्तुति पर डॉ0 बी0 पी0 केसरी को छोड़कर सभी सहमत हुए। डॉ0 बी0 पी0 केसरी ने कहा – एखन दुनियाँ, चांद में पोंहईंच गेलक, लकिन ई जगे आदिवासी मन कबिला–कबिला कर बात करेक लाइग हँय। अब आदिवासी मनके देष कर मुख्य धारा से जुड़ेक चाही। उसके बाद, मुख्य वक्ता डॉ0 रामदयाल मुण्डा द्वारा पुस्तक में, हिन्दी वर्णमाला के आधार पर प्रस्तुत किये गये तरीके में बदलाव करने तथा सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली तथा भाषा वैज्ञानिक तथ्यों वाली प्रस्तुति करने का सुझाव दिया गया। डॉ0 मुण्डा ने कहा – एखन कर बेरा में आदिवासी मन के देष कर मुख्य धारा संगे जुड़के चाही, संगे–संगे आपन सांस्कृतिक विरासत के बचायक ले भी तेयारी करेक चाही। अब, आदिवासी मन के, हिन्दी आउर अंगरेजी विषय कर पढ़ाई संगे पुस्तैनी बिरासत के बचाय ले मातृभाषा में पढ़ेक–लिखेक भी आवष्यक होवी। ई पुस्तक में, राष्ट्रीय एकता रूपी गुलदस्ता में, आपन सांस्कृतिक धरोहर रूपी गुलैची आउर गेंदा फूल के चिन्हेक, चुनेक आउर जोगाएक कर काम, डॉ0 नारायण उराँव शुरू कइर हँय। इकर ले उनके आउर उनकर पूरा टीम के बहुत–बहुत बधाई। नया लिपि में ई लेखे गुन होवेक चाही –

(क) नया लिपि, एक ध्वनि, एक संकेत कर अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान कर सिद्धांत लेखे होवे।

डॉ0 रामदयाल मुण्डा

(ख) आपन भाषा कर सउब मूल ध्वनि ले चिन्ह होवेक चाही। संयुक्त ध्वनि ले लिपि चिन्ह ना होवे।

(ग) अक्षर सिखाएक कर तरीका आसान से कठिन दने जाएक लेखे होवेक चाही।

(घ) नया लिपि, आदिवासी समाज और संस्कृति कर प्रतिनिधित्व करेक चाही। आदिवासी मने प्रकृति से सीख के आपन दैनिक जीवन में दायाँ से बायाँ अर्थात वर्तमान घड़ी कर विपरित दिषा में कर्मकांड करयना। ई बात मने भी लिपि चिन्ह में दिखेक चाही।

(ङ) नया लिपि में, लिपि चिनहां कर नाम आउर ध्वनिमान एके लेखे होवेक चाही।

(च) तकनीकी विज्ञान कर अनुरूप चिनहाँ के राखल जाएक चाही। पढ़ेक आउर लिखेक में समानता होवे।

(छ) कम से कम चिनहाँ से अधिक से अधिक ध्वनि कर प्रतिनिधित्व होवे चाही।

(ज) भाषा विज्ञान में कहल जाएला कि छउवा मने ''प वर्गीय'' षब्द से बोलेक षुरू करयना, से ले समाज और सभ्यता कर विकास कर भी बात सामने आवेक चाही।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर नई लिपि में सुधार किये जाने पर उपस्थित सभी लोगों की सहमति बनीं। तोलोंग सिकि लिपि पर परिचर्चा तथा डॉ0 मुण्डा जी के मार्गदर्षन से यह भाषा–लिपि विषय द्रविड़ भाषा परिवार की लिपि के रूप में प्रोत्साहित हुई और कुँडुख़ भाषा की नई लिपि विकास को भाषा विज्ञान का दृष्टिकोण मिला।

– श्रीमती मीना टोप्पो
व्याख्याता, राँची कॉलेज, राँची
दिनोंक : 05.05.1997

ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' पुस्तक का लोकार्पण में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रो. मीना टोप्पो।
बाएँ से श्री राजू उराँव, श्री अहलाद तिर्की, श्री हरिवंष जी, डॉ0 विष्वनाथ भगत एवं फा. पी. पोनेट।

लोकार्पण समारोह में नई लिपि के संबंध में व्याखयान देते हुए श्री अहलाद तिर्की तथा मंचासीन
बायें से श्री राजू उराँव, श्री हरिवंस जी, डॉ0 विष्वनाथ भगत एवं फा. पी. पोनेट।

'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' पुस्तक का लोकार्पण समारोह में तोलोंग सिकि के संबंध में व्याख्यान करते हुए डॉ0 नारायण उराँव एवं बाएँ से श्री राजू उराँव, श्री अहलाद तिर्की, डॉ0 विष्वनाथ भगत एवं फा0 पी0 पोनेट।

'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' पुस्तक का लोकार्पण समारोह में नई लिपि के संबंध में व्याखयान देते हुए डॉ0 रामदयाल मुण्डा एवं बाएँ से श्री राजू उराँव, श्री अहलाद तिर्की एवं डॉ0 विश्वनाथ भगत।

28. तोलोंग सिकि (लिपि) का संषोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी, जून 22 1997 को सत्यभारती, रांची में हुई और संषोधित स्वरूप तैयार किया गया। तोलोंग सिकि वर्णमाला निर्धारण में भाषाविद् डॉ0 फ्रांसिस एक्का, भाषाविद् डॉ0 रामदयाल मुण्डा तथा भाषाविद् डॉ0 भोलानथ तिवारी द्वारा की गई व्याख्या, आधार बनी।

(भाषा विज्ञान : डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृष्ट सं0 466–471 में उद्धृत वैज्ञानिक लिपि के गुण)

वैज्ञानिक लिपि के गुण :– विश्व की कोई भी लिपि सभी दृष्टियों से पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है, किन्तु पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि की कल्पना की जा सकती है और उसके मुख्य गुण गिनाये जा सकते हैं –

(1) वैज्ञानिक लिपि को वर्णात्मक होना चाहिए, आक्षरिक नहीं। अर्थात, उसके लिपि–चिह्न भाषा में प्रयुक्त हर व्यंजन एवं हर स्वर के लिए अलग–अलग होने चाहिए। उल्लेख है कि नागरी में क, ख, ग आदि व्यंजन चिह्नों में व्यंजन तथा स्वर मिले हुए हैं, अर्थात वह वर्णात्मक नहीं, आक्षरिक है।

(2) लिपि में, भाषा विशेष में प्रयुक्त हर ध्वनि (व्यंजन एवं स्वर) के लिए लिपि चिह्न होने चाहिए। न कम न अधिक। नागरी में दंतोष्ठ्य व के लिए लिपि चिह्न नहीं हैं।

(3) एक चिह्न से केवल एक ध्वनि व्यक्त होनी चाहिए, एकाधिक नहीं। नागरी में व – से कई ध्वनियाँ व्यक्त हैं।

(4) एक ध्वनि के लिए केवल एक लिपि चिह्न होनी चाहिए, एकाधिक नहीं। हिन्दी भाषा की दृष्टि से एक ही ध्वनि के लिए नागरी में रि – ऋ, ष – ष चिह्न हैं।

(5) लेखन एवं लिपि चिह्नों को उसी क्रम में आना चाहिए जिस क्रम में उसका उच्चारण किया जाता है।

(6) दो चिह्नों को एक पढ़े जाने का भ्रम नहीं होना चाहिए। नागरी में है, जैसे – घ–ध, म–भ, रा–ष, ख–रव तथा रा (र् आ) –रा (रा‍ा का आधा) आदि में।

इसके अतिरिक्त लेखन, टंकन तथा मुद्रण आदि की व्यवहारिक दृष्टि से भी कई बातें कही जा सकती है।

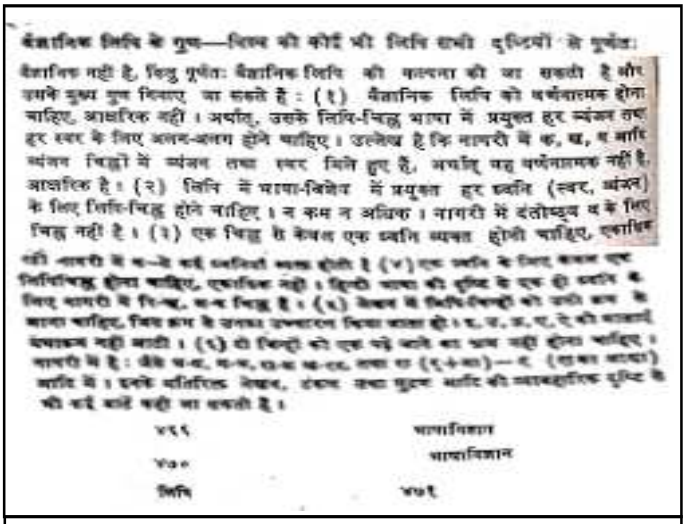

आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि लिपि का संषोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सम्पन्न हुई और संषोधित स्वरूप तैयार किया गया। बैठक में डॉ0 रामदयाल मुण्डा एवं डॉ0 फ्रांसिस एक्का के सुझाव के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप आसान से कठिन की ओर के मानक के आधार पर वर्णमाला स्थापित किया गया, जिसे आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी में सर्व सहमति से स्वीकार कर लिया गया। बैठक सत्यभारती, राँची में हुई।

प्रभात खबर

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

डॉ.एन.उराँव

तोलोंग सिकि का संषोधित वर्णमाला, आदिवासी बुद्धिजीवियों के समक्ष दिनांक 22 जून 1997 को रखा गया। चूँकि बुद्धिजीवियों ने 1989 से अप्रैल 1997 तक के कार्य के तरीके में संशोधन कर ध्वनि विज्ञान सम्मत वर्णमाला का सुझाव दिया। इसलिए डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 फ्रांसिस एक्का तथा डॉ0 भोलानाथ तिवारी के सुझाव अनुसार, ध्वनि विज्ञान आधारित वर्णमाला को सर्व सहमति से सबों द्वारा स्वीकृत हुआ और पठन–पाठन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

TRACE

SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

दिनांक 21-07-1997

सेवा में,

डॉ० फ्रांसिस एक्का
प्रोफेसर एवं निदेशक,
सेन्ट्रल इन्स्टीच्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज, मैसूर ।

महाशय,

हम यह सूचित करना चाहते हैं कि दिनांक 5-5-1997 दिन सोमवार को 11.00 बजे पूर्वाह्न, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची में "तोलोंग सिकि" के जनक तथा प्रस्तुत कर्ता द्वारा रचित "ग्रामर ऑफ तोलोंग सिकि" नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ ।

इस समारोह का शुभारम्भ वयोवृद्ध साहित्यकार श्री अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर किया । तत्पश्चात् प्रभात खबर के मुख्य सम्पादक श्री हरिवंश जी ने पुस्तक का लोकार्पण किया । समारोह की अध्यक्षता डा० विश्वनाथ भगत, अपर निदेशक स्वास्थ्य (अवकाश प्राप्त) ने किया । विशिष्ट अतिथि फादर पी० पौनेट एवं श्री रामू उरांव थे । स्वागत भाषण प्रो० (श्रीमती) मीना टोप्पो, कुड़ुख विभाग, राँची कॉलेज राँची तथा परिचय भाषण श्री मनोरंजन लकड़ा, डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर (अवकाश प्राप्त) ने दिया । मुख्य वक्ता के रूप में प्रो० इन्द्रजीत उरांव, जन० भा० एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, फादर प्रताप टोप्पो, निदेशक, सत्य भारती, डॉ० मथियस डुंगडुंग, निदेशक, फादर कामिल बुल्के शोध संस्थान राँची, खड़िया भाषा के विद्वान श्री पुलिकन बा:, प्रो० के० सी० टुडू, जन० भा० एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, प्रो० बी० पी० मिन्हया, कुड़ुख विभाग, राँची कॉलेज राँची, प्रो० बी० पी० केसरी, जन० भा० एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, डॉ० करमा उरांव, पूर्व सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग, सिस्टर अनिता, प्रिंसिपल, हॉली क्रॉस स्कूल लापुंग, लिपि के प्रस्तुतकर्ता डा० नारायण उरांव, डॉ० रामदयाल मुण्डा, विभागाध्यक्ष, जन० भा० एवं क्षेत्रीय विभाग आदि ने अपने विचारों से अवगत कराया । मंच का संचालन डा० गिरिधारी राम गौंझू ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ० वासवी कुमारी द्वारा सम्पन्न किया गया । इसके अलावे फादर कॉमिल एक्का, उप प्राचार्य संत जेवियर कॉलेज राँची, डा० कुजू उरांव, व्याख्याता, मान्डर कॉलेज मान्डर प्रो० नारायण भगत, प्रो० रामकिशोर भगत, श्रीमती शांति खलखो श्री मनोज मुण्डू एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे ।

समारोह में डा० बी० पी० केसरी को छोड़कर सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं ने आदिवासी भाषा की नई लिपि होने तथा तोलोंग लिपि के निर्माण को सर्वसम्मति से स्वागत किया तथा इसकी कमियों को दूर करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया । वक्ताओं ने कहा कि (1) यह लिपि कम्प्यूटर एवं टंकण के अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्ड के अनुरूप हो । (2) पठन एवं लेखन में सरलता हो (3) वर्णमाला की व्यवस्था सरलता से कठिनता की ओर हो । (4) कम से कम चिन्हों से दूसरी भाषा की ध्वनियों को भी लिखा जा सके (5) अनावश्यक चीजों को हटा दिया जाय , (6) यह जनजातीय पहचान का प्रतीक हो ।

इन सिफारिशों के कार्यान्वयन हेतु समारोह के अन्त में डा० रामदयाल मुण्डा ने

...... 2

TRACE

SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

- 2 -

दो प्रस्ताव रखा । पहला- उपरोक्त निष्कर्षों के अनुरूप लिपि का सैद्धांतिक स्वरूप तैयार करने हेतु शीघ्र एक विचार गोष्ठी बुलायी जाय । दूसरा- भाषाविद् डा० फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में एक कमिटि बने, जो इसे अन्तिम रूप प्रदान करे । इस कमिटि हेतु डा० एक्का को अध्यक्ष घोषित किया जाय ।

समारोह में डा० मुण्डा के दोनों प्रस्तावों को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया । इस प्रस्ताव के आलोक में दिनांक 20-06-97 दिन सोमवार को संध्या 4.00 बजे पुरुलिया रोड, राँची स्थित "सत्यभारती" के सभागार में "तोलोंग सिकि का सैद्धांतिक स्वरूप" विषयक विचार गोष्ठी खड़िया भाषा के विद्वान श्री [illegible] की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । इस बैठक में सर्वसम्मति से एक वर्णमाला तैयार किया गया जिसकी प्रति भेजी जा चुकी है ।

अन्तिम प्रस्ताव के संबंध में कहना है कि इस लिपि के निर्णायक कमिटि का "चेयर मैन" आपको घोषित किया जा चुका है । अतः अब आप अपने सदस्यों का चुनाव कर इसे अन्तिम रूप प्रदान करने की कृपा करेंगे ।

भवदीय,

(डा० [illegible])
अध्यक्ष
सिरासिता प्रकाशन एवं TRACE

निवेदक :

1- बिशप डा० निर्मल मिंज
2- डा० रामदयाल मुण्डा
3- डा० मथियस दुंगडुंग
4- डा० [illegible] एक्का
5- डा० करमा उराँव
6- डा० [illegible]
7- डा० [illegible] उराँव
8- फा० प्रताप टोप्पो
9- फा० विन्सेन्ट एक्का
10- श्री मनोरंजन लकड़ा
11- श्री हिमांशु कच्छप
12- सिस्टर अनीता
13- प्रो० श्रीमती सोना टोप्पो
14- प्रो० राम किशोर भगत
15- प्रो० नारायण भगत
16- प्रो० [illegible] कुजूर
17- डा० नारायण उराँव
18- श्री राजू उराँव
19- श्री मंगरा उराँव
20- श्री विवेकानन्द भगत

SIRASITA PRAKASHAN
Morhabadi Road
Karam Toli Chowk
Ranchi - 834 008

TRACE

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप

दिनांक 05-05-1997 दिन सोमवार को 11.00 बजे पूर्वाहन, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची में तोलोंग सिकि के सर्जक यथा प्रस्तुतकर्त्ता डॉ. नारायण उराँव द्वारा रचित "ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि" नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ।

इस समारोह का शुभारम्भ वयोवृद्ध साहित्यकार श्री अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर किया। तत्पश्चात प्रभात खबर के मुख्य सम्पादक श्री हरिवंश जी ने पुस्तक का लोकार्पन किया। समारोह की अध्यक्षता डॉ. विश्वनाथ भगत, अवर निदेशक स्वास्थ (अवकाश प्राप्त) ने किया। विशिष्ट अतिथि फा. पी. पोनेट एवं श्री राजू उराँव थे। स्वागत भाषण प्रो. (श्रीमती) मीना टोप्पो, भूगोल विभाग, राँची कॉलेज राँची तथा परिचय भाषण श्री मनोरंजन लकड़ा, डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर (अवकाश प्राप्त) ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. इन्द्रजीत उराँव, जन.जा. एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, फा. प्रताप टोप्पो, निदेशक, सत्य भारती राँची, डॉ. मथियस डुंगडुंग, निदेशक, फा. कामिल बुल्के शोध संस्थान राँची, खड़ीया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा, प्रो. के.सी. टुडु, जन. जा. एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, डॉ. करमा उराँव, पूर्व सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग, सिस्टर अनीता, प्रिंसीपल, हॉल क्रास स्कूल लालपुर, डॉ. रामदयाल मुण्डा, विभागाध्यक्ष, जन.जा. एवं क्षेत्रीय विभाग आदि ने अपने विचारों से अवगत कराया। मंच का संचालन डॉ. गिरिधर राम गौंझु 'गिरिराज' ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वासन्ती कुमारी द्वारा सम्पन्न किया गया। इसके अलावे फा. क्लेमेंट एक्का, उप प्राचार्य संत जेवियर कॉलेज राँची, डॉ. बुदु उराँव, व्याख्याता, माण्डर कॉलेज माण्डर, प्रो. नारायण भगत, प्रो. रामकिशोर भगत, श्रीमती शांती खलखो, श्री गणेश मुर्मु एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजुद थे।

इस समारोह में डॉ. बी.पी. केसरी को छोड़ कर सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं ने आदिवासी भाषा की नई लिपि होने तथा तथा तोलोंग लिपि के निर्माण को गर्मजोशी से स्वागत किया तथा इसकी कमियों को दूर करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया। वक्ताओं ने कहा कि (1) यह लिपि एक ध्वनि एक संकेत के अंतर्राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुरूप हो। (2) अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाय। (3) वर्ण माला की संरचना सरलता से कठिनता की ओर हो। (4) कम से कम चिन्हों से दूसरे भाषा की ध्वनियों को भी लिखा जा सके। (5) तथा यह जनजातीय पहचान का प्रतीक भी हो।

इस निर्णय के आलोक में दिनांक 20.06.97 दिन शुक्रवार को संध्या 4 बजे सत्य भारती राँची के सभागार में एक बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा ने किया। बैठक में डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. नारायण उराँव, डा. विश्वनाथ भगत, श्री पी. एन. एस. सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फा. प्रताप टोप्पो, श्री हेमंत कच्छप, श्री राजू उराँव, श्रीमती मीना टोप्पो, डा. बुदु उराँव एवं डा. नारायण भगत आदि मौजुद थे। जहाँ गहन विचार विमर्श के बाद सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि संशोधित स्वरूप का निर्धारण किया गया। इस स्वरूप का विमोचन डॉ. निर्मल मिंज ने अंतिम रूप की संज्ञा दी तथा डॉ. करमा उराँव ने Foundation Stone कहा। इस स्वरूप की वैज्ञानिक मान्यता हेतु Central Institute of Indian Languages, Mysore को भेजा जा चुका है जो इस प्रकार है –

आदिवासी भाषा (कुँड़ुख, मुण्डारी, खड़िया, हो, संताली, मालतो आदि) की प्रस्तावित लिपि

Narayan Oraon
21/07/1997

प्रस्तुति
सिरासिता प्रकाशन & TRACE
मोरहाबादी रोड, करम टोली चौक राँची - 8

29. दिनांक 22 जून 1997 को सत्यभारती, राँची में पूर्व में हुए भाषा एवं लिपि के संबंध में अग्रेतर कारवाई हेतु एक कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला के निर्णय को केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर को आवश्यक दिशा–निर्देश के लिए दिनांक 21.07.1997 को भेजा गया। इस पत्र का उत्तर दिनांक 27 नवम्बर 1997 को लिखा गया यह पत्र।

Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore 570 006, India
Tel:(0821) 515820(office) 514120 (home); Fax:515032 :Email:ciil@giasbg01.vsnl.net.in

Francis Ekka

November 27, 1997

Dear Dr.Bhagat,

I have received your letter dated 27--7-1997 on the subject of the formation of a *nirnaayak* committee (but Dr.Oraon's printed handbill dated 13-09-1997 sent to me subsequently explicitly states his modified script has been sent to Central Institute of Indian Languages for approval-*maanyata*) to finalize and grant of approval /recognition to Tolong script. I have been frequently out of Mysore during last several months on consultancy assignements to other agencies/States, and I sincerely apologize for this inordinate delay in replying to you on this important subject.

While I appreciate Dr.Oraon for his efforts in creating Tolong script, and the interest it has generated among the Jharkhandi leaders and academicians, I regret to inform you that this Institute is not empowered to grant official recognition for any scripts on its own behalf, or on behalf of the Government of India. I think it is the Department of Official Languages in the Home Ministry, Government of India, which deals with such matters; and that too in respect to the languages listed in the VIII Schedule of the Constitution of India. There is a very lengthy procedure; there is first, a literary criterion for recognition of a language and its script by the Sahitya Akademi; and next, there is a political criterion for its inclusion in the VIII Schedule. Both these criteria are more political than academic, or even scientific. Besides, this invention is intellectual property of Dr.Narayan Oraon, and I am not sure at this moment whether it would be proper to discuss this as a public issue. Under this circumstances I am unable to render useful advice on the subject.

With regards,

Yours sincerely,

(Francis Ekka)

To
Dr.Vishwanath Bhagat
Sirasita Prakashan
Morhabadi Road, Karamtoli Chowk
Ranchi 834 008

Copies to:Dr.Narayan Oraon; Dr.Ram Dayal Munda; Dr.Nirmal Minj; Fr.Mathias Dundung, S.J; Fr.Pratap Toppo,S.J; Dr.Narayan Bhagat; Sr.Anita; Dr.(Mrs.)Meena Toppo; Dr.Sudu Oraon; (I do not possess mailing addresses of the remaining 10 dignitories listed in your letter under reference).

30. नई लिपि, सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली हो तथा तकनीकी संगत हो

उपरोक्त कथन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर (भारत सरकार) के प्रोफेसर एवं निदेषक डॉ. फ्रांसिस एक्का के हैं। उनका यह वक्तब्य 24 जनवरी 1998 का है। ज्ञात हो कि डॉ. फ्रांसिस एक्का, बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची में आयोजित कार्यषाला में भाग लेने राँची आये हुए थे। जानकारी मिलने पर डॉ. नारायण उराँव ने मुझे भी होटल महाराजा, राँची में डॉ. एक्का से भेंट करने हेतु 22 जनवरी 1998 को समय 6.00 बजे संध्या को बुलाया। निर्धारित समय एवं स्थान पर जब मैं पहूँचा तो वहाँ एक–एक कर कई आदिवासी षिक्षाविद एवं समाज सेवी उपस्थित हुए। समयानुसार, डॉ. फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में ''आदिवासी भाषा की लिपि एवं तोलोंग सिकि'' विषयक विचार–गोष्ठी आरंभ हई। इस बैठक में डॉ. फ्रांसिस एक्का, डॉ. रामदयाल मुण्डा, बिषप डॉ. निर्मल मिंज, फादर प्रताप टोप्पो, डॉ. नारायण उराँव एवं मैं (मनोरंजन लकड़ा) उपस्थित थे। झारखण्ड आंदोलन के पक्षधर षिक्षाविदों ने डॉ. एक्का के समक्ष एक प्रष्न रखा कि आदिवासी आंदोलन को कारगर बनाने के लिए यहाँ की भाषा एवं संस्कृति को संरक्षित तथा संवर्द्धित करना होगा। इसके लिए साहित्य सृजन करने होंगे। इस स्थिति में हमें सुझाव दीजिए कि वर्तमान समय के अनुकूल हम कौन सी लिपि को अपनाएँ ? क्या, हमें नई लिपि विकसित करनी चाहिए या स्थापित लिपि देवनागरी या रोमन लिपि को अपनाएँ ? वहीं पर कुछ व्यक्ति, आदिवासी सामाजिक पहलुओं पर विचार व्यक्त करते हुए बोले कि वर्तमान परिपेक्ष्य में आदिवासी पहचान की समस्या हो रही है। इसके लिए आदिवासी भाषाओं को एक सूत्र में बांध सकने के लिए एक लिपि की आवष्यकता है, जो लोगों में आदिवासी पहचान जगा सके और जो आधुनिक तकनीकी संगत भी हो। इस संदर्भ में विगत 8–9 वर्षों से लगातार कार्य करते हुए डॉ. नारायण उराँव द्वारा विकसित तोलोंग सिकि की प्रस्तुति को समाधान के तौर पर विमर्ष किया जाए।

उक्त तमाम बातों को ध्यान पूर्वक सुनने–समझने के बाद डॉ. एक्का, अपना विचार रखे। उन्होंने कहा कि वैष्विक जगत में लिपि तीन तरह से प्रस्तुत हुई है – (1) Socio-cultural base लिपि। जिसका आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक होता है, जिससे लोग भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। जैसे, सभी भारतीय भाषाओं की लिपियों का आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक है। (2) Machine base लिपि। ऐसी लिपियाँ machine के अनुरूप ही विकसित होती हैं। (3) Politics base लिपि। ऐसी लिपियाँ, किसी भाषा–भाषियों पर किसी राजनीति के तहत थोपी जाती हैं।

दिनांक 22.01.1998 की विचार गोष्ठी में Machine based लिपि विकसित किये जाने हेतु डॉ. फ्रांसिस एक्का को अधिकृत किये जाने पर सहमति बनी तथा दिनांक 24.01. 1998 को 9.00 बजे सुबह फिर से उसी स्थान पर बैठक होने का निर्णय के साथ बैठक समाप्त हुआ।

उसके बाद दिनांक 24.01.1998 को सुबह 9.00 बजे डॉ. फ्रांसिस एक्का के कमरे में ही बैठक आरंभ हुई। बैठक में तीन और साथी, जिनमें श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत एवं प्रो. नारायण भगत शामिल हुए। इस गोष्ठी में आदिवासीं समाज की भाषा, संस्कृति एवं सामाजिक विरासत संबंधी तमाम बातों पर विचार–विमर्ष के पष्चात् बैठक की अध्यक्षता करते हुए डॉ. एक्का ने कहा कि वर्तमान समय के अनुसार आदिवासी समाज के लिए एक नई लिपि की आवष्यकता निष्चित रूप से है। आगे उन्होंने कहा कि लिपि जैसी भी हो वह उनके लिए अर्थात एक भाषा विज्ञानी के लिए कोई समस्या नहीं है। साथ ही इस विषय में दर्षन और तकनीक को लाना बेकार का बहस करना होगा। इस संबंध में सबसे जरूरी बात है कि हमलोगों के सामने जो Suppressive force है, उसके against में हमारे पास क्या उपाय है ? यदि इस समस्या का समाधान हो जाए तो आगे कार्य किया जाए।

बैठक के अंत में सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि – नई लिपि, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली हो तथा तकनीकी संगत हो। उपस्थित प्रतिभागियों ने डॉ. एक्का तथा डॉ. मुण्डा को संयुक्त रूप से तोलोंग सिकि को राज्य एवं देष स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए अधिकृत किया। इस निर्णय के साथ विचार गोष्ठी समाप्त हुई।

दोनों दिन के बैठक में उपस्थित होकर मुझे कई बाते सुनने–समझने को मिली। मुझें खुषी है कि मैं भी कुँड़ुख़ भाषा–लिपि की विकास यात्रा का एक गवाह हूँ।

– श्री मनोरंजन लकड़ा
सेवा निवृत, डिप्टी ट्रांस्पोर्ट कमिश्नर,संतालपरगना,
दुमका (बिहार), दिनांक – 24 जनवरी 1998

31. बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची में ''कुँड़ुख़ भाषा और साहित्य : दशा एवं दिशा'' विषयक कार्यशाला

ज्ञात हो कि बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची के सभागार में ''कुँडख़ भाषा अैर साहित्य : दषा और दिषा'' विषयक कार्यशाला दिनांक 19 सितम्बर 1998 दिन शनिवार को सम्पन्न हुआ। यह कार्यशाला शोध संस्थान, राँची के निदेशक डॉ. प्रकाष चन्द्र उराँव तथा बिहार शिक्षा परियोजना के निदेशक श्री विनोद किसपोटा के संयुक्त तत्वधान में बुलाया गया था। इस कार्यशाला में बिहार शिक्षा परियोजना, रातू, राँची के ततकालीन निदेशक श्री विनोद किसपोट्टा, आयकर अधिकारी श्री प्रभात खलखो, ए. जी. बिहार, राँची के लेखा अधिकारी श्री सरन उराँव, राँची विष्वविद्यालय, राँची के प्राध्यापक गण में से डॉ0 करमा उराँव, प्रो0 (श्रीमती) मीना टोप्पो, प्रो0 हरि उराँव, प्रो0 एलेक्सियुस ख़ाख़ा, प्रो0 नारायण भगत, समाजसेवी सह षिक्षाविद् डॉ0 निर्मल मिंज, इंजिनियर दुर्गा कच्छप, श्री प्रभाकर तिर्की, श्री मुरली मनोहर खलखो, श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत, श्री भिखम उराँव तथा तोलोंग सिकि के अन्वेषक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' उपस्थित थे। शोध संस्थान की ओर से उपनिदेषक श्री सोमा सिंह मुण्डा द्वारा कार्यशाला का संयोजन किया गया। यह कार्यषाला सह विचार–गोष्ठी, डॉ. निर्मल मिंज की अध यक्षता में सम्पन्न हुई। आरंभ में निदेषक डॉ. प्रकाष चन्द्र उराँव ने इस विचार–गोष्ठी की आवश्यकता एवं उदेष्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्थान को जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय भाषाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा दिये जाने हेतु पाठ्य पुस्तक का लेखन, अनुवाद तथा प्रकाशन करने का विभागीय निर्देश प्राप्त हुआ है, जिसके आलोक में इस गोष्ठी से आवश्यक दिशा–निर्देश प्राप्त करना है।

इस कार्यशाला में कई महत्वपूर्ण विन्दुओं पर विचार–विमर्श किया गया। परिचर्चा में बातें आयीं कि एक आदिवासी बच्चा, जन्म से पाँच वर्ष की उम्र तक अपने माता–पिता एवं गांव–समाज में रहते हुए अपनी मातृभाषा में बोलता है, गाता है, कहानी सुनता एवं सुनाता है। वह अपने जीवन में घट रही बहुत सारी बातें सीख चुका होता है और आधुनिक विद्यालय में प्रवेश से पूर्व ढेर सारा ज्ञान भंडार संजोकर रखता है। परन्तु उसका यह ज्ञान भंडार आधुनिक विद्यालय के प्रथम कक्षा के प्रथम दिन ही शून्य हो जाता है। उस बच्चे को फिर से उन्हीं बातों को नये सिरे से दूसरी भाषा में सीखना पड़ता है। यहीं से उस बच्चे के मन में आदिवासी होने की हीन ग्रंथि का शिकार होना पड़ता हैं और वहीं से आरंभ होती है School drop out जैसी विडम्बना।

अतएव आदिवासी बच्चे को उसकी अपनी मातृभाषा में ही 1ली से 5वीं कक्षा तक षिक्षा दी जाय और हिन्दी एवं अंगरेजी भी आरंभ की जाए, जिससे उपरी कक्षा में हिन्दी–अगरेजी सीखने में मातृभाषा मददगार बनेगी। इसके चलते बच्चों के माता–पिता एवं अभिभावक अपने बच्चों के पढ़ाई में मददगार बन सकेंगे। इसी तरह आने वाले समय में कुँड़ुख़ भाषा के सम्पूर्ण विकास हेतु कुँड़ुख़ भाषा की अपनी लिपि की आवष्यकता होगी, जिसे आज इस प्रतिनिधि सभा में सर्वसहमति से निर्णय लिया जाना चाहिए।

कार्यषाला के अंत में सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि – 1. कुँड़ुख़ क्षेत्रों में, प्राथमिक शिक्षा, 1ली से 5वीं कक्षा तक कुँड़ुख़ माध्यम से ही हो। 2. कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि (लिपि) है। इसे केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर के निदेषक डॉ० फ्रांसिस एक्का तथा पूर्व कुलपति डॉ० रामदयाल मुण्डा द्वारा भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से स्वीकार किया गया है। अतएव इसके पूर्ण विकसित होने तक पढ़ाई में देवनागरी लिपि का प्रयोग हो तथा नई लिपि में भी साहित्य विकास हो।

– श्री सरन उराँव
वरीय लेखाकार, कार्यालय
महालेखकार राँची, बिहार।
दिनांक 19.09.1998

32. तोलोङ सिकि लिपि 15 मई 1999 ई0 को जनमानस के व्यवहार के लिए समर्पित

डॉ0 रामदयाल मुण्डा, पूर्व कुलपति, राँची विष्वविद्यालय, राँची एवं डॉ0 (श्रीमती) इन्दु धान, पूर्व कुलपति, मगध विष्वविद्यालय, बोधगया एवं सिद्हु–कान्हु मुरमु वि0, दुमका द्वारा संयुक्त रूप से संवादाता सम्मेलन कर दिनांक 15 मई 1999 को तोलोंग सिकि (लिपि) को जनमानस के प्रयोग के लिए जारी किया गया। संवादाता सम्मेलन में डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 (श्रीमती) इन्दु धान, प्रो0 नारायण भगत, डॉ0 नारायण उराँव, प्रो0 मीना टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री हिमांषु कच्छप, श्री महेष भगत, श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत एवं श्री साधु उराँव आदि उपस्थित थे।

33. तोलोङ सिकि (लिपि) का कम्प्यूटर वर्जन 'केलि तोलोङ फॉन्ट' का विकास हेतु बैठक

तोलोंग सिकि लिपि का कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित करने की रूपरेखा तैयार करने हेतु फरवरी 2000 में पहली बैठक, संत अल्बर्ट, कालेज, राँची में हुई। फोटो में बायें से दायें फा0 प्रताप टोप्पो, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं वरीय पत्रकार श्री किसलय जी। फा0 प्रताप, राँची के सीनियर जर्नालिस्ट रहे हैं। उन्होंने वेब पर कार्य करने के लिए श्री किसलय जी प्रोत्साहित किया और श्री किसलय जी तोलोंग सिकि का कम्प्यूटर फॉण्ट तैयार करने में जुड़ गये।

34. माननीय कार्डिनल तेलेस्फॉर पी0 टोप्पो, डॉ0 करमा उराँव, श्री किसलय जी, श्री विनोद कुमार भगत, श्री प्रभाकर तिर्की आदि द्वारा दिनांक 20 नवम्बर 2002 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन Kellytolong फॉन्ट के प्रथम संस्करण का लोकार्पण। तोलोङ सिकि का कम्प्यूटर वर्जन, फॉन्ट पत्रकार श्री किसलय जी ने तैयार किया है।

प्रभात खबर, रांची — 21 नवंबर 2002, गुरुवार 7 — राजधानी

आदिवासी भाषाओं की लिपि के सॉफ्टवेयर की सीडी का लोकार्पण

संवाददाता

केलि तोलोंग डीटीपी सॉफ्टवेयर की सीडी जारी करते अतिथि.

Kelly Tolong Software is the Computer Version of Tolong Siki Script, invented by Dr. Narayan Oraon (TRACE)

सन 2001 में लिपि बन कर तैयार हुई

बेटी के नाम पर तोलोंग सिकि लिपि

35. तोलोङ सिकि के संबंध में भाषाविदों एवं शिक्षाविदों आंदोलनकारियों के विचार

Dr. Nirmal Minj

Most adivasis are doubly deprived of their cultural identity. They begin their schooling in an alien script and language. Thus they have stepped two steps down their personal and community life. First their mother tongue is not recognized and they have no script of their own. To be an independent and free adivasi person and community they must have their own script and language for developing their literature and culture. The education through their own script and language will make the adivasi a real free and independent person and community with their self respect and dignity.

- Bishap Dr. Nirmal Minj
Dated 04.04.1997 Ranchi
(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास)

Dr. Karma Oraon

Script is the third category for presentation and documentation of expression and conversations of human beings, where the symbolic and phonetic conversation stand first and second.

The tribal groups of the Jharkhand and neighbouring areas have been intending to develop a separate tribal script for better communication within their fold on the basis of social, cultural, historical and ecological backgrounds and settings.

Dr. Narayan oraon 'Sainda' along with the member of Sirasita Prakashan has made a landmark endeavour to develop the required aspect, which is known as 'Tolong Siki' (Tolong Script). ....

Dated 04.04.1997 - Dr. Karma Oraon
(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास)

.... डॉ. नारायण, आप आदिवासी भाषाओं के लिए लिपि विकास में लगे हैं और आपकी समस्या है कि सभी स्वर ध्वनियों के लिए अलग–अलग लिपि चिन्ह रखे जाएँ अथवा देवनागरी लिपि की वर्णमाला की तरह हो। इसके बारे में एक अच्छा भाषा जानकार ही सलाह दे सकता है। मैं कुँड़ुख़ भाषा का अच्छा जानकार नहीं हूँ। .... फिर भी इस विषय पर मेरा सुझाव सुनिये – हमलोग हिन्दी भाषा की देवनागरी लिपि के मात्रा चिन्हों तथा इसके प्रयोग में अकसरहाँ उलझ जाते हैं। हिन्दी के हृस्व एवं दीर्घ उच्चारण और उसके चिन्हों को बायें तथा दायें ओर से लिपि चिन्ह दिये जाने में हमेशा ही उलझन होती है। संभव हो तो नई लिपि में इस समस्या का समाधान ढूँढ़ें और इस तरह के उलझन से लोगों को बचाएँ तथा खाश करके बच्चों के मददगार बनें।

– डॉ. फा. बेनी एक्का
निदेशक
जेवियर समाज सेवा संस्थान
राँची (झारखण्ड)

दिनांक – 09 अगस्त 1997

डॉ0 बेनी एक्का

प्रो0 इन्द्रजीत उराँव

सय नारायण उराँवस गही ई 'कत्थ एःख़' तंगआ खोंड़हा का बेलख़ा ता होरमा आःलर गही उज्जना–ओक्कना अरा नन्ना खोंड़हन्ता आःलर गने ओड़ा–सड़ी मन्ना, मुन्धभारे काःलर दरा ओन्टा अकय कोहा चम्बा चिओ। इन्ना ता चोक्खा मंज्जका बेड़ा नू सय नारायण उराँवस लेखआ अबगम बग्गे लूरगरियर गही चाड़ रअ़ई। एःन परपन्द जिया ती दव घोखदन अरा बाःख़दन का ईस गही ओःरे नंज्जका नलख बरना बेड़ा गे खोंड़हन्ता होरमा आःलर गही बोलतन माःनिम ओत्तर दरा निजिड़तआ ओंग्गो।

– श्री इन्द्रजीत उराँव, रीडर
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,
राँची विश्3वविद्यालय राँची।

दिनांक – 13 मई 2001

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास)

.... तोलोंग–सिकि को कुँड़ुख़ कत्था की आधारभूत लिपि के रूप में मुझे अंगीकार करते हुए थोड़ी भी षंका नहीं है जहाँ तक अपनी भाषा की सहज जानकारी है और जिस पर मैं स्वंय को गौरवान्वित महषूस करता हूँ। आप तमाम कुड़ुख़ भाषियों एवं साहित्य प्रेमियों से आग्रह करना चाहूँगा कि आप भी इस पर गंभीरता पूर्वक चिन्तन–मनन करें तथा इसके माध्यम से कुँड़ुख़ भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को अक्षुण रखने में मदद करें। मैं इस लिपि के सृजनकर्ता के समर्पण, त्याग और तपस्यामूलक प्रयासों से अत्यधिक प्रभावित हूँ, जिन्होंने समुदाय के व्यापक हित में तोलोङ सिकि का सृजन कर समाज को अतुलनीय देन दी है। मैं डॉ. नारायण उराँव के मंगल भविष्य की कामना करता हूँ।...

– डॉ. बहुरा एक्का
कुलपति, वि.भा.वि.,हजारीबाग (झारखण्ड)

दिनांक – 12 फरवरी 2003

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास।)

डॉ0 बहुरा एक्का

डॉ. अरूण उराँव

संविधान के अनुच्देद – 29 में हमें अपनी भाषा, लिपि एवं संस्कृति को बनाये रखने का अधिकार है। साथ ही साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के नजरिये से एक पूर्ण भाषा के लिए उस भाषा की स्वतंत्र लिपि एवं व्याकरण का होना आवश्यक है। अतः संवैधानिक अधिकार के दायरे में अपनी भाषा, संस्कृति एवं लिपि को बनाये रखने हेतु किया गया कार्य अति सराहणीय है। यह जानकर हमें अत्यधिक खुषी हो रही है कि आदिवासी भाषा के विकास हेतु झारखण्ड क्षेत्र में *तोलोंग सिकि* नामक एक लिपि का विकास हुआ है तथा कई विद्यालयों में इसकी पढ़ाई–लिखाई आरंभ हो चुकी है। संघ लोक सेवा की परीक्षा की तैयारी के दौरान मैंने आदिवासी समाज के इतिहास के बारे में जानने का प्रयास किया और पाया कि जनजातीय समाज अपने ज्ञान भण्डार को संजो कर रखने में समर्थ नहीं रहा, जो इसके पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण रहा है। इसके अतिरिक्त भाषायी एवं सांस्कृतिक पहचान हेतु किसी भाषा की लिपि का होना आवश्यक है। वैसे वर्तमान परिवेश में रोजगार की भाषा हिन्दी एवं अंगरेजी को सीखना है किन्तु एक तीसरी भाषा के रूप में अपनी मातृभाषा (आदिवासी भाषा) का पठन–पाठन भी आवश्यक है। तोलोंग सिकि के विकास से आदिवासी भाषा के विकास में नई जागृति एवं स्फूर्ती आयगी ऐसा मेरा विश्वास है। पेशे से चिकित्सक डॉ. नारायण उराँव एवं उनके सहयोगियों को इस महती कार्य के लिए मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

– डॉ. अरूण उराँव, आई.पी.एस.
आरक्षी अधीक्षक, पूर्वी सिंहभूमी, जमशेदपुर।

दिनांक – 23 जून 2003

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास।)

डॉ० (श्रीमती) इन्दु धान

.... यदि हम वास्तव में अपने क्षेत्र के आदिवासियों की उन्नति चाहते हैं तो यह प्रयास करना होगा कि सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी कम से कम हर बच्चे को प्राथमिक षिक्षा मिले। वर्तमान षिक्षा प्रणाली में यह प्रबंध नहीं है कि प्राथमिक षिक्षा मातृभाषा में मिले, लेकिन तोलोंग लिपि को मान्यता मिल जाने पर यह संभव होगा कि आदिवासी बच्चे अपनी मातृभाषा में प्राथमिक षिक्षा प्राप्त कर सकें। इसके अतिरिक्त हमारी परम्परा और हमारे इतिहास को भी लिपिवद्ध करने की आवष्यकता है। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस क्षेत्र में बुद्धिजीवियों और षिक्षाविदों का ध्यान इस ओर आया है।

— डॉ. (श्रीमती) इन्दु धान
पूर्व कुलपति,
मगध विष्वविद्यालय, बोधगया (बिहार)

दिनांक — 27 अप्रैल 2003

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्‌भव और विकास।)

अपनी भाषा और संस्कृति किसी जाति विषेष की पहचान होती है। हमारे आदिवासी समाज में बहुत सी भाषाएँ बोली जातीं है, पर कुछ भाषाओं की लिपि अभी तक विकसित नहीं हो पायी है। यही कारण है कि बहुत सी भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। किसी भाषा की लिपि उस भाषा के लिए कवच की तरह है जो उसे स्थायित्व प्रदान करता है, उसे लुप्त होने से बचाती है।

डॉ.नारायण उराँव एवं उनके सहयोगियों द्वारा विकसित कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोंग सिकि इस दिषा में एक सराहनीय कदम है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं।

— डॉ. विक्टर तिग्गा
पूर्व कुलपति
सिद्धू कान्हू वि.वि. दुमका (झारखण्ड)

दिनांक — 20 फरवरी 2011

डॉ0 विक्टर तिग्गा

श्री मिसिर उराँव

समाज की पहचान उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती है। जिसमें भाषा, संस्कृति के वाहक के रूप में होता है। इसलिए संस्कृति के संरक्षण हेतु उसके वाहक अर्थात उसकी भाषा को संरक्षित एवं विकसित करना आवष्यक है। वर्तमान परिवेष में पुरखों की धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए उस भाषा की अपनी लिपि विकसित कर प्राथमिक कक्षा से विष्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाई—लिखाई में स्थान दिया जाना चाहिए। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दबाव से आदिवासी समाज की अस्मिता को संरक्षित एवं विकसित करने हेतु अपनी भाषा को सुरक्षित रखना जरूरी है। इसी विचारधारा से राँची विष्वविद्यालय में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खोला गया और मुझे कुँड़ुख़ टेस्टबुक कमिटि का सदस्य की जिम्मेदारी मिली। भाषा बचाव एवं इसे अगली पीढ़ी तक ले जाने की दिषा में कुँड़ुख़ समाज के बुद्धिजीवियों ने तोलोंग सिकि (कुँड़ुख़ भाषा लिपि) विकसित कर कुँड़ुख़ भाषा विकास को गति प्रदान किया है, वे सभी बधाई के पात्र हैं।

— श्री मिसिर उराँव
पूर्व प्रतिकुलपति
सिद्धू कान्हू वि.वि. दुमका (झारखण्ड)
पूर्व कुलपति (कार्यकारी)
तिलका मांझी भागलपुर विष्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)।

दिनांक — 15.11.2015

डॉ0 माहिदास भट्‌टाचार्य

''किसी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए उसके सांस्कृतिक धरोहर को बचाकर रखना आवष्यक है। साथ ही उस भाषा का नेत्र ग्राह्य रूप यानि उस भाषा की लिपि का होना भी आवष्यक है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में यूनिवर्सल सिस्टम को अपनाते हुए, अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने हेतु मातृभाषा की षिक्षा जरूरी है, किन्तु भाषा एवं लिपि के विकास के क्षेत्र में कार्य करने के लिए समाज को स्वयं आगे आना पड़ता है, सरकार इसमें मदद करती है। कुँडुख़ तोलोंग सिकि में प्रकाषित पुस्तक 'कइलगा', संस्करण–2013 में नासिक्य स्वर सूचक एवं नासिक्य व्यंजन सूचक दोनों के लिए अलग चिन्ह नहीं है। लेखन में दोनों स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए।''

– डॉ. माहिदास भट्‌टाचार्य, भाषाविद्
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
जादवपूर यूनिवर्सिटी, कोलकाता

दिनांक : 06 जुलाई 2016

भाषा और संस्कृति का आपस में गहरा संबंध है। संस्कृति को बचाने के लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों को अपने समुदाय द्वारा संचित ज्ञान, हस्तांतरित करने के लिए भाषा ही एकमात्र माध्यम है। भाषाओं का संरक्षण जैव संरक्षण जैसा ही महत्वपूर्ण है। हमारी जनजातीय भाषाएँ अनंत ज्ञान का श्रोत हैं। कई–कई हजार वर्ष पुरानी इन भाषाओं में षोध करने से बहुत सी अनसुलझी पहेलियाँ सुलझ रही हैं। इस वजह से जनजातीय भाषाएँ, खासतौर पर लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण की महती आवष्यकता है। डॉ. नारायण उराँव जो पेशे से बालरोग चिकित्सक हैं, वे मरीजों की देखभाल और परिचर्चा जिस समर्पण भाव से करते हैं, उसी भाव से मातृभाषा कुँडुख़ की सेवा भी करते हैं। अपनी मातृभाषा को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करने की यह उनकी उत्कट अभिलाषा है, जिससे कुँडुख़ भाषा को कम्प्यूटर पर स्थान तो मिला ही, साथ में षिक्षा में भी उचित स्थान मिला है और इस भाषा को कई स्थानों पर पढ़ाया जाना षुरू कर दिया गया है। डॉ. उराँव का यह अतुलनीय प्रयास सभी भाषा–भाषियों को अपनी भाषा को संरक्षित करवाने और तकनीकी तथा षिक्षा एवं रोजगार की भाषा के रूप में स्थापित करवाने हेतु प्रेरित करेगा।

दिनांक : 21 फरवरी 2018

श्री दिलीप कुमार सिंह
(भाषाविद)
उपप्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद।

Kurukh is a North Dravidian language of the Oraon tribe of East Central India and spoken by approximately two million people. In Dravidian languages the feature of vowels nasalization is less prolific but in Indo Aryan languages like Hindi, Gujrati, Punjabi etc, the nasal vowels are found. Tamil and Kurukh as Dravidian languages have the feature of vowel nasalization. The coupling of the oral – nasal tract in the vowel utterance of the Kurukh language, adds the vowel nasalization in the language as a distinctive feature. The onset of the syllable interestingly is the stop followed by the vowel which is nasalized. The nasalized vowels in Kurukh occur in the monosyllabic or disyllabic words.

डॉ. एम. रहमान
भाषाविद् एसोसिएट प्रोफेसर,
आई.आई.टी.–आई.एस.एम. धनबाद।

दिनांक : 28 फरवरी 2018

36. कुँड़ुख़ लिपि तोलोंग सिकि गही ख़ीःरी

"कुँड़ुख़ कत्था गही ख़ीःरी गा दिघम रअ़ई। बरा नाम गुनईन ननोत। कत्था कछनखरना अरा अदिन एःरागे सीःबा ख़ाःरना गही कत्था गा ननना मनो। इय़्या कुँड़ुख़ कत्था अरा लिपि पइत्त नु अख़ना गही बखनी नंज्ज एःरोत। कछनखरना अरा ख़ेबदा ती मेनना मुनता ख़ीःरी तली, मुन्दा कत्थन मेनर की अदिन ख़न्न ती एःरना बेसे चिन्हाँ चिअ़ना एँड़ता चम्मबी तली। अदा - आद अंगरेजी, अदा - आद हिन्दी ! अन्नेम एःरर किम तेंग्गोर चिओर का इःद का आद एन्नेद का अन्नेद बओर। अवंगेम कुँड़ुख़ लिपि गही ख़ीःरी तेंग्गना अरा अदिन टूड़ना–बचना ही चाँड़ मनो।

एकअम लिपि नु 'तोःड़' उरमिन ती सन्नी दरा ओःरे चटख़ना तली। कुँड़ुख़ नु सरह तोःड़ 6 गोटंग ₽ V ४ ७ 1 ॥ / इ ए उ ओ अ आ मनी अरा हरह तोःड़ गा 35 गोटंग मनी, अदिन इसन तेंग्गना चाँड़ मल्ला। पहें हरह तोःड़ 'प' ती ओःरे मनी। आद एन्ने ᑌ ᑯ ᑲ ᑰ ᑳ बेसे इथिर'ई अरा इबड़द प् फ् ब् भ् म् ब'अर फुरूचतार'ई। इदिन गा कुँड़ुख़र अरा आदिवासी लूरगरियर घोःड़चर दरा एःदर चिच्चर का कुँड़ुख़ हहस तोःड़ इवन्दम मनो। अबड़न जोड़–नाड़ ननर किम सिखिरना मनो। फिन दिगहा, सन्नी फरक–फरक ननअम मनी। अदिन तेंग्गा गे चिनहाँ मनी। तोलोंग सिकि ही ₽ अरा हिन्दी गही इ हहसन दिगहा कमआ गे हिन्दी नु ि टूड़ना मनी, मुन्दा कुँड़ुख़ नु **:** चिआ ख़ने आद दिगहा मनी काःली। अन्नेम कुँड़ुख़ नु 'स' ओण्टे एका मनी। ष अरा **ष** मल मनी। हिन्दी ही क्ष, त्र, ज्ञ, श्र हुँ मल मनी। 'ख़' 'ज़' अरा अ़ तोड़ हिन्दी ती बिलग बि'ई।

इदा ! एरा तो एःन गा तोलोङ सिकि नुम नमुद चिआ–चिआ तेंग्गा बेद्दा लगदन। अक्कु एःन, तोलोङ सिकि एका से कुँड़ुख़ कत्था ही बखड़े नु बरचा दरा कोरचा अदिन अक्कु तेंग्गोन–मेन्तओन। एःन गा जोंःख़ परिया तिम कुँड़ुख़ लिपि पइत्त नु बेद्दा गे ओःरे नंज्जकन। ओःरे नु ओन्टा सामुएल रंका नाःमे ही मास्टरस सन्त पॉल लूरकुड़िया नु बचतआ लगियस। आ रंका मास्टरस कुँड़ुख़ लिपि ओत्थरस। आस – 'न' गे नेर्र बेसे चिनहाँ कमनुम केरस। मुन्दा टूड़ा गे उजगोम पोल्ला काःला। जोक्क गेच्छा काःलर आद मुंज्जरा केरा। इदि ख़ोःखा ओरोत डॉ. अनन्ती जेबा सिंह नाःमे ही तमिल मुक्का 'ब्राहमी लिपि' ती 'बराती लिपि' ओत्थरा। अदिन जोक्क कुँड़ुख़र इंजिरअर ''बाईबलन'' कुँड़ुख़ नु तरजुमा ननर आ ब्राहमी लिपि ती चिपताःचर। आद हिन्दी ती नन्ना मल एत्थरा। ई ब्राहमी लिपि हुँ बग्गे उल्ला ठठआ पोल्ला। मुन्ध नु फर्दिनेन्द हॉनस गने मिसनरी सहेबर रोमन लिपि ती ढेर बग्गे पुथि टूड़यर। नाम हुँ अदिन इंजिरअर टूड़ा–बचआ ओःरे नंज्जकत, मुन्दा आद हुँ बग्गे उल्ला संग्गे चिआ पोल्ला। रोमन लिपि ख़ोःख़ा कुँड़ुख़र देवनागरी लिपिन इंजिरअर दरा टूड़ा–बचआ ओरे नंज्जर अरा अक्कुन गूटी मोघोरका रअ़नर। मुन्दा इत्ती एन्देर मलदव मना लगी अदिन गा आर मलम घोखआ लगनर। कुँड़ुख़ कत्था हिन्दी गही पतड़ा, टोड़ंग, परता नु एबेसेरआ काःला लगी। इत्ती कुँड़ुख़ कत्था नूख़ूरआ–नूख़ूरआ उज्जा लगी। दहदर कुँड़ुख़ मलम एथेरआ लगी। इदिन जोक्क कुँड़ुख़र ईःरयर, बुज्झरर, घोखचर। ई मजही नुम धरमे सवंग डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' सिन चाःजर मुन्दहाःरे ओन्दरा। आस कुँड़ुख़ा नेग चाःलो ही मूःलीन धरअर की डण्डा कट्टना (भेलवाफड़ी) नेगचार ती गुनआ ओःरे नंज्जस। दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) नु डॉक्टरी ही पढ़ाई ननु सिन धरमे, आस गही मेद्दोन तिखड़ाःचा दरा तोलोङ सिकि ही छपन, कुँड़ुख़ लिपि रूःपे नु दहदर ननताःचा। आस गने जोक्क कुँड़ुख़र संग्गे चिअर नलख नना हेल्लरर। डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, इरबारिम भखा विज्ञान गही पंडितर सन्नी कमिटि गने होटल महाराजा, कचहरी चौक, राँची नु ओक्कर तोलोङ सिकिन फँड़ियाःचर दरा ओरमर छमहें एःदर चिच्चर का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था अरा उरमी आदिवासी भखा गे दःव मनो। कुँड़ुख़ गे गा तोलोङ सिकि अक्कु नमजद्दी मंज्जा केरा। झारखण्ड अरा पष्चिम बंगाल सरकार इदिन इंज्जरा दरा असम, छतीसगढ़, ओड़िसा, नेपाल, भूटान तरा हुँ ईद परदा लगी अरा असन टूड़ा–बचआ लगनर।

डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दस' गने जोक्क कुँड़ख़र संग्गे मनर ''बक्कहुही'' नाःमे ही ओण्टा मून्दचन्दोख़ (त्रैमासिक) कुँड़ुख़ पतख़ा (पत्रिका) ओथोरआ लगनर। आद झारखण्ड, प. बंगाल, असम, ओड़िसा, छतीसगढ़, यू.पी. अरा नन्ना राःजी तरा बींःड़िरआ लगी। कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी, दिल्ली हुँ अक्कु इंज्जरा, पहें तोलोङ सिकि पइत्त नु बग्गे नलख अरगी मना। अक्कु गा बअना मनो का तोलोङ सिकि दिम कुँड़ुख़ कत्था गही सिकि तली।

डॉ0 निर्मल मिंज 'झरिया'
संस्थापक प्राचार्य, गॉस्सनर कालेज, राँची
लेखक, साहित्यकार, आदिवासी चिंतक एवं
साहित्य अकादमी भाषा सम्मान 2016 से सम्मानित।

दिनांक : 15 नवम्बर 2019

37. झारखण्ड अलगप्रांत आंदोलनकारियों की नजर में : आन्दोलन की उपलब्धि है तोलोंग सिकि

– माननीय विनोद कुमार भगत

पूर्व मंत्री (जैक) तथा झारखण्ड राज्य निर्माण के अग्रणी छात्र नेता तथा ऑल झारखण्ड स्टुडेन्ट्स यूनियन (आजसू) एवं झारखण्ड आन्दोलनकारी मोर्चा के संस्थापक गणों के अगुवा

अपने देश भारत में कितना भी कोई अच्छे से अच्छा योजना बना ले, किन्तु विकास के लिए भाषा और लिपि का होना आवश्यक साधन है। क्योंकि भारत देश में मानवता को सामुदायिक आधार पर देखा जाता है। इसके आधार पर ही केन्द्र और राज्य सरकार में विकास का बजट तैयार किया जाता है। क्योंकि भारत देश की आबादी में सामुदायिक पहचान का स्थान अति महत्वपूर्ण है। इस महत्व को आज से 30–32 साल पूर्व हमलोग एक आदिवासी नेतृत्व कर्ता के रूप में समझ चुके थे। हमलोग अपने देश की जातिगत, भाषागत तथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विषय में बातें समझ चुके थे। हम सभी आदिवासी भाषाओं तथा झारखण्ड के अन्य भाषाओं के मिटने की स्थिति पर काफी चिन्तन और चिन्ता करते थे। उन दिनों, इस प्रकार के भेदभाव, अपमानित करने वाले लोगों का प्रभूत्व था। इस सामाजिक बुराई से लड़ने हेतु एक बड़ी चुनौती थी, जिसको स्वीकार करने वालों में से कई लोगों ने कुँड़ूख भाषा के विकास की ओर कार्य आरम्भ किया। इस समय तक मुझमें, आदिवासी तथा मूलवासियों के बाल–बच्चों को पढ़ाई–लिखाई में आने वाली बाधाओं को समझ सकने की क्षमता बन चुकी थी और कॉलेज में दाखिला लेने के साथ ही मुझे छात्रगण, एक छात्र नेता के तौर पर स्थापित करने लगे थे। छात्र जीवन में आदिवासी कॉलेज छात्रावास में रहते हुए मेडिकल छात्र नारायण उराँव, मेरे एक खास साथी हुआ करते थे। मेडिको, नारायण उराँव में, समाज के प्रति गंभीर लगाव और समझ झलकता था और दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) से एम.बी.बी.एस. की डिग्री हासिल करते–करते अपना सामाजिक लगाव को प्रदर्शित करते हुए उन्होंने वर्ष 1989 में एक पुस्तक का प्रकाशन कराया। उस पुस्तक का नाम है – ''सरना समाज और उसका अस्तित्व।'' मैं भी इसे पढ़ा और डॉ.नारायण उराँव को बधाई दिया। एक आन्दोलनकारी छात्र नेता के रूप में, मैं डॉ० उराँव को सुझाव दिया – ''डॉक्टर, नीन ई पुथी नु ढेर बग्गे कत्थन दव कुना टूःड़का रअ़दय। पहें नीन निंगहय कत्थन हिन्दी भखा बाःचका रअ़दय, अवंगे ईद बग्गे उल्ला मल खेपओ। ईदिन नीन कुँड़ुख़ नु घोखआ अरा टूड़ा होले ईद बग्गे उल्ला गूटी थीर रअ़ओ।'' मेरा यह सुझाव, डॉ0 नारायण के मन में बैठ गया और वे कुँड़ुख़ में सोचने और लिखने लगे। शायद तोलोङ सिकि (लिपि) के विकास की नींव का प्रत्येक ईट इस घटना के बाद मजबूती से तैयार होने लगा था।

अलग राज्य आंदोलन के क्रम में हमलोग अपने साथियों के साथ नदी, पहाड़, झरना, गुफा आदि जगहों पर घुमते रहे कि शायद कहीं पर, पूर्वजों की लिपि मिल जाय, परन्तु हमलोग सफल नहीं हुए। आखिर, वह दिन भी आया या फिर ईश्वरीय कृपा हुई कि छुट्टियों में डॉ० नारायण उराँव, अपने राँची प्रवास के दौरान आदिवासी कालेज छात्रावास, राँची पहुँचे। विचार–विमर्श के बाद मैंने, डॉ० नारायण से कहा – ''आप, एक डॉक्टर होकर मानव सेवा तो करेंगे ही, पर आपमें, आदिवासी भाषा, संस्कृति के प्रति अटूट आस्था एवं लगाव के साथ समझ है। यदि आप नई लिपि के विकास के क्षेत्र में कार्य कर सकते हो, तो आन्दोलन और समाज के लिए आपका अतुलनीय योगदान होगा। यह, समय और आन्दोलन की मांग है। सन् 1989–90 के आसपास ऐसी विचार धारा, एक आवश्यकता थी और आंदोलनकारियों की ओर से इस दिशा में डॉ० नारायण को आगे बढ़ने को कहा गया और वे इस काम में आगे बढ़ने लगे। थोड़ा सा सोच बनता और डॉ० नारायण मेरे साथ विचार–विमर्श करने के लिए आ जाया करते थे। इस तरह लिपि विकास का कार्य होता गया। आन्दोलनकारियों के निवेदन पर एक पत्रकार श्री गिरजा शंकर ओझा द्वारा नई लिपि, तोलोङ सिकि के संबंध में विस्तृत रिर्पोट तैयार किया गया, जो हिन्दी दैनिक 'आज' में दिनांक 07.10.1993 को छपा। धीरे–धीरे माहौल बनता गया एवं कार्य आगे बढ़ता गया और अब पठन–पाठन हो रहा है।

वर्तमान में तोलोङ सिकि का कम्प्यूटर वर्जन यानि कम्प्यूटर फॉन्ट, वरिष्ट पत्रकार श्री किसलय जी के द्वारा विकसित किया गया है, जो केलितोलोङ फोन्ट के नाम से निःशुल्क उपलब्ध है। अंत में मैं ''धुमकुड़िया'' (एक परम्पारिक सामाजिक कौशल विकास केन्द्र) नामक पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु डॉ० नारायण उराँव एवं लिपि विकास में जुड़े सभी साथियों को शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है, आने वाले समय में आदिवासी विकास में धुमकुड़िया एक सशक्त माध्यम बनेगा।

– सिन्दवार टोली, न्यू ऐरिया मोरहाबादी, राँची (झारखण्ड), पिन–834008,दिनांक : 15 नवम्बर 2019

38. कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) के संबंध में सरकारी एवं विभागीय अधिसूचना

;(i). मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, रांची द्वारा जारी वर्ष 2003 की अधिसूचना

20 जून, 2001 बुधवार 3

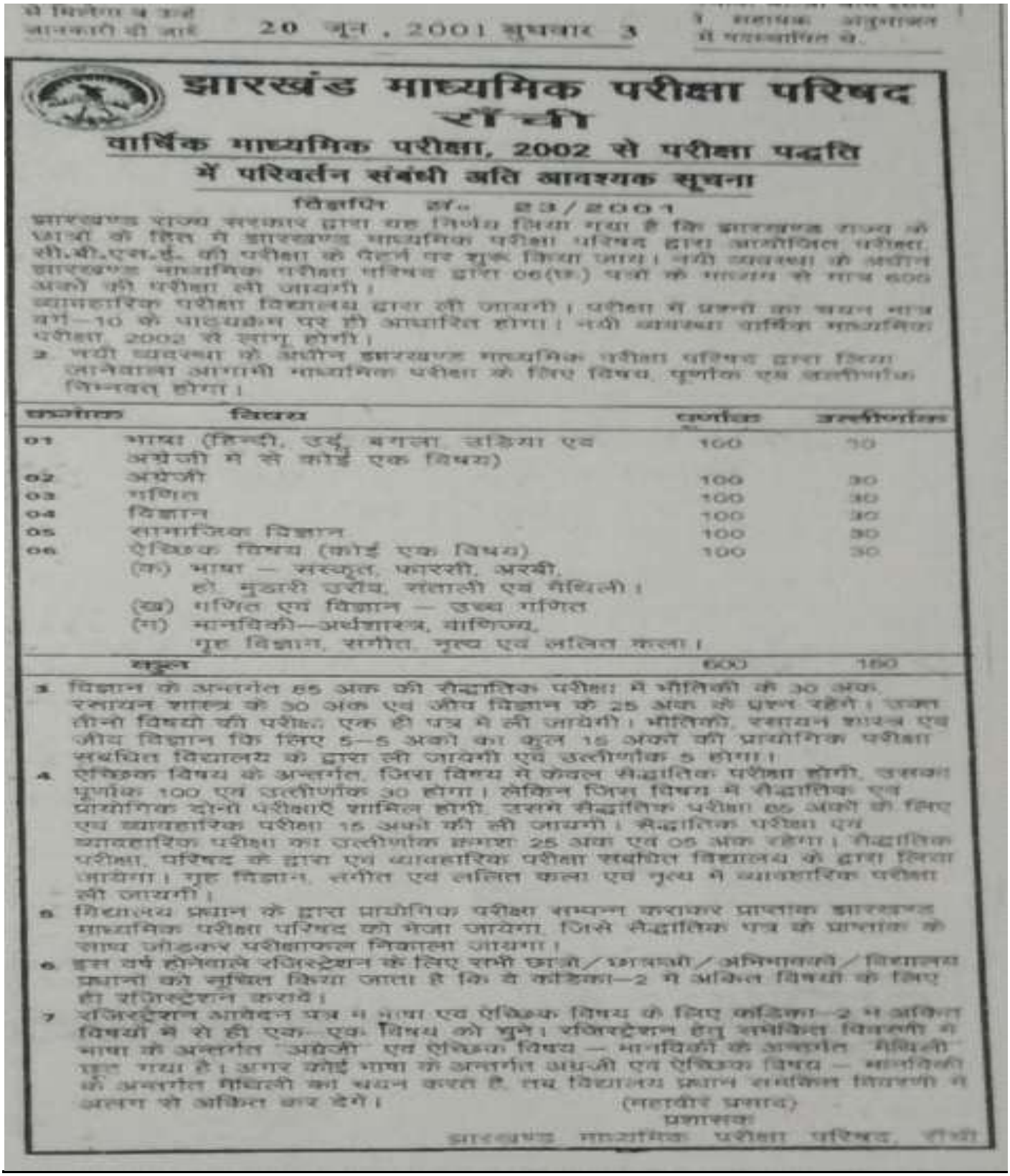

झारखंड माध्यमिक परीक्षा परिषद
राँची

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2002 से परीक्षा पद्धति में परिवर्तन संबंधी अति आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति सं० 23/2001

झारखण्ड राज्य सरकार द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि झारखण्ड राज्य के छात्रों के हित में झारखण्ड माध्यमिक परीक्षा परिषद द्वारा आयोजित परीक्षा, सी.बी.एस.ई. की परीक्षा के पैटर्न पर शुरू किया जाए। नयी व्यवस्था के अधीन झारखण्ड माध्यमिक परीक्षा परिषद द्वारा 06(छ:) पत्रों के माध्यम से मात्र 600 अंकों की परीक्षा ली जायगी।

व्यावहारिक परीक्षा विद्यालय द्वारा ली जायगी। परीक्षा में प्रश्नों का चयन मात्र वर्ग-10 के पाठ्यक्रम पर ही आधारित होगा। नयी व्यवस्था वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2002 से लागू होगी।

2. नयी व्यवस्था के अधीन झारखण्ड माध्यमिक परीक्षा परिषद द्वारा लिया जानेवाला आगामी माध्यमिक परीक्षा के लिए विषय, पूर्णांक एवं उत्तीर्णांक निम्नवत् होगा।

पत्रांक	विषय	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
01	भाषा (हिन्दी, उर्दू, बंगला, उड़िया एवं अंग्रेजी में से कोई एक विषय)	100	30
02	अंग्रेजी	100	30
03	गणित	100	30
04	विज्ञान	100	30
05	सामाजिक विज्ञान	100	30
06	ऐच्छिक विषय (कोई एक विषय) (क) भाषा — संस्कृत, फारसी, अरबी, हो, मुंडारी, उराँव, संताली एवं मैथिली। (ख) गणित एवं विज्ञान — उच्च गणित (ग) मानविकी—अर्थशास्त्र, वाणिज्य, गृह विज्ञान, संगीत, नृत्य एवं ललित कला।	100	30
	कुल	600	180

3. विज्ञान के अन्तर्गत 85 अंक की सैद्धान्तिक परीक्षा में भौतिकी के 30 अंक, रसायन शास्त्र के 30 अंक एवं जीव विज्ञान के 25 अंक के प्रश्न रहेंगे। उक्त तीनों विषयों की परीक्षा एक ही पत्र में ली जायेगी। भौतिकी, रसायन शास्त्र एवं जीव विज्ञान के लिए 5—5 अंकों का कुल 15 अंकों की प्रायोगिक परीक्षा संबंधित विद्यालय के द्वारा ली जायगी एवं उत्तीर्णांक 5 होगा।

4. ऐच्छिक विषय के अन्तर्गत, जिस विषय में केवल सैद्धान्तिक परीक्षा होगी, उसका पूर्णांक 100 एवं उत्तीर्णांक 30 होगा। लेकिन जिस विषय में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनों परीक्षाएँ शामिल होंगी, उसमें सैद्धान्तिक परीक्षा 85 अंकों के लिए एवं व्यावहारिक परीक्षा 15 अंकों की ली जायगी। सैद्धान्तिक परीक्षा एवं व्यावहारिक परीक्षा का उत्तीर्णांक क्रमश: 25 अंक एवं 05 अंक रहेगा। सैद्धान्तिक परीक्षा, परिषद के द्वारा एवं व्यावहारिक परीक्षा संबंधित विद्यालय के द्वारा लिया जायेगा। गृह विज्ञान, संगीत एवं ललित कला एवं नृत्य में व्यावहारिक परीक्षा ली जायगी।

5. विद्यालय प्रधान के द्वारा प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न कराकर प्राप्तांक झारखण्ड माध्यमिक परीक्षा परिषद को भेजा जायेगा, जिसे सैद्धान्तिक पत्र के प्राप्तांक के साथ जोड़कर परीक्षाफल निकाला जायगा।

6. इस वर्ष होनेवाले रजिस्ट्रेशन के लिए सभी छात्रों/छात्राओं/अभिभावकों/विद्यालय प्रधानों को सूचित किया जाता है कि वे कंडिका—2 में अंकित विषयों के लिए ही रजिस्ट्रेशन करायें।

7. रजिस्ट्रेशन आवेदन पत्र में भाषा एवं ऐच्छिक विषय के लिए कंडिका—2 में अंकित विषयों में से ही एक—एक विषय को चुनें। रजिस्ट्रेशन हेतु संबंधित विवरणी में भाषा के अन्तर्गत "अंग्रेजी" एवं ऐच्छिक विषय — मानविकी के अन्तर्गत "मैथिली" छूट गया है। अगर कोई भाषा के अन्तर्गत अंग्रेजी एवं ऐच्छिक विषय — मानविकी के अन्तर्गत मैथिली का चयन करते हैं, तब विद्यालय प्रधान संबंधित विवरणी में अलग से अंकित कर देंगे।

(महावीर प्रसाद)
प्रशासक
झारखण्ड माध्यमिक परीक्षा परिषद, राँची

;(ii). मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, रांची द्वारा जारी वर्ष 2003 की अधिसूचना

मानव संसाधन विकास विभाग

संकल्प

संख्या-प्रा०शि०नि० 620/01 1278/

भारतीय संविधान की धारा 350 क के प्रावधानों के तहत प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण कार्य संचालित करने की व्यवस्था की गई है; एवं इस व्यवस्था के अन्तर्गत पूर्ववर्ती बिहार राज्य में मातृभाषा के रूप में हिन्दी, बांगला, उड़िया, उर्दू, मैथिली, संथाली, उरांव (कुड़ुख), हो, मुंडारी एवं एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए अंग्रेजी भाषा को मान्यता दी गई।

झारखंड राज्य के गठन के पश्चात यह आवश्यक हो गया कि राज्य की भौगोलिक सीमा में अवस्थित विभिन्न जाति, समुदाय एवं ऐसे भाषा-भाषी समुदायों के लिए क्षेत्र विशेष में, वर्ष 1991 की भाषा संबंधी भारत की जनगणना के आधार पर उनकी आबादी के अनुरूप एवं उनकी भाषा संबंधी भावनाओं का समादर करते हुए उनके सामाजिक परिवेश के अनुरूप भाषा नीति लागू किया जाए।

2. तदनुसार एतद् संबंधी विभागीय प्रस्ताव पर मंत्रिपरिषद की स्वीकृति के पश्चात राज्य सरकार ने निर्णय लिया है, कि झारखंड की भौगोलिक सीमा के, बहु-भाषा भाषी क्षेत्रों में उनकी जनसंख्या/पर्याप्तों के आधार पर प्रारंभिक शिक्षण के क्षेत्र में वर्ग 1 से चिन्हित स्थान विशेष में हिन्दी राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त, मातृभाषा के रूप में, वर्ग एक से हिन्दी, बंगला, उड़िया, उर्दू, संथाली, उरांव (कुड़ुख), हो, मुंडारी, खड़िया, खोरठा, कुरमाली तथा एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए अंग्रेजी भाषा के माध्यम से मातृभाषा के रूप में प्रारंभिक शिक्षण कार्य कराने की अनुमति दी जाए। इनमें से जिन मातृ भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है, उनकी उनकी लिपि के रूप में देवनागरी लिपि की मान्यता दी जाए।

आदेश: आदेश दिया जाता है कि राज्य सरकार के इस संकल्प को राजपत्र के अगले असाधारण अंक में प्रकाशित कराया जाए या उसकी प्रति निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, झारखंड रांची को प्रेषित की जाए।

झारखंड राज्यपाल के आदेश से

(अमित खरे)
सरकार के सचिव

ज्ञापांक प्रा०शि०नि० 620/01 1278 /दिनांक 4-6-03 /

प्रतिलिपि: अधीक्षक, राजकीय मुद्रणालय, डोरण्डा, रांची को राजपत्र के अगले असाधारण अंक में प्रकाशनार्थ प्रेषित।

(अमित खरे)
सरकार के सचिव

ज्ञापांक प्रा०शि०नि० 620/01 1278 /दिनांक 4-6-03 /

प्रतिलिपि: माननीय मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव/माननीय विभागीय मंत्री के आप्त सचिव/मुख्य सचिव के सचिव/विकास आयुक्त के सचिव/सभी प्रमण्डलीय आयुक्त/सभी उपायुक्त/सभी क्षेत्रीय उप शिक्षा निदेशक/सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी/सभी जिला शिक्षा अधीक्षक एवं सभी संबंधित पदाधिकारी/कर्मचारी को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

(अमित खरे)

REDMI NOTE 9 PRO
AI QUAD CAMERA

(iii). झारखण्ड सरकार द्वारा विभागीय पत्रांक 129 दिनांक 18.9.2003 द्वारा कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को स्वीकृति प्रदान किया गया तथा इसे *संविधान की आठवीं अनुसूची* में षामिल किये जाने हेतु गृह मंत्रालय, केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को अनुषंसा पत्र प्रेषित किया गया है।

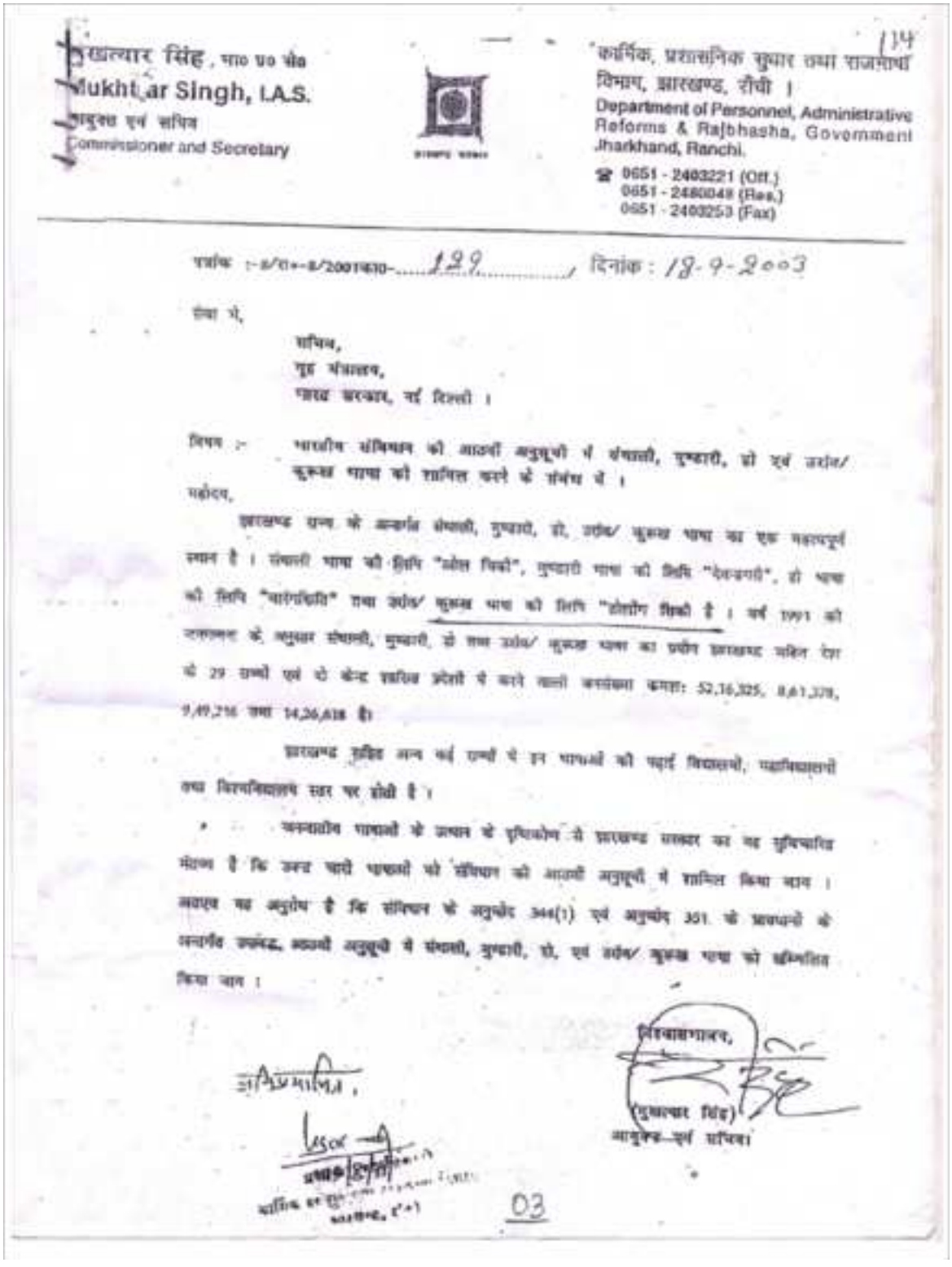

मुख्त्यार सिंह, भा० प्र० से०
Mukhtiar Singh, I.A.S.
आयुक्त एवं सचिव
Commissioner and Secretary

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची।
Department of Personnel, Administrative Reforms & Rajbhasha, Government Jharkhand, Ranchi.
0651 - 2403221 (Off.)
0651 - 2480048 (Res.)
0651 - 2403253 (Fax)

114

पत्रांक :-8/रा०-8/2001का०-129, दिनांक : 18-9-2003

सेवा में,

सचिव,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

विषय :- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो एवं उराँव/कुडुख भाषा को शामिल करने के संबंध में।

महोदय,

झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, उराँव/कुडुख भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। संथाली भाषा की लिपि "ओल चिकी", मुण्डारी भाषा की लिपि "देवनागरी", हो भाषा की लिपि "वारंगक्षिति" तथा उराँव/कुडुख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकी" है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार संथाली, मुण्डारी, हो तथा उराँव/कुडुख भाषा का प्रयोग झारखण्ड सहित देश के 29 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में करने वाली जनसंख्या क्रमशः 52,16,325, 8,61,378, 9,49,216 तथा 14,26,618 है।

झारखण्ड सहित अन्य कई राज्यों में इन भाषाओं की पढ़ाई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय स्तर पर होती है।

जनजातीय भाषाओं के उत्थान के दृष्टिकोण से झारखण्ड सरकार का यह सुविचारित मंतव्य है कि उक्त चारों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाय। अतएव यह अनुरोध है कि संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं अनुच्छेद 351 के प्रावधानों के अन्तर्गत यथाशीघ्र, आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो, एवं उराँव/कुडुख भाषा को सम्मिलित किया जाय।

विश्वासभाजन,

(मुख्त्यार सिंह)
आयुक्त एवं सचिव।

03

(iv). झारखण्ड अधिविद्य परिषद, रांची द्वारा विज्ञप्ति संख्या 17/2009 दिनांक 19.02.2009 द्वारा मैट्रिक में एक विद्यालय के लिए कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि से परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई।

प्रभात खबर

शुक्रवार, 20 फरवरी, 2009

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुडुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि–1–12/2002–565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय **"कुडुख कथा खोइहा लुर एड़पा भागी टोली"** डुमरी गुमला के 39 (उन्नचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुडु.ख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि **"तोलोंग सिकी"** से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार
ह./-
(पोलिकार्प तिर्की)
सचिव,
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09
D.O.P : 20.02.09

(v). झारखण्ड सरकार द्वारा 25 नवम्बर 2011 को अधिसूचना जारी कर राज्य के 12 भाषाओं को द्वितीय राजभाषा घोषित किया गया है।

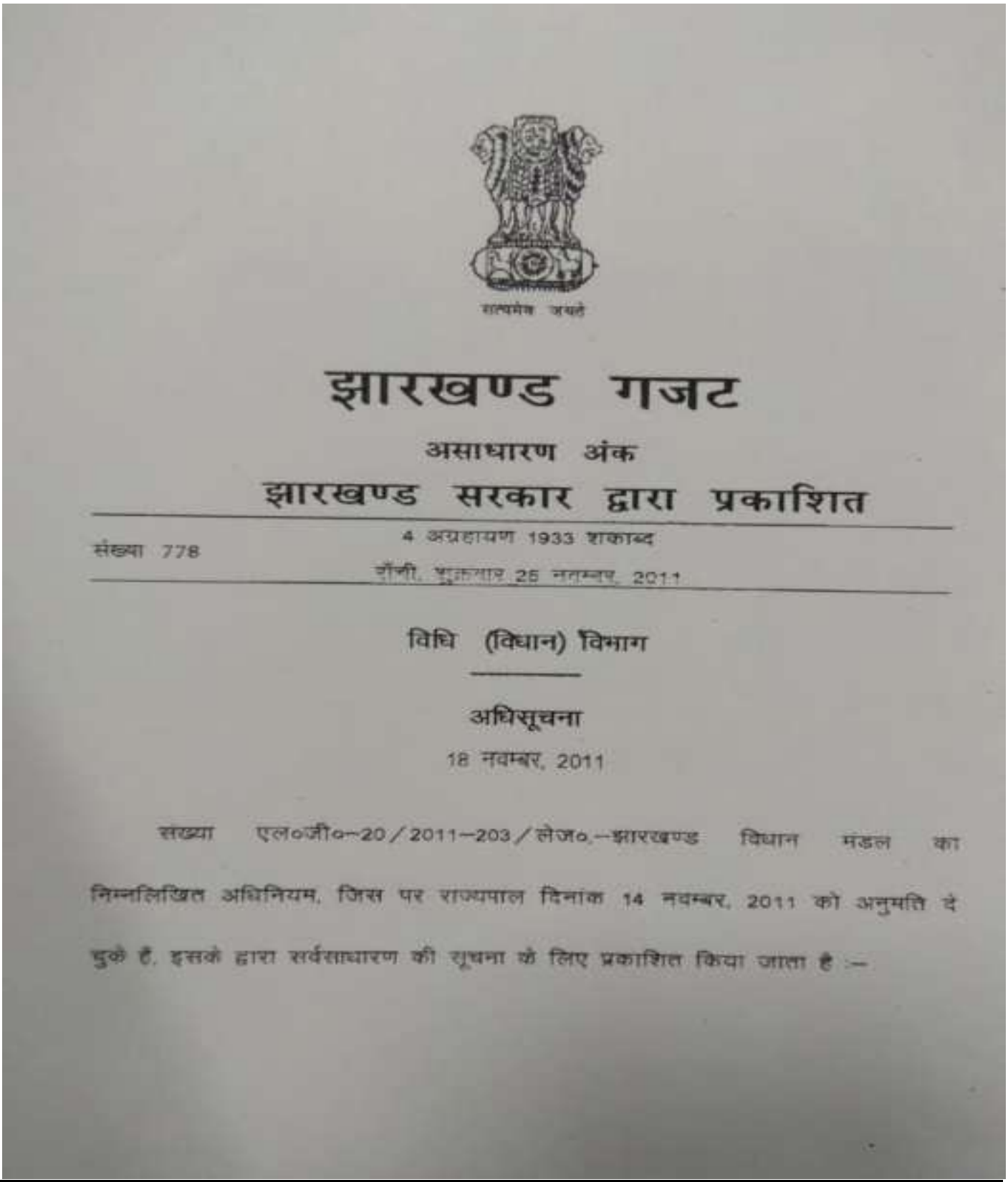

सत्यमेव जयते

झारखण्ड गजट

असाधारण अंक

झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

संख्या 778 4 अग्रहायण 1933 शकाब्द

राँची, शुक्रवार 25 नवम्बर, 2011

विधि (विधान) विभाग

अधिसूचना

18 नवम्बर, 2011

संख्या एल०जी०–20/2011–203/लेज०,–झारखण्ड विधान मंडल का निम्नलिखित अधिनियम, जिस पर राज्यपाल दिनांक 14 नवम्बर, 2011 को अनुमति दे चुके हैं, इसके द्वारा सर्वसाधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किया जाता है :–

[झारखण्ड अधिनियम संख्या 29, 2011]

अंगीकृत बिहार राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 2011

झारखंड राज्य के विशिष्ट क्षेत्रों में कतिपय राजकीय प्रयोजनार्थ उर्दू के अतिरिक्त संथाली, बंगला, मुण्डारी, हो, खड़िया, कुडुख (उराँव), कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया तथा उड़िया भाषा को द्वितीय राजकीय भाषा की मान्यता देने के लिए अंगीकृत बिहार राजभाषा अधिनियम, 1950 को संशोधित करने हेतु अधिनियम :–

भारत गणराज्य के 62वें वर्ष में झारखण्ड राज्य विधानसभा द्वारा यह निम्नलिखित रूप से अधिनियमित हो –

1. **संक्षिप्त नाम, विस्तार एवं प्रारम्भ :**

   (i) यह अधिनियम "अंगीकृत बिहार राजभाषा (संशोधन) विधेयक, 2011" कहलायेगा।

   (ii) इसका विस्तार राज्य के उन क्षेत्रों में होगा तथा यह उस तारीख से प्रवृत्त होगा, जो राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा नियत करे।

2. **अंगीकृत बिहार अधिनियम–37, 1950 की धारा–3 में उपधारा–3 (क) के रूप में निम्नलिखित उपधारा का जोड़ा जाना–**

   बिहार राजभाषा अधिनियम, 1950 की धारा–3 में उपधारा–3 (क) के रूप में जोड़ी जायेगी–
   "अन्य द्वितीय राजभाषा : राज्य सरकार समय–समय पर राजपत्र में अधिसूचना प्रकाशित कर निर्देश देगी कि उक्त अधिसूचना में निर्दिष्ट क्षेत्र में निर्धारित अवधि के लिए

राज्य के भाषा–भाषियों के हित में संथाली, बंगला, मुण्डारी, हो, खड़िया, कुडुख (उराँव), कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया तथा उड़िया भाषा निर्दिष्ट प्रयोजनार्थ द्वितीय राजभाषा उर्दू के अतिरिक्त प्रयोग की जायेगी।"

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,

पंकज श्रीवास्तव,
सरकार के सचिव–सह–विधि परामर्शी
विधि (विधान) विभाग,
झारखण्ड, राँची।

अधीक्षक, झारखण्ड राजकीय मुद्रणालय, राँची द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित,
झारखण्ड गजट (असाधारण) 778--150+600 ।

(vi). झारखण्ड अधिविद्य परिषद, रांची के अधिसूचना संख्या संख्या – JAC / गुमला / 16095 / 12– 0607 / 16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा मैट्रिक में वर्ष 2016 से कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि से परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई।

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

अधिसूचना

संख्या – JAC/गुमला/16095/12 ..../ झारखण्ड अधिविद्य परिषद् की बैठक संख्या 73 दिनांक 23.01.2016 में लिए गए निर्णय के आलोक में कुड़ुख भाषा की परीक्षा तोलोंग सिकी लिपि में लिखने की अनुमति वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2016 से प्रदान की जाती है।

तोलोंग सिकी लिपि में लिखने वाले परीक्षार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिपि संबंधी कॉलम में "तोलोंग सिकी" अवश्य लिखेंगे।

अध्यक्ष के आदेश से,

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : अध्यक्ष के निजी सहायक / उपाध्यक्ष के निजी सहायक / सचिव के निजी सहायक / संयुक्त सचिव के निजी सहायक / उपसचिव के निजी सहायक / गठित समिति के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड / निदेशक (मा० शि०)' को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ समर्पित।

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

(vii). प०बंगाल सरकार, विधि विभाग द्वारा अधिसूचना संख्या 452L, दिनांक 05 अप्रैल 2018 दिन वृहस्पतिवार को अधिसूचना जारी कर कुँडुख़ भाषा को 8वीं राजकीय भाषा घोषित किया गया है।

Registered No. WB/SC-247 — No. WB(Part-III)/2018/SAR-11

The Kolkata Gazette

सत्यमेव जयते

Extraordinary

Published by Authority

CHAITRA 15] — THURSDAY, APRIL 5, 2018 — [SAKA 1940

PART III—Acts of the West Bengal Legislature.

GOVERNMENT OF WEST BENGAL

LAW DEPARTMENT

Legislative

NOTIFICATION

No. 452-L.— 5th April, 2018.—The following Act of the West Bengal Legislature, having been assented to by the Governor, is hereby published for general information:—

West Bengal Act IV of 2018

THE WEST BENGAL OFFICIAL LANGUAGE (AMENDMENT) ACT, 2018.

[*Passed by the West Bengal Legislature.*]

[Assent of the Governor was first published in the *Kolkata Gazette, Extraordinary*, of the 5th April, 2018.]

An Act to amend the West Bengal Official Language Act, 1961.

WHEREAS it is expedient to amend the West Bengal Official Language Act, 1961, for the purposes and in the manner hereinafter appearing; West Ben. Act XXIV of 1961

It is hereby enacted in the Sixty-ninth Year of the Republic of India, by the Legislature of West Bengal, as follows:—

Short title and commencement. **1.** (1) This Act may be called the West Bengal Official Language (Amendment) Act, 2018.

(2) It shall come into force on such date, as the State Government may, by notification in the *Official Gazette*, appoint.

The West Bengal Official Language (Amendment) Act, 2018.

(Sections 2-5.)

Amendment of section 2 in West Ben. Act XXIV of 1961.

2. In section 2 of the West Bengal Official Language Act, 1961 (hereinafter referred to as the principal Act), in clause (aa), after the words "Punjabi speaking people", the words "or Kurukh speaking people" shall be inserted and for the words "and the Punjabi Language", the words "the Punjabi Language and the *Kurukh* Language" shall be substituted.

Insertion of new section after section 3B.

3. After section 3B of the principal Act, the following section shall be inserted:—

"Use of *Kurukh* Language in rules and regulations, etc.

3C. Notwithstanding anything contained in section 3, section 3A and section 3B, with effect from such date as the State Government may, by notification in the *Official Gazette*, appoint in this behalf, the *Kurukh* Language may, in addition to the Bengali Language, the Nepali Language, the Urdu Language, the Hindi Language, the Santhali Language, the Oriya Language and the Punjabi Language, be used for such—

(a) rules, regulations and by-laws made by the State Government under the Constitution of India or any law made by the Parliament or the Legislature of West Bengal;

(b) notifications or order issued by the State Government under the Constitution of India or any law made by the Parliament or the Legislature of West Bengal;

(c) petitions and applications and replies thereof, in public offices;

(d) documents received by public offices;

(e) important Government advertisement, announcement to be published; and

(f) important signposts to be exhibited,

as to apply in the Districts or Sub-division or Block or Municipality, as the case may be, where the population of *Kurukh* speaking people exceeds ten *per cent* as a whole or part of the District like Sub-division or Block, as may be notified by the State Government:

Provided that different dates may be appointed in respect of different matters referred to in clauses (a) to (f).

Explanation.— For the purpose of this section, the words 'law made by Parliament or the Legislature of West Bengal' shall include any law made before or after the commencement of the Constitution of India by any Legislature or other competent authority in the territory of India having power to make such a law.".

Amendment of section 4.

4. In section 4 of the principal Act, for the words, figure and letter "or section 3B", the words, figures and letters "or section 3B or section 3C" shall be substituted.

Amendment of section 5.

5. In section 5 of the principal Act, for the words "or the Punjabi Language", the words "or the Punjabi Language or the *Kurukh* Language" shall be substituted.

By order of the Governor,

SANDIP KUMAR RAY CHAUDHURI,
Secy. to the Govt. of West Bengal,
Law Department.

Published by Law Department, Government of West Bengal and
Printed at Saraswaty Press Ltd.(Government of West Bengal Enterprise), Kolkata 700 056.

(viii). झारखण्ड सरकार, विधि विभाग की अधिसूचना के अधिसूचना संख्या – 1080, राँची, सोमवार, 10 दिसम्बर 2018 झारखण्ड की 17 भाषाओं को राजकीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया।

सत्यमेव जयते

झारखण्ड गजट

असाधारण अंक

झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

---

19 अग्रहायण, 1940 (श०)

संख्या- 1084 राँची, सोमवार, 10 दिसम्बर, 2018 (ई०)

विधि (विधान) विभाग

अधिसूचना

29 अक्टूबर, 2018

संख्या-एल०जी०-06/2018-175/लेज०--झारखंड विधान मंडल का निम्नलिखित अधिनियम जिस पर माननीया राज्यपाल दिनांक 5 अक्टूबर, 2018 को अनुमति दे चुकी है, इसके द्वारा सर्वसाधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किया जाता है ।

बिहार राजभाषा (झारखण्ड संशोधन) अधिनियम, 2018

(झारखण्ड अधिनियम, 20, 2018)

झारखंड राज्य के विशिष्ट क्षेत्रों में कतिपय राजकीय प्रयोजनार्थ उर्दू, संथाली, बंगला, मुण्डारी, हो, खड़िया, कुड़ुख (उराँव), कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया तथा उड़िया भाषा के अतिरिक्त मगही, भोजपुरी, मैथिली तथा अंगिका एवं भूमिज भाषा को द्वितीय राजभाषा की मान्यता देने के लिये अंगीकृत बिहार राजभाषा अधिनियम, 1950 को संशोधित करने हेतु अधिनियम।

विषय-सूची

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार एवं प्रारम्भ

2. बिहार अधिनियम-37, 1950 (यथा अंगीकृत) की धारा-3 की उपधारा-3(क) में अन्य द्वितीय राजभाषाओं की सूची में मगही, भोजपुरी, मैथिली तथा अंगिका एवं भूमिज को जोड़ा जाना

भारत राज्य के 69वें वर्ष में झारखंड राज्य विधान सभा द्वारा यह निम्नलिखित रूप में अधिनियमित हो-

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार एवं प्रारम्भ:

(1) यह अधिनियम बिहार राजभाषा (झारखंड संशोधन) अधिनियम, 2018 कहलायेगा।

(2) इसका विस्तार राज्य के उन क्षेत्रों में होगा तथा यह उस तारीख से प्रवृत्त होगा, जो राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा निश्चित करे।

2. बिहार अधिनियम-37, 1950 (यथा अंगीकृत) की धारा-3 की उपधारा-3(क) में अन्य द्वितीय राजभाषाओं की सूची में मगही, भोजपुरी, मैथिली तथा अंगिका एवं भूमिज भाषा को जोड़ा जाना है-

बिहार राजभाषा अधिनियम, 1950 (यथा अंगीकृत) की धारा-3 की उपधारा-3(क) निम्नलिखित रूप से प्रतिस्थापित की जायेगी-

"अन्य द्वितीय राजभाषा: राज्य सरकार समय-समय पर राजपत्र में अधिसूचना प्रकाशित कर निर्देश देगी कि उक्त अधिसूचना में निर्दिष्ट क्षेत्रों में निर्धारित अवधि के लिये राज्य के भाषा-भाषियों के हित में मगही, भोजपुरी, मैथिली तथा अंगिका एवं भूमिज भाषा निर्दिष्ट प्रयोजनार्थ द्वितीय राजभाषा उर्दू, संथाली, मुण्डारी, हो, खडिया, कुडुख (उराँव), कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया, बंगला, उडिया के अतिरिक्त प्रयोग की जायेगी ।"

झारखंड राज्यपाल के आदेश से,

संजय प्रसाद,
प्रधान सचिव-सह-विधि परामर्शी
विधि विभाग, झारखंड, राँची।

झारखण्ड राजकीय मुद्रणालय, राँची द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित,
झारखण्ड गजट (असाधारण) 1084 -- 50

(ix). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार झारखण्ड सरकार, शिक्षा विभाग द्वारा मातृभाषा शिक्षा के अंतर्गत हिन्दी एवं अंगरेजी के साथ पांच आदिवासी भाषा में से कुँडुख़, मुंडारी, हो, खड़िया, संताली है।

An ISO 9001:2015 certified
किरण कुमारी पासी, भा.प्र.से.
राज्य परियोजना निदेशक

झारखण्ड शिक्षा परियोजना परिषद्
जे.एस.सी.ए. स्टेडियम रोड, सेक्टर–3,
धुर्वा, राँची – 834 004
दूरभाष – 0651-2444501, 2444502, फैक्स – 2444506
ई–मेल: jepcranchi1@gmail.com

पत्रांक : QU/40/147/2021/ 1800 | दिनांक – 30/09/2021

सेवा में,

जिला शिक्षा पदाधिकारी–सह–जिला कार्यक्रम पदाधिकारी,
जिला शिक्षा अधीक्षक–सह–अपर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी,
पश्चिमी सिंहभूम, गुमला, साहेबगंज, सिमडेगा, लोहरदगा एवं खूँटी,
समग्र शिक्षा अभियान, झारखण्ड ।

विषय : MTB MLE हेतु कार्ययोजना निर्माण के संबंध में।

महाशय / महाशया,

उपर्युक्त विषय के संबंध में कहना है कि NEP 2020 में Mother tongue based Multilingual Education को प्रारंभिक कक्षाओं में प्राथमिकता के स्तर पर लागू करने का सुझाव दिया गया है। आप सभी अवगत है कि झारखण्ड राज्य में मुख्य रूप से 05 भाषा यथा–संथाली, हो, मुण्डारी, कुड़ुख एवं खड़िया भाषा भाषी के विद्यार्थी विद्यालयों में है। हम सभी इस बात से अवगत है कि यदि बच्चों के साथ प्रारंभिक स्तर पर उनके भाषा में बातचीत करते है तो इसका सकारात्मक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है तथा विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के सीखने की गति भी तीव्र होती है। NEP 2020 में भी इन्हीं मुद्दो को विशेष बल दिया गया है तथा बच्चों के मातृभाषा को विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक श्रेणी में इसे अनुपालित करने का सुझाव दिया गया है। उक्त आलोक में विभागीय सचिव के साथ हुये समीक्षा बैठक में इसे कुछ विद्यालयों में लागू करने पर सहमति बनी है जिसमें विद्यालय के चयन का मुख्य आधार चयनित विद्यालयों के विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों तथा आम समुदाय के साथ विचार विमर्श एवं साझा समझ के आधार पर ही लागू किये जाने का निर्णय लिया गया है। विदित हो कि विगत वर्ष राज्य परियोजना कार्यालय की ओर से विद्यालयों की सूची संग्रहित की गयी है जिसमें किसी भी अन्य भाषा के 70 प्रतिशत या उससे अधिक बच्चे नामांकित है। ऐसे विद्यालयों की सूची भाषावार एवं जिलावार पत्र के साथ संलग्न है।

विद्यालय प्रबंध समिति एवं विद्यालय के पोषक क्षेत्र के आम समुदाय के साथ विचार विमर्श तथा NEP 2020 के अनुरूप मातृभाषा को प्राथमिक स्तर पर पठन–पाठन हेतु अपनाने के लिये संवेदनशील बनाना तथा समुदाय से इस मांग को सृजित करने हेतु निम्नवत कार्य किया जाना अपेक्षित होगा –

1. जिला प्रभाग–प्रभारी (एस.एम.सी.) के नेतृत्व में एक समिति जिला स्तर पर गठित की जाये।
2. उक्त समिति में चयनित प्रखण्ड के प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, प्रखण्ड कार्यक्रम पदाधिकारी, दो बी.आर.पी., चयनित विद्यालयों के संकुल के सी.आर.पी. तथा चयनित विद्यालयों में से कम से कम 05 विद्यालयों के 1–1 शिक्षक को शामिल किया जाये।
3. समिति का गठन एवं उन्मुखीकरण माह अक्टूबर, 2021 के प्रथम सप्ताह में अनिवार्य रूप से आयोजित की जाये।
4. समिति का एक दिवसीय उन्मुखीकरण आयोजित किया जाये। इस उन्मुखीकरण में युनिसेफ के परामर्शी एवं जे.सी.ई.आर.टी. प्रतिनिधि भाग लेंगे तथा समिति के साथ पूरे कार्यक्रम की कार्ययोजना तैयार की जायेगी।
5. समिति द्वारा चयनित विद्यालयों के पोषक क्षेत्र में विद्यालय प्रबंध समिति तथा आम समुदाय एवं शिक्षकों के साथ बैठक आयोजित की जायेगी।
6. समिति द्वारा समाज के अन्य प्रबुद्ध लोगो की सहायता प्राप्त की जायेगी।

An ISO 9001:2015 certified
किरण कुमारी पासी, भा.प्र.से.
राज्य परियोजना निदेशक

झारखण्ड शिक्षा परियोजना परिषद्
जे.एस.सी.ए. स्टेडियम रोड, सेक्टर–3,
धुर्वा, राँची – 834 004
दूरभाष – 0651-2444501, 2444502, फैक्स – 2444506
ई–मेल: jepcranchi1@gmail.com

7. समुदाय के साथ बैठक में इस बात का ध्यान रखा जाये की समुदाय मातृभाषा के महत्ता को समझते हुये मातृभाषा को पठन–पाठन में प्रथम माध्यम के रूप में अपनाने पर अपनी सहमति/मांग व्यक्त करे।
8. पत्र के साथ विद्यालयों की सूची संलग्न है परन्तु समिति इसमें आवश्यकतानुसार संशोधन कर सकती है।
9. चयनित विद्यालयों के पोषक क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार बैठक का आयोजन दिनांक 25 अक्टूबर, 2021 तक पूर्ण की जाये।
10. बैठक के पश्चात् समिति द्वारा अंतिम रूप से विद्यालयों की सूची तैयार की जायेगी तथा विद्यालयवार मातृभाषा को प्रथम भाषा के रूप में लागू करने संबंधी कार्ययोजना का निर्माण करेगी। कार्ययोजना का समेकित प्रतिवेदन राज्य परियोजना कार्यालय को दिनांक 30 अक्टूबर, 2021 तक प्रेषित करना अनिवार्य होगा।

यूनिसेफ एवं जे.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधियों की विवरणी

क्र.सं.	नाम	आवंटित जिला	मो0न0
1	श्रीमती पल्लवी शाह, यूनिसेफ	पश्चिमी सिंहभूम	9905150518
2	श्री हर्ष वर्मा, यूनिसेफ	गुमला	7368064065
3	श्री रोहित राज, यूनिसेफ	साहेबगंज	9065930999
4	श्री संजीव तिवारी, यूनिसेफ	सिमडेगा	9199098743
5	श्री अशोक कुमार, जे.सी.ई.आर.टी.	लोहरदगा	7463953245
6	श्री संगीता कुमारी, जे.सी.ई.आर.टी.	खूँटी	8969149198

अनुलग्नक – यथोक्त।

विश्वासभाजन,
20/9/21
(किरण कुमारी पासी)
राज्य परियोजना निदेशक

ज्ञापांक : QU/40/147/2021/ 1800 **राँची, दिनांक : 30/09/2021**

प्रतिलिपि :

1. संबंधित प्रतिनिधि, जे.सी.ई.आर.टी., राँची को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ प्रेषित।
2. श्रीमती पारूल शर्मा, शिक्षा विशेषज्ञ/संबंधित परामर्शी, यूनिसेफ, झारखण्ड को सूचनार्थ एवं आवश्यक क्रियार्थ प्रेषित।

(किरण कुमारी पासी)
राज्य परियोजना निदेशक

39. KURUKH PHONEMS AND EXAMPLES / कुँड़ुख़ भाषा की ध्वनियाँ एवं उदाहरण

** – डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा'''

कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा एक प्राचीन भाषा है। इस प्राचीन भारत में, देश की आजादी से पूर्व रोमन लिपि में कुँड़ुख़ भाषा में कई पुस्तकें लिखी गईं, जो आज भी देश–विदेश के पुस्तकालयों में एक अभिलेख की तरह हैं। कालांतर में देश की आजादी के 3 दशक बाद, देवनागरी लिपि के माध्यम से राँची विश्वविद्यालय, राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई आरंभ हुई। धीरे–धीरे भाषायी जनजागरण एवं आंदोलन के क्रम में झारखण्ड राज्य की स्थापना के बाद वर्ष 2003 में तीन आदिवासी भाषा की लिपि की मान्यता झारखण्ड सरकार में मिली। इनमें से संताली भाषा की लिपि – ओलचिकि, हो की लिपि – वराङचिति तथा कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि – तोलोङ सिकि है। वर्तमान में कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोङ सिकि के माध्यम से झारखण्ड में तथा वर्ष 2018 से पश्चिम बंगाल के कई क्षेत्रों में पठन–पाठन का कार्य चल रहा है।

विश्व के लिपि विकास के इतिहास में ध्वनिमूलक लिपि, अबतक सबसे अधिक विकसित एवं मानक पायी गयी है। यह ध्वनिमूलक लिपि दो प्रकार की हैं – (1) आक्षरिक लिपि (2) वर्णिक लिपि। आक्षरिक लिपि सामान्यतया प्रयोग की दृष्टि से ठीक है, किन्तु भाषा विज्ञान में जब ध्वनियों का विश्लेषण होता है, तब कमी स्पष्ट पता चलती है। वैसे लिपि विकास की प्रथम सीढ़ी चित्र लिपि है तथा अंतिम सीढ़ी वर्णिक लिपि है। वर्णिक लिपि भाषा विज्ञान की दृष्टि से आदर्श लिपि है। इन विकसित लिपियों में से रोमन लिपि, वर्णिक लिपि है, जबकि देवनागरी, गुजराती, अरबी, उर्दू, बंगला, उड़िया, पंजाबी इत्यादि आक्षरिक लिपि है। उपरोक्त ध्वनिमूलक वर्णिक लिपि के ये विशिष्ट गुण, तोलोङ सिकि, लिपि की विशेषता है।

दूसरी ओर Census of India - 2011 (Linguistc) के अनुसार भारत में कुल 121 अनुसूचित तथा गैर अनुसूचित भाषाओं को 05 भाषा परिवार के समूहो में वर्गीकृत किया गया है। वर्गीकरण निम्न प्रकार है :– 1. इंडो–यूरेपियन (INDO-EUROPEAN) - (क) इंडो–आर्यन (INDO-ARYAN) (ख) इरानियन (IRANIAN) (ग) जर्मेनिक (GERMANIC) 2. द्रविड़यन् (DRAVIDYAN) 3. आष्ट्रो–एषियाटिक (AUSTRO-ASIATIC) 4. तिब्बतो–बर्मिज (TIBETO-BURMESE) 5. सेमीटो–हमीटिक (SEMITO-HAMITIC)।

कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि (लिपि), सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली है तथा तकनीकी अनुकूलता के सिद्धांत पर आधारित है। ज्ञात है कि कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा द्रविड़ परिवार की भाषा है, अतएव भाषा की सांस्कृतिक विरासत की संवृद्धि के लिए यह द्रविड़ भाषा की sitting script समूह के जैसा निर्धारित हैं। वर्णमाला का निर्धारण सरलता से कठिनमा की ओर है। सभी स्वनिम (phonemes) के वर्ण चिन्ह हैं, सहस्वानिक ध्वनियों (allophones) के नहीं।

1. VOWEL SOUND / स्वर ध्वनियाँ / **[illegible]**

(i) Primary short oral vowel / मूल मौखिक सन्नी (ह्रस्व) स्वर –

[illegible] = i = इ - [illegible] - इज़जो, इजगो, तिरयो
[illegible] = e = ए - [illegible] - एड़पा, एपटा, एड़ना
[illegible] = u = उ - [illegible] - उगता, उड़्डु , उसाडी
[illegible] = o = ओ - [illegible] - ओसगा, ओरोख़, ओदना
[illegible] = a = अ - [illegible] - अड़ख़ा, अखड़ा, अहड़ा
[illegible] = ā = आ - [illegible] - आल, आस, आद, आर

(ii) Primary long oral vowel / मूल मौखिक दिगहा (लम्बा) स्वर –

[illegible] = i: = इ: - [illegible] - इ:मा, की:ड़ा, ती:नना
[illegible] = e: = ए: - [illegible] - ए:ड़ा, ने:ला, ते:ला
[illegible] = u: = उ: - [illegible] - उ:रा, कू:बी, तू:रा
[illegible] = o: = ओ: - [illegible] - ओ:ड़ा, मो:ड़ा, ओ:गा
[illegible] = a: = अ - [illegible] - अ:व, द:व, क:व, ल:य

[illegible] = ā: = आ - [illegible] - आःली, आःलो, काःलो

(iii) Primary short nasal vowel / मूल नासिक्य सन्नी (ह्रस्व) स्वर –

[illegible] = ĩ = इँ - [illegible] - चिंचो, चिंहुट, चिंञा

[illegible] = ẽ = एँ - [illegible] - चेंड़ा, केंवड़ा, चेंटगर

[illegible] = ũ = उँ - [illegible] - गुँड़ना, कुँडुख़, कुँड़ा

[illegible] = õ = ओं - [illegible] - कोंहड़ा, गोंहड़ा, जोंहकर

[illegible] = ã = अँ - [illegible] - अँटा, खँटी, पँड़की, खँड़ा

[illegible] = ā̃ = आँ - [illegible] - चाँड़, काँड़, साँढ, बाँड़ो

(iv) Primary long nasal vowel / मूल नासिक्य दिगहा (लम्बा) स्वर –

[illegible] = ĩ: = इँः - [illegible] - बींःड़ी, चींःचो, बींःचो

[illegible] = ẽ: = एँः - [illegible] - पेंःड़े, हेंःड़े, चेंःपो

[illegible] = ũ: = उँः - [illegible] - कूँःड़, पूँःप, भूँःस

[illegible] = õ: = ओंः - [illegible] - कोंःड़ा, तोंःड़ो, बोंःड़ो

[illegible] = ã: = अँः - [illegible] - अँःत, अँःख़, सँःह, डँःह–डँःह

[illegible] = ā̃: = आँः - [illegible] - आँःड़को, भाँःड़ो, ताँःड़का

(v) Compound oal vowel / संयुक्त मौखिक स्वर –

[illegible] = ai = अइ - [illegible] - कइला, चइला, थइला

[illegible] = au = अउ - [illegible] - अउड़का, डउहड़ा, नउड़ा

[illegible] = ae = ऐ/अय - [illegible] - नैग, कैर / पयन, मयन

[illegible] = ao = औ/अव - [illegible] - बौग, नौर / तवन, गवन

[illegible] = iu = इउ - [illegible] - इउन्दा, चिउरा, निउरा

[illegible] = ui = उइ - [illegible] - उइरा, कुइला, टुइहला

(vi) Compound nasal vowel / संयुक्त नासिक्य स्वर –

[illegible] = ãi = अँइ - [illegible] - कँइत, गँइता, मँइता

[illegible] = ãu = अँउ - [illegible] - कँउड़, झँउड़, रँउड़

[illegible] = ãe = ऐं - [illegible] - चैंदआ, पैंड़ी, कैंची

[illegible] = ão = औं - [illegible] - चौंर, भौंरो, चौंड़ा

[illegible] = ĩu = इँउ - [illegible] - इँउरा, चिँउड़ा, इँउती

[illegible] = ũi = उँइ - [illegible] - पुँइदा, सुँइतु, टुँइञा

2. Primary Consonant / मौलिक व्यंजन / [illegible]

[illegible] = p = प् - [illegible] - पपला, पचरी, पहटा

[illegible] = ph = फ् - [illegible] - फँसरी, फटका, फटइर

[illegible] = b = ब् - [illegible] - बल्लु, बली, बिल्ली

[illegible] = bh = भ् - [illegible] - भदड़ी, भँड़की, भंडारी

[illegible] = m = म् - [illegible] - मरग, मचा, मइरचा

[illegible] = t = त् - [illegible] - ततख़ा, तड़री, तपड़ेम

[illegible] = th = थ् - [illegible] - थड़ा, थइला, थान

[illegible] = d = द् - [illegible] - दउली, दुदही, दुब्बा

- [illegible] = dh = ध् - [illegible] - धनु, धरती, धनियाँ
- [illegible] = n = न् - [illegible] - नड़गा, नड़हा, नोल
- [illegible] = ṭ = ट् - [illegible] - टटखा, टमरस, टोका
- [illegible] = ṭh = ठ् - [illegible] - ठरकी, ठठरा, ठुठडी
- [illegible] = ḍ = ड् - [illegible] - डउड़ा, डिगची, डलडो
- [illegible] = ḍh = ढ् - [illegible] - ढरा, ढेरा, ढेकारी
- [illegible] = ṇ = ण् - [illegible] - भण्डा, डुण्डी, गण्डा
- [illegible] = ch = च् - [illegible] - चलकी, चपटा, चिमटा
- [illegible] = chh = छ् - [illegible] - छटका, छलकारना
- [illegible] = j = ज् - [illegible] - जल्ली, जंगला, जट्टा
- [illegible] = jh = झ् - [illegible] - झण्डा, झुड़ङा, झट्टा
- [illegible] = n̈ = ञ् - [illegible] - चिञा, सिञा, चोञा
- [illegible] = k = क् - [illegible] - ककड़ो, कड़मा, कुडरी
- [illegible] = kh = ख् - [illegible] - खपरा, खरपा, खपना
- [illegible] = g = ग् - [illegible] - गमछा, गगरा, गड़ी
- [illegible] = gh = घ् - [illegible] - घुघरी, घघरा, घड़ी
- [illegible] = ṅ = ङ् - [illegible] - झिलङी, झोलङो, डोङा
- [illegible] = y = य् - [illegible] - किया, जिया, पया, कोंयछा
- [illegible] = r = र् - [illegible] - रसड़ी, रहटा, रोःगे
- [illegible] = l = ल् - [illegible] - लट्टु, लड़ङ, लवटो
- [illegible] = v = व् - [illegible] - जवा, लवा, तवा, मड़वा
- [illegible] = ż = ज़् - [illegible] - कोरज़ो, तूःज़, कुज़ी, मज़ी
- [illegible] = s = स् - [illegible] - सगड़, सिकड़ी, सुरती
- [illegible] = h = ह् - [illegible] - हड़का, हरिन, हँसली
- [illegible] = x = ख़् - [illegible] - ख़न्न, ख़ज्ज, ख़ेंस
- [illegible] = ṛ = ड़् - [illegible] - गेड़े, घोड़ो, गड़ना
- [illegible] = ṛh = ढ़् - [illegible] - गढ़े, उढ़, उढ़ीयारना
- [illegible] = a̤ = अ़ - [illegible] - नेअ़ना, बअ़ना, होअ़ना

3. Pure Compound Consonant / [illegible]

[illegible]	प्प – [illegible]	kappa	-	ℓप्पा
[illegible]	ब्ब – [illegible]	jabbā	-	जब्बा
[illegible]	म्म – [illegible]	amm	-	अम्म
[illegible]	त्त – [illegible]	pattā	-	पत्ता
[illegible]	द्द – [illegible]	addi	-	अद्दी
[illegible]	न्न – [illegible]	mann	-	मन्न
[illegible]	ट्ट – [illegible]	aṭṭā	-	अट्टा
[illegible]	ड्ड – [illegible]	aḍḍā	-	अड्डा
[illegible]	ण्ण – [illegible]	maṇṇdi	-	मण्णडी
[illegible]	च्च – [illegible]	pachchā	-	पच्चा

[illegible] / [illegible]	-	ज्ज – [illegible]	-	chainnā	-	ओज्जा
[illegible] / [illegible]	-	ञ्ञ – [illegible]	-	chainnā	-	चइञ्ञा
[illegible] / [illegible]	-	क्क – [illegible]	-	makkā	-	मक्का
[illegible] / [illegible]	-	ग्ग – [illegible]	-	aggi	-	अग्गी
[illegible] / [illegible]	-	ङ्ङ – [illegible]	-	bonnā	-	बोङ्ङा
[illegible] / [illegible]	-	य्य – [illegible]	-	kiyyā	-	किय्या
[illegible] / [illegible]	-	र्र – [illegible]	-	charrā	-	चर्रा
[illegible] / [illegible]	-	ल्ल – [illegible]	-	nollā	-	नोल्ला
[illegible] / [illegible]	-	व्व – [illegible]	-	havvā	-	हव्वा
[illegible] / [illegible]	-	स्स – [illegible]	-	lassā	-	लस्सा

4. Mixed Compound Consonant / [illegible]

[illegible]	-	प्फ	–	[illegible]	-	dopphā	-	दोप्फा
[illegible]	-	ब्भ	–	[illegible]	-	lebbhā	-	लेब्भा
[illegible]	-	त्थ	–	[illegible]	-	otthā	-	ओत्था
[illegible]	-	द्ध	–	[illegible]	-	laddhaṛ	-	लद्धड़
[illegible]	-	ट्ठ	–	[illegible]	-	laṭṭhā	-	लट्ठा
[illegible]	-	ड्ढ	–	[illegible]	-	loḍḍho	-	लोड्ढो
[illegible]	-	च्छ	–	[illegible]	-	mechchhā	-	मेच्छा
[illegible]	-	ज्झ	–	[illegible]	-	bajjhrā	-	बज्झरा
[illegible]	-	क्ख	–	[illegible]	-	tokkhā	-	तोक्खा
[illegible]	-	ग्घ	–	[illegible]	-	lagghrā	-	लग्घरा

5. Glottal check, short & long vowel in word

Glottal check	-	Short vowel	-	Long vowel
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]

6. Similar looking words.

[illegible] (bitnā) - [illegible] (bi:tnā)

(chipnā) - (chi:pnā)
(biṛi) - (bi:ṛi)
(bi:ṛi) - (bĩ:ṛi)
(pesnā) - (pe:snā)
(kẽsā) - (kẽ:sā)
(kubi) - (ku:bi)
(ṭusā) - (tu:sā)
(bolo) - (bo:lo)
(choro) - (cho:ro)
(chochā) - (cho:chā)
(kavs) - (ka:v)
(āl) - (ā:las)
(āli) - (ā:lid)
(ālo) - (ā:lo)
(kālo) - (kā:lo)
(nidi) - (ni:di)
(xoynā) - (xo:ynā)
(kuti) - (ku:ti)
(saṛi) - (sā:ṛi)
(horā) - (ho:rā)
(jabnā) - (jabbnā)
(telā) - (te:lā)

7. Phonetic drill, अभ्यास / (हहस कसरत)

(i) सन्नी इ अरा दिगहा इ: गही बेहवार) (use of short 'i' & long ' i:')

	-	idnā	-	इदना	=	रोपना
	-	iṛnā	-	इड़ना	=	भूनना
	-	ibṛā	-	इबड़ा	=	ये सब
	-	titir	-	तितिर	=	तीतर
	-	tiryo	-	तिरयो	=	बाँसुरी
	-	bi:ṛi	-	बिड़ी	=	बिड़ी
	-	tissā	-	तिस्सा	=	खट्टा
	-	biṛnā	-	बिड़ना	=	धूप
	-	chidṛā	-	चिडरा	=	गिलहरी
	-	i:ri	-	ई:री	=	देखती है
	-	xi:ri	-	ख़ी:री	=	कहानी
	-	ki:ṛā	-	की:ड़ा	=	भूख
	-	ti:ni	-	ती:नी	=	मधुमक्खी
	-	bi:ṛi	-	बी:ड़ी	=	सूर्य
	-	bĩ:ṛi	-	बीं:डी	=	रानी

	-	ki:bā	-	की:बा	=	ओला
	-	ti:nā	-	ती:ना	=	दाहिनी ओर

(ii) ‘e’ ‘e:’

(सन्नी ए अरा दिगहा एः गही बेहवार) (use of short ‘e’ & long ‘e:’)

	-	eṛpā	-	एड़पा	=	घर
	-	ettnā	-	एत्तना	=	उतरना
	-	ḍherā	-	ढेरा	=	ढेरा
	-	relā	-	रेला	=	बहुत
	-	melā	-	मेला	=	मेला
	-	keṛā	-	केड़ा	=	केला
	-	ḍenā	-	डेना	=	डैना
	-	ṭeṭe	-	टेटे	=	फतिंगा
	-	cherā	-	चेरा	=	चेरा
	-	e:ṛā	-	एःड़ा	=	बकरी
	-	e:rā	-	एःरा	=	देखो
	-	xe:tā	-	ख़ेःता	=	दोना
	-	pe:ṭh	-	पेःठ	=	बाजार
	-	me:r	-	मेःर	=	धागा
	-	xe:r	-	ख़ेःर	=	मुर्गी
	-	xe͠:s	-	ख़ेंःस	=	खून
	-	te:lā	-	तेःला	=	केन्द
	-	he:rā	-	हेःरा	=	बंधायी

(iii) ‘u’ ‘u:’

(सन्नी उ अरा दिगहा उः गही बेहवार) (use of short ‘ u ’ & long ‘ u: ’)

	-	ugi	-	उगी	=	सिका
	-	hukā	-	हुका	=	हुक्का
	-	mukā	-	मुका	=	घुटना
	-	hu:dā	-	हुदा	=	ख्याति
	-	ugtā	-	उगता	=	हल
	-	uinā	-	उइना	=	रखना
	-	u:rā	-	ऊरा	=	झिंगुर
	-	u:xā	-	ऊख़ा	=	अंधेरा
	-	nollā	-	नोल्ला	=	छानो
	-	u:ru	-	ऊःरू	=	गोबरैला
	-	pu͠:p	-	पूँःप	=	फूल
	-	pu:ru	-	पूःरू	=	पागल
	-	mu:xi	-	मूःख़ी	=	खाती है
	-	mu:li	-	मूःली	=	मुख्य
	-	dhu:li	-	धूःली	=	धूल

	-	ku:bi	-	कू:बी	=	कुआँ
	-	ku:ṭi	-	कू:टी	=	किनारा
	-	nu:ṛi	-	नू:ड़ी	=	धुलाई करती है

(iv)
(सन्नी ओ अरा दिगहा ओः गही बेहवार) (use of short ‘ o ’& long ‘ o: ’)

	-	osgā	-	ओसगा	=	मूस
	-	orot	-	ओरोत	=	अकेला
	-	ormar	-	ओरमर	=	सभी
	-	xochol	-	ख़ोचोल	=	हड्डी
	-	holā	-	होला	=	हलुवा
	-	ṭonā	-	टोना	=	गाँठ
	-	jhopā	-	झोपा	=	गुच्छा
	-	dovā	-	दोवा	=	दुआ
	-	o:ṛā	-	ओःड़ा	=	चिड़ियां
	-	o:sā	-	ओःसा	=	मसरूम
	-	mo:ṛā	-	मोःड़ा	=	मोरा
	-	no:ṛā	-	नोःड़ा	=	धोओ
	-	mo:chā	-	मोःचा	=	काटो
	-	mo:xā	-	मोःख़ा	=	खाओ
	-	bo:lo	-	बोःलो	=	नवजात
	-	go:do	-	गोःदो	=	घड़ियाल
	-	xo:rnā	-	ख़ोःर’ना	=	नवजीवन आना

(v)
(सन्नी अ अरा दिगहा अः गही बेहवार (use of short ‘ a ’& long ‘ a: ’)

	-	ayang	-	अयङ	=	माँ
	-	anā	-	अना	=	हे
	-	atxā	-	अतख़ा	=	पत्ता
	-	adin	-	अदिन	=	उसे
	-	amṛi	-	अमड़ी	=	माँड़
	-	asmā	-	असमा	=	रोटी
	-	aṛxā	-	अड़ख़ा	=	साग
	-	ahṛā	-	अहड़ा	=	मांस
	-	kalay	-	कलय	=	जाओ
	-	kalā	-	कला	=	जाओ
	-	barā	-	बरा	=	आओ
	-	babā	-	बबा	=	पिताजी
	-	mayā	-	मया	=	दया
	-	payā	-	पया	=	ताकत
	-	lakṛā	-	लकड़ा	=	बाघ

	-	tatxā	-	ततख़ा	=	जीभ
	-	gaẓnā	-	गज़ना	=	ढेर बनाना
	-	ṭaṭxā	-	टटख़ा	=	आम
	-	ka:v	-	कःव	=	जाएगी
	-	da:v	-	दःव	=	अच्छा

(vi) 'ā' ... 'ā:' ...
(सन्नी आ अरा दिगहा आः गही बेहवार) (use of short ' ā '& long ' ā: ')

	-	ā	-	आ	=	वह (दूर के लिए)
	-	ās	-	आस	=	वह (पु0)
	-	ād	-	आद	=	वह (स्त्री0)
	-	āl	-	आल	=	मानव जाति
	-	ā:le	-	आःले	=	पुरुष
	-	ā:li	-	आःली	=	स्त्री
	-	ā:lo	-	आःलो	=	मानव इतर
	-	ā:lar	-	आःलर	=	आदमी लोग
	-	xāṛ	-	ख़ाड़	=	नदी
	-	tā:chi	-	ताःची	=	बुआ
	-	dā:li	-	दाःली	=	दाल
	-	mā:si	-	माःसी	=	उड़द
	-	tā:kā	-	ताःका	=	हवा
	-	ḍā:ṛā	-	डाःड़ा	=	डाली
	-	lā:tā	-	लाःता	=	बिल, साँप या चूहा बिल
	-	pā:dā	-	पाःदा	=	जड़
	-	kā:lā	-	काःलो	=	जाएगी
	-	kā:di	-	काःदी	=	जाती है
	-	nā:ṛā	-	नाःड़ा	=	पराली
	-	tā̃:tar	-	ताँःतर	=	हँसुआ
	-	chā̃:ṛe	-	चाँःड़े	=	जल्दी
	-	chā̃:x'o	-	चाँःख़'ओ	=	बीज बोएगी

** शोध एवं संकलन :–
एम०जी०एम०मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल,
जमशेदपुर (झारखण्ड), # 9771163804
E-mail : oraon.narayan@gmail.com
Dated - 30 September 2022

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० नारायण भगत
विभागाध्यक्ष, कुँड़ुख़
डोरण्डा कॉलेज, राँची
मो० – 8521458677

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० (श्रीमत) शान्ति खलखो
सहायक प्राध्यापक (अनु०), कुँड़ुख
वी०बी०विश्वविद्यालय, हजारीबाग
मो० – 9905328984

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० तेतरू उराँव
सहायक प्राध्यापक (अनु०), कुँड़ुख
कार्तिक उराँव कॉजेज, गुमला
मो० – 9386745347

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० (सुश्री) लक्ष्मी उराँव
सहायक प्राध्यापक (अनु०),कुँड़ुख
डोरण्डा कॉलेज, राँची
मो० – 8877064526

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० (सुश्री) सीता कुमारी 'उराँव'
सहायक प्राध्यापक (अनु०),कुँड़ुख
डी०पी०एम०विश्वविद्यालय, राँची
मो० – 6201847769

40. Tribal Standard Code for Information Interchange (TSCII) Popularly known as TOLONG SIKI DISPLAY SYSTEM and IT'S USES

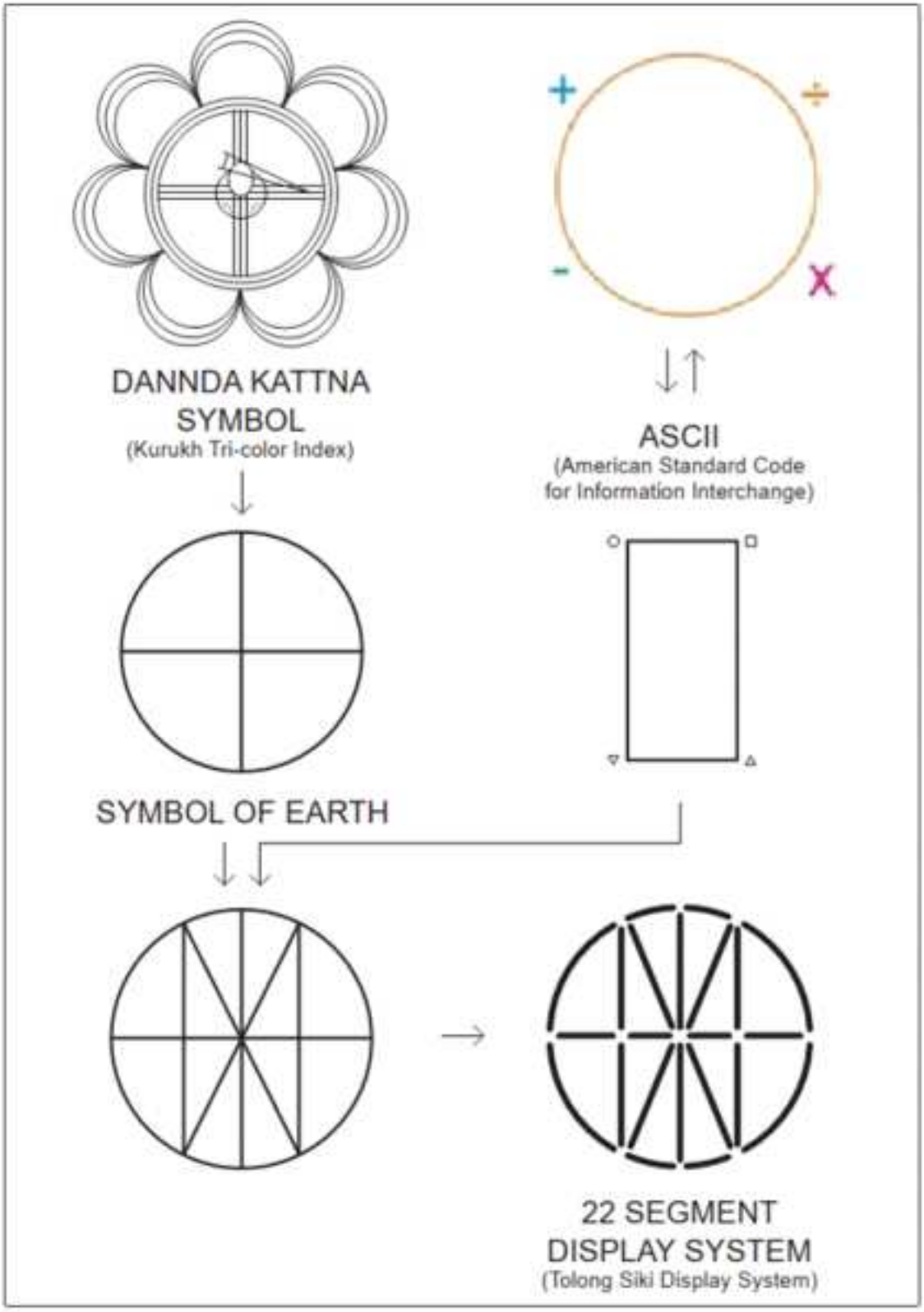

ALPHABETS ARE BASED ON TWENTY TWO SEGMENT DISPLAY SYSTEM

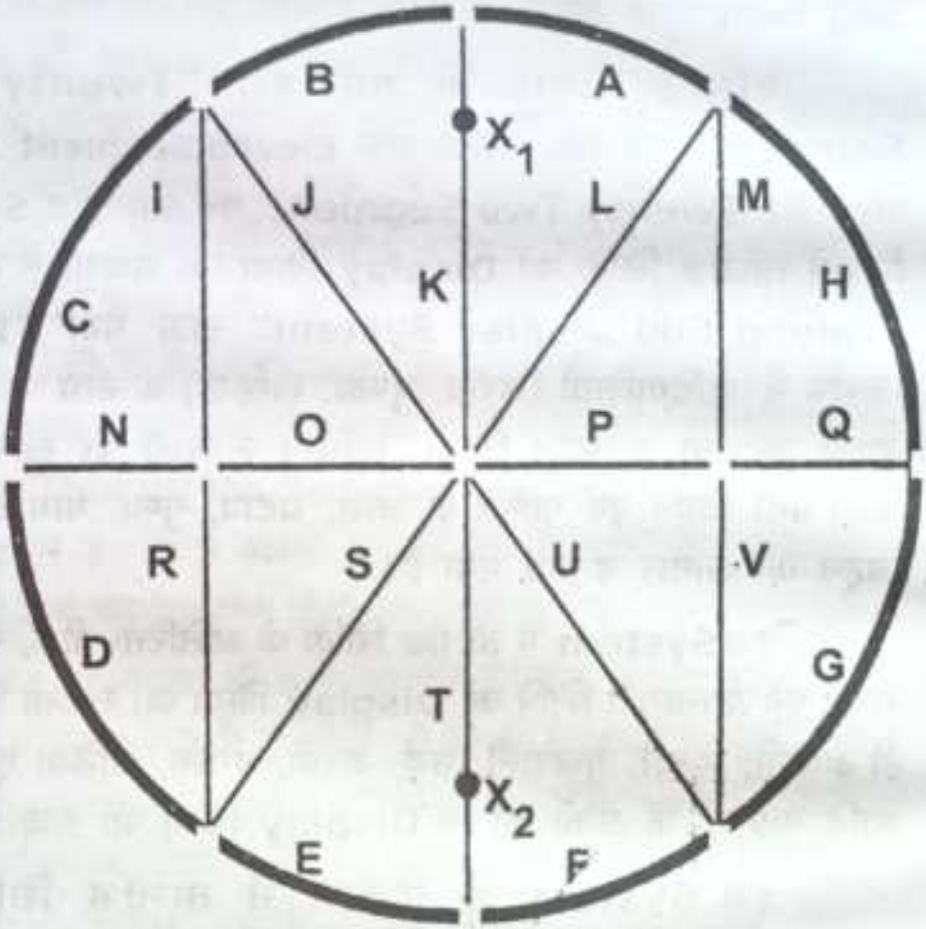

TOLONG SIKI DISPLAY SYSTEM

AS PER GRAPHICS OF TOLONG SIKI DISPLAY SYSTEM (BASED ON 22 SEGMENT DISPLAY SYSTEM)

TOLONG SIKI IN WRITTEN FORM	-	TOLONG SIKI IN SEGMENT FORM

VOWELS

	-	OPMAKT
	-	BIOKTFVM
	-	BKOTESL
	-	BKTESL
	-	BKT
	-	KTBAMV

CONSONANTS

	-	CDEFGH
	-	CDEFGHMQ
	-	NICDEFGH
	-	NICDEFGHMQ
	-	NICDSUGH
	-	NRDCBAHG
	-	NRDCBAHGVQ
	-	BKTESUGH
	-	BKTESUGHMQ
	-	NICDSLHG
	-	DCBAHGULOP
	-	NRDCBAHGULOP
	-	KSDCBAHGOP
	-	KSDCBAHGVQOP
	-	NCIRSLHG
	-	SDCBAHGOP
	-	SDCBAHGVQOP
	-	TSDCBAHG
	-	TSDCBAHGVQ
	-	NRDCJLHG
	-	CDSLHG
	-	CDSLHGVQ
	-	CDSUGH
	-	CDSUGHMQ

TOLONG SIKI IN WRITTEN FORM	-	TOLONG SIKI IN SEGMENT FORM
	-	NRDCJUGH
	-	LPQGFE
	-	BIOTESLHG
	-	KTLMQG
	-	IRDCBAMQG
	-	ORETJBAHG
	-	CDEFGHLOP
	-	KTLHGVQ
	-	DCJLHG
	-	IOPMLTF
	-	IOKPMLTF

NUMERALS BASED ON 11 SEGMENT DISPLAY SYSTEM

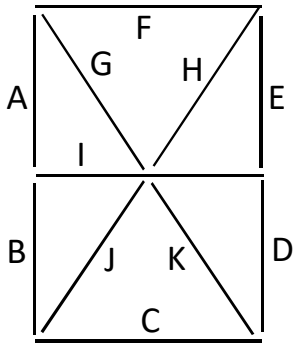

WRITTEN FORM	-	SEGMENT FORM
	-	ABCDEF
	-	AB
	-	GFHJC
	-	FGKCJ
	-	FHJCK
	-	AIEHJC
	-	FGJC
	-	FABCKJ
	-	KJCDEF
	-	IEFABC

अंक चिन्ह का आधार

जीव–जन्तुओं द्वारा बनाये गये चिन्ह

41. ''कुँड़ुख़ व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली'' विषय पर कार्यशाला एवं उद्घोषणा

दिनांक 01 मई 2022, दिन रविवार को आदिवासी उराँव समाज समिति, बिरसा नगर, जोन न०–6, जमशेदपुर में ''कुँड़ुख़ व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली'' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुआ। यह कार्यशाला, टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर के तकनीकि सहयोग से संचालित ''कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) शिक्षण कार्यक्रम'' का अग्रेतर क्रियान्वयन था। इस कार्यशाला में आदिवासी उराँव समाज समिति, बिरसा नगर के पदधारी सहित माध्यामिक विद्यालय के छात्रगण एवं कालेज के छात्र उपस्थित थे। कार्यशाला का शुभारंभ समिति के अध्यक्ष श्री बुधराम खलखो द्वारा हुआ।''कुँड़ुख़ व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली'' विषय पर परिचर्चा के लिए अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), झारखण्ड, राँची, संस्था के संयोजक डॉ० नारायण उराँव द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस व्याख्यान में डॉ० बिन्दु पहान एवं भाषा–लिपि शिक्षण केन्द्र की शिक्षिका सुश्री गीता कोया एवं सुश्री भवानी कुजूर सहयोगी रहीं। यह सूची वर्ष 2015 में प्रकाशित कोश का संशोधित रूप है। टाटा लौह नगरी, जैसे औद्योगिक शहर के बिरसा नगर, कॉलोनी में एक समूह अभी भी अपनी भाषा, संस्कृति एवं लिपि सीखने–सिखाने के लिए प्रयासरत है। इस कार्यशाला में उपस्थित छात्र–छात्राओं ने इस विषय को ध्यान पूर्वक सुना और इसे अपने जीवन में उतारते हुए अपनी शिक्षा तथा प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल किये जाने की घोषणा की। समिति की ओर से श्री प्रकाश कोया के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यशाला समाप्त हुआ।

''कुँड़ुख़ व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली'' इस प्रकार है :–

(1) हहस / [illegible] = Voice, औच्चारणिक ध्वनि।

(2) ख़हस / [illegible] = Allophone, ध्वनिम।

(3) सड़ा / [illegible] = Sound in general, सामान्य ध्वनि।

(4) सरह / [illegible] = Vowel, स्वर।

(5) हरह / [illegible] = Consonant, व्यंजन।

(6) सहङ / [illegible] = Syllable, Agglutinative, शब्दखण्ड, औचारणिक इकाई।

(7) सँवसिरा / [illegible] = Nature, प्रकृति। सँवसे + सिरा = सँवसिरा (सँवसे गही सिरजरना अड्डा, सँवसे गही उपचन अड्डा)।

(8) तोड़ / [illegible] = Letter, वर्ण।

(9) तोड़ङ / [illegible] = Syllable letter, अक्षर।

(10) तोड़न / [illegible] = Spelling,वर्तनी, हिज्जा।

(11) तोड़पाब / [illegible] = Alphabets, वर्णमाला।

(12) जोटठा / [illegible] = Coined Form, compound, संयुक्त।

(13) जोट्ठा सरह / [illegible] = Compound Vowel, संयुक्त स्वर।

(14) जोट्ठा हरह / [illegible] = Compound Consonant, संयुक्त व्यंजन।

(15) बक्क / [illegible] = word, शब्द।

(16) रूईह बक्क / [illegible] = Grammatical Word, पद, व्याकरणिक शब्द।

(17) रूड़आ बक्क / [illegible] = Phrase, समूह शब्द, पदबंध।

(18) बकपुन / = Sentence, वाक्य।

(19) कुहाबकपुन / = Clause, Component, उपवाक्य।*Componant of a Sentence. * कोंहा = बड़ा, कुहा = छोटा हिस्सेदार।

(20) बक्कसमा / = Word Compound, समास।

(21) बक्कपाँःती / = Word order, पदक्रम।

(22) बक्कमेःल / = Co-ordination, अन्वय (मेल)।

(23) बक्कदोहड़ा / = Repetition, पूनरूक्ति।

(24) कत्थतुर्रा / = Proverb, कहावत, लोकोक्ति।

(25) बक्कतुर्रा / = Idioms, मुहावरा।

(26) बईतुर्रा छाव / = Idioms & Phrase, कहावत एवं मुहावरा।

(27) मुर्रा छाव / = Exaggerated Form, वृद्धिवाचक रूप।

(28) आःल / = आल जिया, मानव, मानव जीवन, मानव जाति, प्रकाशमान शक्ति।

(29) आःले / = पुरूष वाचक।

(30) आःली / = स्त्री वाचक।

(31) आःलो / = मानवेतर वाचक, मानव इतर।

(32) सय / = Mr. , श्री, श्रीमान, सय (पिता, पौरूष)। सयस = श्रीमान्।

(33) सयसी / = Miss., सुश्री, अविवाहित पुत्री, बेटी, पुत्री। सिरजन – सृजनहार.

(34) सयख़ी / = Mrs , श्रीमती, सय ख़ई।

(35) बेःलबैनस/ = Prince, राजकुमार।

(36) बेःलबैनी / = Princess, राजकुमारी।

(37) बायना / = बड़ा भाई, अपने छोटे भाई की पत्नी से दूरी बनाये रखने का रिस्ता एवं छोटे भाई की पत्नी को पति के बड़े भाई से दूरी बनाये रखने का रिस्ता। आद तंग बैनालासिन बाःयी।

(38) बैनालस / = बयना आःलस, पति का बड़ा भाई, भैंसुर।

(39) बैनाली / = बयना आःली, छोटे भाई की पत्नी, भाहो।

(40) पायसरी / = पया सरी, एक प्रकार का अनुष्ठान। नाःमे पिंज्जा गे पायसरी खत्ताआ़नर।

(41) दगड़े / = Dagre, दिशा

(i) अरगनी / = East, पूरब।

(ii) उटुरनी / = West, पश्चिम।

(iii) कुक्कचप्पो / = South, दक्षिण।

(iv) ख़ेड्डचप्पो / = North, उत्तर।

(42) बिहउड़ी / = बिंज्जुर गही हउड़ी। शादी करवानेवाले का खोजबीन करना और दण्डित करना।

(43) कोंयछंदा ख़द्द / = गोद लिया हुआ बच्चा। कोंयछा (माँ के आंचल की थैला) + छंदा (छांदा हुआ)।

(44) डली फड़ियाआ़ना / = बेंज्जा चिआ गे डँड़ियाआ़ना। डली झोकना = बेंज्जा मंज्जकन इंजिरना अरा डँड़ियाचकन झोकना।

(45) बेंज्जा बिउड़ही / = बिहउड़ी मंज्जका अरा डली किरताचका = विवाह विच्छेद (तलाक), divorce। बिउड़ही = बिंज्जुर गही उड़हीयाताचका।

A. पिंज्जका / = Noun, संज्ञा।

1. नामे पिंज्जका / = P roper Noun, व्यक्तिवाचक संज्ञा।

2. जईत पिंज्जका / = Common / Class Noun, जातिवाचक संज्ञा।

3. गोठ पिंज्जका / = Collective Noun, समूहवाचक संज्ञा।

4. जिनसी पिंज्जका / = Material Noun, द्रब्यवाचक संज्ञा।

5. गुनसी पिंज्जका / = Abstract Noun, भाववाचक संज्ञा।

B. उइजिपिंज्जका / = Pronoun, सर्वनाम।

1. आ:ल उइजीपिंज्जका = Personal Pronoun, पुरुषवाचक सर्वनाम।
2. थिथाबअ़उ उइजीपिंज्जका / [illegible] = Demonstrative Pronoun, निर्देशवाचक सर्वनाम।
3. अनथह उइजीपिंज्जका / [illegible] = Indefinite Pronoun, अनिश्चयवाचक सर्वनाम।
4. अमलारका उइजीपिंज्जका / [illegible] = Reflexive Pronoun,

आत्म–वाचक सर्वनाम।

5. मेनता उइजीपिंज्जक / [illegible] = Interrogative Pronoun, प्रश्नवाचक सर्वनाम।
6. मे:लनता उइजीपिंज्जका / [illegible] = Relative Pronoun, संबंध वाचक सर्वनाम।
7. दप्पछाव उइजीपिंज्जका / [illegible] = Possessive Pronoun, अधिकार–संबंध वाचक सर्वनाम।
8. ख़ट्टु उइजीपिंज्जका / [illegible] = Distributive Pronoun, विभाजक–वाचक सर्वनाम।

C. आ:ल / [illegible] = Person, पुरुष।

1. बअ़उ आ:ल = First Person, पुरुष। एःन – एःम। एःम – श्रोता एवं अन्य रहित।
2. मिनु आ:ल = Second Person, पुरुष। नी:न – नी:म। नी:म – वक्ता एवं अन्य रहित।
3. बा:त'उ (बार'उ) आ:ल = Third Person, पुरुष। ता:न – ता:म। ता:म – वक्ता एवं श्रोता रहित। ना:म – वक्ता, श्रोता एवं अन्य सहित।

D. मे:द / [illegible] = Gender, लिंग

1. आ:ले मे:द / [illegible] = Masculine Gender, पुलिंग, पुरूष वाचक। नमूद – एका आ:लेस बरआ लगदस। अबड़ा आ:लेर बरआ लगनर। कुक्को बगय बरआ लगनय। पचगिस बरआ लगदस। पचगी गर बरआ लगनर। पचगी बगय ओना लगनय (स्त्री.)।
2. आ:ली मे:द / [illegible] = Feminine Gender, स्त्रीलिंग, स्त्री वाचक। नमूद –कुकोय बरआ लगी। कुकोयर बरआ लगनर। कुकोय बगय बरआ लगनय। पच्चोर बरआ लगनर। पच्चो बगय बरआ लगनय।
3. आ:लो मे:द / [illegible] = Non Human Gender, मानवेतर लिंग, मानवेतर वाचक लिंग। नमूद – आ:लो बरआ लगी। आ:लो गुट्ठी बरआ लगी। अबड़द आ:लो तली।

नोट :– कुँडुख़ भाषा में लिंग निर्णय करते समय निम्न तथ्यों को भी ध्यान देना चाहिए। सामान्य तौर पर इस भाषा में क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार परिवर्तित होता है। परन्तु मानवेतर जीव–जन्तुओं के लिंग निर्णय में क्रिया का रूप एकवचन तथा बहुवचन दोनों के साथ एक ही रूप रहता है। जैसे – बकरी आ रही है और बकरियाँ आ रही हैं को कुँडुख़ भाषा में ''एःड़ा बरआ लगी अरा एःड़ा गुट्ठी बरआ लगी'' कहा जाता है। इसी तरह बैल आ रहा है और गाय आ रही है को कुँडुख़ भाषा में ''अड्डो बरआ लगी अरा ओये बरआ लगी'' कहा जाता है। यहाँ मानवेतर लिंग में दोनों वचन तथा दोनों लिंग के साथ एक ही प्रकार का क्रिया रूप प्रयोग होता है। इसलिए कुँडुख़ व्याकरण में लिंग निर्णय करते समय मानव लिंग विचार एवं मानवेतर लिंग विचार की तरह समझा जाना चाहिए :–

1. आ:ल छया मे:द / [illegible] = Human Gender, मानवीय लिंग, मानव लिंग विचार।

(i) मे:तछया मे:द / [illegible] = Masculine Gender, पुलिंग, पुरूष वाचक।

(ii) मुक्कछया मे:द / [illegible] = Feminine Gender, स्त्रीलिंग, स्त्री वाचक।

2. आ:लोछया मे:द / [illegible] = Non Human Gender, मानवेतर लिंग, मानवेतर लिंग विचार।

E. गनयाँ / [illegible] = Number, वचन।

1. ओन्द गनयाँ / [illegible] = Singular Number, एकवचन।
2. बग्गे गनयाँ / [illegible] = Plural Number, बहुवचन।

F. ननतु / [illegible] = Case, कारक

1. ननुतु'उ ननतु / [illegible] = Nominative Case, कर्ता कारक। ओठङा (Case

Sign, विभक्ति चिह्न) – अस, अय, अर, अद।

2. मनतु'उ ननतु / [illegible] = Accusative Case, कर्म कारक।

ओठङा (Case Sign, विभक्ति चिह्न) – सिन, इन, अन।

3. कम्हड़े ननतु / [illegible] = Instrumental Case, करण कारक। ओठङा (case sign, विभक्ति चिह्न) – तुरू, तुले, ती, बले, गुने।

4. पँड़सरना ननतु / [illegible] = Dative Case, सम्प्रदान कारक। ओठङा (Case sign, विभक्ति चिह्न) – गे, खतरी।

5. अम्बरना ननतु / [illegible] = Ablative Case, अपादान कारक। ओठङा (Case Sign, विभक्ति चिह्न) – ती।

6. नतामुठन ननतु / [illegible] = Genitive Case, संबंध कारक। ओठङा (case sign, विभक्ति चिह्न) – गही, ही, घी। (Genitive case is not a case, but it is a case.)

7. थम्बाथाह ननतु / [illegible] = Locative Case, अधिकरण कारक। ओठङा (Case Sign, विभक्ति चिह्न) – नु, तरा, गुसन, गुसता, तरता।

8. संगोता ननतु / [illegible] = Sociative Case, संगति कारक। ओठङा (case sign, विभक्ति चिह्न) – गने, संग्गे।

9. हँका ननतु / [illegible] = Vocative Case, संबोधन कारक। ओठङा (case sign, विभक्ति चिह्न) – अना,अनय, अने, ए, ए दे।(Vocative case is not a case, but it is a case.)

** ननतु (ननु–ननतु'उ ही नलंग गगे नता तुन'उ) = कारक, Case. ननुता (ननु–ननतु'उ मनेता) = उदेश्य, Subject. मनुता (मनु–मनतु'उ मनेता) = कर्म, Object. आईनता (आईनका मनेता) = विधेय, Predicate.

G. गुनख़ी / [illegible] = विशेषण, Adjective.

1. गुन गुनख़ी / [illegible] = Adjective of Quality, गुनवाचक विशेषण।

2. लेक्खा गुनख़ी / [illegible] = Numeral Adjective , संख्यावाचक विशेषण।

3. जोक्खा गुनख़ी / [illegible] = Adjective of Quantity, परिमाणवाचक विशेषण

4. उइजीपिंज्जका गुनख़ी / [illegible] = Demonstrative Adjective,

सार्वनामिक विशेषण।

H. नलङ–गुनख़ी / [illegible] = Adverb, क्रिया विशेषण।

1. बेड़ा नलङ–गुनख़ी / [illegible] = Adverb of time, कालवाचक क्रिया विशेषण।

2. अड्डा नलङ–गुनख़ी / [illegible] = Adverb of Place, स्थानवाचक क्रिया विशेषण।

3. जोक्खा नलङ–गुनख़ी / [illegible] = Adverb of Auantity,परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

4. नेत–रीत नलङ–गुनखी / [illegible] = Adverb of Manner, रीतिवाचक क्रिया विशेषण।

I. जोक्खा नखरना / [illegible] = Comparison of Adjective, तुलनावाचक विशेषण।

1. मूलिना छाव / [illegible] = Positive Degree, मूलावस्था, प्राकृतिक रूप।

2. जोक्खा छाव / [illegible] = Comparative Degree, उत्तरावस्था।

3. चुन्दआ छाव / [illegible] = Superlative Degree, उत्तमावस्था।

J. नलङ / [illegible] = Verb, क्रिया रचना के आधार पर :–

1. मूलिना (मूली ना:मे) नलङ / [illegible] = Simple / Native Verb, मूल क्रिया।

2. जोट्ठा नलङ / [illegible] = Compound Verb, यौगिक क्रिया।

(क) ननरकी नलङ छाव / [illegible] = Active Verb, Doer, क्रियाशील क्रिया।

(ख) मनरकी नलङ छाव / [illegible] = Passive Verb, अकर्मक क्रिया, अक्रियाशील क्रिया।

(ग) ननतु'उ नलङ छाव / [illegible]

= Causal Verb, प्रेरणार्थक क्रिया।

(घ) मनतु'उ नलङ छाव / **[illegible]** = Accusative Verb, परावर्तित क्रिया।

(ङ) पिंज्जकामुठन नलङ / **[illegible]** = Noun Derived Verb, नाममूल क्रिया।

(च) सड़ामुठन नलङ / **[illegible]** = Sound Based Verb, ध्वनिमूलक क्रिया।

3. मुद्ध नलङ / **[illegible]** = Principal Verb, प्रधान क्रिया। कमना, बअ़ना।

4. पँड़सु नलङ / **[illegible]** = Auxiliary Verb, सहायक क्रिया। रअ़ना, लगना।

5. पँड़सतार'उ नलङ / **[illegible]** = Complimentary Verb, सम्पूरक क्रिया। ननना, मनना।

6. सत्थेमसरी नलङ / **[illegible]** = Universal Verb, सार्वभौमिक क्रिया। तलना, बेअ़ना, हिकना। सत्थेम = सत्य। सरी = प्रतिनिधि। सत्य वचनों के साथ प्रयोग होने वाला क्रिया। यह क्रिया हमेशा ही वर्तमान काल में व्यवहार होता है।

7. मनतु'उ रअ़उ नलङ / **[illegible]** = Transitive Verb, सकर्मक क्रिया।

8. मनतु'उ मलका नलङ / **[illegible]** = Intransitive Verb, अकर्मक क्रिया।

K. नलङ मेदोख़ा / **[illegible]** = Mood, क्रिया वृत्ति।

1. बाःचका नलङ मेदोख़ा / **[illegible]** = Indicative, साधारण, बअ़ना+ मेनना।

2. पेःसका नलङ मेदोख़ा / **[illegible]** = Imperative, संभाव्य, पेःसना+ तेंग्गना।

3. बाःख़का नलङ मेदोख़ा / **[illegible]** = Subjunctive, आदेशात्मक, तुक्कना+बाःख़ना।

L. नलङ किता / **[illegible]** = Types of verb, क्रिया के प्रकार

1. ननरकी नलङ छाव / **[illegible]** = Active Doer Form Verb, सक्रीय क्रिया, कर्त्तार्थक क्रिया।

2. मनरकी नलङ छाव / **[illegible]** = Passive verb, अक्रियाशील क्रिया, अकर्मक क्रिया।

3. ननतु'उ नलङ छाव / **[illegible]** = Active causal Form Verb, प्रेरणार्थक क्रिया।

4. मनतु'उ नलङ छाव / **[illegible]** = Passive reflexive verb, परावर्तित क्रिया, फलार्थक क्रिया।

M. नलङ छाव / **[illegible]** = Form of verb, क्रिया का रूप।

1. सुर्रा छाव / **[illegible]** = Simple form or indefinite form, सामान्य रूप

(i) सुर्रा रअ़ना छाव / **[illegible]** = Present simple form, सामान्य वर्तमान रूप। नमूद – कमदन, कमदय, गुट्ठी।

(ii) सुर्रा केरका छाव / **[illegible]** = Past Simple form, सामान्य भूत रूप। नमूद – कमचकन, कमचकय, कमचस, कमचकत, कमचर, कमचन, कमचा गुट्ठी।

(iii) सुर्रा बरना छाव / **[illegible]** = Future Simple Form, सामान्य भविष्यत रूप। नमूद – कमओन, कमओय, कमओस, कमओर, कमओम, कमओ गुट्ठी।

2. पेःसका छाव / **[illegible]** = Command Form, विधि रूप, आज्ञार्थक। नमूद – कमआ, ओना, नना, इदआ, बीतआ, ओक्का, बोंग्गा, पेसा गुट्ठी।

3. पूर्चका छाव / **[illegible]** = Completness Form, Perfect Form, पूर्ण रूप। नमूद – कमचका, ओण्डका, नंज्जका, इद्दका, बीःतका, उक्का, बोंग्गका, पेःसका गुट्ठी।

4. ननते–मनते छाव / **[illegible]** = Progressive Form, प्रगतिशील रूप। नमूद – कमनुम, ओननुम, ननुनुम, इदतेम, ओक्कतेम गुट्ठी।

5. ननर–मनर छाव / **[illegible]** = Participal form, पूर्वकालिक रूप। नमूद – कमअर, ओनर, ननर, इदअर, ओक्कर, बोंग्गर, पेसर, बरअर, एमअर, मोःख़र गुट्ठी।

6. नलङ मेदोख़ा छाव / **[illegible]** = Mood Form, क्रिया भाव रूप। नमूद – कमआ

लग्गो, ओना बेद्‌दन, नना पँहेस, ओक्कदर नेकआ, ओना तुक्की, मोःख़ोन केन्धेल गुट्‌ठी।

N. बेड़ा अरा परिया / **[illegible]** = Time and Tense, समय और काल

I. रअ़ना परिया / **[illegible]** = Present Tense, वर्तमान काल।

II. केरका परिया / **[illegible]** = Past Tense, भूत काल।

III. बरना परिया / **[illegible]** = Future tense, भविष्यत काल।

I. रअ़ना परिया / **[illegible]** = Present tense वर्तमान काल

1. सुर्रा रअ़ना परिया / **[illegible]** = Simple Present Tense. सामान्य वर्तमान काल। *मंगरस मण्डी ओनदस।
2. सरलगआ रअ़ना परिया / **[illegible]** = Present Continuous Tense. अर्पूण वर्तमान काल। *मंगरस मण्डी ओना लगदस।
3. पूर्चका रअ़ना परिया / **[illegible]** = Present Perfect Tense पूर्ण वर्तमान काल। *मंगरस मण्डी ओण्डका रअ़दस। एःन मण्डी ओण्डकन रअ़दन।
4. ननते–मनते रअ़ना परिया / **[illegible]** = Present Progressive Tense, पूर्ण–अपूर्ण वर्तमान काल। *मंगरस मण्डी ओननुम रअ़दस।

II. केरका परिया / **[illegible]** = Future Tense, भूतकाल।

1. सुर्रा केरका परिया / **[illegible]** = Simple Past Tense, सामान्य भूतकाल। *मंगरस मण्डी ओण्डस।
2. सरलगआ केरका परिया / **[illegible]** = Past Continuous Tense, अपूर्ण भूतकाल। *मंगरस मण्डी ओना लगियस।
3. पूर्चका केरका परिया / **[illegible]** = Past Perfect Tense, पूर्ण भूतकाल। *मंगरस मण्डी ओण्डका रहचस।
4. ननते–मनते केरका परिया / **[illegible]** = Past progressive tense, पूर्ण–अपूर्ण भूतकाल। *मंगरस मण्डी ओननुम रहचस।

III. बरना परिया / **[illegible]** = Future Tense, भविष्यत काल

1. सुर्रा बरना परिया / **[illegible]** = Future Tense सामान्य भविष्यत काल। *मंगरस मण्डी ओनोस।
2. सरलगआ बरना परिया / **[illegible]** = Future Continuous Tense अपूर्ण भविष्यत काल। *मंगरस मण्डी ओना लइग्गका रओस।
3. पूर्चका बरना परिया / **[illegible]** = Future Tense, पूर्ण भविष्यत काल। *मंगरस मण्डी ओण्डका रओस
4. ननते–मनते बरना परिया / **[illegible]** = Future Progressive Tense, पूर्ण–अपूर्ण भविष्यत काल। *मंगरस मण्डी ओननुम रओस।

O. ननुता अरा आईनता / **[illegible]** = Subject & Predicate, उदेश्य और विधेय

1. ननुता / **[illegible]** = Subject, उदेश्य।
2. आईनता / **[illegible]** = Predicate, विधेय।

P. बकपुन / **[illegible]** = Sentence, वाक्य

1. सेब्बा बकपुन / **[illegible]** = Simple Sentence, सरल वाक्य।
2. जोट्‌ठा बकपुन / **[illegible]** = Compound Sentence, यौगिक वाक्य।

साभार :–

आधुनिक कुँड़ुख़ ग्रामर, लेखक : डॉ. नारायण भगत

एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'

संशोधित प्रकरण – मई 01, 2022

42. पारम्परिक उराँव (कुँडुख) समाज की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत

— डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा'

साधारणतया, लोग कहा करते हैं — आदिवासियों का कोई धर्म नहीं है। इनका कोई आध्यात्मिक चिंतन नहीं है। इनका विश्वास एवं धर्म अपरिभाषित है। ये पेड़—पोधों की पूजा करते हैं .... आदि, आदि। इस तरह के प्रश्नों एवं शंकाओं को प्रोत्साहित करने वालों से अगर पूछा जाय — क्या, वे अपने विश्वास, धर्म आदि के बारे में जानते और समझते हैं? यदि इस तरह के प्रश्न करने वाले सचमुच अपने विश्वास, धर्म के बारे में जानते हैं, तो उनके द्वारा आदिवासियों के बारे में इस तरह के लांछण लगाये जाने का औचित्य नहीं है और यदि उन्हें अपने बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते है तो उन्हें समझाया जाना भी आसान नहीं है।

वैसे अध्यात्म एक गूढ़ विषय है जिसकी गहराई तक कुछ ही लोग पहुँच पाते हैं। मुझे अध्यात्म जैसे गूढ़ विषय पर तनिक भी पकड़ नहीं है फिर भी प्रस्तुत शीर्षक के माध्यम से आदिवासियों पर हो रहे बौद्धिक और वैचारिक अवमूल्यन के प्रति लोगों का ध्यान आकृषाट करने का मेरा छोटा सा प्रयास है। ध्यातव्य हो कि आदिवासी परम्परा में भी अध्यात्म की सारी बातें थीं और हैं, किन्तु सरसरी नजर से देखने पर पेड़—पौधे नजर आयेगें। अध्यात्मिक अवधारना में सबसे अधिक जरूरी है ईष्वर की परिकल्पना एवं मान्यता। दूसरा महत्वपूर्ण अवयव है आत्मा या अन्तर्रात्मा। विद्वत्तजनों का कहना है कि आत्मा का परमात्मा के साथ आत्मिक संबंध जोड़ना ही अध्यात्मिकता का सार है। इस परिप्रेक्ष्य में प्रश्न उठता है — क्या, आदिवासी विषास, धर्म में ईश्वर की परिकल्पना है अथवा नहीं ? उसी तरह आत्मा के संबंध में आदिवासियों की मान्यता किस प्रकार है ? इन तथ्यों को समझने के लिए परम्परागत उराँव (कुँडुख़) आदिवासी समाज में प्रचलित अनुष्ठानों एवं अवधारनाओं पर गौर किया जाना चाहिए तथा कुँडुख़ (उराँव) भाषा की निम्नांकित शब्दावली पर मनन—चिंतन किया जाना चाहिए :—

1. धरमे :— एका सवंग सँवसेन धर'ई आःदिम धरमे अरा एका सवंग धरना जोःगे रअ़ई आःदिम धरमे अर्थात वह शक्ति जो समस्त सृष्टि को संचालित करती है तथा वह शक्ति जो अनुकरण करने योग्य है, कुँडुख़ में धरमे (ईश्वर) का यही अर्थ है। धरमे बि'ई। धर (धरना)+मे (मेःन)।

2. धरती अयंग : धरती अयंग। धरती अयंग बि'ई। धरती माता।

3. धरमी सवंग :— धरमे सवंग तरती चाजरका नेम्हा सवंग। धरमी सवंग बि'ई।

4. सँवसिरा :— सँवसे + सिरा = सँवसिरा (प्रकृति)। सँवसे = समस्त, सिरा = उद्गम स्थल। ख़ज्ज अरा ख़ेःख़ेल नु तंगआ ती सिरजारना दरा ख़ोःरना सवंग अड्डा। ई ख़ज्ज अरा ख़ेःख़ेल (सृजन का मूल श्रोत अर्थात सृजन करने वाली धरती एवं उसके अवयव) नु सिरिजतारना अरा सिरिजताअ़ना सवंग अड्डा। चिच्च, चेंःच, ताःका, धरती, अकास उरमी सवंग सिरिजतु'उ सवंग गही सिरिजताअ़ना सवंग तली। वह जो मानव द्वारा निर्मित न हो। सिरजरनी, प्राकृतिक, nature, natural.

5. मय्हदेव :— मया ननु देव (मया—दया करने वाला शक्ति), मय्याँ ता देव (उपर वाला दैवीय शक्ति) मय्हा देव (दयालु शक्ति)। मय्हदेव्स बेअ़दस। वेदों में महादेव शब्द नहीं है। देव—देवाँ रहचा का नाद रहचा बअ़नर।

6. परबईत :— परबस्ती ननु (पालन—पोषण करने वाली) मया (माया)। परबईत बी'ई।

7. चन्ददो—बीःड़ी :— प्रकृति में सूर्य, उर्जा एवं प्रकाश का शाश्वत श्रोत है।

8. करम देव :— करम पूजा में, करम के देव स्वरूप की पूजा होती है। कहीं भी हे करम पेड़ या करम डाली कहकर पूजा नहीं होती है। करम देव या करम राजा कहकर पूजा होती है। नाम के जाप में शक्ति स्वरूप का आह्वान किया जाता है।

9. चाःला अयंग — चाल चिअ़उ अयंग। सरहुल के दिन पेड़ की छाया में, चारो दिशा में रूख कर पूजा होती है किन्तु आह्वान् एवं मंत्रोचारण में किसी पेड़ के नाम से पूजा नहीं होती है। वहाँ पर धरमे एवं धरमी सवंग अर्थात ईश्वर एवं ईश्वरीय शक्तियों की पूजा होती है।

10. देबी अयंग :— दव ननु मेःद मलका मुक्का छाव नु संगरा चिअ़उ सवंग (बिना देहधारी, महिला रूप में अच्छाई करने वाली शक्ति स्वरूपा)। देवाँ बि'ई। देवाँ+बी'ई = देबी। देबीगुड़ी = देबी सवंग गुँड़ुरका अड्डा। देवाँ = good spirit (in HO Language also)

11. पचबल—पुरखर :— पांच पीढ़ी तक के पूर्वज। कुँडुख़ परम्परा में मृत्यु के पश्चात् शरीर को दफनाया/जलाया जाता है तथा मृतक की आत्मा को एःख़ मंक्खना (छाया भितराना) अनुष्ठान कर घर में स्थान दिया जाता है तथा उस आत्मा को पूर्वजों की आत्मा के साथ सम्मिलित होने या उस मृतक की आत्मा के लिए पूर्वजों के नाम पर अनुष्ठान किया जाता है। साथ ही विभिन्न अवसरों

पर उनके नाम से तर्पन एवं भोग दिया जाता है। उराँव लोगों की मान्यता है कि ईश्वर एवं उनके पूर्वज हमेशा उनकी मदद एवं देखभाल करते हैं।

12. जिया (**[illegible]**) (हाँस) :– आत्मा, अन्तर्रात्मा। जिया दिम उंग्गी अरा जिया दिम पुल्ली। कुँडुख़ परम्परा में धरमे सवंग (सर्वशक्तिमान ईष्वर) एवं जिया सवंग (अन्तर्रात्मा) सिर्फ इन्ही दो तत्वों को उंग्गु सवंग अथवा सामर्थ्यवान कहा गया है।

13. देव (**[illegible]**) :– दव ननु मे:द मलका आल मलता आ:लो छाव नु संगरा चिअ़उ सवंग (बिना देह–शरीर के मानव या मानवेतर रूप में अच्छाई करने वाली षक्ति)।

14. नाद (**[illegible]**) :– नंद'उ मलता नंदना ननु सवंग (विनाश करने वाला या कष्ट देने वाला)। कुँडुख़ जीवन में कुछ लोग अपने हिस्से की सम्पत्ति से अधिक सम्पत्ति और ताकत अर्जित करने के लिए जीवात्मा या भटकती हुई आत्मा की साधना कर अपने वंश में करते हैं तथा दूसरे को दुख पहुँचाने में उस नाद की मदद लेते हैं।

15. पद्दा (**[illegible]**) :– गाँव। एकअम आ:लर ही पा:दा अड्डा दिम पद्दा तली। पद्दा पँचेती :– ग्रामसभा। एकअम आ:लर ही पा:दा अड्डा दिम पद्दा तली। पद्दा–पल्ली, पद्दा–पाट।

16. एड़पा (**[illegible]**) :– घर। एकदद तंगहय उला एड़'ई अरा ओहारी ननी। लूरएड़पा :– लूर गे ईड़'उ एड़पा। मूली–एड़पा, मण्डी–एड़पा, कोठा–एड़पा, खुपी–एड़पा, जों:ख़–एड़पा, पेल्लो–एड़पा।

17. अखड़ा (**[illegible]**) :– अख़ना + खटना + अड्डा (अख़आ गे खटना अड्डा/ज्ञान के लिए श्रम स्थल तथा निर्णय करने का स्थल)।

18. धुमकुड़िया (**[illegible]**) :– धुम–ताअ़ कुड़िया, धुम–धुम कुड़िया। धुम–ताअ़ नलना बे:चना अख़ना अड्डा (एक बुजुर्ग अपने नाती–पोते से बोला करते हैं, गुचा नतिया धुम–ताअ़ बे:चा। अर्थात बचपन में अनुशासित तरीके से खेल–खेल में जीवन जीने का तरीका सीखना और सिखलाना), कुड़िया का अर्थ छोटा घर या केन्द्र अथवा सेन्टर। अभी भी गांव में जब लड़के–लड़कियाँ अच्छे से नाच–गान करते हैं तो बुजुर्ग बोला करते हैं – इन्ना गा जों:ख़र–पेल्लर अकय द:व बिच्चयर, धुम–धुम ख़रखा लगिया। इसी तरह लड़के–लड़कियाँ जब मौसम के अनुरूप नाच–गान नहीं करते हैं तो बुजुर्ग वर्जना करते हैं – नी:म जों:ख़र–पेल्लर द:व मल बे:चा लगदर, धम्म–धुम्म ख़रखा लगी। धुमकुड़िया का अर्थ धुमसा:रना कुड़िया है अर्थात वैसा केन्द्र जहाँ से लोग विशिष्ट युवा के रूप में तैयार होकर निकलें।

19. पड़हा (**[illegible]**) :– पड़ा (गाँव समूह क्षेत्र) नु पा:ड़ा (नाचो गाओ खुशी मनाओ) अरा पड़ा नुम पड़गरआ (लड़ना–झगड़ना एवं फैसला करना)। पड़हा का कार्य खून एवं वंश की शुद्धता बनाये रखना एवं सुरक्षा करना रहा है।

20. बिसुसेन्दरा (**[illegible]**) – बसा नना गे सेन्दरा। परम्परागत उराँव (कुड़ुख़) समाज में प्रत्येक वर्ष बईसाक में बिसुसेन्दरा हुआ करता था, जहाँ समाज का विधान एवं दण्ड का निर्णय होता था।

21. कुड़ुख़ (**[illegible]**) :– कुड़ना + अख़ना ती कुड़ुख़ मंज्जा। (ओ:रे नु कुड़ना–मो:खना अख़'उर, कुड़ख़र बा:तारर अरा आ:रिम नन्नारिन हूँ सिखाबा:चर। कुड़ना–मो:ख़ना अख़कत ख़ने कुँड़ख़त, कुड़ना–मो:ख़ना अक्खर ख़ने कुँड़ख़र, कुड़ना–मो:ख़ना अख़कन ख़ने कुँड़ख़न, कुड़ना–मो:ख़ना अख़कम ख़ने कुँड़ख़म, कुड़ना–मो:ख़ना अख़कय ख़ने कुँड़ख़य। (आदिकाल में किसी जंगल में सूखे बाँस के आपसी घर्षण से चीं ..... चीं .... चीं .... चीं ... की आवाज निकलते–निकलते जो अद्भूद दृश्य (दावानल) नजर आया वह कुड़ुख़ भाषा में चीं . . चीं .. से चिच्च (अग्नि) कहलाया और जो अवशेष बचा वह चिन्द (राख) कहलाया। वह चिच्च से पूरा जंगल जलने लगा और पशु–पक्षी मरने लगे। चीं .. चीं .. से चिच्च कहने वाले लोग उन अधजले मांस को खाये और बाद में जानवरों के कच्चे मांस को आग में सेंककर खाने की विधि की खोज की तथा दूसरे समूह को भी सिखलाया। इस समूह द्वारा आग एवं आग में सेंककर खाने की विधि की खोज ने पूरे मानव समाज के जीने का तरीका बदल दिया और उनकी भाषा में वे कुड़ा अख़'उ यथा कुड़ा मो:ख़ा अख़'उ से कुड़ुख़ कहलाये। आषय है, कुड़ुख़ पुरखे, आग एवं आग में कच्चे मांस को सेंक कर खाने की विधि की खोज किये और उन्हीं के द्वारा दूसरे लोगों तक पहूँचा। इस तथ्य को व्यवहार में रखने हेतु कुँड़ख़ पुरखों ने डण्डा कट्टना अनुष्ठान में ईश्वर के नाम से समर्पित चढ़ावे यानि अण्डा को आग में तपाकर (अतख़ा नु कुड़अर) उपस्थित पुरूषों के लिए प्रसाद स्वरूप वितरण किया जाता है, तत्पश्चात ही पूजा संपन्न होता है।) अर्थात कुँडुख़ पूर्वजों ने ही अग्नि की खोज की और कच्चे मांस को पकाकर खाने सीखा तथा दूसरों को भी सिखलाया।

22. उराँव (**[illegible]**) :– उयुर (हल चलाकर खेती करने वाले) + आँवा (घेराबंदी करके आग से जलाकर संजगी अथवा खेत तैयार किया जाना) – उराँव (हल चलाने वाले तथा घेराबंदी कर आग से जलाकर खेत तैयार करने वाले), उयुर गही गण – उरागण – उरागण ठकुर (उराँव राजघराना)। उर + आँव = उराँव – उरबस गही आँवा ती बछरका आ:लर (ईष्वर की अग्नि वर्षा से बचे हुए लोग)।

23. ओल्लगी (**[illegible]**) :– ओंग्गना उलता अरा ओलता सवंगन लग्गना। कुँड़ुख़ संस्कृति में अभिवादन करते

समय दोनों हाथ जोड़कर सिर नवाते हुए ओ'लगी कहा जाता है या बाँया हाथ से दाहिना हाथ को केहुनि से थोड़ा नीचे स्पर्ष करते हुए दाहिना हाथ को उठाकर शीश नवाते हुए ओ'ल्लगी कहा जाता है। ओलगी का शाब्दिक अर्थ ओंग्गनन लग्गना अर्थात सामने वाले व्यक्ति के अन्दर के सामर्थ्यवान को नमन करना। कुँडुख़ अध्यात्म एवं विश्वास में उंग्गु सवंग दो शक्ति को माना गया है – 1. धरमे सवंग (सर्वशक्तिमान) 2. जिया सवंग (अन्तर्रात्मा)। अभिवादन करते समय सामने वाले व्यक्ति के अन्तर्रात्मा को नमन किया जाता है।

24. सा:रना ([Tolong Siki script]) :– एम्मबा सा:रना, कीःड़ा सा:रना, उम्हें सा:रना – महसूस करना, आत्मसात करना, to feel & realised, to relate इत्यादि।

25. सरना ([Tolong Siki script]) :– स + र + न + आ। 'सिरजनन रम्फ ननु आःलोन सा:रना दिम सरना।
' सरनन सा:रना दिम सरना। सा:रना = महसूस करना, अनुभूति, to feel & realise

सरना = सर + ना। सरना गही 'सर' बक्कमूली ही माने हिन्दी नु गतिमान अरा अंगरेजी नु डवइपसपजल मनी। कुँडुख़ नु नलख सरना गही माने एकअम छेका–छछंद (विग्घन–बाधा) मझी नु हूँ आ नलख ही बेड़ा सिरे मुंजुरना अख़तार'ई। ई लेखा ई सँवसिरा (प्रकृति) नु सिरिजारका उरमी दिम तंगआ डींड़ ताँड़का बेसे तंगआ बेड़ा अरा उल्ला खेप'ई। इस तरह जहाँ गति है वहाँ जीवन है और जहाँ जीवन है वहाँ गति है। ख़द्दी उल्ला चा:ला टोंका नु पुजा–६ ाजा ननना अरा मनना नु पद्दा सिञा ता उरमी आल–आःलो ही दव कुना उज्जा–बिज्जा अरा उल्ला खेपआ गे ओहरा–बिनती ननतार'ई। इदी गे धरमे अरा धरमी सवंग ती गोहरारना मनी का तंगआ पद्दा सिञा ता सँवसे सिरजन–बिरजन दव कुना उल्ला खेपअन नेकआ अरा मलदव आःलो पदद्दा सिञा तरा अम्मबन कोरअन नेकआ। ई सँवसिरा नु ख़ेख़ेल, मेरख़ा, ता:का, चिच्च, चें:प (पृथ्वी, आकाश, हवा, अग्नि, पानी) उरमी दिम सवंग बि'ई। अर्थात सरना मात्र पूजा स्थल भर नहीं, बल्कि सरना एक परम्परागत आदिवासी जीवन पद्धति का सारांश है। पेड़–पौधा, जंगल–पहाड़ इत्यादि आदिवासी जीवन में एक गुरू एवं आराध्य का प्रतीक है। 'सरना आदिवासी धरम' का यही कुँडुख़ मूलमंत्र है।

झारखण्ड के आष्ट्रिक मुण्डारी भाषा परिवार के अनुसार सरना शब्द का संबंध सारजोम से है। सरना समाज में सरना और सारजोम का संबंध अटूट है। सरना समाज, सारजोम को त्यागते ही अपने पथ से भटक जाता है। सारजोम को आस्था का केन्द्र बनाया जाना दूसरे धर्म में नहीं है।

26 सँवसर ([Tolong Siki script]) :– सँवसे + सर = सँवसर। सँवसे = समस्त, सर = गतिमान, प्राकृतिक। किसी भी स्थापित धार्मिक आस्था का प्रतिनिधित्व नहीं करने वालों के लिए यह शब्द का प्रयोग हुआ है। आदिवासी समाज में खाशकर कुँडुख़ समाज में सर = गतिमान अथवा प्रकृति के अर्थ में सर से सरना या सर से सरहुल शब्द का प्रचलन, व्यापक हुआ है। माँ के कोख से जन्म लेने के बाद बपतिस्मा लेकर ईसाई हुआ जाता है। इसी तरह ईस्लाम को मानने के लिए अल्लाह, कुरआन शरीफ और पैगम्बर मोहम्मद को कबूल करना पड़ता है। इसी तरह हिन्दु कहलाने के लिए ब्राह्मणवादी व्यवस्था तथा जीवन शैली को स्वीकार करना पड़ता है। पर सँवसर कहलाने वाले वैसे लोगों का समूह है जो जन्म से ही, अपनी प्राकृतिक दशा में हों। सओंसर = संवसेन ओङ्गुन सा:रउर।

27. धरमे, धरती अयंग अरा धरमी सवंग ([Tolong Siki script]) :– सर्वशक्तिमान ईश्वर, धरती माता (प्रकृति) एवं ईश्वरीय प्रेरणाश्रोतक शक्तियाँ (दृश्य–अदृश्य शक्तियाँ) आदि को त्रिशक्ति को आधार मानकर, आह्वान किया जाता है।

28. बेंज्जा ([Tolong Siki script]) :– बन्दा बेसे बांजरना गे इंजिरना दिम बेंज्जा बि'ई। बिंज्जुर'उर + बिंज्जुर = बेंज्जा। बेंज्जा के प्रकार – (i) मड़वा–कँड़सा (मरजईद) बेंज्जा (ii) अतख़ा पण्डी बेंज्जा (iii) सगई–संगहा बेंज्जा (iv) ढुकु–ढरा बेंज्जा (v) Special marriage Act / कोर्ट बेंज्जा।

29. बिहउड़ी ([Tolong Siki script]) :– बिंज्जुर गही हउड़ी = बिहउड़ी। बिंज्जुर = शादी करवाने वाले। हउड़ी = हउड़ाअ़ना ती हउड़ी मंज्जकी बि'ई। अर्थात शादी करवाने वालों द्वारा खोज–खब़र लेना। बेंज्जा एक पारिवारिक एवं सामाजिक रिस्ता है। किसी परिवार का शादी विच्छेद होने से सामाजिक जिम्मेदारी भी आहत होती है, इसलिए शिकायत होने पर समाज के लोग (शादी में भागीदार हुए लोग) खोज–खबर लेते हैं अर्थात हउड़ी करते हैं।

30. बेंज्जा बिउड़ही ([Tolong Siki script]) :– बेंज्जा (बेंजेरना, विवाह करना) + बिउड़ही (अम्बतअना, उड़हीयाताचका) = तलाक (विवाह विच्छेद)। बिंज्जुर (विवाह करवानेवाले) + उड़हीयाताचका (पिंजड़ा से बाहर करवाना)।

31. कोंयछंदा ([Tolong Siki script]) :– कोंयछंदा ख़द्द = कोंयछा नु छंदचका ख़द्द। कोंयछा का अर्थ माँ के आंचल का थैला), छंदा (छंदचका), कोंयछंदा ख़द्द (गोद लिया हुआ बच्चा)।

32. उरागन ([Tolong Siki script]) : उयुर गही गन। खेती–किसानी करने वाले समान विचार वालों का समूह। रूईदास गढे नु कुँड़ख़र उरागन ठकुर हूँ बातारआ लगियर। मुण्डा समाज ही पुरखौती बेवस्था नु मानकी, मुण्डा, पाँड़े, ठकुर बअ़अर पदवी चितारकी र'ई। मना उंग्गी का रा:जी चलाबअ़ना ती ठकुर धतम हिन्दी ता ठाकुर बेसे मंज्जा केरा

होतंग। रूईदास नु गा कुँड़ख़र गही बेलजद्दी रहचा। अवंगेम कुँड़ख़र उराँव अरा उरागन ठकुर हूँ बातारर।

33. डली फड़ियाअ़ना — डँड़ियाःचका ढिबा। डली ढिबा, वधु मुल्य नहीं है। इसे वधु मूल्य या Bride Price न समझा जाय। कोहाँ पाःही के अवसर पर मयसरी और डली तय होता है। यह Ceremonial Gift अथवा उपहार है। डली फड़ियाअ़ना में परिवार के लोग नहीं करते हैं, यह सामाजिक प्रथा है।

34. मयसरी — मया (ममता) + सरी (प्रतीक, प्रतिनिधि) = ममता का प्रतीक भेंट या उपहार। कुछ लोग सादरी/नागपुरी बोलते हुए में मायसारी शब्द माय की साड़ी कहने लगते हैं, जो कुँडुख़ भाषा के अनुसार नहीं है। सादरी/नागपुरी में बेंज्जा के लिए शादी शब्द का प्रयोग होता है, जबकि शादी शब्द को अरबी मूल का माना गया है।

35. जतरा :– जत + रा = जतरा। जतरा दो षब्द से निर्धारित हुआ है। 1. जतनाअ़ना, जिसका अर्थ सम्हालना या संजोकर रखना तथा 2. राःगे, जिसका अर्थ राग, रंग, जीवन संस्कृति, परम्परा, रीतिरिवाज इत्यादि होता है। यह दोनो शब्द के मूल धातु के संयोग से जत + रा से जतरा शब्द बना है। जतरा के कई प्रकार हैं। 1. पड़हा जतरा 2. पद्दा जतरा। जंमीदारी व्यवस्था आने के बाद कई गांव में दरबारी जतरा भी लगने लगा था।

36. मईख़ना :– मई गही ख़ेंःस काःना = मासिक धर्म, mentruation। कहा जाता है – 12 बछरे बईनी सिंगार, बईनी जिया पेल्लो मंज्जा। 12 चन्ददो 13 मईख़ना, मईनी कोरओ अक्कु धुमकुड़ियन्ता पेल्लो एड़पा।

37. सेन्दरा :– सेन्दरा, दो क्रिया शब्द के भाव का रूप है। 1. सोन्दओ ननना 2. रोपड़ो मनना। कुँडुख़ में जहाँ कहीं भी किसी को नीचे गिराने या घेरने का भाव प्रदर्शित करना होता है, वहाँ सोन्दओ ननना तथा टूटने से या दबाव के कारण आकारहीन हुआ, पिचका हुआ, ध्वस्त होने के अर्थ में रोपड़ो मनना शब्द व्यवहार होता है। परम्परागत उराँव समाज में सेन्दरा शब्द का प्रयोग सामाजिक रूप से तीन अवसर पर किया जाता है – (1) फग्गु सेन्दरा (2) मुक्का सेन्दरा (3) बिसुसेन्दरा।

38. बिसुसेन्दरा :– बिसुसेन्दरा = बि + सु + सेन्दरा। बिहनी – बी अरा सुसर ननना – सु, संग्गे मनर बिसु मंजकी बि'ई। ई लेखे बिसुसेन्दरा गही मने – बिहनिन सुसर ननना गे सेन्दरा अर्थात वंशबीज को संपोषित करने के लिए सेन्दरा।

39. देशी आस्था / Indigenous faith :– झारखण्ड स्वतंत्र धर्म अधिनियम 2017, दिनांक 11 सितम्बर 2017 को झारखण्ड सरकार, विधि विभाग द्वारा अधिसूचित है। इस अधिनियम में कहा गया है कि – कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को प्रत्यक्षतः या अन्यथा बलपूर्वक, प्रलोभन या किसी कपटपूर्ण साधन के द्वारा एक धर्म/धार्मिक आस्था से दूसरे में धर्मान्तरित नहीं करेगा या करने का प्रयास नहीं करेगा, न ही ऐसे धर्मान्तरण का दुष्प्रेरण करेगा।

यहाँ प्रश्न है कि क्या झारखण्ड सरकार यहाँ के परम्परागत आदिवासियों के आस्था–विश्वास को स्वीकार करती है तथा किसी नाम से जानती है ? इसका उत्तर है – हाँ। झारखण्ड सरकार, झारखण्ड के परम्परागत आदिवासियों के आस्था–विशवास को देशी आस्था (Indigenous faith) कहती है।

झारखण्ड स्वतंत्र धर्म अधिनियम 2017 के कंडिका 2(च) में कहा गया है – ''ऐसा धर्म, विश्वास एवं परम्पराएँ जिनमें धार्मिक अनुष्ठान, कर्मकाण्ड, पर्व–त्योहार, अनुशरण, प्रदर्शन, वर्जना, प्रथाएँ जैसा कि झारखण्ड में अनुसूचित जनजाति समुदायों के द्वारा स्वीकृत, मान्य तथा व्यवहार्य है, जब से ऐसे समुदाय जाने जाते हैं।''

40. सरना आदिवासी धरम :– दिनांक 11.11.2020 को झारखण्ड विधान सभा द्वारा झारखण्ड के आदिवासियों की परम्परागत आस्था एवं धार्मिक विश्वास को नाम दिये जाने तथा जनगणना सूची में धार्मिक आस्था कॉलम में शामिल किये जाने की वर्षों से लंबित मांग को पर सरना आदिवासी धरम नाम को सर्वसहमति से पारित किया और केन्द्र सरकार को जनगणना 2022–23 में धर्म कॉलम में शामिल करने हेतु भेजा गया। वैसे केन्द्र सरकार द्वारा इसे मान्यता नहीं मिला है।

इस तरह यह तथ्य है कि आदिवासियों की अपनी सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्परा, धर्म, अनुष्ठान इत्यादि सभी चीजें हैं। जरूरत है इसे समझने और आत्मसात करने की। ईष्वर एवं ईष्वरीय शक्तियाँ सबके लिए एक समान है। आवश्यकता है एक अच्छा पात्र बनकर अपनी अन्तर्रात्मा को परमात्मा के साथ संबंध स्थापित करने की। एक सच्चा आदिवासी इस संबंध को स्थापित करने के लिए अपने कार्य को ईश्वर का कार्य समझकर ईमानदारी एवं निष्ठा पूर्वक करने का प्रयास करता है। अध्यात्म का दरवाजा भी यहीं से खुलता है। अध्यात्म व्यक्ति को ईमानदार, नीतिवान, नैतिकवान और चरित्रवान बनाता है जिसकी आवश्यकता समाज को है।

शोध–संकलन – डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'
दिनांक – 03 दिसम्बर 2022, मो.न.– 9771163804

43. देवनागरी लिपि में कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या और समाधान तथा अंक में सुधार

– डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव

कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या और समाधान के तरीके एवं गिनती को सुगम तथा सरल करने हेतु अब तक कई पहल हुए। इस क्रम में दिनांक 26.08.2000 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न हुए कार्यषाला में शून्य (0) का नामकरण 'निदि' रखा गया। उसके बाद दिनांक 24.09.2001 को पुनः जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के सभागार में कुँड़ुख़ गिनती का नामकरण संबंधी दूसरी बैठक हुई, जिसमें आम सहमति से निर्णय लिया गया कि शून्य के लिए प्रस्तावित नामकरण 'निदि' को स्वीकार किया जाय तथा शून्य वाली बड़ी संख्या का नाम दैनिक कार्यों के उपयोग में आने वाली वस्तुओं के नामकरण के समरूप गिनती के नामकरण को रखे जाएँ, जिससे याद करने एवं समझने में आसानी होगी तथा गणित सीखने में आसानी होगी।

दिनांक 24.09.2001 को हुए गिनती का नामकरण में 1 से 19 तक पूर्ववत रखा गया, जो एक धरोहर की तरह है। षून्य का नामकरण 'निदि' को स्वीकार करते हुए अगली गिनती का नामकरण किया गया। इस नामकरण में Two zero twenty के तर्ज पर 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90 आदि संख्या को नामित किया गया। जैसे – एँड़ निदि– एन्दी = 20, मून्द निदि – मून्दी = 30, नाख़ निदि – नाख़दी = 40, पंचे निदि – पन्दी = 50, सोय निदि – सोयदी = 60, साय निदि – सायदी = 70, आख़ निदि – आख़दी = 80, नय निदि – नयदी = 90 रखा गया। बड़ी संख्या (दो से अधिक अंक वाले संख्या) के नामकरण हेतु दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं को आधार मानकर नामित किया गया। इस तरह – सौ = सुड़्डी, हजार = हुड़्डी, लाख = लुड़्डी, करोड़ = किड़्डी, अरब = उड़्डी, खरब = ख़ूड़्डी कहा गया। यहाँ – एँड़ x निदि = एन्दी कहने पर गणित के नियमानुसार गलती हैं। क्योंकि गणित में 2 x 0 = 0 होता है जो भविष्य में गणित सीखने वालों के लिए काफी परेशानी का कारण बनेगा।

आधुनिक गणित में अंकों को 10 के गुणांक में स्थापित किया गया है। जिसे SI सिस्टम या MKS System अर्थात मीटर, किलोग्राम एवं सेकेंड सिस्टम कहते हैं। इसके अनुसार 2x10 =20, 3x10 = 30, 4x10 = 40, 5x10 = 50, 6x10 = 60, 7x10 = 70, 8x10 = 80, 9x10 = 90 समझा जाता है। आदिवासी समाज के लिए भी गणित एवं विज्ञान के मानक सिद्धांत के अनुरूप संख्या का नामकरण होना चाहिए, परन्तु विष्वविद्यालय स्तर पर अबतक भूल–चूक सुधार नहीं किया गया है। इस पर मंथन होना चाहिए!!

इस आशय पर अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची की विचार गोष्ठी कार्तिक उराँव कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, करमटोली, राँची के कार्यालय में दिनांक 11.07.2011 को डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 (श्रीमती) शान्ति खलखो, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। बैठक में गहन विचार–विमर्ष के बाद निर्णय लिया गया कि कुँड़ुख़ गिनती में 1 से 19 तक का नाम पूर्व की भाँति रहे तथा 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, एवं 90 का नामकरण गणित के सिद्धांत के अनुसार 10 के गुणांक में रखे जाने पर सहमति बनी। इस गोष्ठी में वर्तनी समस्या पर भी विचार किया गया। गोष्ठी में डॉ0 निर्मल मिंज जो स्वयं गणित विषय के स्नातक हैं ने सुझाव दिया कि – इस समस्या का समाधान, वर्तमान तकनीक एवं भाषा विज्ञान को आधार मानकर किया जाना चाहिए।

कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या के समाधान हेतु भाषा विज्ञान एवं आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों द्वारा दिये गये सुझाव पर अमल किये जाने की आवष्यकता है। भाषाविदों के अनुसार – कुँड़ुख़ भाषा उतरी द्रविड़ भाषा समूह की भाषा है। हिन्दी साहित्यकारों द्वारा, उतरी द्रविड़ भाषा की लम्बी ध्वनि (Long phone) को लिखने के लिए '' : '' (कॉलन / उपविराम) चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जो तकनीकि दृष्टि से बेहतर है। इसी तरह कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित हेचका हरह (Glotal stop) को कुँड़ुख़ भाषियों द्वारा अ़ चिह्न से लिखा जाता है तथा शब्दखण्ड सूचक (Syllable index) के लिए '' ' '' (अपॉस्ट्रोफी)

का प्रयोग किया जाता है, जो स्वागत योग्य है। इसके अतिरिक्त संख्याओं का नामकरण 10 के गुणांक में किया जाना चाहिए। इस आषय पर डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'' कहा कि – इग्नू के पाठ्यक्रम (एम0एच0डी0–6) में द्रविड़ भाषा की लम्बी ध्वनि के लिए तथा हिन्दी साहित्य के विद्वान फ़ा0 कामिल बुल्के की पुस्तक अंग्रेजी हिन्दी षब्दकोष में लम्बी ध्वनि के लिए ' : ' चिह्न का व्यवहार किया गया है। इसे झारखण्ड के वयोवृद्ध हिन्दी साहित्यकार डॉ0 दिनेष्वर प्रसाद द्वारा भी समर्थन किया गया है।

उपरोक्त विचारों पर डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 नारायण भगत एवं डॉ0 श्रीमती शान्ति खलखो ने सुझाव दिया कि भाषा–विज्ञान एवं तकनीकि सम्मत बातों को आवष्यकता अनुसार स्वीकार करना होगा अन्यथा हम पीछे रह जाएंगे। परिचर्या में अपनी बात रखते हुए डॉ0 हरि उराँव ने स्पष्ट किया कि लम्बी ध्वनि के लिए " : " (कॉलन) चिह्न व्यवहार किया जाना IPA (International Phonetic Alphabets) के अनुरूप ही है। वहीं पर हेचका हरह ध्वनि के लिए " अ़ " चिह्न को स्वीकार किये जाने से लिखने, पढ़ने और समझने में आसानी होगी। शब्द खण्ड सूचक चिह्न के स्थान पर '' ' '' (अपॉस्ट्रोफी) का चुनाव चिन्ह को पहले ही स्वीकार किया जा चुका है। गोष्ठी के अंत में देवनागरी लिपि से लिखने समय उठ रही समस्याओं का समाधान हेतु सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि :–

1. कुँड़ुख़ भाषा की लम्बी ध्वनि को दिखलाने के लिए स्वर के बाद " : " (कॉलन) चिह्न दिया जाय। जैसे – एःड़ा, ओःड़ा, मोःड़ा, जोःड़ा, चाँःड़े–चाँःड़े, कोंःड़ा–कोंःड़ा।
2. हेचका हरह के लिए "अ़" चिह्न दिया जाय। जैसे – नेअ़ना, चिअ़ना, बअ़ना, होअ़ना।
3. शब्द खण्ड सूचक के लिए '' ' ''(अपॉस्ट्रोफी) चिह्न दिया जाय। जैसे – बरई–बर'ई, कमई – कम'ई।
4. तोलोंग सिकि (लिपि) को पठन–पाठन के पाठ्यक्रम में षामिल किये जाने की व्यवस्था करवायी जाय।
5. कुँड़ुख़ गिनती को गणित एवं विज्ञान पर आधारित 10 के गुणांक में तैयार किया जाय।

मानक वर्तनी एवं गिनती हेतु वर्ष 2015 कई विशेषज्ञों से विचार–विमर्श किया गया। कुँड़ुख़ गिनती को अन्तर्राष्ट्रीय परिदृष्य में सरल एवं मानक स्वरूप के डॉ. नारायण उराँव द्वारा, डॉ. निर्मल मिंज, तमिल एवं हिन्दी के विद्वान डॉ० एम. गोविन्दराजन, नोर्थ ईस्ट यूरोपियन यूनिवर्सिटी हॉलैन्ड के चांस्लर मानवषास्त्री प्रो० डॉ० मोहनकान्त गौतम एवं मानवषास्त्री प्रो० डॉ० करमा उराँव के सुझाव पर समीक्षोपरांत आवश्यक संशोधन किये जाने की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें कहा गया कि गिनती एवं पहाड़ा में कुछ ऐसा काम हो जिससे बच्चे आसानी से समझें और याद कर सकें।

अंतर्राष्ट्रीय गणित के अनुसार 20 = 2 x 10, 30 = 3 x 10, 40 = 4 x 10, 50 = 5 x 10, 60 = 6 x 10, 70 = 7 x 10, 80 = 8 x 10 तथा 90 = 9 x 10 समझा जाता है। गणित के इस सिद्धांत के आधार पर कुँड़ुख़ गिनती के अंक को एँड़ x दोय = एन्दोय = 20, मून्द x दोय = मुन्दोय = 30, नाख़ x दोय = नाख़दोय = 40, पंच्चे x दोय = पन्दोय = 50, सोय x दोय = सोयदोय = 60, साय x दोय = सायदोय = 70, आख़ x दोय = आख़दोय = 80, नय x दोय = नयदोय = 90 की तरह समझा जाना चाहिए है। डॉ. नारायण उराँव द्वारा इस विषय में अच्छे कार्य किये हैं। उन्होंने कईलगा का नवीकृत संस्करण तथा पुना चन्ददो एवं आधुनिक कुँड़ुख़ व्याकारण में इन बातों को विस्तार से प्रस्तुत किया है। डॉ. उराँव एवं डॉ. निर्मल मिंज के साथ वर्ष 2019 में एक लेख प्रस्तुत किया गया जिसमें आधुनिक गणित के सिद्धांतों को आधार मानकर सुधार किये जाने के लिए उपाय बतलाये गये हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों द्वारा स्थापित, नये तरीकों के आधार पर व्यंजन अ अथवा हेचका के लिए ' अ़ ' चिह्न तथा लम्बी ध्वनि के लिए '' : '' सेला चिह्न एवं षब्दखण्ड सूचक या घेतला '' ' '' चिह्न का प्रयोग किया गया है। इस विषय पर कुँड़ुख़ विद्वतजनों का सुझाव था कि कुँड़ुख़ गिनती एवं पहाड़ा का स्वरूप मधुर एवं सरल होना चाहिए। यदि ऐसा संभव हुआ तो हम सभी, आने वाली पीढ़ी को गणित सिखलाने में मददगार होंगे।

उपरोक्त तथ्यों पर अध्ययन के पष्चात् निम्नांकित तथ्य स्पष्ट होता है :–

1. गिनती का नामकरण 1 से 19 तक पूर्ववत रखा जाना चाहिए, जो एक धरोहर की तरह है।

2. षून्य का नामकरण 'निदि' को स्वीकार किया जाना चाहिए।

3. पहाड़ा को सरल बनाने हेतु 10 के गुणांक के अन्तर्राष्ट्रीय गणित के सिद्धांत पर, छोटा और सरल नामकरण दिये जाएँ। इस दिशा में 15 नवम्बर 2019 को ''बक्कहुही'' त्रैमासिक कुँड़ुख़ पत्रिका के लिए डॉ0 निर्मल मिंज एवं डॉ0 नारायण उराँव का संयुक्त लेख मार्गदर्शक बन सकता है।

4. कुँड़ुख़ भाषा की लम्बी ध्वनि को दिखाने के लिए स्वर के बाद " : " (कॉलन) चिह्न दिया जाय। जैसे – एःड़ा, ओःड़ा, मोःड़ा, चाँःड़े–चाँःड़े, कोंःड़ा–कोंःड़ा। इग्नू के पुस्तक में उतरी द्रविड़ भाषा के लिए यह व्यवहारित है।

5. हेचका हरह के लिए "अ़" चिह्न दिया जाय। जैसे – नेअ़ना, चिअ़ना, बअ़ना, होअ़ना, चोअ़ना, बअ़ना, रअ़ना।

[संस्कृत वर्णमाला में ड़ एवं ढ़ वर्ण नहीं है अर्थात हिन्दी वर्णमाला में ड़ तथा ढ़ ध्वनि का संस्करण, आर्य भाषा परिवार में बाहरी भाषा के प्रभाव को दर्शाता है। उर्दू, अरबी, अंग्रेजी, कुँड़ुख़ (उतरी द्रविड़ भाषा) एवं गोंडी (मध्य द्रविड़ भाषा परिवार) आदि भाषाओं के शब्दों को लिखने के लिए देवनागरी लिपि के अक्षरों के नीचे डॉट (तलविन्दु) चिह्न देकर लिखा जाता है। जैसे – ख़ब़र, ग़ब्बर, व़ज़ीर, व़ेल, चिअ़ना, बिअ़ना, नेअ़ना, बेअ़ना, होअ़ना, चोअ़ना, बअ़ना, रअ़ना, एड़पा, माड़ना, बाढ़ी गढ़े, ख़ज्ज, ख़ेंस, इज़्रिना, कोरज़ो, बाज़लो आदि। संस्कृत साहित्यों में (मनुस्मृति, अध्याय 2, श्लोक 22) आर्यावर्त देश जिसकी सीमा उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विंद्याचल, पूरब में सागर एवं पश्चिम में सागर बतलाया गया है। भारतीय इतिहास में विंद्याचल पर्वतमाला से नर्मदा के बीच का भूभाग को गोंडवाना कहा गया है और भाषायी दृष्टि से यहाँ की भाषा गोंडी एक मध्य द्रविड़ भाषा है। इसी तरह बाल्मीकि रामायण के करूष देश (वर्तमान समय में, गंगा और सोन नदी के बीच का क्षेत्र, विंद्याचल पर्वत श्रृखला के अंतर्गत कैमूर पर्वत श्रंखला) जो द्रविड़ शासक ताड़का (जो रावण की फूआ थी) का क्षेत्र था। हजारों वर्षों तक साथ–साथ रहने से सांस्कृतिक सम्मिश्रण हुआ और बड़े समूह की भाषा को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होते ही विकसित होती गई। इस प्रकार हिन्दी के विकास में मध्य द्रविड़ एवं उतरी द्रविड़ भाषा का भी प्रभाव है। अतएव उतरी द्रविड़ भाषा के ध्वनि को दिखलाने के लिए देवनागरी अक्षरों के नीचे तल विन्दु दिया जाना बेहतर उपाय है। कुँड़ुख़ में ड़, ढ़, ख़, ज़ तथा अ़ ध्वनि के लिए तलविन्दु लिखने का रिवाज बेहतर समाधान है। इस करूष देश को कुछ साहित्यकार कुड़ुख़ देश मानते हैं क्योंकि प्रसिद्ध ग्रंथ बाल्मीकि रामायण में वर्णित करूष देश द्रविड़ों के शासन में था, जिसे भगवान राम ने एक महिला शासक का बध करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया। यह क्षेत्र आर्य भाषा परिवार के शासकों के कब्जे में आने से पहले संभवतः द्रविड़ भाषी कुड़ुख़ देश रहा था, जिसे संस्कृत भाषियों ने कुड़ुख़ देश से करूष देश किया हो, क्योंकि संस्कृत में ड़ और ख़ ध्वनि नहीं है। वर्तमान में भी गंगा के समतल भूभाग में ड़ के स्थान पर र उच्चरित किया जाता है।]

6. शब्द खण्ड सूचक के लिए '' ' ''(अपॉस्ट्रोफी) चिह्न दिया जाय। जैसे – बरई–बर'ई, कमई – कम'ई।

संदर्भ सूची :–

1. अंग्रेजी हिन्दी षब्दकोष : फ़ादर कामिल बुल्के, पृष्ठ – IX.
2. एम.एच.डी.–6 : इग्नू, नई दिल्ली, 25.5.1 : द्रविड़ परिवार (विष्व की भाषाएँ एवं भारतीय भाषा परिवार)।
3. KURUX PHONETIC READER, CIIL series – 9, : Dr. Fransis Ekka
4. Modern Kurux Grammar, Published on : Aug 2018, : Dr. N. Bhagat & Dr. N. Oraon.
5. IMPROVE YOUR PRONUNCIATION – VICTOR W. TUCKER, S. J. ; P - I
6. Oxford English Hindi Dictionary, Edited by : S K Verma & R N Sahai, Page – XII, XIII.

44. कुँड़ुख़ गिनती का मानकीकरण : परिचर्चा एवं वर्तमान स्वरूप

कुँड़ुख़ गितनी के सुगम एवं सरल रूप हेतु अब तक कई पहल हुए। इस क्रम में दिनांक 26.08.2000 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न हुए कार्यषाला में शून्य (0) का नामकरण 'निदि' रखा गया। उसके बाद दिनांक 24.09.2001 को पुनः जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के सभागार में कुँड़ुख़ गिनती मानकीकरण संबंधी दूसरी बैठक हुई, जिसमें आम सहमति से निर्णय लिया गया कि शून्य के लिए प्रस्तावित नामकरण 'निदि' को स्वीकार किया जाय तथा शून्य वाली बड़ी संख्या का नाम दैनिक कार्यों के उपयोग में आने वाली वस्तुओं के नामकरण के समरूप गिनती के नामकरण को रखे जाँए, जिससे याद करने एवं समझने में आसानी होगी तथा गणित सीखने में आसानी होगी।

साथ ही गिनती के नये तरीके में संख्या के नामकरण में हुए चूक का सुधार आवश्यक है तथा आधुनिक गणित के अंकों की तरह 10 के गुणक में अंकों का नाम स्थापित किया जाय। इससे, गणित के 10 के गुणक के मानक सिद्धांत के अनुरूप आगे बढ़ने से पूरे समाज के लिए गणित एवं विज्ञान समझने में असानी होगी। इस आशय पर अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा की विचार गोष्ठी कार्तिक उराँव कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, करमटोली, राँची के कार्यालय में दिनांक 11.07.2011 को डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 (श्रीमती) शान्ति खलखो, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा, श्री पॉल मुंजनी एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। बैठक में गहन विचार–विमर्ष के बाद निर्णय लिया गया कि कुँड़ुख़ गिनती में 1 से 19 तक का नाम पूर्व की भाँति रहे तथा 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, एवं 90 का नामकरण गणित के सिद्धांत के अनुसार 10 के गुणक में रखा जाय।

मानक गिनती हेतु दिनांक 06.10.2015 को समर्पित शब्दावली एवं दिनांक 11.07.2011 को सैद्धांतिक रूप से तैयार गनणीय कुँड़ुख़ गिनती को अन्तर्राष्ट्रीय परिदृष्य में सरल एवं मानक स्वरूप के लिए डॉ. निर्मल मिंज, तमिल एवं हिन्दी के विद्वान डॉ. एम. गोविन्दराजन, नोर्थ ईस्ट यूरोपियन यूनिवर्सिटी हॉलैन्ड के चांस्लर मानवषास्त्री प्रो. डॉ. मोहनकान्त गौतम एवं मानवषास्त्री प्रो. डॉ. करमा उराँव के सुझाव पर समीक्षोपरांत आवष्यक संषोधन किया गया, जिसमें कहा गया कि गिनती एवं पहाड़ा में कुछ ऐसा काम हो जिससे बच्चे आसानी से समझें और याद कर सकें।

अंतर्राष्ट्रीय गणित के अनुसार 20 = 2X10, 30 = 3X10, 40 = 4X10, 50 = 5X10, 60 = 6X10, 70 = 7X10, 80 = 8X10 तथा 90 = 9X10 समझा जाता है। गणित इस सिद्धांत के आधार पर कुँड़ुख़ गिनती के अंक को एँड़ X दोय = एन्दोय = 20, मून्द X दोय = मुन्दोय = 30, नाख़ X दोय = नाख़दोय = 40, पंच्चे X दोय = पन्दोय = 50, सोय X दोय = सोयदोय = 60, साय X दोय = सायदोय = 70, आख़ X दोय = आख़दोय = 80, नय X दोय = नयदोय = 90 की तरह समझा गया है जो इस पुस्तिका के गिनती पाठ में विस्तार से दिया हुआ है।

इसके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों द्वारा स्थापित नये तरीकों के आधार पर अर्द्धस्वर अ अथवा हेचका के लिए '' अ़ '' चिह्न तथा लम्बी ध्वनि के लिए '' : '' सेला चिह्न एवं शब्दखण्ड सूचक या घेतला ' ' ' चिह्न का प्रयोग किया गया है। बाकी चीजें पूर्व के निर्णय के अनुसार ही है। इस निर्णय के आलोक में गिनती का एक स्वरूप सामने आया किन्तु कुछ कुँड़ुख़ विद्वतजनों का सुझाव था कि कुँड़ुख़ गिनती एवं पहाड़ा का स्वरूप मधुर एवं सरल होना चाहिए। यदि ऐसा संभव हुआ तो हम सभी आने वाली पीढ़ी को गणित सिखलाने में मददगार होंगे। उपरोक्त तथ्यों पर गंभीरता पूर्वक विचार–मंथन करने के पष्चात् निम्नांकित तथ्य सामने आया। जो इस प्रकार है :–

1. गिनती का नामकरण 1 से 10 तक पूर्ववत रखा जाय, जो एक धरोहर की तरह है।
2. षून्य का नामकरण 'निदि' को स्वीकार करते हुए गिनती का मानकीकरण हो।
3. पहाड़ा को सरल बनाने हेतु 10 के गुनक के अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धांत को अपनाया जाए।

4. बड़ी संख्या (दो से अधिक अंक वाले संख्या) के नामकरण हेतु दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं को आधार मानकर नामित किया जाना चाहिए।

इस सिद्धांत के तर्क पर 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90 (दो अंक वाले संख्या) का नामकरण इस प्रकार रखा गया – 20 = 2x10 = एन्दोय, 30 = 3x10 = मुन्दोय, 40 = 4x10 = नाख़दोय, 50 = 5x10 = पन्दोय, 60 = 6x10 = सोयदोय, 70 = 7x10 = सायदोय, 80 = 8x10 = आख़दोय, 90 = 9x10 = नयदोय। इसी तरह तीन से अधिक संख्या वाले गिनती का नामकरण हेतु दैनिक उपयोग में आनेवाली संसाधनों के आधार पर सौ, हजार, लाख, करोड़, अरब, खरब आदि संख्या के नाम चुने गये हैं, जो निम्न हैं :–

(क) 'सोड़ा' एक दैनिक कार्य की चीज है। इसका स्वरूप बड़ा भी हो सकता है या फिर छोटा सा। इसी' सोड़ा' शब्द के अन्त में निदि शब्द का ई शब्दांश जुड़ने से 'सुड्डी' शब्द बना, जिसका अर्थ 'सौ' है।

(ख) 'हुँड़ा' शब्द भी माप–तौल का एक शब्द है। इसी 'हुँड़ा' शब्द के अन्त में निदि षब्द का ई शब्दांश जुड़ने से 'हुड्डी', शब्द बना, जिसका अर्थ 'हजार' है।

(ग) 'लोंधा' शब्द भी माप–तौल में व्यवहारित है। इसी 'लोंघा' शब्द के अन्त में निदि शब्द का ई शब्दांश जुड़ने से 'लुड्डी' शब्द बना, जिसका अर्थ 'लाख' है।

(घ) कें:तेर दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण सामान है। इसी कें‌तेर शब्द के अन्त में निदि षब्द का ई शब्दांश जुड़ने से 'किड्डी' शब्द बना, जिसका अर्थ 'करोड़' है।

(ड.) 'कें:तेर' से बड़ा मापक सामग्री 'उड्डू' है। इसी 'उड्डु' शब्द के अन्त में निदि षब्द का ई शब्दांश जुड़ने से 'उड्डी' शब्द बना, जिसका अर्थ 'अरब' है।

(च) 'उड्डु' से बड़ा मापक सामग्री 'खच्चा' है। इसी खचा षब्द के अन्त में निदि शब्द का ई शब्दांश जुड़ने से नजदीक की ध्वनि 'ख़' से 'ख़ूड्डी' शब्द बना, जिसका अर्थ 'खरब' है।

इस प्रकार सुड्डी = सौ, हुड्डी = हजार, लुड्डी = लाख, किड्डी = करोड़, उड्डी = अरब, ख़ुड्डी = खरब आदि रखा गया। कुँडुख़ पहाड़ा को याद करने हेतु निम्नांकित तरीके अपनाये गये। एँड़ ओन्दे = ओन्द, एँड़ एँड़े = नाख़, एँड़ मुन्दे = सोय, एँड़ नख़े = आख़, एँड़ पंजे = दोय, एँड़ सोये = दोय एँड़, एँड़ सये = दोयनाख़, एँड़ अख़े = दोयसोय, एँड़ नये = दोयआख़, एँड़ दोये = एन्दोय। पहाड़ा अगले पृष्ट पर।

कुँडुख़ गितनी के सुगम एवं सरल रूप हेतु अब तक कई पहल हुए। इस क्रम में दिनांक 26.08.2000 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न कार्यशाला में शून्य (0) का नामकरण 'निदि' रखा गया। उसके बाद दिनांक 24.09.2001 को फिर से जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के सभागार में कुँडुख़ गिनती मानकीकरण संबंधी दूसरी बैठक हुई, जिसमें आम सहमति से निर्णय लिया गया कि शून्य के लिए प्रस्तावित नामकरण 'निदि' को स्वीकार किया जाय तथा शून्य वाली बड़ी संख्या का नाम दैनिक कार्यों के उपयोग में आने वाली वस्तुओं के नामकरण के समरूप गिनती के नामकरण को रखे जाएँ, जिससे याद करने एवं समझने में आसानी होगी तथा गणित सीखने में आसानी होगी। इस सिद्धांत पर कार्य जारी रहा। गिनती के नये तरीके में संख्या के नामकरण में कुछ चूक हुई जिसका सुधार आवश्यक है तथा आधुनिक गणित के अंकों की तरह 10 के गुणक में अंकों का नाम स्थापित किया जाना चाहिए। इसके लिए, गणित के अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत को आधार मानकर

10 के गुणक के मानक सिद्धांत के अनुरूप आगे बढ़ने से पूरे समाज के लिए गणित एवं विज्ञान समझने में असानी होगी। इस आशय पर अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा की विचार–गोष्ठी कार्तिक उराँव कुँडुख़ लूरकुड़िया, करमटोली, राँची के कार्यालय में दिनांक 11.07.2011 को डॉ. निर्मल मिंज, डॉ. हरि उराँव, डॉ. नारायण भगत, डॉ. (श्रीमती) शान्ति खलखो, फा. अगस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। बैठक में गहन विचार–विमर्श के बाद निर्णय लिया गया कि कुँडुख़ गिनती में 1 से 19 तक का नाम पूर्व की भाँति रहे तथा 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, एवं 90 का नामकरण गणित के सिद्धांत के अनुसार 10 के गुणक में रखा जाय।

इस सिद्धांत के तर्क पर 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90 (दो अंक वाले संख्या) का नामकरण इस प्रकार रखा गया – 20 = 2x10 = एन्दोय, 30 = 3x10 = मुन्दोय, 40 = 4x10 = नाख़दोय, 50 = 5x10 = पन्दोय, 60 = 6x10 = सोयदोय, 70 = 7x10 = सायदोय, 80 = 8x10 = आख़दोय, 90 = 9x10 = नयदोय। इसी तरह तीन से अधिक संख्या कुँडुख़ पहाड़ा को याद करने हेतु निम्नांकित तरीके अपनाये गये।

इसी तरह पहाड़ा को याद करने में आसानी हो इसके लिये संयुक्त षब्दांष को और अधिक लघु करते हुए शब्द रचना किये जाने का प्रयास है। जो इस प्रकार है – एँड़ ओन्दे = ओन्द, एँड़ एँड़े = नाख़, एँड़ मुन्दे = सोय, एँड़ नख़े = आख़, एँड़ पंजे = दोय, एँड़ सोये = दोयएँड़, एँड़ सोये = दोयएँड़, एँड़ सये = दोयनाख़, एँड़ आख़े = दोयसोय, एँड़ नये = दोयआख़, एँड़ दोये = एन्दोय, सोय सोये = मुन्दोसोय (मुन्दोयसोय), सोय आख़े = नाख़दोआख़ (नाख़दोयआख़), सोय नये = पन्दोनाख़ (पन्दोयनाख़), आख़ अख़े = सोयदोनाख़ (सोयदोयनाख़) आदि। सारणी इस प्रकार है :–

0	– निदि –	𑷠	1	– ओन्द –	𑷡	2	– एँड़ –	𑷢
3	– मून्द –	𑷣	4	– नाख़ –	𑷤	5	– पंच्चे –	𑷥
6	– सोय –	𑷦	7	– साय –	𑷧	8	– आख़ –	𑷨
9	– नय –	𑷩	10	– दोय –	𑷡𑷠	11	– दोयओन्द –	𑷡𑷡
12	– दोयएँड़ –	𑷡𑷢	13	– दोयमून्द –	𑷡𑷣	14	– दोयनाख़ –	𑷡𑷤
15	– दोयपंच्चे –	𑷡𑷥	16	– दोयसोय –	𑷡𑷦	17	– दोयसाय –	𑷡𑷧
18	– दोयआख़ –	𑷡𑷨	19	– दोयनय –	𑷡𑷩	20	– एन्दोय –	𑷢𑷠
21	– एन्दोःओन्द –	𑷢𑷡	22	– एन्दोःएँड़ –	𑷢𑷢	23	– एन्दोःमून्द –	𑷢𑷣
24	– एन्दोःनाख़ –	𑷢𑷤	25	– एन्दोःपंच्चे –	𑷢𑷥	26	– एन्दोःसोय –	𑷢𑷦
27	– एन्दोःसाय –	𑷢𑷧	28	– एन्दोःआख़ –	𑷢𑷨	29	– एन्दोःनय –	𑷢𑷩
30	– मुन्दोय –	𑷣𑷠	31	– मुन्दोःओन्द –	𑷣𑷡	32	– मुन्दोःएँड़ –	𑷣𑷢
33	– मुन्दोःमून्द –	𑷣𑷣	34	– मुन्दोःनाख़ –	𑷣𑷤	35	– मुन्दोःपंच्चे –	𑷣𑷥
36	– मुन्दोःसोय –	𑷣𑷦	37	– मुन्दोःसाय –	𑷣𑷧	38	– मुन्दोःआख़ –	𑷣𑷨
39	– मुन्दोःनय –	𑷣𑷩	40	– नाख़दोय –	𑷤𑷠	41	– नाख़दोःओन्द –	𑷤𑷡
42	– नाख़दोःएँड़ –	𑷤𑷢	43	– नाख़दोःमून्द –	𑷤𑷣	44	– नाख़दोःनाख़ –	𑷤𑷤
45	– नाख़दोःपंच्चे –	𑷤𑷥	46	– नाख़दोःसोय –	𑷤𑷦	47	– नाख़दोःसाय –	𑷤𑷧
48	– नाख़दोःआख़ –	𑷤𑷨	49	– नाख़दोःनय –	𑷤𑷩	50	– पन्दोय –	𑷥𑷠
51	– पन्दोःओन्द –	𑷥𑷡	52	– पन्दोःएँड़ –	𑷥𑷢	53	– पन्दोःमून्द –	𑷥𑷣
54	– पन्दोःनाख़ –	𑷥𑷤	55	– पन्दोःपंच्चे –	𑷥𑷥	56	– पन्दोःसोय –	𑷥𑷦
57	– पन्दोःसाय –	𑷥𑷧	58	– पन्दोःआख़ –	𑷥𑷨	59	– पन्दोःनय –	𑷥𑷩
60	– सोयदोय –	𑷦𑷠	61	– सोयदोःओन्द –	𑷦𑷡	62	– सोयदोःएँड़ –	𑷦𑷢

63 –	सोयदोःमून्द –	63	64	– सोयदोःनाख़ –	64	65	– सोयदोःपंच्चे –	65
66 –	सोयदोःसोय –	66	67	– सोयदोःसाय –	67	68	– सोयदोःआख़ –	68
69 –	सोयदोःनय –	69	70	– सायदोय –	70	71	– सायदोःओन्द –	71
72 –	सायदोःएँड़ –	72	73	– सायदोःमून्द –	73	74	– सायदोःनाख़ –	74
75 –	सायदोःपंच्चे –	75	76	– सायदोःसोय –	76	77	– सायदोःसाय –	77
78 –	सायदोःआख़–	78	79	– सायदोनय –	79	80	– आख़दोय –	80
81 –	आख़दोःओन्द–	81	82	– आख़दोःएँड़ –	82	83	– आख़दोःमून्द –	83
84 –	आख़दोःनाख़ –	84	85	– आख़दोःपंच्चे –	85	86	– आख़दोःसोय –	86
87 –	आख़दोःसोय –	87	88	– आख़दोःआख़ –	88	89	– आख़दोःनय –	89
90 –	नयदोय –	90	91	– नयदोःओन्द –	91	92	– नयदोःएँड़ –	92
93 –	नयदोःमून्द –	93	94	– नयदोःनाख़ –	94	95	– नयदोःपंच्चे –	95
96 –	नयदोःसोय –	96	97	– नयदोःसाय –	97	98	– नयदोःआख़ –	98
99 –	नयदोःनय –	99	100	– सुड्डी –	100			

45. कुँडुख़ में संख्या का विकास के संबंध में विशप डॉ० निर्मल मिंज का सुझाव

डॉ० निर्मल मिंज गणित (ऑनर्स) विषय में स्नातक थे। स्नाकोत्तर का विषय मानवशास्त्र था तथा धर्मशास्त्र में मिनिसोटा विश्वविद्यालय, अमेरिका से पी.एच.डी.। गणित विषय में अपनी समझ एवं प्रखरता के चलते आदिवासी भाषा तथा गणित के बारे में मुझे, अपना विचार बतलाये – यदि कुँडुख़ में गिनती और पहाड़ा का विकास सरल तरीके से हो, तो कुँडुख़ समाज के बच्चे अपनी भाषा में गणित को आसानी से समझ सकेंगे, अतः इससे संबंधित शोध एवं सहमति के साथ गांव स्तर पर कार्य करें।

डॉ० निर्मल मिंज इस दिशा में प्रयत्नशील रहे। इसी क्रम में दिनांक 26.08.2000 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के परिसर में कुँडुख़ गिनती मानकीकरण कार्यशाला में दोय, एन्दोय, मुन्दोय, नाख़दोय, पन्दोय, सोयदोय, सायदोय, आख़दोय, नयदोय को पूर्व की तरह स्वीकार किया गया। साथ ही शून्य के लिए निदि शब्द का नामकरण तो इस कार्यशाला में प्रस्ताव पारित किया गया और अब यह प्रचलन में है। किन्तु इस निर्णय में 20 के लिए एँड निदि – एन्दी, 30 के लिए मून्द निदि – मून्दी की तरह बातें रखी गईं, जैसा कि अंगरेजी में 20 को two zero - twenty भी कहा जाता है। पर अंतर्राष्ट्रीय गणित के सिद्धांत में 10 के गुणक के अनुसार $20 = 2x10$ होता है। उस दिन भूल–चूक से या जल्दबाजी में एन्दी, मुन्दी, नाख़दी पन्दी, सोयदी, सायदी, आख़दी, नयदी इत्यादि निर्णय हुआ, जो अब पाठ्य पुस्तकों में भी आ रहा है।

परन्तु यह अंतर्राष्ट्रीय गणित के सिद्धांत की दृष्टि से यह चूक (गलती) है। डॉ० मिंज को जब इस चूक का अहसाश हुआ, तो वे बोले कि – गणित की संख्या के नामकरण में हुई चूक को सुधार किया जाए। सुधार का आधार गणित का अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत हो। इसके अनुसार $20 = 2x10$ तथा $30 = 3x10$ होता है। इसी उदेश्य से दिनांक 11.07.2011 को डॉ० निर्मल मिंज, डॉ० हरि उराँव, डॉ० नारायण भगत, डॉ० (श्रीमती) शान्ति खलखो, फा० अगस्तिन केरकेट्टा, श्री पॉल मुंजनी एवं डॉ० नारायण उराँव की उपस्थिति में बैठक हुई। इस बैठक में गणित के जानकारों के समक्ष निर्णय हुआ और 10, 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90 को क्रमवार दोय, एन्दोय, मुन्दोय, नाख़दोय, पन्दोय, सोयदोय, सायदोय, आख़दोय, नयदोय के रूप में 2000 ई० से पूर्व की भाँति रखा गया। अंतर्राष्ट्रीय गणित का सिद्धांत MKS System या SI System के अनुसार निर्धारित है।

इस शोध–संकलन में गिनती एवं पहाड़ा को आसानी से उच्चारण करने तथा याद करने के उदेश्य से 21 के लिए एन्दोय ओन्द को एन्दोओन्द, 22 के लिए एन्दोय मून्द को एन्दोमून्द की तरह रखे जाने के विषय पर चर्चा हुई। यदि नई पीढ़ी के लिए यह प्रयास गणित समझने में योगदान दे सके तो यह कार्य उत्तम होगा। इस दिशा में विस्तृत शोध हो और सहमति बने, जिससे कुँडुख़ समाज के बच्चों के लिए गणित आसान हो सके।

– डॉ० नारायण उराँव

दिनोंक 31 दिसम्बर 2018 सैन्दा, सिसई, गुमला (झारखण्ड)

46. अड्डा मुल्ली (स्थानीय मान)

ओंदिम	–	इकाई	–	1	–	ओन्द
दोयिम	–	दहाई	–	10	–	दोय
सुडिम	–	सैकड़ा	–	100	–	सुड्डी
हुडिम	–	हजार	–	1000	–	हुड्डी
दोय हुडिम	–	दस हजार	–	10000	–	दोय हुड्डी
लुडिम	–	लाख	–	100000	–	लुड्डी
दोय लुडिम	–	दस लाख	–	1000000	–	दोय लुड्डी
किडिम	–	करोड़	–	10000000	–	किड्डी
दोय किडिम	–	दस करोड़	–	100000000	–	दोय किड्डी
उडिम	–	अरब	–	1000000000	–	उड्डी
दोय उडिम	–	दस अरब	–	10000000000	–	दोय उड्डी
ख़ूडिम	–	खरब	–	100000000000	–	खुड्डी
दोय ख़ूडिम	–	दस खरब	–	1000000000000	–	दोय खुड्डी
सुड्डी ख़ूडिम	–	सौ खरब	–	$10^2 x 10^{11} = 10^{13}$	–	सुड्डी ख़ूड्डी
हुड्डी ख़ूडिम	–	हजार खरब	–	$10^3 x 10^{11} = 10^{14}$	–	हुड्डी ख़ूड्डी
लुड्डी ख़ूडिम	–	लाख खरब	–	$10^5 x 10^{11} = 10^{16}$	–	लुड्डी ख़ूड्डी
किड्डी ख़ूडिम	–	करोड़ खरब	–	$10^7 x 10^{11} = 10^{18}$	–	किड्डी ख़ूड्डी
उड्डी ख़ूडिम	–	अरब खरब	–	$10^9 x 10^{11} = 10^{20}$	–	उड्डी ख़ूड्डी
ख़ूड्डी ख़ूडिम	–	खरब खरब	–	$10^{11} x 10^{11} = 10^{22}$	–	ख़ूड्डी ख़ूड्डी

बक्क नु टूड़ा (षब्दों में लिखें)

1. एक सौ पैंतीस – ओंद सुड्डी मून्दोःपंच्चे।
2. चार हजार पाँच सौ सैंतीस – नाख़ हुड्डी पंच्चे सुड्डी मून्दोःसाय।
3. बाइस हजार सात सौ सैंतीस – एन्दोएँड़ हुड्डी साय सुड्डी मून्दोःसाय।
4. पाँच लाख आठ हजार एकासी – पंच्चे लुड्डी आख़ हुड्डी आख़दोःओन्द।
5. सात करोड़ बारह लाख चौंसठ – साय किड्डी दोयएँड़ लुड्डी सोयदोःनाख़।

ओन्दता – पहला,
एँड़ता – दूसरा,
मून्दता – तीसरा,
नाख़ता – चौथा,
पानता – पाँचवा,
सोयता – छठवाँ,
सायता – सातवाँ,
आख़ता – आठवाँ,
नयता – नवाँ,
दोयता – दसवाँ,
दोयओन्दता – ग्यारहवाँ,
दोयएँड़ता – बारहवाँ,

47. कुँडुख़ पहाड़ा / [illegible]

1/I ओन्दे	ओन्द 1 / I	एँड़ 2 / [illegible]	मून्द 3 / [illegible]	नाख़ 4 / [illegible]	पंच्छो 5 / [illegible]	सोय 6 / [illegible]	साय 7 / [illegible]	आख 8 / [illegible]	नय 9 / [illegible]	दोय 10 / [illegible]
2/[illegible] एँड़े	एँड़ 2 / [illegible]	नाख़ 4 / [illegible]	सोय 6 / [illegible]	आख़ 8 / [illegible]	दोय़ 10 / [illegible]	दोयएँड़ 12 / [illegible]	दोयनाख़ 14 / [illegible]	दोयसोय 16 / [illegible]	दोयआख़ 18 / [illegible]	एँन्दोय 20 / [illegible]
3/[illegible] मुन्दे	मून्द 3 / [illegible]	सोय 6 / [illegible]	नय 9 / [illegible]	दोयएँड़ 12 / [illegible]	दोयपंच्छो 15 / [illegible]	दोयआख़ 18 / [illegible]	एन्दोओन्द 21 / [illegible]	एन्दोमून्द 24 / [illegible]	एन्दोसाय 27 / [illegible]	मुन्ददोय 30 / [illegible]
4/[illegible] नाख़े	नाख़ 4 / [illegible]	आख़ 8 / [illegible]	दोयनाख़ 12 / [illegible]	दोयसोय 16 / [illegible]	एन्दोय 20 / [illegible]	एन्दोनाख़ 24 / [illegible]	एन्दोआख़ 28 / [illegible]	मुन्दोएँड़ 32 / [illegible]	मुन्दोसाय 36 / [illegible]	नाख़दोय 40 / [illegible]
5/[illegible] पंच्चे	पंच्छो 5 / [illegible]	दोय 10 / [illegible]	दोयपंच्छो 15 / [illegible]	एन्दोय 20 / [illegible]	एन्दोपंच्छो 25 / [illegible]	मुन्दोय 30 / [illegible]	मुन्दोपंच्छो 35 / [illegible]	नाख़दोय 40 / [illegible]	नाख़पंच्छो 45 / [illegible]	पन्दोय 50 / [illegible]
6/[illegible] सोये	सोय 6 / [illegible]	दोयएँड़ 12 / [illegible]	दोयआख़ 18 / [illegible]	एन्दोनाख़ 24 / [illegible]	मुन्दोय 30 / [illegible]	मुन्दोसोय 36 / [illegible]	नाख़दोएँड़ 42 / [illegible]	नाख़दोआख़ 48 / [illegible]	पन्दोनाख़ 54 / [illegible]	सोयदोय 60 / [illegible]
7/[illegible] साये	साय 7 / [illegible]	दोयनाख़ 14 / [illegible]	एन्दोओन्द 21 / [illegible]	एन्दोआख़ 28 / [illegible]	मुन्दोपंच्छो 35 / [illegible]	नाख़दोएँड़ 42 / [illegible]	नाख़दोनाय 49 / [illegible]	पन्दोसोय 56 / [illegible]	सोयदोमून्द 63 / [illegible]	सायदोय 70 / [illegible]
8/[illegible] आख़े	आख़ 8 / [illegible]	दोयसोय 16 / [illegible]	एन्दोनाख़ 24 / [illegible]	मुन्दोएँड़ 32 / [illegible]	आख़दोय 40 / [illegible]	आख़दोआख़ 48 / [illegible]	पन्दोसोय 56 / [illegible]	सायदोनाख़ 64 / [illegible]	सायदोएँड़ 72 / [illegible]	आख़दोय 80 / [illegible]
9/[illegible] नये	नय 9 / [illegible]	दोयआख़ 18 / [illegible]	एन्दोसाय 27 / [illegible]	मुन्दोसोय 36 / [illegible]	आख़दोपंच्छो 45 / [illegible]	पन्दोनाख़ 54 / [illegible]	सोयदोमून्द 63 / [illegible]	सायदोएँड़ 72 / [illegible]	आख़दोओन्द 81 / [illegible]	नयदोय 90 / [illegible]
10/[illegible] दोये	दोय 10/[illegible]	एन्दोय 20/[illegible]	मुन्दोय 30 / [illegible]	नाख़दोय 40 / [illegible]	पन्दोय 50 / [illegible]	सोयदोय 60 / [illegible]	सायदोय 70 / [illegible]	आख़दोय 80 / [illegible]	नयदोय 90 / [illegible]	सुड़्डी 100/[illegible]

एन्ने बचआ (ऐसे पढ़ें) –
ओन्द ओन्दे – ओन्द (एक एके – एक)
मून्द ओन्दे – मून्द (तीन एके – तीन)
मून्द एँड़े – सोय (तीन दुने – छौ)
मून्द मुन्दे – नय (तीन तिया – नौ)
मून्द नाख़े – दोयएंड़ (तीन चौके – बारह)
मून्द पंच्चे – दोयपंच्छो (तीन पंचे – पन्दरह)
मून्द सोये – दोयआख़ (तीन छके – अठारह)
मून्द साये – एन्दोओन्द (तीन साते – एक्कीस)
मून्द आख़े – एन्दोनाख़ (तीन आठे – चौबिस)
मून्द नये – एन्दोसाय (तीन नवाँ – सताईस)
मून्द दोये – मुन्दोय (तीन दहाईयें – तीस)

[illegible] -
on w on we - on w (1 x 1 = 1) - I
[illegible] (3 x 1 = 3) - [illegible]
[illegible] (3 x 2 = 6) - [illegible]
[illegible] (3 x 3 = 9) - [illegible]
[illegible] (3 x 4 = 12) - [illegible]
[illegible] (3 x 5 = 15) - [illegible]
[illegible] (3 x 6 = 18) - [illegible]
[illegible] (3 x 7 = 21) - [illegible]
[illegible] (3 x 8 = 24) - [illegible]
[illegible] (3 x 9 = 27) - [illegible]
[illegible] (3 x 10 = 30) - [illegible]

48. [illegible] / धुमकुड़िया कुँडुख़ गिनती

[illegible]	[illegible]	नीःदी बिण्डो	निदि	=	0
[illegible]	[illegible]	लकठा खुटा	ओन्द	=	1
[illegible]	[illegible]	डुण्डलू कुक्क	एँड़	=	2
[illegible]	[illegible]	कोकरो चुन्दी	मून्द	=	3
[illegible]	[illegible]	बइकला ठोर	नाख़	=	4
[illegible]	[illegible]	मिंजुर पेंच्छो	पंच्छो	=	5
[illegible]	[illegible]	सिम्बी लड़ङ	सोय	=	6
[illegible]	[illegible]	हाँथी मुँई	साय	=	7
[illegible]	[illegible]	अल्ला ख़ोला	आख़	=	8
[illegible]	[illegible]	नेर्र कुक्क	नय	=	9
[illegible]	[illegible]	मुरली मुद्दी	दोय/ओंदोय	=	10
[illegible]	[illegible]	ओंदोय ओन्द	ओंदोयओन्द	=	11
[illegible]	[illegible]	ओंदोय एँड़	ओंदोयएँड़	=	12
[illegible]	[illegible]	ओंदोय मुन्द	ओंदोयमुन्द	=	13
[illegible]	[illegible]	ओंदोय नाख़	ओंदोयनाख़	=	14
[illegible]	[illegible]	ओंदोय पंज्जी	ओंदोयपंज्जी	=	15
[illegible]	[illegible]	ओंदोय सोय	ओंदोयसोय	=	16
[illegible]	[illegible]	ओंदोय साय	ओंदोयसाय	=	17
[illegible]	[illegible]	ओंदोय आख़	ओंदोयआख़	=	18
[illegible]	[illegible]	ओंदोय नय	ओंदोयनय	=	19
[illegible]	[illegible]	एँड़ दोये	एन्दोय	=	20
[illegible]	[illegible]	मुन्द दोये	मुन्दोय	=	30
[illegible]	[illegible]	नाख़ दोये	नाख़दोय	=	40
[illegible]	[illegible]	पञ्जी दोये	पन्दोय	=	50
[illegible]	[illegible]	सोय दोये	सोयदोय	=	60
[illegible]	[illegible]	साय दोये	सायदोय	=	70
[illegible]	[illegible]	आख़ दोये	आख़दोय	=	80
[illegible]	[illegible]	नय दोये	नयदोय	=	90
[illegible]	[illegible]	सुड्डोय / सुड्डी	सुड्डी	=	100
10^3	[illegible]	हुड्डोय / हुड्डी	हुड्डी	=	10^3
10^5	[illegible]	लुड्डोय / लुड्डी	लुड्डी	=	10^5
10^7	[illegible]	केड्डोय / केड्डी	केड्डी	=	10^7
10^9	[illegible]	उड्डोय / उड्डी	उड्डी	=	10^9
10^{11}	[illegible]	खुड्डोय / खुड्डी	खुड्डी	=	10^{11}
10^{22}	[illegible]	खुड्डोय खुड्डी	खुड्डोयखुड्डी	=	10^{22}

49. / धुमकुड़िया पड़हरा डण्डी

1. इंग्गयो इ बअ़ई, एम्बासिन ए दे । 2।
उरूबासिन उ बअर तिंग्गी, दे । 2।

2. ओरमत गे ओ बअ़ई, अद्दीयर गे अ दे। 2।
आ:लो गे आ बअर आ:नी, दे। 2।

3. पँड़की प बअ़ई, फिकिड़ो फ दे । 2।
बइकला ब, भदड़ी भ, मैना म बअ़ई, दे । 2।

4. ताँ:तर त बअ़ई, थड़िया थ दे । 2।
दउली द, धनु ध, नगरा न तिंग्गी दे । 2।

5. टटख़ा ट बअ़ई, ठठरा ठ दे । 2।
डउड़ा ड, ढरा ढ, राणु ण तिंग्गी, दे । 2।

6. चलकी च बअ़ई, छटका छ दे । 2।
जल्ली ज, झिलङी झ, चिञा ञ तिंग्गी, दे ।2।

7. ककड़ो क बअ़ई, खपरा ख दे । 2।
गड़ी ग, घड़ी घ, डोङा ङ तिंग्गी, दे । 2।

8. मचिया य बअ़ई, रसड़ी र दे । 2।
लट्टु ल, जवा व, तु:ज़ ज़ तिंग्गी, दे । 2।

9. सँड़सी स बअ़ई, हँसली ह दे । 2।
ख़न्न ख़, गेड़े ड़, गढ़े ढ़ तिंग्गी, दे । 2।

10. हिजा ननो बा:री अंगसी अ बओत । 2।
कोहाँ मधेन आल आ तेंग्गोत दे । 2।

50. संस्कृत, हिन्दी एवं कुँडुख़ भाषा की ध्वनियाँ

(एक तुलनात्मक अध्ययन)

– डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव

यद्यपि संस्कृत, हिन्दी एवं कुँडुख़ भाषा की ध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन एक जटिल विषय है तथापि इन भाषाओं में उच्चरित ध्वनियों एवं इन ध्वनियों को लिखने के तरीकों को वर्तमान तकनीक के आधार पर इसके गुण–दोषों को इस शीर्षक के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास है।

A. संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि :–

1. संस्कृत में स्वर के तीन भेद हैं –
   (क) ह्रस्व स्वर – अ, इ, उ, ऋ, लृ। (सामान्य उच्चारण समय)
   (ख) दीर्घ स्वर – आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ औ। (ह्रस्व से दोगुना उच्चारण समय)। ए, ऐ, ओ, औ को संयुक्त स्वर भी कहा जाता है।
   (ग) प्लूत स्वर – अ३, इ३, उ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३, ऋ३, लृ३। (ह्रस्व से तीन गुना उच्चारण समय)।
2. वैदिक उच्चारण में इन सभी स्वरों का उदात, अनुदात एवं स्वरित तीन रूप तथा इन तीनों का अनुनासिक रूप भी होता है। इस प्रकार ह्रस्व स्वर – 5 x 6 = 30, दीर्घ स्वर - 8 x 6 = 48 तथा प्लूत स्वर - 9x6 = 54 । कुल स्वर ध्वनियाँ 30 + 48 + 54 = 132 (एक सौ बत्तीस)। वर्तमान पठन–पाठन कार्य में वैदिक स्वर का स्वरित रूप का उपयोग होता है। उदात और अनुदात रूप वैदिक मंत्रोचारण तक सीमित है। संस्कृत उच्चरण में निम्नलिखित व्यंजन वर्ण है – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ् ज, झ, ञ, ट्, ठ्, ड्, ढ, ण, त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श् स् ष् ह् क्ष् त्र् ज्ञ् श्र्। इसके अलावे कई संयुक्ताक्षर भी है, जो साहित्यिक रूप से महत्वपूर्ण है।
3. संस्कृत भाषा में जितनी ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, उन सभी ध्वनियों को लिखने के लिए अलग–अलग संकेत चिह्न है, जो भाषा विज्ञान के एक ध्वनि एक संकेत के सिद्धांत के अनुरूप है।
4. संस्कृत में जैसा बोला जाय वैसा लिखा जा सकता है तथा जैसा लिखा जाय वैसे पढ़ा जा सकता है, जो भाषा विज्ञान के सिद्धांत के अनुकूल है।
5. मुद्रण एवं टंकन की दृष्टि से 'इ' की मात्रा (ि) चिह्न व्यंजन के पहले आता है जबकि उच्चारण में 'इ' ध्वनि, व्यंजन के बाद उच्चरित होती है। यहाँ उच्चारण एवं लेखन की परम्परा में मस्तिष्क पर जोर पड़ता है।
6. आधुनिक तकनीक Voice Recognition System जो सिर्फ सुनकर लिख सकता है के अनुसार संस्कृत को उत्कृष्ट दर्जा प्राप्त है। जिसमें जैसा बोला जाय वैसा लिखा जा सकता है तथा जैसा लिखा जाय वैसा पढ़ा जा सकता है। पर, व्यवहार में यह सफल नहीं रहा, क्योंकि एक ही शब्द, कई तरह से उच्चरित होते हैं।
7. कम्प्यूटर टाईपिंग में संस्कृत टाइप करने के लिए अधिक समय लगता है क्योंकि अधिक संकेत चिह्न की जरूरत पड़ती है। कम्प्यूटर टाइपिंग में देवनागरी लिपि के लिए 191 special character विकसित है।

B. हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि :–

सामाजिक मान्यता है कि हिन्दी भाषा, संस्कृत भाषा से निकली है तथा इसके विकास में लोक भाषाओं का समावेष है। इसके विकास का इतिहास लगभग 1000 वर्षों का है। कमोवेष हिन्दी भाषा में उच्चरित ध्वनि संस्कृत में उच्चरित ध्वनि समान ही है किन्तु संस्कृत में उच्चरित ध्वनियों में से कुछ हिन्दी में प्रयोग नहीं होते हैं तथा क्षेत्रीय प्रभाव के कुछ वर्णों को अंगीकार किया गया है।

1. हिन्दी में स्वर के मुख्यतः दो भेद हैं :–
   (क) ह्रस्व स्वर – अ, इ, उ, ऋ।
   (ख) दीर्घ स्वर – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, ओ, ॠ।
2. संस्कृत देवनागरी वर्णमाला का ड तथा ढ वर्ण के नीचे तल विन्दु देकर ड़ एवं ढ़ वर्ण, हिन्दी देवनागरी वर्णमाला पूरा हुआ है। कहा जाता है कि ड़ एवं ढ़ ध्वनि द्रविड़ भाषा से आया है।

3. इसी तरह वर्तमान में कि उर्दू, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों को लिखने के लिए देवनागरी लिपि के अक्षरों के नीचे डॉट (तलविन्दु) चिह्न देकर लिखा जाता है। जैसे – ख़ब़र, ग़ब्बर, व़ज़ीर, व़ेल।

4. यदि द्रविड़ भाषा से आए वर्णों के लिए देवनागरी के अक्षर के नीचे तल विन्दु देकर लिखने की परम्परा मान्य है तब उतरी द्रविड़ (कुँड़ुख़ एवं मालतो) एवं उतरी–मध्य द्रविड़ (गोंडी एवं तुलु) आदि भाषाओं के लिए भी देवनागरी के सामान्तर अक्षरों के नीचे तलविन्दु चिह्न देकर लिखा जाना चाहिए। जैसे – एड़पा, माड़ना, बाढ़ी, गढ़े, ख़ज्ज, ख़ेंस, इज़्रिना, कोरज़्ो, चिअ़ना, बिअ़ना, नेअ़ना, हेअ़ना, दुअ़'उ, चुअ़'उ, होअ़ना, चोअ़ना, बअ़ना, रअ़ना आदि। कुँड़ुख ध्वनि ख़/ड़/ढ़/अ़/ज़ को तलविन्दु से दर्साया गया है।

5. संस्कृत स्वर का 'लृ' वर्ण हिन्दी में व्यवहृत नहीं होता है।

C. कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोङ सिकि (लिपि) :–

कुँड़ुख भाषा उतरी द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा है। यह संस्कृत के समान एक प्राचीन भाषा है। इस भाषा को बोलने वाले उराँव जाति के लोग भारत एवं भारत देश से बाहर बंगला देश, नेपाल, भूटान, मॉरिसस आदि में लगभग 45 लाख है। वर्ष 2016 में झारखण्ड सरकार ने इस भाषा की लिपि के रूप में "तोलोङ सिकि" लिपि को मान्यता दी है और इसके माध्यम से विद्यालयों में पढ़ाई–लिखाई हो रही है। कुँड़ुख भाषा की लिपि तोलोङ सिकि को देवनागरी लिपि के माध्यम से इस प्रकार समझा जा सकता है –

1. कुँड़ुख भाषा की मूल स्वर ध्वनि –
   (क) ह्रस्व स्वर (सन्नी सरह) – (इ, ए, उ, ओ, अ, आ)।
   (ख) दीर्घ स्वर (दिगहा सरह) – (इः, एः, उः ओः अः आः)।
   (ग) अनुनासिक ह्रस्व स्वर (मुईता सन्नी सरह) – (इँ, एँ, उँ, ओं, अँ, आँ)।
   (घ) अनुनासिक दीर्घ स्वर (मुईता दिगहा सरह) – (इँः, एँः, उँः, ओंः, अँः, आँः)।
   इस प्रकार कुँड़ुख भाषा में कुल 6X4 = 24 (चौबीस) मूल स्वर ध्वनियाँ हैं।
2. संस्कृत भाषा के, अर्द्धस्वर अ ध्वनि के समान ही कुँड़ुख भाषा में एक ध्वनि उच्चरित होती हैं जिसे अंगरेजी में glotal check कहा जाता है। तोलोङ सिकि में इसे हेचका (।) चिहन से लिखा जाता है। जैसे :– (चिअ़ना) – देना, (नेअ़ना) – मांगना, (बअ़ना) – बोलना आदि।
3. देवनागरी लिपि के वर्णों में से क्ष, त्र, ज्ञ, ष, श, श्र, ऋ, लृ वर्ण, तोलोङ सिकि वर्णमाला में नहीं है अर्थात कुँड़ुख़ भाषा में इन ध्वनियों का उच्चारण नहीं होता है, किन्तु लिप्यन्तरण में विशेष चिन्ह देकर लिखे जाते हैं।
4. तोलोङ सिकि वर्णमाला में देवनागरी लिपि का ऐ एवं औ वर्ण के लिये अलग अक्षर नहीं है।
5. तोलोङ सिकि में स्वर एवं व्यंजन, कुल 41 मूल ध्वनि चिह्न है। सहायक चिह्न लगभग 12 है।
6. इससे, जैसा बोला जाय वैसा लिखा जा सकता तथा जैसा लिखा जाय वैसा पढ़ा जा सकता है, जो भाषा विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप है। इस लिपि का आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक है।
7. देवनागरी के 'इ' की मात्रा 'ि' को लिखने एवं टाईप करने की समस्या से तोलोङ सिकि मुक्त है।
8. संस्कृत अथवा हिन्दी में आ, ए एवं ओ दीर्घ स्वर है किन्तु कुँड़ुख भाषा में इन तीनों स्वरों का दिगहा रूप होता है जो हिन्दी या संस्कृत के दीर्घ स्वर से अधिक लम्बा, लगभग ह्रस्व स्वर के उच्चारण से ढाई गुणा है। जैसे :– बोलो – बोःलो, कालो – काःलो, एड़पा – एःड़ा, चोचा – चोःचा आदि।
9. आधुनिक तकनीक, कम्प्यूटर में तोलोङ सिकि टाइप करने लिए सिर्फ 94 Special Character हैं, जबकि देवनागरी लिपि में 191, बंगला में 208 तथा असमिया में 208, Special Character का व्यवहार होता है।
10. वर्तमान में कुँड़ुख भाषा दूसरी बड़ी भाषाओं से दबाव में है, जिसके चलते बहुत से गाँवों का नाम बदल गया है। जैसे :– भाँःड़ों – भरनो, सूःसा – सुरसा, ख़ल्ख़ड़ी – करकरी, खेःड़ा – खेर्रा आदि।

अतएव वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी भाषा एवं संस्कृति को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने हेतु तकनीकी साधनों के अनुरूप कुँड़ुख़ साहित्य की व्याख्या एवं विस्तार करनी होगी।

*****

51. कुड़ुख़ लिपि दर्शन

भूमिका :– कुड़ुख़ लिपि को तोलोंग सिकि के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यह लिपि कुड़ुख़ बोलने वालों की तोलोंग (परम्परागत वस्त्र) पहनने की कला तथा उनके घुमने–फिरने व काम करने के तरीकों के अनुसार बनायी गयी है। कहने का तात्पर्य यह कि तोलोंग–लिपि कुड़ुख़ संस्कृति की विषेषताओं को उजागर करते हुए गढ़ी गयी है। चूँकि इस विषय पर पर्याप्त लिखा जा चुका है, इस लघु लेख में कुड़ुख़ लिपि के दर्षन पर विचार किया जा रहा है।

दर्षन यानी दृष्टि, एक ऐसी दृष्टि जो सामान्य आँख से देखते हुए आन्तरिक आँख से परख पाने के लिए पाठक को प्रेरित करे। दूसरे शब्दों में, लिपि का जो उद्देष्य है तथा उसके जो लक्षण होते हैं, उन तक लोगों के देखने की क्षमता को ले जाना। आषा है कि इस लघु लेख को पढ़ने वाले उस तक पहुँच सकें व उन मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में ढाल सकें।

लिपि का महत्व :– लिपियों का इतिहास पढ़ने से पता चलता है कि जिन–जिन समुदायों ने अपनी लिपि बनायी, वे ईसा पूर्व के होने के बाबजूद आज तक याद किये जाते हैं, जैसे मेसोपोटामिया, मिस्र, सिन्धु–घाटी, ग्रीस, रोम, आदि के लोग। कहने का तात्पर्य यह कि जो अपनी संस्कृति को लिखित रूप में प्रकट कर सकते हैं, उनकी अभिव्यक्ति उनके गुणों की पहचान बन जाती है, साथ ही साथ अन्य लोगों के लिए सीखने का माध्यम भी।

उसी इतिहास से पता चलता है कि प्रत्येक संस्कृति में विषिष्ट विषेषताएँ प्रकट होती हैं, जैसे मेसोपोटामिया में लिखने की कला, मिस्र में वास्तु कला, सिन्धु–घाटी में शहर सजाने की कला, ग्रीस में दर्षन–षास्त्र, रोम में प्रषासन व न्याय प्रणाली, आदि मुख्य प्रतिभाएँ रही हैं, जो आज तक दुनिया के विद्वानों के लिए अध्ययन के विषय बने हुए हैं। इस कारण किसी भी समाज को कम नहीं समझना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक की देन अपने में अद्वितीय होती है। इस तरह प्रत्येक संस्कृति मानवता की धरोहर होती है तथा संस्कृतियाँ स्वभावतः एक दूसरे की पूरक बनती जाती हैं।

कुड़ुख़ लिपि क्यों ? :– लिपि का आविष्कार लिखने की कला व विज्ञान से संबंधित है, यानी अपनी बोल–चाल की भाषा को लिखित रूप देते हुए अपने अनुभवों व विचारों को कार्यरूप देने हेतु उन्हें प्रकट करना, जिससे समुदाय के लोग एक साथ अनुभव कर सकें, एक साथ विचार कर सकें और मिलकर अर्थपूर्ण तरीके से कर्म कर सकें। मनुष्य की यह विषेषता है कि वह मिलकर कार्य कर सकता है। यही कारण है कि वह अन्य जानवरों से श्रेष्ठ हो सका है। इसी प्रक्रिया से मानवीय समुदाय निर्मित होकर विकसित होता जाता है। कुड़ुख़ समुदाय उसी दिषा में बढ़ना चाह रहा है।

बारीकी से देखें तो यह भी पता चलता है कि लिखने वाला व्यक्ति अपने दिल की बात को मन में रखते हुए लिख–पढ़ सकता है, अर्थात् सोच–बात–काम को एक करने की क्षमता रखता है, जिसके कारण उसे परिपक्व होने में मदद मिलती है। दूसरे शब्दों में जब कोई व्यक्ति लिखता है तो लोग उसके सोच को समझ पाते और उसकी मनोभावनाओं में भी प्रवेष कर पाते हैं, जिससे उसके साथ आदान–प्रदान सहज व सरल हो जाता है। व्यक्तिगत परिपक्वता व परस्पर साहचर्य हेतु लिपि एक सषक्त माध्यम बन गयी है। यही कारण है कि षिक्षा आज विकास का आधार बन गयी है। फलतः प्रत्येक कुड़ुख़ के व्यक्तिगत विकास व सामुदायिक साहचर्य में बढ़ने के लिए लिखने की क्षमता का विकास करना अपेक्षित रहा है।

कुड़ुख़ लिपि या तोलोंग सिकि की यह विषेशता है कि उसके माध्यम से कई अन्य भाषाएँ भी लिखी जा सकेंगी। यह इसलिए क्योंकि लिपि का स्वभाव मानव–स्वभाव से मिलता जुलता है। कुड़ुख़ लिपि अपने कुड़ुख़ समुदाय

के स्वभाव की पहचान दर्षाते हुए अन्य भाषाओं के साथ आदान–प्रदान कर सकती है। जिस तरह एक समय रोमन लिपि और देवनागरी लिपि में कुड़ुख़ भाषा को लिखा जाता रहा है, उसी तरह अब तोलोंग–सिकि के माध्यम से कई अन्य भाषाओं को भी लिखा जा सकेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि मानव–स्वभाव भी अपनी अस्मिता को रखते हुए बहुमुखी होता है। ध्यान रहे, एकता या सामंजस्य में बढ़ने की बात तब होती है, जब समाज में विभिन्नता पायी जाती है। विभिन्नता सृष्टिकर्ता की अनूपम देन है, जिनमें कुड़ुख़ समुदाय एक है। फलतः उसका विकास ईष्वरीय योजना का अंग होगा।

कभी सवाल उठता है कि कुड़ुख़ लिपि की आवष्यकता ही क्यों पड़ी, यदि अन्य लिपि भी उसे प्रकट कर पाते हैं। सच है यह लिपि ध्वनि प्रधान संकेतों से बना है, जो प्रत्येक भाषा में कुछ विषेष या भिन्न होते हैं जिनके लिए अलग संकेतों की जरूरत पड़ती है। इन विषिष्ट संकेतों के कारण कुड़ुख़ भाषा अपनी पहचान लेकर आती है और जो इन विषेषताओं से जुड़ते जाते हैं, उनके साथ स्वतः संबंध मधुर होता जाता है। उदाहरणार्थ, कुड़ुख़ द्रविड़–भाषा परिवार का अंग होने के कारण द्रविड़–भाषाओं के साथ मेल बढ़ाता जा रहा है। फलस्वरूप संस्कृतियों की पहचान और उनके बीच आदान–प्रदान लिपि व भाषा के माध्यम से सरल अपितु गहरे तरीके से संभव होगा।

कुड़ुख़ लिपि की चुनौतियाँ :– लिपि का उद्देष्य है व्यक्तियों के बीच आदान–प्रदान को आसान बनाना तथा अपनी संस्कृति को नयी पीढ़ी तक पहुँचाना। इस तरह लिखित कृति एक ऐसा खजाना है जो समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर बन जाती है तथा प्रगति के मार्ग खोल देती है। इतिहास इस तरह नयी पीढ़ी के लिए दिषा निर्देषक बन जाता है। अब प्रष्न है कि क्या कुड़ुख़ समाज इस दिषा में आगे बढ़ सकेगा, क्योंकि उनकी तोलोंग सिकि उनके लिए एक प्रस्ताव के रूप में रखी गयी है। क्या उसे आत्मसात करने के लिए समुदाय के पास साधन व अवसर पर्याप्त हैं? शायद इसके लिए और उपाय खोजने होंगे तथा समय की प्रतीक्षा करनी होगी।

विषेष चुनौती इस बात में होगी कि यदि कुड़ख़र इस प्रस्ताव को स्वभावतः व सरलता पूर्वक न अपनाएँ तो क्या होगा। मानवीय स्वभाव सरलता व सुगमता की ओर जाना चाहता है, जैसे यूरपवासियों ने किया। अपनी विभिन्नता को रखते हुए रोमन लिपि में ही अपनी विषेषताओं को दिखलाकर एकता का परिचय दिया। इस तरह आज वे वैष्वीकरण, यानी विभिन्नता में एकता का पाठ, सबको पढ़ा पा रहे हैं। सच है कि मानवीय–स्वभाव दिनों–दिन एकता की खोज कर रहा है, जिसके कारण विष्वभर में भ्रमण करना तथा आदान–प्रदान करना आसान होता जा रहा है। क्या इस आसान धारा को कुड़ुख़ लिपि संभाल सकेगी?

दोनों रास्ते खुले हैं – एक कि कुड़ुख़ समुदाय अपनी एकता का परिचय देते हुए जपान और चीन की तरह अपना अस्तित्व दुनिया में रखे, या – दो कि यूरोप की तरह अपनी विषेषता को रखते हुए वैष्वीकरण का रास्ता अपनाए। किसी भी रास्ते को वह चुने, वह अपनी अस्मिता को रखे बिना अपनी सभ्यता को नहीं रख पायेगी। उसे चाहिए कि वह अपने आन्तरिक संगठनों को मजबूत करते हुए अपनी ईष्वरदत्त गुणों को सानन्द जीये और उसका प्रचार–प्रसार सगर्व करता रहे।

– लीनूस कुजूर
Professor, Pontifical Gregorian
University, Rome.
Dated – April 12, 2019

संकलन एवं प्रस्तुतिकरण –
फा० अगुस्तिन केरकेट्टा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, झारखण्ड, राँची,
मो० : 6204331863
दिनांक : 20,02.2022,

52. संस्कृत–हिन्दी शब्दों को तोलोंग सिकि में लिप्यन्तरण हेतु मानकीकरण

– डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा''

ध्यातब्य हो कि आदिवासी भाषाओं में से कुँड़ुख़ भाषा की अपनी विशिष्ट शैली एवं विशेषताएँ हैं। इस विशिष्ट पहचान पर आधारित इस भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि विकसित हुई है। यह तथ्य है कि कुँड़ुख़ भाषा में कई ध्वनियाँ है जिसे दिखलाने के लिए रोमन एवं देवनागरी लिपि में लिपि चिन्ह नहीं हैं। रोमन लिपि के माध्यम से अन्य भाषाओं को लिखने के लिए जेनेवा में 2nd Oriental Congress, JENEVA, 1900 AD में किये गये मानकीकरण के आधार पर पूर्वी क्षेत्र की भाषाओं में कई साहित्य रचे गये। परन्तु, देवनागरी लिपि में आदिवासी भाषाओं को लिखने के लिए किसी मानकीकरण को आधार बनाये जाने का इतिहास नहीं मिलता है और जो जैसा समझ पाये, वे वैसा ही लिख रहे हैं।

कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि के प्रतिष्ठापन में कई व्यवहारिक कठिनाईयाँ आयीं। इस क्रम में उपयोक्ताओं को समझने तथा समझाने में आयी उलझनों को सुलझाने में नये तरीके का भी ईजाद हुआ और हमलोग यहाँ तक का सफर तय कर पाए। कुँड़ुख़ भाषा में कई विशिष्ट ध्वनियाँ हैं जिसके लिए संस्कृत देवनागरी में लिपि चिन्ह नहीं हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं –

1. कुँड़ुख़ में, हृस्व ए एवं हृस्व ओ होता है जिसके लिए संस्कृत देवनागरी में लिपि चिन्ह नहीं हैं। संस्कृत में, ए तथा ओ, दीर्घ तथा प्लूत रूप के लिए चिन्ह निर्धारित हैं, परन्तु इन दोनों का हस्व रूप नहीं होता है।

2. संस्कृत में, ऐ एवं औ वर्ण हैं, जिसे क्रमवार अइ तथा अउ की तरह उच्चरित किया जाता है, तथा हिन्दी में, ऐ एवं औ को क्रमवार अय तथा अव की तरह उच्चरित किया जाता है। जबकि कुँड़ुख़ में अइ, अउ, अय, अव – चारों ध्वनियों का व्यवहार होता है।

3. संस्कृत–हिन्दी देवनागरी में अ, इ, उ मूल स्वर बतलाया गया है तथा आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर हैं और ए, ओ, ऐ, औ संयुक्त/दीर्घ स्वर। परन्तु कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि में इ, ए, उ, ओ, अ, आ को स्वतंत्र, मूल एवं पूर्ण स्वर कहा गया है। वैसे वैदिक संस्कृत के आधार पर अष्टाध्यायी में कुल 132 स्वर ध्वनियाँ हैं और सभी ध्वनियों को लिखने के तरीका बतलाया गया है। व्यवहारिक दृष्टि से कुँड़ुख़ में कुल 24 मूल स्वर ध्वनियाँ हैं जिसे तोलोंग सिकि में इस तरह दिखलाया जा सकता है – Ᵽ V ४ ७ 1 ⲡ / Ᵽः Vः ४ः ७ः 1ः ⲡः / Ᵽ̃ Ṽ ४̃ ७̃ 1̃ ⲡ̃/ Ᵽ̃ः Ṽः ४̃ः ७̃ः 1̃ः ⲡ̃ः इत्यादि।

4. संस्कृत–हिन्दी देवनागरी में आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर हैं तथा ए, ओ, ऐ, औ संयुक्त/दीर्घ स्वर। दीर्घ स्वर का अर्थ दोगुना उच्चारण समय वाला तथा प्लूत स्वर का अर्थ तीन गुना उच्चारण समय वाला कहा गया है। परन्तु कुँड़ुख़ में इ, ए, उ, ओ, अ, आ (सभी 6 मूल स्वर ध्वनि) का, दिगहा स्वर ध्वनि रूप, दीर्घ स्वर से अधिक तथा प्लूत स्वर से कम अर्थात मूल स्वर से ढ़ाई गुना उच्चारण समय वाला है। जैसे, कुँड़ुख़ भाषी गाँव का हिन्दी रूपांतरित नाम बन गया जो इस प्रकार :– भाँःड़ो – भरनो, सूःसा – सुरसा, खेःड़ा – खेर्रा, ख़ल्ख़ड़ी – करकरी, मन्दड़े – माण्डर आदि। वैसे, हिन्दी के दीर्घ स्वर को दिखलाने हेतु तोलोंग सिकि में स्वर के उपर दोगुना सूचक चिन्ह (macron) दिया जाता है।

5. कुँड़ुख़ में ड़ ढ़ ख़ ञ़ अ़ व्यंजन ध्वनियाँ हैं जिसे देवनागरी में लिखने के लिए ड ढ ख ञ अ के नीचे तलविन्दु देकर चिन्हित किया गया है। कुँड़ुख़ में एक विशिष्ट ध्वनि है जिसे संस्कृत में विकारी अ या व्यंजन अ तथा अंगरेजी में glottal check ध्वनि कहा जाता है। कुँड़ुख़ भाषा की इस ध्वनि को हिन्दी–उर्दू में दिखलाने के लिए व्यंजन की श्रेणी में रखते हुए अ वर्ण के नीचे तलविन्दु देकर चिन्हित किया गया है। जैसे – मअ़लूम।

6. संस्कृत–हिन्दी भाषा का ऋ लृ ष् ष् क्ष् त्र् ज्ञ् श्र् वर्ण का प्रयोग कुँड़ुख़ भाषा में नहीं है, इसलिए इन वर्णों के लिए तोलोंग सिकि वर्णमाला में अलग से ध्वनि चिन्ह नहीं हैं। परन्तु इन ध्वनियों को समझने तथा इसके लिप्यन्तरण हेतु इन ध्वनियों के सदृश वाले ध्वनि–अक्षरों के नीचे या उपर विशिष्ट पेकार के चिन्ह (diacritical mark) देकर समझा गया है।

संस्कृत–हिन्दी के षब्दों का तोलोंग सिकि में लिप्यन्तरण इस प्रकार हैं :–

(देवनागरी लिपि)	-	(तोलोङ सिकि)
अ	-	[illegible]
आ ा	-	[illegible]
इ ि	-	[illegible]
ई ी	-	[illegible]
उ ु	-	[illegible]
ऊ ू	-	[illegible]
ए े	-	[illegible]
ऐ ै	-	[illegible]
ओ ो	-	[illegible]
औ ौ	-	[illegible]
अं	-	[illegible]
अः	-	[illegible]
अँ	-	[illegible]
आँ	-	[illegible]
इँ	-	[illegible]
ईं	-	[illegible]
उँ	-	[illegible]
ऊँ	-	[illegible]
एँ	-	[illegible]
ऐं ैं	-	[illegible]
ओं ों	-	[illegible]
औं ौं	-	[illegible]
ऽ (संस्कृत)	-	[illegible] (अ़)
अइ (संस्कृत)	-	[illegible]
अउ (संस्कृत)	-	[illegible]
अय (हिन्दी)	-	[illegible]
अव (हिन्दी)	-	[illegible]

क्	-	[illegible]
ख्	-	[illegible]
ग्	-	[illegible]
घ्	-	[illegible]
ङ्	-	[illegible]
च्	-	[illegible]
छ्	-	[illegible]
ज्	-	[illegible]
झ्	-	[illegible]
ञ्	-	[illegible]
ट्	-	[illegible]
ठ्	-	[illegible]
ड्	-	[illegible]
ढ्	-	[illegible]
ण्	-	[illegible]
त्	-	[illegible]
थ्	-	[illegible]
द्	-	[illegible]
ध्	-	[illegible]
न्	-	[illegible]
प्	-	[illegible]
फ्	-	[illegible]
ब्	-	[illegible]
भ्	-	[illegible]
म्	-	[illegible]
य्	-	[illegible]
र्	-	[illegible]
ल्	-	[illegible]

व्		-	[illegible]
श्		-	[illegible]
ष्		-	[illegible]
स्		-	[illegible]
ह्		-	[illegible]
क्ष् (क् + ष्)		-	[illegible]
त्र् (त् + र्)		-	[illegible]
ज्ञ् (ज् + ञ्)		-	[illegible]
ड़्		-	[illegible]
ढ़्		-	[illegible]
श्र		-	[illegible]
श्री		-	[illegible]
श्रे		-	[illegible]
श्रो		-	[illegible]
श्रु		-	[illegible]
श्रा		-	[illegible]
ऋ	(संस्कृत)	-	[illegible]
लृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
पृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
बृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
मृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
तृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
दृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
नृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
धृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
गृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
घृ	(संस्कृत)	-	[illegible]
कृ	(संस्कृत)	-	[illegible]

लृ (संस्कृत)	-	[illegible]
सृ (संस्कृत)	-	[illegible]
हृ (संस्कृत)	-	[illegible]
वृ (संस्कृत)	-	[illegible]
क़ (उर्दू /अरबी)	-	[illegible]
ग़ (उर्दू /अरबी)	-	[illegible]
ज़ (उर्दू /अरबी)	-	[illegible]
फ़ (उर्दू /अरबी)	-	[illegible]
ब़ (उर्दू /अरबी)	-	[illegible]
व़ (उर्दू /अंगरेजी)	-	[illegible]
ऑ (अंगरेजी)	-	ॉ
ख़् (कुँड़ुख़)	-	[illegible]
अ़ (कुँड़ुख़)	-	। (अ़)
ञ् (कुँड़ुख़)	-	[illegible]
थ्य्	-	[illegible]
म्य्	-	[illegible]
ध्य्	-	[illegible]
द्व्	-	[illegible]
त्य्	-	[illegible]
ज्य्	-	[illegible]
त्व्	-	[illegible]
ध्य्	-	[illegible]
द्व्	-	[illegible]
द्य्	-	[illegible]
न्य्	-	[illegible]
फा०	-	[illegible]
डॉ०	-	[illegible]
प्रो०	-	[illegible]

कृतज्ञ	-	[illegible]
कृतघ्न	-	[illegible]
कुरूक्षेत्र	-	[illegible]
मन्दिर	-	[illegible]
मस्जिद	-	[illegible]
गिरजा	-	[illegible]
गुरूद्वारा	-	[illegible]
किष्किन्धा	-	[illegible]
कंस / दंस	-	[illegible]
डाँस / साँस / बाँस	-	[illegible]
सृजन	-	[illegible]
सृष्टि	-	[illegible]
श्रीगणेष	-	[illegible]
धौलागिरि	-	[illegible]
सौंसे / सँवसे	-	[illegible]
औंहारी / अँवहारी	-	[illegible]
औंधआ:ना	-	[illegible]
अवडे / औंगे / औडे	-	[illegible]
कैलाश	-	[illegible]
तैयार	-	[illegible]
श्रृंगार	-	[illegible]
अधिय'आ:ना / अधियाअ़ना	-	[illegible]
बांसुरी / बाँसुरी	-	[illegible]
कमत'आना / कमत्'आ:ना	-	[illegible]
कमतअ़ना	-	[illegible]
अंकरारना / अँकरारना	-	[illegible]

— एम०जी०एम०मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल, जमशेदपुर

दिनांक — 15 नवम्बर 2022

53.

तोलोङ सिकि वर्णमाला का साहित्यिक विवेचना

** व्याख्याकार : डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव

(तोड़पाब) = वर्णमाला / ALPHABET

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)

इ i एए e उ u ओ o अ a आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, • (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ' (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, । (हेचका) = अर्द्धस्वर अ़/व्यंजन अ़

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् w	ऩ् n̤
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, numerals

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

ख़द्दर गही कत्था अरा कत्थ बेयाँख़ो = बच्चे का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान

(पा), (बा), (मा) (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (जा)

(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।

(पल्ले) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = Epiglottis, उपरी कण्ठ।

(ततख़ा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।

ता:का एमसा:र'ई, पल्ले, बई, मेलख़ा, होलेम चीं:ख़नर ख़द्दर।
ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा तईयी, होलेम उज्जनर ख़द्दर।।

कुँड़ुख़ कत्था अरा तोलोङ सिकि तोःड़पाब का अर्थ हिन्दी में तोलोंग सिकि वर्णमाला तथा अंगरेजी में Tolong Siki Alphabet समझा गया है। वर्णमाला का तात्पर्य, वर्णों का क्रमवार प्रस्तुतिकरण। पर माला का साधारण अर्थ किसी धागे में पिरोया हुआ वस्तु भी समझा जाता है, जो आकार या मात्रा के अनुसार आगे–पीछे भी हो सकता है। पर अंगरेजी का Alphabet षब्द का अर्थ Alpha के बाद Beeta का क्रम होना समझा जाता है। कुँड़ुख़ कत्था का तोलोङ सिकि तोःड़पाब, प्राचीन ग्रीक भाषा की अवधारणा जैसा है। तोःड़पाब में, पाब का अर्थ, क्रम या बारी होता है, जहाँ प के बाद ही ब आता है। इसलिए वर्णमाला में वर्णों का क्रम, प के बाद ब वाला रूप मान्य हुआ, जैसा कि कुँड़ुख़ पूर्वजों के द्वारा स्थापित पाब षब्द है। पूर्वजों द्वारा स्थापित षब्दों का चयन कर वर्णमाला के लिए *तोःड़पाब* नामित किया गया, जिसका अर्थ हिन्दी में वर्णमाला तथा अंगरेजी में Alphabet की तरह है।

तोःड़पाब दो श्रेणी में बँटा है। 1. सरह तोःड़, अर्थात स्वर वर्ण और 2. हरह तोःड़ अर्थात व्यंजन वर्ण। जो ध्वनि सर्र से निकलती है अर्थात बिना अवरोध के उच्चरित होता है, वह सर्र से सरह तोड़ कहा गया। इसी तरह जो ध्वनि हड़हुड़ाते हुए अर्थात अवरोध के साथ उच्चरित होता है, वह हड़हुड़ से हरह तोःड़ कहलाया। यह दोनों सरह एवं हरह षब्द, भाषा विज्ञान की परिभाषा के अनुसार रचित है।

तोलोङ सिकि वर्णमाला में, स्वर वर्ण का प्रथम वर्ण इ है तथा आ अंत में है। भाषा विज्ञान की मान्यता है कि बच्चे को सबसे पहले आसान शब्दों से सिखलाया जाना चाहिए। इस सिद्धांत के आधार पर इ ध्वनि सबसे आसान है तथा आ ध्वनि अधिक कठिन है। *तोलोङ सिकि का उद्‌भव एवं विकास,* पुस्तक में बतलाया गया है कि जन्म के बाद, नवजात बच्चे का लगाव एवं जुड़ाव, सबसे अधिक अपनी माँ के साथ होता है, उसके बाद पिता से, फिर आगे के जीवन में ईष्वर से, फिर अपने सगेसंबंधियों से और तमाम प्राकृतिक मानवेतर चीजों से। इस संबंध को कुँड़ुख़ में इंग्गयो, एम्मबस, उरबस, ओरमत, अद्‌दियर, आःलो अर्थात इ ए उ ओ अ आ के क्रम में अनुक्रमित किया गया है। अंतराष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुसार भी इ ए उ ओ अ आ क्रम की व्यवहारिक मान्यता है।

हरह तोःड़ अर्थात व्यंजन वर्ण का आरंभ प वर्गीय वर्ण से आरंभ किया गया है। इस संबंध में कुँड़ुख़ समाज आज भी अपने व्यवहारिक जीवन में सबसे पहले बच्चे को प वर्गीय षब्द सिखलाता है। रोटी को पपा, भात को ममा, पानी को मम, दूध को दुदु आदि कहकर सिखलाया जाता है। वयस्क जीवन में इन षब्दों का व्यवहार अपने लिए नहीं होता है, यह बच्चे को सिखलाने का तरीका है। इस संबंध में नवजात एवं षिषु रोग विषेषज्ञों का मानना है कि नवजात जब स्तनपान करता है तो उसके ओठ सक्रीय एवं मजबूत बनते हैं, इसलिए ओठ के सटने से उत्पन्न ध्वनि के उच्चरण को सीखने में बच्चे को आसानी होती है। चिकित्सा विज्ञान की दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि कुँड़ुख़ समाज में रोटी को पपा, भात को ममा, पानी को मम, दूध को दुदु आदि कहकर सिखलाये जाने की व्यवहारिक परम्परा विज्ञान सम्मत है। इस संबंध में षिषु विषेषज्ञों के अनुसार एक बच्चा 6वें महीने में एक आक्षरिक षब्द (पा, बा, मा, ता, दा, ना आदि) सीखता है तथा 9वें महीने में द्वी आक्षरिक षब्द (पपा, बबा, ममा, ददा आदि) एवं 1ले वर्ष के अंत में दो षब्द अर्थ सहित सीखता है। आधुनिक नवजात षिषु चिकित्सक जब बच्चे का Resuscitaion करता है तो सबसे पहले बई (mouth) को clear करता है, उसके बाद मुँई (nose) को। यहाँ भी ब के बाद म क्रम है।

तोलोङ सिकि के जनक डॉ0 नारायण उराँव स्वयं एक नवजात एवं षिषु चिकित्सक हैं, जिन्होंने अपने अनुभव के आधार पर कुँड़ुख़ पूर्वजों के ज्ञान एवं अवधारणा को चिकित्सीय ज्ञान से तूलना कर व्याख्या करने का प्रयास किया है। डॉ0 नारायण का कहना है कि कुँड़ुख़ पूर्वजों के ज्ञान की अवधारणा इतनी उच्च थी कि वे नवजात षिषु के जन्म के समय होने वाले विकारों को समझते थे। उनके समझ के अनुसार – ''ताःका एमसार'ई, पल्ले बई मेलख़ा, होलेम चीःख़नर ख़द्‌दर'' अर्थात जब वायु, दन्त, मूख विवर एवं उपरी कण्ठ को स्पर्ष करती है तभी बच्चा रोता है। इसी तरह – ''ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा नतगी, होलेम उज्जनर ख़द्‌दर'' अर्थात जब जीभ, दूध को भोजन नली की ओर खींचता है, तभी बच्चा जिंदा रहता है। इस तरह बच्चे के जीवन के लिए सबसे पहले रोना आवष्यक है, फिर आगे के जीवन के लिऐ दूध पीना भी आवष्यक है। जो प ब म तथा त द न की तरह का अनुक्रम, पूर्वजों के ज्ञान एवं धरोहर को स्पष्ट करता है।

*** सहायक प्राध्यापक, संस्कृत
गॉस्सनर कॉलेज, राँची। साभार : बक्कहुही, अंक 6.

54. नई लिपि की विकास यात्रा की महत्वपूर्ण प्रश्नावली

– डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा''

प्रश्न 1 :– भाषा–संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु, मातृभाषा विषय के रूप में पढ़ाई जरूरी क्यों है ?

उत्तर – भाषा विज्ञान के अनुसार, – भाषा, वह माध्यम है जिससे मनुष्य अपने विचारों को एक–दूसरे तक पहुँचाता है। इसके दो तरीके हैं – 1. अपने विचारों को बोलकर, दूसरे तक पहुँचाना तथा 2. अपने विचारों को लिखकर दूसरे तक पहुँचाना। इनमें से लिखकर दूसरे तक पहुँचाने का तरीका अधिक स्थायी होता है, अर्थात दोनों तरीकों में से भाषा के स्थायित्व हेतु 2रा तरीका भी बेहतर है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में पठन–पाठन में शामिल भाषाएँ ही अपने अस्तित्व को बरकरार रख पा रही हैं। सूचना प्राद्यौगिकी के आकलन के अनुसार – पूर्व में, विष्व में लगभग 16000 भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो अब 6900 रह गईं हैं। उनमें से 3500 को चिंताजनक स्थिति वाली भाषा की सूची में रखा गया है। इन चिंताजनक स्थिति वाली भाषाओं में – कुँड़ुख़, मुण्डारी, खड़िया, हो आदि भी हैं। इस स्थिति से उबरने के लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार से संरक्षण मिलना आवष्यक है तथा पढ़ाई–लिखाई में भाषा विषय के रूप में शामिल किया जाना भी आवष्यक है।

प्रश्न 2 :– भाषा विकास के लिए विद्यालयो में आदिवासी भाषा की पढ़ाई–लिखाई एक भाषा विषय के रूप में होना चाहिए या माध्यम के तौर पर किया जाना चाहिए ?

उत्तर – झारखण्ड बनने के बाद सामाजिक विकास क्षेत्र में कई प्रयोग हुए। संयुक्त बिहार के समय, राँची एवं धनबाद आदि शहरों में बंगला माध्यम के कई अल्पसंख्यक स्कूल थे जो समय के साथ हिन्दी माध्यम स्कूल की तरह हो गया है। समाज को समय की मांग के अनुरूप ही निर्णय लेना चाहिए है। आदिवासी बहुल क्षेत्र में भी कई प्रयोग हुए हैं। कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा भगीटोली, डुमरी, गुमला (झारखण्ड) एक मिषाल खड़ा किया है। यह झारखण्ड सरकार के जैक बोर्ड के अन्तर्गत 1 ला इंगलिष मिडियम स्कूल है। इस विद्यालय में सुदूर गाँव के आदिवसी बच्चे सिर्फ अपनी भाषा बोलते हुए प्रवेष करते हैं। उन्हें 1 ली से 3 री कक्षा तक कुँड़ुख़ भाषा और तोलोङ सिकि, लिपि में पढ़ाया–लिखाया जाता है। उसके बाद 4 थी कक्षा में एक ब्रीज कोर्स होता है। फिर हिन्दी और अंगरेजी पढ़ाया जाता है। हाई स्कूल प्रवेष करते हुए यह इंगलिष मिडियम हो जाता है। इस तरह, इस स्कूल के बच्चे हिन्दी, अंगरेजी एवं कुँड़ुख़ तीन भाषा एवं तीन लिपि में पारंगत विद्यार्थी के रूप में तैयार होकर निकलते हैं। केन्द्र सरकार एवं झारखण्ड सरकार की षिक्षा नीति में त्रिभाषा नीति लागू है। इस त्रिभाषा फार्मूला के आधार पर कुँड़ुख़ भाषी क्षेत्रों में ग्रामिणों द्वारा अनेकों स्कूल चलाया जा रहा है। इस तरह, देष, समाज एवं आदिवासी भाषा–संस्कृति हित में एक भाषा विषय के रूप में बेहतर विकल्प है।

प्रश्न 3 :– कुछ लोगों का कहना है कि यूरोप में लोग सभी भाषा को रोमन लिपि से ही लिखते–पढ़ते हैं, तो हम नई लिपि का बोझ क्यों दें ? भारतीय परिपेक्ष्य में देवनागरी का ही प्रयोग क्यों न करें ?

उत्तर – आदिवासी भाषाओं की नई लिपि हो अथवा नहीं यह एक गंभीर मुददा रहा है। पर लोगों का यह कहना कि यूरोप में लोग सभी भाषाओं को रोमन लिपि से ही लिखते–पढ़ते हैं, यह पूर्ण सत्य नहीं है। पर रोमन लिपि का व्यवहार अंग्रेजी के लिए हिज्जा आधारित तथा जर्मनी, फ्रेंच आदि के लिए फोनेटिक है। गूगल से मिली जानकारी है कि वैष्विक स्तर पर 146 प्रकार की लिपियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं तथा वर्तमान में सभी 146 लिपियों का आई.एस.ओ. यूनिकोड तैयार है और उपयोग में है। उक्त 146 में से 37 भारतीय परिवार, 08 यूरोपियन परिवार, 19 अफ्रिकन परिवार, 04 अमेरिकन परिवार, 16 ईस्ट एषियन परिवार, 17 साउथ एषियन परिवार, 10 ईन्सुलेट साउथ ईस्ट एषियन परिवार, 08 मिडिल ईस्टर्न परिवार, 02 सेन्ट्रल एषियन परिवार की लिपियाँ है। इसके अतिरिक्त वैष्विक स्तर पर 13 लिपियाँ, आई. एस.ओ. मार्क प्राप्त करने के कतार में है।

इन प्रष्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए मैं स्वयं कई विषेषज्ञों से बातचीत किया। जिनमें से पूर्व कुलपति डॉ0 रामदयाल मुण्डा का विचार मेरे शोध को अग्रतर ले जाने में मददगार हुआ। उनका कहना था – लोग यूरोप की बात तो करते हैं पर यूरोप की उन तथ्य परख बातों को नजर अंदाज कर देते हैं। दरअसल यूरोप में एक देष, एक धर्म, एक भाषा की स्थिति है। वैसे में सबका राष्ट्रीय पहचान एक जैसा है। वहीं पर भारत जैसे बहुभाषी देष में अनेकानेक धर्म–सम्प्रदाय हैं और सर्वधर्म सम्भाव के साथ गुजर–बसर कर रहे हैं। इसलिए राष्ट्रीय एकता के साथ पुस्तैनी विरासत को बचाना और निखारना भी जरूरी है। वर्तमान भारत में कुल 22 भाषाओं को 8वीं अनुसूची षामिल कर विषेष दर्जा दिया गया है। अपनी भाषा, संस्कृति एवं लिपि को सुरक्षित एवं संरक्षित करने का संविधान में विषेष अवसर प्रदान किया गया है। इन दिनों केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार में नई षिक्षा नीति के तहत तीन भाषा विषय (मातृभाषा, राष्ट्रीय भाषा एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषा) के पठन–पाठन पर केन्द्रित किया गया है। ऐसी परिस्थिति में आदिवासी समाज को भी हिन्दी, अंगरेजी एवं मातृभाषा के सिद्धांत पर कार्य करना होगा। झारखण्ड में आदिवासियों के लिए भी बेहतर अवसर है।

प्रश्न 4 :– कुछ लोगों का कहना है कि देवनागरी लिपि एक पूर्ण एवं वैज्ञानिक लिपि हैं, तो हम नई लिपि के चक्कर में क्यों पड़ें ?

उत्तर – यह एक कठिन प्रष्न है और कठिन प्रष्न का उत्तर भी कठिन सा है। वास्तव में विष्व की कोई भी लिपि शत–प्रतिषत वैज्ञानिक एवं षत–प्रतिषत पूर्ण नहीं है। हाँ, यह तथ्य है कि देवनागरी लिपि में कई अच्छे गुण हैं जो अंतर्राष्ट्रीय भाषा विज्ञान के सिद्धांत पर खरा उतरता है। परन्तु इसके ध्वनि तथा अक्षर की अवधारणा पूर्ण रूप से वैदिक सिद्धांत पर आधारित है। इन रहस्यों की पढ़ाई–लिखाई, के.जी. से पी.जी. तक में नहीं होती है, जिससे आम आदमी अनभिज्ञ है। परिणाम रूवरूप आज का अधिकतम यूनिवर्सिटी ग्रेजूएट अपने तथा अपने पुस्तैनी विरासत के बारे में जान नहीं पाता है। इस संबंध में भाषाविद प्रोफेसर, डॉ0 माहिदास भट्टाचार्य, जादवपुर विष्वविद्यालय, कोलकाता (प. बंगाल) का कहना है कि वर्तमान पीढ़ी के पास राष्ट्रीय एकता के साथ पुस्तैनी विरासत को बचाने की कठिन चुनौती है। नवयुवक इन बातों को समझें और अपना रास्ता तय करें। (दिनांक 06 जुलाई 2016 को एक भेंटवार्ता पर आधारित)। देवनागरी लिपि में अक्षर का नाम तथा ध्वनिमान एक है, जबकि रोमन लिपि में अक्षर का नाम तथा ध्वनिमान अलग–अलग है। ध्वनि विज्ञान, देवनागरी लिपि के सिद्धांत को अच्छा मानता है। भाषा विज्ञान का मानना है कि – जैसा बोलें वैसा लिखें और जैसा लिखें वैसा पढ़ें। इस सिद्धांत पर संस्कृत देवनागरी अधिक नजदीक है। तकनीकी दृष्टिकोण से देवनागरी लिपि में भी कई दोष है। देवनागरी का तकनीकि पक्ष से सांस्कृतिक पक्ष से अधिक मजबूत है।

प्रश्न 5 :– सभ्यता–संस्कषति और भाषा–लिपि के अनछुवे पहलुओं को स्पष्ट करें ?

उत्तर – पूरे भारत में प्राचीन कबिलाई समूह अथवा आदिवासी समूह के लोग आज भी अपने–अपने क्षेत्र में अपने तरीके से गुजर–बसर कर रहे हैं। इनकी अपनी विषिष्ट भाषा है, विषिष्ट संस्कषति एवं रूढ़ीगत परम्परा है। आदिवासी समाज आज भी अपना सभी अनुष्ठान अपनी भाषा में आधुनिक घड़ी की विपरीत दिषा में सम्पन्न करते हैं जबकि देष का बहुसंख्यक समुदाय, अपनी भाषा में आधुनिक घड़ी की दिषा में सम्पन्न करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि आज भी इनकी विषिष्ट भाषा–संस्कति जीवित है। इसके अतिरिक्त, आदिवासी समाज में कई सांस्कषतिक कार्य–अनुष्ठान तथा आस्था–विष्वास ऐसे हैं जो बहुसंख्यक समुदाय से भिन्न हैं। वर्तमान भूमंडलीकरण के दौर में इन विषिष्ट पहलुओं तथा पुस्तैनी विरासत को, अपनी विषिष्ट भाषा एवं सांस्कषतिक विरासत आधार वाली साहित्य–लिपि से ही संरक्षित एवं संवर्द्धित किया जा सकता है।

– एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज अस्पताल,जमशेदपुर
(झारखण्ड), दिनांक 30 सितम्बर 2022

55. तोलोंग सिकि विकास गाथा और उसकी गवाही

सन् 1989 ई0 में स्व. विवेकानन्द भगत बैंक अधिकारी द्वारा मुझे एक पुस्तक प्राप्त हुआ। उस पुस्तक का नाम था – ''सरना समाज और उसका अस्तित्व''। उस पुस्तक का लेखन पेशे से चिकित्सक डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' ने किया था। इस पुस्तक को मैं कई बार पढ़ा और समझने का प्रयास किया कि आखिर कौन सा ऐसा प्रसंग अथवा विचार आया जो एक चिकित्सक के मन को झकझोर कर लेखन के क्षेत्र में उतारा। इस किताब से मैं बहुत प्रभावित हुआ और सोचा कि क्या मैं भी ऐसा कुछ कर सकता हूँ ? इसके बाद, मेरा भी रिस्ता लेखन के साथ बढ़ता गया और बढ़ता ही गया। इस पुस्तक के प्रकाशन में डॉ. नारायण के मन में अपनी स्वतंत्र लिपि होने की कमी नजर आयी और वे नई लिपि के विकास का कार्य आरंभ कर दिये`वर्ष 1992–93 में नई लिपि के प्रचार–प्रसार हेतु उन्होंने TRACE (Tribal Research Analysis Communication & Education) नामक संस्था का गठन किये और इंजिनियर ए. एम. खलखो को अध्यक्ष बनाया गया। डॉ. नारायण स्वंय सम्मानित निदेशक रहे। इस संस्था के माध्यम से नई लिपि का प्रचार–प्रसार होने लगा। दई लिपि का नाम तय हुआ – 'तोलोंग सिकि'।

यह लिपि पहली बार दिनांक 24.09.1993 को सरना नवयुवक संघ द्वारा आयोजित करम पूर्व संध्या के अवसर पर जनमानस के सामने अवलोकन के लिए रखा गया। इस लिपि के संबंध में पहली बार दिनांक 07.10. 1993 को हिन्दी दैनिक 'आज' समाचार पत्र लेख छपा। यह लिपि, प्राकृतिक क्रिया–कलापों एव ं सामाजिक सह सांस्कृतिक अवदानों को आदिवासी पोशाक तोलोंग की कलाकृति की आकृति से जोड़कर स्थापित किया गया है। इस लिपि को नामकरण करने तथा स्थापित किये जाने में डॉ. नारायण को सहयोग करनेवालों में से डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. फ्रांसिस एक्का, डॉ. बहुरा एक्का, डॉ. बासुदेव बेसरा आदि शिक्षाविद् रहें हैं।

वर्तमान में इस लिपि के माध्यम से स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई हो रही है। वर्ष 1999 में छो पूर्व कुलपति डॉ. राम दयाल मुण्डा एवं डॉ. श्रीमती इन्दु धान ने संयुक्त रूप से इस लिपि को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि स्वीकार करते हुए जनमानस के व्यवहार के लिए लोकार्पित किया। उसके बाद सामाजिक स्तर पर कई विद्यालय खुले, जहाँ केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार त्रिभाषा नीति के अन्तर्गत हिन्दी, अंगरेजी और कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई–लिखाई होने लगी। इन विद्यालयों में पढ़ाई आरंभ होने तथा सामाजिक जागृति के बीच झारखण्ड सरकार ने 18.09.2003 में संताली भाषा की लिपि ऑल चिकि, हो भाषा की लिपि वरांग चिति तथा कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तालोंग सिकि की मान्यता दी और 8 वीं अनुसूची में शामिल किये जाने हेतु केन्द्र सरकार को अनुशंसित किया गया है। इस पत्र द्वारा अनुशंसित संताली भाषा वर्ष 2005 में 8वीं अनुसूची में शामिल हो गया पर शेष दो भाषाएँ का भविष्य लम्बित है।

इसी क्रम में वर्ष 2009 में झारखण्ड अधिविद्य परिषद, रांची द्वारा कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला के 39 विद्यार्थियों को कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि में लिखने की अनुमति मिली तथा वर्ष 20016 सभी विद्याालयों के लिए अनुमति मिल गई है। वर्ष 2018 में प. बंगाल सरकार में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि को मान्यता मिल चुका है। अब तक झारखण्ड में 10 साल से लगातार मैट्रिक परीक्षा लिखी गई और परीक्षाफल प्रकाशित हुआ है। इस लिपि के विकास पर एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म 'लकीरें बोलती हैं?' बनी है और यू ट्यूब में उपलब्ध है तथा दिसम्बर 2018 में मोबाईल एप बन चुका है। इस लिपि के विकास के लिए त्रैमासिक पत्रिका 'बक्कहुही' का 7अंक तक प्रकाशित है। वर्ष 1989 से 2018 तक का संक्षिप्त इतिहास, तोलोंग सिकि के विकास का स्वंय गवाह है।

– सरन उराँव,

से.नि. लेखा पदाधिकारी, ए.जी. बिहार–झारखण्ड।

56. झारखंड आंदोलन की देन है तोलोंग सिकि लिपि !

– श्री प्रभाकर तिर्की

तोलोंग सिकि कुड़ुख आदिवासी भाषा की लिपि की विकास यात्रा ने एक नयी पीढ़ी तक का सफर तय कर लिया है । 28 वर्षों का यह सफर एक कठिन यात्रा की तरह पूरी हुई है। आज भी यह सफर अपनी मंजिल पूरी नहीं कर पाया है परंतु तोलोंग सिकि को आधुनिक भाषा लिपि के रूप में सामाजिक मान्यता मिल चुकी है। यह हमारे सफलता की महत्वपूर्ण सीढ़ी है।

मुझे अपने आजसू (ऑल झारखंड स्टुडेंटस युनियन) छात्र आंदोलन के वे दिन याद हैं जब हम अपने दोस्तों और आंदोलनकारी साथियों से मिलकर आदिवासी संस्कृति और पहचान के सवाल पर लंबी चर्चा किया करते थे। इन्हीं चर्चाओं से निकली थी वर्ष 87–88 में कुड़ुख भाषा के विकास के लिये अपनी लिपि विकसित करने की बात। डा0 नारायण उरॉव हमारे आंदोलन के सहयोगी थे। उन्होंने इस विचार को अपने जेहन में डाला और वहीं से तोलोंग सिकि के अविष्कार की कहानी षुरू हुई। 1989 में उन्होंने कुड़ुख लिपि के विकास के लिये षोध का कार्य शुरू किया। लिपि का अविष्कार एक आसान कार्य नहीं था। डा0 नारायण उरॉव ने बड़े ही धैर्य के साथ इस लिपि विकास के कार्य को आगे बढ़ाया है। मैं एक लंबे समय तक उनकी कोषिषों को करीब से देखता रहा हुं। यद्यपि मेरी रूचि और ज्ञान इस कठिन कार्य के प्रति काफी कम थी फिर भी डा0 नारायण समय–समय पर लिपि के विकास में आने वाली कठिनाईयों एवं उनके विभिन्न पहलुओं पर अवश्य चर्चा करते रहे हैं। लिपि के विकास में मेरी भुमिका नहीं है परंतु मैने एक आंदोलनकारी मित्र के रूप में लिपि के विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में उसके प्रचार–प्रसार में थोड़ा समय दिया है। मुझे डा0 नारायण उरॉव ने अपने शोध के 10 वर्षों के बाद 1999 में अपनी विकसित हो रही लिपि को जन मानस तक पहुॅचाने और तोलोंग सिकि के विकास के लिये समाज के प्रबुद्ध वर्गों से महत्वपूर्ण सूझाव प्राप्त करने के लिये एक पुस्तिका प्रकाशित करने की जिम्मेवारी सौंपी। मैंने अपनी संस्था Tradition Revival and People's Awakening Advancement के माध्यम से अगस्त 1999 में " ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि " का प्रकाषन किया यह पुस्तिका डा0 नारायण उरॉव ने ही तैयार की थी ,जिसके द्वारा तोलोंग सिकि के प्रारंभिक दौर में विकसित किये गये लिपि की अवधारणा उसके ध्वनि संकेतों तथा लिपि में प्रयोग किये गये आदिवासी समाज के कई प्रतीक चिन्हों के बारे में चर्चा की गयी । यह एक महत्वपूर्ण कदम था और मुझे याद है इस पुस्तिका के प्रकाषन के बाद एक सामाजिक चेतना का विकास हुआ जो लिपि के विकास यात्रा को आगे बढ़ाने में काफी उत्साहवर्द्धक साबित हुआ।

इसी प्रकार कई प्रकार की शंकाओं, परिवर्तनों और कठिन परिस्थितियों से गुजरता हुआ लिपि विकास का यह सफर आज अपने मंजिल पहुॅचने के करीब है। मैं अपने अन्य सामाजिक कार्यों में व्यस्तता के कारण इस पूरी यात्रा में डा0 नारायण उरॉव को सक्रीय रूप से सहयोग नहीं कर पाया लेकिन आज भी मैं उनके इस कार्य के प्रति आस्था और विष्वास व्यक्त करते हुये तोलोंग सिकि लिपि के विकास के लिये हमेशा उनके साथ हुं। मैं पूरे दिल से डा0 नारायण उरॉव के द्वारा किये जा रहे कठिन प्रयासों की सराहना करता हुं। मैं संपूर्ण कुड़ुख समुदाय से यह निवेदन करना चाहता हुं कि अपनी भाषायिक अस्मिता और सामाजिक पहचान की रक्षा के लिये सभी पूरी तत्परता के साथ आगे आयें। भाषायिक विकास एवं सामाजिक पहचान की रक्षा के लिये तोलोंग सिकि लिपि का विकास इस नये युग में पूरे समाज विषेष कर नयी पीढ़ी के लिये एक बड़ी खोज है। मैं डा0 नारायण उरॉव सैंदा को अपनी शुभकामनायें देता हॅू और ईष्वर से प्रार्थना करता हुं कि उन्हें अपने इस कार्य के लिये पूरी मानसिक ताकत प्रदान करे ताकि हम अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकें।

(लेखक : झारखंड आंदोलन का साथी एवं तोलोंग सिकि लिपि विकास का एक सहयोगी, 18 अगस्त 2018)।

57. आदिवासी जीवन–दर्षन और कुड़ुख़ भासा की तोलोंग लिपि

– डॉ0 प्रवीण उराँव **/ प्रो0 श्रीमती मन्ती उराँव *

झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन के दौरान हम छात्र नेताओं के जेहन में हमेषा ही एक प्रष्न उठता था – क्या, नये राज्य में हम अपनी भाषा–संस्कृति को सुरक्षित रख पाएंगे ? इसके लिए क्या–क्या कदम उठाने होंगे ? इसी क्रम में विचार आया – संस्कृति को बचाने के लिए भाषा को बचाना जरूरी है और भाषा को बचाने के लिए उस भाषा का षिक्षा पद्धति में शामिल होना जरूरी है, तभी भाषा बचेगी। साथ ही वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में उस भाषा की अपनी लिपि भी हो। इसी क्रम में पेषे से चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव ने आदिवासी भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि, नामक लिपि के रूप में समाज के सामने एक समाचार पत्र के माध्यम से छपकर सितम्बर 1993 में आया।

लिपि के अग्रेतर विकास के पष्चात् आदिवासी समाज के दो पूर्व कुलपति डॉ0 रामदयाल मुण्डा तथा डॉ0 (श्रीमति) इन्दु धान द्वारा संयुक्त रूप से 15 जून 1999 को जनमानस के व्यवहार के लिए लोकार्पित किया गया। उसके बाद सामाजिक स्तर पर कई छोटे–बड़े विद्यालयों में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि की पढ़ाई–लिखाई होने लगी। झारखण्ड राज्य बनने के बाद वर्ष 2003 में झारखण्ड सरकार द्वारा तोलोंग सिकि, लिपि को कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि की मान्यता मिली। फिर वर्ष 2009 में एक विद्यालय के छात्रों के लिए तथा वर्ष 2016 में इच्छुक सर्वजन के लिए मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा इस लिपि में लिखे जाने की अनुमति मिली। इसे जीवंत रखने की आवष्यकता है। लिपि के संबंध में डॉ0 नारायण बतलाते हैं – लिपि का आधार पूर्वजों द्वारा स्थापित प्रकृतिवादी सिद्धान्त है। हवा का बवंडर, समुद्र का चक्रवात, लताओं का चढ़ना, ब्राह्मांड में सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा आदि घड़ी की विपरीत दिषा में होती है। प्रकृति की इन रहस्यों को पूर्वजों ने अपने जीवन में उतारा और जन्म से लेकर मृत्यु तक के अनुष्ठान, घड़ी के विपरीत दिषा में सम्पन्न करने लगे, जैसे हल चलाना, जता चलाना, नृत्य करना, अभिवादन करना, चाःला टोंका में पूजा करना, डंडा कट्टना आदि सामाजिक सह सांस्कृतिक अवदानों को आदिवासी पोषाक तोलोंग की कलाकृति से जोड़कर यह लिपि स्थापित हुई है।

लिपि विकास के इस दौर में वर्ष 2012 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन, राँची में *कुड़ुख़ बन्ना,* नामक लिपि एवं *तोलोंग सिकि* के बीच तुलनात्मक व्याख्या हुई। बन्ना लिपि के प्रस्तुतकर्ता एक ही बात पर जोर दे रहे थे, यह सुन्दर है और तेजी से लिखा जा सकता है। पर तोलोंग सिकि के प्रस्तुतकर्ता ने कहा कि यह लिपि, आदिवासी समाज एवं संस्कृति पर आधारित है। विषेषकर यह डण्डा कट्टना अनुष्ठान एवं दैनिक जीवन के दिनचर्या में होने वाले कार्यो तथा घटनाओं पर आधारित है। इन बातों को जानने के बाद मैं निर्णय ले पाया कि कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के लिए तोलोंग सिकि ही व्यवहारिक एवं ग्राहय योग्य है और मैं उस दिन से तोलोंग सिकि के विकास में अपनी सहभागिता निभा रहा हूँ और लोगों को भी प्रोत्साहित कर रहा हूँ।

झारखण्ड सरकार आदिवासी भाषा संस्कृति, लिपि का विकास एवं संरक्षण के लिए कोई उचित पहल करे। प्राथमिक स्कूलों में मातृभाषा की पढ़ाई होनी चाहिए जो आरंभिक दौर में है तथा भाषा शिक्षकों की बहाली हो। स्कूलों में अध्ययन एवं अध्यापन होने तथा रोजगार के अवसर बनने से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं बौद्धिक चेतना जगेगी और भाषा विकास तथा संरक्षण स्वस्फूर्त होने लगेगा। आदिवासियों का जीवन दर्षन, उनकी लोककथा, कहानी और गीतों में ही है, इसके चलते किसी ग्रंथ की आवष्यकता न होते हुए भी सजीव है। इसे जीवंत रखने की आवष्यकता है।

** सहा0 प्रो0, संजय गांधी मेमोरियल कॉलेज, राँची (झारखण्ड)।

* सहा0 प्रो0, कार्तिक उराँव बी. एड. कॉलेज, गुमला (झारखण्ड)।

58. तोलोङ सिकि की विकास यात्रा और राःजी पड़हा, भारत

कुँडुख भाषा की लिपि तोलोङ सिकि के बारे में कहा जाता है कि यह लिपि, भारतीय आदिवासी आंदोलन एवं झारखण्ड का छात्र आंदोलन की देन है। इस लिपि का षोध एवं अनुसंधान पेषे से चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव द्वारा 1989 में आरंभ किया गया। उन्होंने पहली बार 1993 में सरना नवयुवक संघ, राँची द्वारा आयोजित, करमा पूर्व संध्या के अवसर पर राँची कालेज, राँची के सभागार में प्रदर्षनी हेतु रखा। इस लिपि में पहली प्राथमिक पुस्तक ''कुँडुख तोलोङ सिकि अरा बक्क गढ़न'' के नामक से दिसम्बर 1993 में उषा इंडस्ट्रीज, भागलपुर (बिहार) में छपा और हिजला मेला, दुमका 1994 में, प्रदर्षनी के लिए रखा गया।

हमें ज्ञात है कि राःजी पड़हा, भारत के सामने यह बात 3, 4 एवं 5 जनवरी 1997 में राजी देवान श्री भिखराम भगत के नेतष्त्व में हुए वार्षिक राजी पड़हा सम्मेलन, बमनडीहा, लोहरदगा में आया। सम्मेलन में ''तोलोङ सिकि'' की प्रस्तुति पर विस्तृत परिचर्चा हुई और सर्वसम्मति से तोलोङ सिकि को कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में राःजी पड़हा सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों ने स्वीकार किया। इसी बीच पूर्व मंत्री एवं सांसद श्री इंद्रनाथ भगत के सलाह पर बाबा भिखराम भगत ने कहा कि लिपि के साथ इसका व्याकरण भी तैयार हो तथा समाज के षिक्षाविदों से मंतब्य प्राप्त होने के बाद ही राजी पड़हा की ओर से सहर्ष स्वीकृत समझा जाएगा। उसके बाद, एक पड़हा बैठक मार्च 1998 में राजी पड़हा देवान श्री भिखराम भगत के नेतृत्व में घाघरा, गुमला में सम्पन्न हुआ। इस बैठक में पड़हा प्रतिनिधियों के सामने दूसरी बार तोलोंग सिकि को प्रदर्षित किया गया। यहाँ उपस्थित प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से तोलोङ सिकि को कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में स्वीकार किया। किन्तु बाबा भिखराम भगत ने जोर देकर कहा कि – ''राःजी पड़हा के सामने कुँडुख़ भाषा का व्याकरण तोलोंग लिपि में तैयार कर लाया जाय एवं षिक्षाविदों तथा प्रोफेसर समूह के लोगों की सहमति भी बने।'' इसी क्रम में दिनांक 19.09. 1998 को बिहार जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, राँची के एक सरकारी विभागीय बैठक में निर्णय हुआ कि कुँडुख़ भाषा की लिपि तोलोंग सिकि है तथा तोलोंग सिकि के विकसित होने तक साहित्य सृजन एवं पठन–पाठन में देवनागरी लिपि का भी प्रयोग किया जाय।

इसके बाद लिपि एवं व्याकरण में षोध कार्य होता रहा और कुँडुख़ समाज में तोलोड़ सिकि (लिपि) की सामाजिक मान्यता बढ़ती रही तथा 15 मई 1999 को डॉ० रामदयाल मुण्डा, पूर्व कुलपति रॉची विष्वविद्यालय, रॉची एवं डॉ० (श्रीमती) इंदु धान, पूर्व कुलपति, मगध विष्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) द्वारा एक संवादाता सम्मेलन कर तोलोंग सिकि को जनमानस के व्यवहार के लिए जारी किया गया। इसके बाद समाज द्वारा संचालित विद्यालयों में कुँडुख भाषा एवं तोलोड़ सिकि की पढ़ाई गुमला जिला के विभिन्न गैर सरकारी विद्यालयों में होने लगी। समय बीतने के साथ, वर्ष 2003 में झारखण्ड सरकार द्वारा कुँडुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किये जाने हेतु अनुसंषित किया गया, जिसमें कहा गया कि कुँडुख भाषा की लिपि तोलोङ सिकि है।

इस तरह झारखण्ड सरकार की ओर से कुँडुख भाषा एवं लिपि (तोलोड़ सिकि) पर वर्ष 2003 में सरकार का निर्णय लिये जाने के बाद झारखण्ड अधिविद्य परिषद् (जैक) द्वारा वर्ष 2009 में कुँडुख़ कत्थ खोड़हा लूरएड़पा भागीटोली, डुमरी (गुमला) विद्यालय के छात्रों को मैट्रिक परीक्षा में कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा, तोलोड़ सिकि में लिखने की अनुमति मिली और परीक्षा फल प्रकाषित हुआ। उसके बाद उस विद्यालय के छात्र अबतक कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोङ सिकि में लिख रहे हैं।

इधर राजी पड़हा सम्मेलन के स्थानीय निकाय अथवा डाड़ा पड़हा बालीजोड़ी, राउरकेला, ओड़िसा में दिनांक 10 जनवरी 2011 को श्री मंगला खलखो के नेतष्त्व में पड़हा गुरू स्व० भिखराम भगत की 74 वीं जयंती मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय पड़हा गुरू भिखराम भगत की धर्मपत्नी श्रीमती बुधेष्वरी भगत थीं। इस कार्यक्रम में कुँडुख़ भाषा, संस्कषति एवं लिपि के संबंध में श्री भिखराम भगत द्वारा पूर्व में बतलाये गये सुझाव के अनुसार उनका बचन इसी दिन पूरा हुआ।

उनका कहना था कुँड़ुख़ भाषा के लिए एक लिपि और उसका व्याकरण चाहिए। उनके 74 वीं जयंती के अवसर पर डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लिखित पुस्तक ''कुँड़ुख़ कत्थअईन अरा पिंज्जसोर'' की पांडुलिपि का लोकापर्ण, माननीय गुरूमाता श्रीमती बुधेष्वरी भगत के हाथों सम्पन्न हुआ। साथ ही तोलोङ सिकि को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की घोषणा की गई और साहित्य सृजन किये जाने की अपील की गई। उसके बाद 27 मई 2012 को ''राजी पड़हा स्वर्ण जयन्ती समारोह'' के अवसर पर मोरहाबादी, राँची में राःजी बेल श्री बागी लकड़ा, राःजी देवान श्री खुदी भगत 'दुखी' ओड़िसा एवं छत्तीसगढ़ से आये राजी पड़हा, भारत के पदाधिकारी एवं षिक्षाविंद डॉ० करमा उरॉव तथा डॉ० हरि उरॉव आदि की उपस्थिति में कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि की सामाजिक घोषणा की गई। उसके बाद दिनांक 22, 23, एवं 24 अक्टुवर 2012 को हुए कालुंगा, राऊरकेला ओडिसा में कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि राःजी पड़हा, भारत के राजी बेल श्री बागी लकड़ा के हाथों सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अलग–अलग प्रान्तों से आये भाषा प्रेमियों ने भाषा एवं लिपि पर चर्चा की जिसका उत्तर समिति की ओर दिया गया। इन तथ्य परख अवधारणाओं पर मुझे संतोष और खुषी हुई।

उसके बाद दिनांक 22, 23, एवं 24 मई 2015 को, स्थान लोरोबगीचा, नवडीहा, घाघरा (गुमला) में तीन दिवसीय ''राजी पड़हा सम्मेलन'' में राजी देवान श्री खुदी भगत 'दुःखी' ने कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोङ सिकि'' की आवष्यकता एवं उपयोगिता विषय पर परिचर्चा के बाद सम्मानित सदस्यों की उपस्थिति में तोलोङ सिकि को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की सामाजिक मान्यता दिये जाने की घोषणा की और पठन–पाठन एवं साहित्य सृजन किये जाने का आह्वान किया। इसके अतिरिक्त, कई पड़हा बैठक में भाषा एवं लिपि विषय पर निर्णय हुआ है। ज्ञात है कि ''22 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा 2014'' छपर बगीचा, लावागांई सम्मेलन में तोलोङ सिकि (लिपि) को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में स्वीकार कर लिया गया है और 21 पड़हा द्वारा संचालित विद्यालयों को कुँड़ुख़ भाषा और तोलोङ सिकि की पढ़ाई आंरभ की गई है। इस भाषायी आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए झारखण्ड विधान सभा, राँची के माननीय अध्यक्ष, डॉ० दिनेष उराँव की तत्परता से झारखण्ड अधिविद्य परिषद, रॉची द्वारा मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) लिखने की अनुमति दिनांक 12.02.2016 को अधिसूचना जारी की गई। वर्ष 2018 से प.बंगाल में लिपि मान्य है। वर्तमान में, डॉ0 नारायण भगत, प्राध्यापक कुँड़ुख, डोरण्डा कॉलेज एवं डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'' के संयुक्त प्रयास से एक अदद व्याकरण प्रकाष में आया है जिसका नाम है – 'ईन्नलता कुँड़ुख़ कत्थअईन'(आधुनिक कुँड़ुख़ व्याकरण)। इस संबंध में स्वंय डॉ0 नारायण उराँव कहते हैं कि अब मुझे समझ में आ रहा है कि बाबा भिखराम भगत, लिपि के साथ–साथ व्याकरण लाने का आदेष क्यों दिये ? षायद यह भी एक दैवीय संयोग था। यदि पूर्व में ही राःजी पड़हा से स्वीकृति मिला होता तो लिपि के साथ एक अच्छा कुँड़ुख़ व्याकरण समाज को नहीं मिल पाता। डॉ0 नारायण के इस वक्तव्य से मैं आष्वस्त हुआ कि राःजी पड़हा ने समाज हित में निर्णय लेने में जल्दबाजी नहीं किया। समाज की मांग को देखते हुए, दिनांक 30.12.2018 को पाःदा पड़हा, ओडिसा के वार्षिक सम्मेलन में मैं राःजी बेल, राःजी पड़हा, भारत की ओर से कुँड़ख़ भाषा की तोलोङ सिकि, लिपि को समाज में व्यवहार करने के लिए स्वीकृत एवं अनुमोदित करने की घोषणा करता हूँ।

फोटो में दायें से श्रीमती मानू लकड़ा एवं एडवोकेट बागी लकड़ा, श्री विनोद भगत 'हिरही' तथा डॉ0 नारायण उराँव।

– एडवोकेट बागी लकड़ा
राःजी बेल, राःजी पड़हा, भारत।
पता : ग्राम – जगदा, पो0 + थाना : झिरपानी
भाया राउरकेला 42, जिला : सुन्दरगढ़ (ओड़िसा)

59. तोलोङ सिकि की प्रतिस्थापना : एक सामाजिक सह सांस्कृतिक धरोहर

– फा. अगुस्तिन केरकेट्टा

आदिकाल से ही मानव समाज अपनी पारम्परिक वेषभूषा तथा सांस्कृतिक चिन्हों को संकेत के रूप में प्रयोग कर साहित्य निर्माण में अग्रेतर विकास किया है। प्रिंटिंग मीडिया से पहले आदिवासी समाज में शादी के निमंत्रण के लिए हल्दी रंगा हुआ अरवा चावल संकेत स्वरूप प्रदान करता था और आज भी आदिवासी गावों में प्रचलन में है। कुँड़ुख़ भाषी उराँव गांव–समूह में आज भी कोई व्यक्ति, एक आम की डाली के साथ घुमने पर यह पूछा जाता था कि – आप क्या सूचना दे रहे हैं ? अर्थात आम की डाली के साथ घूमने से निमंत्रण देने की सूचना का द्योतक था। प्राचीन काल में साज–सज्जा, श्रृंगार की वेशभूषा, संकेत एवं चिन्हों से जीवन में व्यवहार कुशलता की पहचान पाई थी और जिससे प्रकृति का स्वरूप भी झलकता है। आदिवासी समुदाय, प्रकृति से जो सीखता है उसका अनुशीलन भी करता है क्योंकि प्रकृति शाश्वत गुरू है। जिन लोगों ने प्रकृति को आदर्श के रूप में अपने जीवन में उतारा, उनमें से एक आदिवासी समुदाय भी है, जिन्होंने प्राकृतिक अवदानों को अपने जीवन शैली अथवा अपने System Custom Tradition में हु–ब–हु उतारा और शाश्वत स्वरूप देकर उसे कायम भी किया। प्रकृति अपने आदर्श को बरकरार रखते हुए नये–नये परिवर्त्तन करती है, जैसे ॠतु परिवर्तन के साथ ही अपना स्वरूप भी उभर पड़ता है। यह प्राकृतिक सत्य है कि प्रकृति का चलन दायें से बायें (anti clockwise movement) की खाशियत होती है। आदिवासी पूर्वजों ने इन गतिविधियों को अपने ज्ञान और जिज्ञासा का केन्द्र बनाया और प्रकृति से सीखकर अपने जीवन में उतारा। यह उसकी जीवनधारा बनी और अपनी संतानों को यह गुण हस्तांतरित किया। प्रकृति में प्रतिदिन ही एक नई खोज की ओर संकेत मिलता है। मौसमी नाच–गान बारहों महीनों के साहे डण्डी इसके द्योतक है, जो अनुकरणीय ही नहीं, बल्कि जीवन पर्यन्त मार्गदर्शक बन, निरर्थकता में सार्थकता को निरंतरता प्रदान करता है। ऐसे ही परिवेश में तोलोङ सिकि (लिपि) को प्रतिस्थापित करने का यह प्रयास, अति विशिष्ट है। जैसे कि आप जानते हैं कि – तोलोङ सिकि, तोलोङ को ऊपर से नीचे बांधने की प्रक्रिया में उभरती आकृति का एक प्रतीकात्मक स्वरूप है और जो मानवीय विचारों के आदान–प्रदान में हो रहे भाषायी उच्चारण के लिए एक संकेत स्वरूप है।

इसी प्रसंग में पेशे से चिकित्सक, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' ने अपनी मातृभाषा (Mother tongue) के सिर्फ मौखिक रूप की लौकिक मान्यता की परिभाषा को बदलने में अपने सामाजिक तथा सांस्कृतिक धरोहर रूपी ज्ञान भंडार पर आधारित परिकल्पना को मूर्त रूप देते हुए एक नई लिपि को प्रतिस्थापित करने में एक रचनाकार का कार्य किया है। इस नई लिपि का नाम है – 'तोलोङ सिकि'। वर्तमान में इस लिपि की मान्यता कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में झारखण्ड तथा प0 बंगाल सरकार में है।

उन्होंने इस विषय पर शोध–अनुसंधान का कार्य अपने छात्र जीवन में दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय, लहेरियासराय (बिहार) में वर्ष 1989 में आरंभ किया। एक लिपि के रूप में सर्वप्रथम वर्ष 1993 में सामाजिक प्रदर्शनी तथा समाचार पत्रों के माध्यम से समाज के बीच पहूँचा। इसपर लगातार शोध– संकलन करते हुए वर्ष 1998 में तत्कालीन भाषाविद, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर (भारत सरकार) के प्रोफेसर डॉ० फ्रांसिस एक्का एवं भाषाविद डॉ० रामदयाल मुण्डा के उच्च स्तरीय कमिटि के साथ मार्ग दर्शन प्राप्त किया गया। तत्पश्चात वर्ष 1999 में सार्वजनिक रूप से समाज के लोगों के लिए लिखने–पढ़ने हेतु समर्पित किया गया। इस विषय पर झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची में वर्ष 1998 में एक राजकीय कार्यशाला आयोजित हुई तथा वर्ष 2003 में झारखण्ड सरकार ने तोलोंग सिकि को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि की घोषणा की और केन्द्र सरकार को अपना अनुमोदन भेजा। इसके आलोक में झारखण्ड अधिविद्य परिषद राँची ने वर्ष 2009 में एक विद्याालय को तथा वर्ष 2016 से सभी विद्यालयों के छात्रों के लिए कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि, लिपि में लिखने की अनुमति दी गई। वर्तमान में गुमला, लोहरदगा, राँची आदि जिला के कुँड़ुख़ भाषी क्षेत्रों

में समाज द्वारा चलाये जा रहे कई विद्यालयों के माध्यम से भाषा–लिपि की पढ़ाई–लिखाई हो रही है।

मैं इस लिपि के प्रचार–प्रसार में वर्ष 1998 में शामिल हुआ और अबतक अपनी भागीदारी निभा रहा हूँ। आरंभिक दौर में मुझे भी अपनी मातृभाषा के विकास के लिए एक नई लिपि की आवश्यकता एवं उपयोगिता विषय पर गहन चिंतन–मंथन करने की जद्दोजहद झेलनी पड़ी। पर इस निर्णय से मुझे खुशी है कि मैं भी इस सामाजिक भागीदारी कि अगुवाई का एक हिस्सा हूँ। वर्ष 2009 में कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि, लिपि में लिखने की अनुमति मिलने के समाज एवं सरकारी विभाग के बीच बातचीत करने वाले टीम का मैं भी एक सदस्य रहा। राज्य में उस समय राष्ट्रपति शासन था। जैक के पदाधिकारियों का निर्देश था कि नई लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति के लिए इस नई लिपि में पाठ्य पुस्तक होना आवश्यक है। जैक द्वारा वैसा निर्देश दिये जाने तक में सिर्फ देवानागरी लिपि में पाठ्य पुस्तक उपलब्ध था। समाज के सामने एक कठिन चुनौति थी – पहला, अपनी मातृभाषा के साहित्य को सरकार के तराजू में खरा उतारना और दूसरा, स्कूल के बच्चों का भविष्य सँवारना। यह कार्य कठिन था पर असंभव नहीं। एक ओर राँची से 150 कि0मी0 दूरी पर लूरडिप्पा, डुमरी विद्यालय के छात्र और दूसरी ओर, राँची से 200 कि0मी0 दूर गया (बिहार) में लिपि के विशेषज्ञ डॉ० नारायण उराँव की पदस्थापना। किताब प्रकाशन के लिए काथलिक प्रिंटिंग प्रेस, राँची तक पहूँचाने में एक संयोजक की भूमिका मेरे लिए हमेशा ही एक यादगार रहेगा। विपरीत परिस्थिति में तथा कम समय में लिप्यन्तरण कर पुस्तक को सामाजिक चिंतकों के साथ जैक तक पहूँचाया गया और तब 20 फरवरी 2009 को तोलोंग सिकि, लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति की सूचना सार्वजनिक हुई।

इस लिपि के प्रचार–प्रासार हेतु कुछ संस्थागत कार्य भी हो रहे हैं। इन कार्यों में से वर्ष 2010 में *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा*, नामक संस्था का गठन किया गया। इस सभा के अध्यक्ष पद का जिम्मा मुझे सौंपा गया और लगातर मैं अपनी जिम्मेदारी निभा रहा हूँ। महासचिव स्वंय डॉ० नारायण उराँव ने संभाला और एक टीम कार्य भावना से देश के कोने–कोने में भाषा एवं लिपि की बातें कुँडुख़ भाषियों तक पहुँचाने लगे। एक चिकित्सक होने के चलते कई बार *कुँडुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया* के राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ० नारायण नहीं पँहुच पाते, वहाँ मैं एक अध्यक्ष के नाते लोगों तक भाषा–लिपि के तथ्यों को समाज के लोगों के सामने रख पाया। वर्तमान में भी जहाँ जरूरत होती है, वहाँ कुँडुख़ भाषा एवं लिपि के प्रचार–प्रसार हेतु समय निकाल कर लोगों के समक्ष इससे संबंधित बातें रखने का प्रयास करता रहता हूँ।

कुँडुख़ समाज में एक दुधमुँहे बच्चे को भाषा सिखाने की अद्भुत परम्परा है। चिकित्सा विज्ञान मानता है बच्चा सबसे पहले 6वें महीने तक एक आक्षरिक शब्द पा..., बा..., मा. ... आदि सीखता है, फिर 9वें महीने तक द्वी आक्षरिक शब्द – पपा, बबा, ममा इत्यादि सीखता है। इसी तरह 1वर्ष होते–होते कुछ शब्दों को अर्थ सहित सीख लेता है। कुँडुख़ समाज में भी बच्चे को आसान शब्द सिखलाने के क्रम में रोटी को दिखा कर – पपा, भात को दिखा कर – ममा, बोलने के लिए बतलाया जाता है। इसी तरह बच्चे की माँ, बच्चे के पिता को दिखाकर – बबा, बोलने के लिए बतलाया करती है। परन्तु वयस्क लोगों की भाषा में रोटी को असमा, भात को मण्डी तथा पिताजी को बा या बबा कहा जाता है। इस तरह छोटे बच्चे को आसान शब्द सिखलाने हेतु कुँडुख़ समाज में भी अपनी, अलग विधा है। इन सामाजिक पहलुओं तथा भाषा विज्ञान के तथ्यों के अधार पर तोलोंग सिकि वर्णमाला को स्थापित किया गया है जो सामाजिक स्वीकार्यता को बल प्रदान करता है। इन्हीं सब कई तथ्यों को आधार, मानकर व्यंजन वर्णों का आरंभ प, फ, ब, भ, म से किया गया है।

इसी तरह स्वर वर्ण का क्रम इ ए उ ओ अ आ की तरह स्थापित किये जाने का अपना स्वतंत्र आधार है। इस संबंध में तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास पुस्तक में इ ए उ ओ अ आ रखे जाने का आधार बतलाया गया है। इस तर्क से मैं भी सहमत हूँ। एक बच्चा जन्म के बाद सबसे अधिक नजदीक माँ के साथ रहता है। मेरी माँ कहे जाने को कुँडुख़ भाषा में इंगयो कहा जाता है, जो इंगयो शब्द में इ ध्वनि का अटूट संबंध को बतलाता है। इसी तरह मेरे पिता कहे जाने को कुँडुख़ भाषा में एम्मबस कहा जाता है, जो एम्बस शब्द में ए ध्वनि का संबंध को प्रगाढ़ बनाता है। माँ–बाप मिलकर

ईश्वरीय शक्ति को बतलाया करते हैं। ईश्वर को उरबस भी कहा जाता है, जो उरबस शब्द के उ ध्वनि से संबंध का पता चलता है। माँ–बाप के अतिरिक्त सगे–संबंधी भी हैं। सगे–संबंधी को ओरमत कहा जाता है। ओरमत शब्द में ओ ध्वनि का संबंध स्थिति पता चलता है। इसी तरह अद्दीयर का अर्थ वे सभी अर्थात पूर्वज सहित तथा आःलो का अर्थ तमाम मानवेतर जीव–जन्तु एवं प्राकृतिक चीजें। अद्दीयर शब्द का अ ध्वनि एवं आःलो शब्द का आ ध्वनि संबंध है। कुँडुख़ परम्परा भाषा–संस्कृति में रमें हुए लोग इन प्राकृतिक अवदानों के बीच बखुबी जीते और निर्वाह करते हैं। बच्चे के लिए स्वर वर्णों का उच्चारण करना और दुहराना या पुनरावृत्ति को सहज सुलभ करने के लिए युक्ति संगत, सहज बोध और व्यावहारिक हो और सुनकर तथा समझकर पुकार उठे –

इंग्गयो मदहे – इ,	एम्बस मदहे – ए
उबरस मदहे – उ,	ओरमत मदहे – ओ
अद्दीयर मदहे – अ,	आलो मदहे – आ

इन तथ्यों पर डॉ0 नारायण उराँव द्वारा भी अपनी पुस्तक ''तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास'' प्रकाशित संस्करण : 2003 (पृष्ठ 164) में स्पष्ट उल्लेख किया गया है। उनका मानना है जिस तरह बच्चा जन्म के बाद सबसे अधिक माँ के साथ रहता है तथा मेरी माँ के लिए कुंडुख़ में इंग्गयो शब्द का व्यवहार होता है। मां के बाद बच्चे का अधिक लगाव पिता (एम्मबस या मेरे पिता) के साथ, फिर मां–पिता उरबस (ईष्वर) को बतलाते हैं, फिर ओरमत (सभी), फिर अद्दीयर एवं आःलो अर्थात प्रकृति की आदि शक्तियाँ एवं मानवेतर जीव–जन्तु। इस तरह वर्णमाला क्रम – इ, ए, उ, ओ, अ, आ हुआ।

इस प्रकार, ऊपर लिखित स्वर वर्ण 6 (छः) की संख्या में हैं। वैसे, सिर्फ स्वर से, शब्द नहीं बनते। उसके लिए व्यंजन वर्ण का होना आवश्यक है। हमारे आदिवासी परम्परा में कोई भी कार्यक्रम का आरम्भ एक विधि–विधान से होता है जिस धार्मिक अनुष्ठान को डण्डा–कट्टना या पल्लकाँसना कहते है। यहीं से Custom System Tradition की पुष्टि होती है और शब्द के उच्चारण हेतु स्वर के साथ व्यंजन की पहचान स्वतः विद्यमान हो उठता है –

पल्लकासना	मदहे	प
फग्गु	मदहे	फ
बईसाक	मदहे	ब
भाख (खण्डना)	मदहे	भ
माघ	मदहे	म – इत्यादि।

अतएव अपने पूर्वजों, माता–पिता एवं धर्मेस को हमलोग सबकुछ समर्पित करें जो उनकी दवले ओहमा को याद करें और गुनगुनाएँ –

इंग्गयो एम्बस उरबस नु
दवले ओहमा, दवले ओहमा
धरमेस ओरे नंज्जस ओरमत गे – 2
धरमेस ओरे नंज्जस ओरमत गे – 2
धरमेस ओरे नंज्जस अद्दी नू – 2
बरा ओल्लग्गा – 2
ओरमा आःलर आःलोत नाम
बरा पल्लकाँसा ओरमा आःलर आलोत नाम
बरा भाख खण्डा ओरमा आःलर आलोत नाम
बरा डण्डा–कट्टा ओरमा आःलर आलोत नाम,
ओरमा आःलर आःलोत नाम – 3

इस प्रकार दवले ओहमा पूरखों (पूर्वजों) से आषिष माँगने की एक प्रार्थना है। यही दवले ओहमा पूर्वजों को याद करने एवं श्रद्धांजलि चढ़ाकर उनसे बरकत पाने की धरोहर है। अब इस धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित एवं हस्तांतरित करने की एक जोड़ बन गई जैसे कि स्वर और व्यंजन की 'संधि' बन कर ''दवले ओहमा'' में पल्लकासना, भाख खण्डा एवं डंडा–कट्टा अन्योन्याश्रय ही आदिवासी संस्कृति की आध्यात्मिकता है। आध्यात्म की अभिव्यक्ति आदिवासी समाज में छोटे–बड़े प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कोई भी अनुष्ठान धार्मिक कार्यों के पहले सबसे बड़ी विधि डंडा–कट्टा किया जाता है।

इसी तरह, ओड़गु का मतलब ''सामर्थ्यवान'' से है अर्थात् अन्तस धक्–धक् (अन्तःकरण का धक्–धक) के साथ दिल के ऊपर दोनों हाथ जोड़ते हुए अंगुठा से मुंह का स्पर्श कर (अख़आ–बल्ला) ओड़ताअ़ना (सकवाना) और माथे का स्पर्श कर उरमिन ओड़गु धरमे (सर्वशक्तिमान ईश्वर) की सर्वभौमिकता की स्वीकृति को इंगित करना है –

ओङना धरमे बंग्गायो।
उङगु धरमे बंग्गायो।।
उर्मी ऊङुग धरमे बंग्गायो।।।

उपरोक्त "ओड्गु–ओहरा" धर्मेस को आह्वान करने एवं उनकी मर्यादित मेरख़ा के सिंघासन के सत्ते ही बेल कण्डों पर विराजमान को सम्मोहन से भक्ति–भाव में पुकारना है। इससे वह समाज द्वारा नियोजित व्यक्ति अपने अन्तःस्थल एवं आत्मा की आवाज में धर्मेस के सामने अपने–आप का प्रायश्चित करते हुए महिमा गान करता है।

इस तरह से तोलोङ सिकि को सत्यापित करने के लिए परम्परा (Trdition) एवं प्रेरणा (Inspiration) अति आवश्यक है। पारम्परिक एवं आध्यात्मिक आधार के लिए प्रतिस्थापित तथ्यों का जिक्र स्मरणीय रहे एवं दैवी प्रेरणा अर्थात् Inspiration को व्यक्त करते हुए दैवी संयोग का दिव्य–दर्शन डंडा–कट्टा का संदर्भ भी याद रहे। तोलोङ सिकि की परिभाषा के लिए संकेत एवं चिन्ह की परिकल्पना लाजिमी है तोलोङ, Ethnic भाषा समूह में एक परिधान है जिसे पारम्परिक वेषभूषा की अभिव्यक्ति से प्रयुक्त है।

परिभाषा :– पारम्परिक पोषाक, सामाजिक संकेत एवं सांस्कृतिक चिन्हों के प्रयोग के कलात्मक अभिव्यक्ति तथा चिन्हों के प्रयोग से बनी कलाकृति की आकृति को लिपि (सिकि) कहते हैं जिसकी अभिव्यक्ति में स्वर और व्यंजन से साहित्य का निर्माण होता है, जो तोलोंग सिकि के प्रतिष्ठापन अवधारणा को अस्तित्व देती है एवं आस्था की प्रकृति को दृढ़ करती है।

गांव–समाज में बच्चों के बीच बड़े–बुजूर्ग गाया करते हैं। सुबह–संबह मुर्गे की बोली के माध्यम से गीत यह हैं –

1. छोटे–मोटे कोकरो, कोकोरोम्बो चींःख़या,
   चोअय बहीन चुंज्जा गे ब'ई, दे।
   चोआ भईया चुंज्जा गे ब'ई।।

2. उड्डू नू ख़ेस्स र'ई, कोंःड़ा नू कंःतेर,
   चोअय बहीन चुंज्जा गे ब'ई, दे।
   चोअय बहीन चुंज्जा गे ब'ई।।

3. अक्सी नू पगसी प'ई, ओहारी नू उगता,
   चोआ भईया गोहला उईया कला, दे।
   चोअय बहीन एड़पा बलिन ख़ोंःड़अय।।

4. बचआ गे पुथी र'ई, टूःड़ा गे पेंच्छो,
   गुचय बहीन लूरकुड़िया कालोत, दे।
   गुचा भईया धुमकुड़िया कालोत। ।

साहित्य–निर्माण के साथ आने वाले समय का सामना करने हेतु उत्प्रेरक विचार एवं भावना इस प्रकार हैं –

1. अयंग कत्था भखा नमहँय तली रे
   दुलारो अमके मोधोरआ इदिन बचआ गे,
   बलारो अमके मोधोरआ, मानिम टूड़ा गे।

2. भखा रुपे गाड़ी संस्कृतिन हु'ई रे
   ए गेच्छा तान काली – बर'ई रे,
   आ गेच्छा तान हु'ई – काली रे ।

3. संस्कृति भखन तंगआ नुम पोस'ई रे
   बेगर भखा गही संस्कृति मल मनी रे
   बेगर भखा गही संस्कृति मलम मनी रे।

4. लिपि बेगर भखा – भखा मला मनी रे
   बोल ती बोली – बोली रईह काली रे,
   बोल ती बोली – बोली रईह काली रे।

5 तोलोंग सिकि नमहँय कुँड़ुख़ गही लिपि रे
   झारखण्ड, बंगाल, ही सरकार नु र'ई रे,
   झारखण्ड, बंगाल, ही सरकार नु र'ई रे।

6. भखा नमहँय परदो, 8वीं अनुसूचि नु कोरओ रे
   29–30 आईन तिंग्गी, 350(B) विधान तिंगी रे,
   भखा नमहँय परदो, 8वीं अनुसूचि नु कोरओ रे।

इस तरह से उपरोक्त गीत, पद्य में व्यक्त अभिव्यक्ति से यह कथन सार्थक है कि भाषा, संस्कृति का वाहक है एवं संस्कृति भाषा का पोषक। इस गद्य में स्वर और व्यंजन द्वारा साहित्य निर्माण में भाषा–बोध का समन्वय प्रतिध्वनित एवं प्रतिविंबित है। आईये हम सभी मिलकर आने वाले समय का सामना करने के लिये तैयारी करें और गुनगुनाएँ –

1. भखा नम्हंय रओ होले उज्जोत बिज्जोत ठउकम भईया,
   बरा भईया संगे–संगे मिली–जुली भखन बछाबओत, रे।

2. गुचा अयो–बबा, बरा भईया–बहीन, ओरमत संगे–सगे,
   तोलोंग सिकि सिखिरओत अरा अयंग कत्थन बछाबओत।

*****

60. आदिवासी भाषा एवं लिपि विकास में पद्‌मश्री डॉ० रामदयाल मुण्डा के उत्प्रेरक विचार

मैं, एच.ई.सी., राँची से कनीय अभियंता के पद से सेवानिवृत हुआ। इसी समय अंतराल में वर्ष 1993–94 के लगभग मुझे कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि के बारे में जानकारी मिला। इस लिपि के विकास कार्य में जुड़े पेशे से चिकित्सक डॉ० नारायण उराँव द्वारा कुँड़ुख़ की लिपि तोलोंग सिकि को समाज के सामने प्रस्तुत किया गया था। इस नई लिपि को देखकर मैं उत्साहित हुआ और नई लिपि के विकास के कार्य में एक सहयोगी की तरह डॉ० नारायण उराँव के साथ उठने बैठने लगा। इसी कड़ी में पद्‌मश्री डॉ० रामदयाल मुण्डा जी के साथ हुई भेंटवार्ता में कुछ सामयिक एवं शिक्षाप्रद बातों के कुछ अंश, आप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है –

**झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन के पुरोधा पद्‌मश्री डॉ0 रामदयाल मुण्डा जी से मिलने उनके आवास पर 05 मई 1997 को डॉ0 नारायण उराँव, श्री विवेकानन्द भगत एवं मैं (मंगरा उराँव) पहुँचे। शिष्टाचार पूरा होने के बाद डॉ0 उराँव द्वारा झारखण्ड की भाषा, साहित्य एवं लिपि के विकास में डॉ0 मुण्डा जी से मार्ग दर्शन एवं सुझाव हेतु निवेदन किया गया और कई सामयिक बातें भी हुईं। बातचीत के क्रम में डॉ0 उराँव ने डॉ0 मुण्डा जी से एक व्यक्तिगत सवाल किया – ''राउरे, मिनिसोटा यूनिवर्सिटी, अमेरिका में प्रोफेसर कर नौकरी छोईड़ के राँची का ले आली ?'' इस प्रश्न पर, मुण्डा जी ने कहा – राउरे मन ई बात के नी बुझब ! जे खन हामर जगन प्रस्ताव आलक, जनजातीय भाषा विभाग कर अध्यक्ष/निदेशक कर रूप में विभाग चलायक ले, से खन एके गो बात हामर मन में आलक कि एखने आपन देश, माटी आउर आदिवासी समाज कर श्रृण चुकाएक कर मोका हय। ई बेरा, झारखण्ड आन्दोलन के जगाएक कर बेरा हय। आउर इकर ले नवजवान मनकर ग्रेजुएट फौज तेयार करेक होवी। जोन खन हमर आदमी ग्रेजुएट होय जाबँय, से खन उ मन आपन बात बोलेक सीखबँय, तब अलग राईज कर आन्दोलन मजबूत होवी अउर नया राईज मिलले, उ मन राईज चलाय ले अगुवा बनबँय। एसन सोईच के हम अमेरिका कर नौकरी के छोईड़ के चईल आली। हियाँ आवल कर बाद झारखण्ड क्षेत्र कर दौरा कईर के 5 गो आदिवासी भाषा और 4 गो क्षेत्रीय भाषा के मिलाय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग कर गठन करल गेलक। अइसन में, झारखण्ड क्षेत्र कर लगभग सउबकर भाषायी प्रतिनिधित्व होवत रहे, आउर हमरे एहे लाइन में काम करेक लागली। डॉ0 उराँव के कहा – राउर ई त्याग के हमरे बुईझ गेली। देश आउर आदिवासी समाज राउरे के हमेशा इयाइद करी।

**पूर्व कुलपति डॉ० रामदयाल मुण्डा जी के साथ दूसरी भेंटवार्ता 15 मई 1999 को हुई। इस भेंटवार्ता में डॉ० नारायण ने मुण्डा जी से प्रश्न किया कि – आने वाले समय में आदिवासी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए एक सर्वमान्य लिपि की आवश्यकता होगी। इस स्थिति में यदि तोलोंग सिकि लिपि को आदिवासी भाषा की लिपि कहा जाता तो बेहतर होता। इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले वे मुस्कुराये और बोले – ऐसा प्रश्न ठीक नहीं है। झारखण्ड क्षेत्र में तीन समूह की आदिवासी भाषाएँ हैं – (1) आष्ट्रिक भाषा समूह,(2) द्रविड़ भाषा समूह तथा (3) आर्य भाषा समूह। द्रविड़ भाषा समूह वाले लोग तोलोंग सिकि का विकास कर लिये, इसके लिएद्रविड़ समूह वाले लोगों को बहुत–बहुत बधाई। अब दूसरे भाषा समूह वाले भी अपनी भाषा समूह के लिए, लिपि विकसित करेंगे।

**झारखण्ड अलग प्रांत आंदोलन के विचारक एवं वरिष्ठ नेता पद्‌मश्री डॉ० रामदयाल मुण्डा कहा करते थे – जब ले आदिवासी समाज कर धुमकुड़िया नी जागी अउर अख़ड़ा नी गहजी तब ले आदिवासी मनकर उबार नखे। एखन कर बेरा में अखड़ा जगन धुमकुड़िया होवे अउर धुमकुड़िया में किताब–कॉपी, पुस्तकालय संगे समाचार पत्र अउर छोटमोट सर्दी–बुखार कर टिकिया संगे–संग मरहम पट्‌टी कर सामान भी रहेक चाही।

**एखन कर बेरा में आदिवासी मन के देश कर मुख्य धारा संगे जुड़के चाही, संगे संग आपन पूर्वज मनकर देवल भाषा संस्कृतिक के बचाएक और जोगाएक ले भी काम करेक चाही, तबे आदिवासी समाज कर विकास पूरा होवी।

– श्री मंगरा उराँव,

दिनांक – 12 फरवरी 2018 न्यू एरिया, मोरहावादी, राँची।

61. राज्य सरकार की मातृभाषा शिक्षा योजना : कल और आज

– डॉ0 नारायण भगत

कहा जाता है – प्रत्येक आदिवासी समाज के पास उसकी अपनी विशिष्ट भाषा एवं संस्कृति है। पर क्या, आज के दौर में सभी आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट पहचान को बरकरार रख पा रही है। यदि नही, तो क्यों ? यदि बचाया जाना चाहिए, तो कैसे ?

इस लेख के माध्यम से हम झारखण्ड की आदिवासी भाषाओं के बारे में चर्चा करेंगे। देश की आजादी के बाद देश एवं राज्य में नई शिक्षा नीति लागू हुई। फिर भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमिशन) के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित की गई। इन सभी नीतियों में भाषा एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। झारखण्ड में भी झारखण्ड शिक्षा नीति लागू है। (**अनुलग्नक – 1 से 26, पृ0 8 से 33)

देश की आजादी के बाद बिहार सरकार के शिक्षा विभाग का संकल्प संख्या – 645 E. R. of Ranchi, 13th August 1953 के अवलोन से पता चलता है कि सरकार द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दिये जाने हेतु क्रमशः हिन्दी, बंगला, उड़िया, उर्दू, मैथिली, संथाली, उराँव, हो, मुण्डारी एवं अंग्रेजी (एंग्लोइंडियन के लिए) कुल 10 (दस) भाषाओं को चुना गया। इनमें सं 4 (चार) जनजातीय भाषाएँ हैं। पूर्व में बिहार सरकार, शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों में पठन–पाठन हेतु अनेकों अधिसूचना एवं आदेश जारी किया गया। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं (पुस्तकों में छपे अभिलेख के अनुसार) :–

1. Gorenment of Bihar, Education Department Resolution No. - 645 E. R. of Ranchi, 13th August 1953. (**अनुलग्नक –15)

2. Copy of letter No. VII/G14-C2/55E-6124 dated 20.12.1956, from Sri N.D.J.Rao, Esqr. I.A.S. Special officer to Gorenment, Education department to all the Divisional Inspector of School. (अनु0–20).

3. No. VII 12-04/60-5508 Gorenment of Bihar, Education department, Resolution. Patna, the 11 October, 1961. (**अनुलग्नक – 16).

4. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्र संख्या – 850, दिनांक 05.02.1960.(**अनुलग्नक – 17).

5. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्रांक – 3242, दिनांक 28.10.1971. (**अनुलग्नक – 18).

6. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्रांक – 3415, दिनांक 07 जुलाई 1973. (**अनुलग्नक – 01).

7. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्रांक – 312, दिनांक 15.01.1974. (**अनुलग्नक – 19) .

8. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, संकल्प संख्या – 2/4830, दिनांक 23.11.1974. (**अनुलग्नक – 05).

9. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्रांक – 648, दिनांक 08.04.1976. (**अनुलग्नक – 20).

10. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्र संख्या – 2842, दिनांक 23.12.1976. (**अनुलग्नक – 06).

11. बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, संकल्प संख्या – 84, दिनांक 22.01.1978. (**अनुलग्नक – 07).

उपरोक्त विभागीय पत्रों एवं पत्राचारों के संबंध में समीक्षा किये जाने पर, यह प्रश्न उठता है कि –

1. इन प्रावधानों के रहते हुए आखिर आदिवासी भाषा का विकास अबतक क्यों नहीं हुआ ?

2. क्या, सरकार नहीं चाहती थी कि आदिवासी समाज के बीच मातृभाषा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा दी जाय ?

3. क्या, खुद आदिवासी समाज के लोग नहीं चाहते हैं कि उनके बीच मातृभाषा अथवा आदिवासी भाषा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा दी जाय ?

इन बातों को समझने के लिए यह जानना होगा कि शिक्षा व्यवस्था किन लोगों के हाथों में है तथा इसका प्रचार–प्रसार का तरीका कैसे है ? अबतक भारत सरकार नियम कानून में शिक्षा व्यवस्था का संचालन सरकारी नियमों के अनुकूल मुख्य रूप से निम्न प्रकार से संचालित किया जा रहा है – 1. सरकारी स्कूल–कॉलेज। 2. गैर सरकारी स्कूल–कॉलेज। ये गैर–सरकारी स्कूल कॉलेज या तो प्राइवेट रूप से चल रहे हैं या धार्मिक अल्पसंख्यक या भाषायी अल्पसंख्यक के रूप में हैं। इन गैर–सरकारी स्कूलों समूह में आदिवासियों के स्कूल नहीं के बराबर है।

वर्तमान झारखण्ड सरकार ने सरकारी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा हेतु 1ली कक्षा में हिन्दी एवं अंग्रेजी विषय को आवश्यक कर रखा है। उसके बाद तीसरी भाषा विषय

के रूप में मातृभाषा विषय का प्रावधान है, किन्तु आदिवासी क्षेत्रों में अबतब प्राथमिक स्तर पर जनजातीय भाषा शिक्षकों की बहाली नहीं हो पायी है। झारखण्ड सरकार में कई बार प्रयास भी हुए। 1ली कक्षा से 5वीं कक्षा तक कँड़ुख़ (उराँव), मुण्डारी, हो, एवं संताली भाषाओं में पुस्तकें भी छपी पर इन विषयों के शिक्षकों की बहाली नहीं होने पर पाठ्य पुस्तकें बेकार हो गईं। पता नही, सरकार इसके लिए गंभीर है भी या नहीं ! वर्ष 2002 में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी के समय आदिवासी भाषा की पढ़ाई के हिसाब से एक बढ़िया सिलेबस तैयार हुआ था, पर पता नहीं किस सोच के तहत वर्तमान सरकार ने उसे अनदेखी कर, एक नया पाठ्यक्रम घोषित कर दिया है, जिसमें +2 स्कूलों के पाठ्यक्रम में आजादी के बाद से चली आ रही जनजातीय भाषा पढ़ाये जाने के संकल्प को पूरी तरह नकार दिया गया है। पता नहीं, आदिवासी समाज के बुद्धिजीवी और आदिवासी राजनीतिज्ञ इस बारे में क्या सोच रहे हैं, वह तो समय ही बतलाएगा ? .

इधर सामाजिक सहयोग से कुँड़ुख़ भाषा विषय की 9वीं एवं 10वी कक्षा हेतु पाठ्यपुस्तक छपी और जिसे शिक्षा विभाग ने मान्यता दे रखा है। पर 6वीं, 7वीं एवं 8वीं कक्षा हेतु पाठ्य पुस्तक के लिए न तो सरकारी प्रयास हो पाये हैं न ही सामाजिक प्रयास। इस स्थिति में अगर कोई प्राईवेट स्कूल अपने स्कूलों में भाषा की पढ़ाई कराना भी चाहें तो पुस्तकों के आभाव में चला नहीं पा रहे हैं।

धार्मिक अल्पसंख्यक स्कूलों में से ईसाई अल्पसंख्यक स्कूलों का अपना माजरा है। वैसे ईसाई अल्पसंख्यक स्कूल संचालकों का दावा है कि आदिवासी भाषा–भाषी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। इस सच्चाई से, अनदेखा नहीं किया जा सकता है। पर मातृभाषा के माध्यम से प्रथमिक शिक्षा के प्रावधानों को ईसाई मिश्नरियों ने भी पूरी तरह नजर अंदाज किया है। कहने के लिए तो इन संस्थाओं के माध्यम से अनेकानेक साहित्यिक पुस्तकें छपी हैं, पर वह, दिखावे के लिए रह गई हैं। बिहार सरकार, शिक्षा विभाग, पत्रांक – 3242, दिनांक 28.10.1971 के माध्यम से यह विभागीय निर्देश दिया गया था, पर इस आदेश का पालन नहीं हो पाया। कहा जाता है कि अल्पसंख्यक स्कूलों में, प्रशासनिक व्यवस्था के नियमों को छोड़कर पाठ्यक्रम आदि में सरकारी नियमों का पालन किया जाता है। पर आदिवासी भाषा के पठन–पाठन करवाये जाने में अबतक उस संकल्प पर खरा नहीं उतर पाये। कहने को तो ईसाई आदिवासियों का दावा है कि उनके बहुत सारे स्कूल कॉलेज हैं। पर हकिकत में वे स्कूल, आदिवासी एवं आदिवासियत के विकास के लिए नहीं दिखाई पड़ते हैं।

तीसरी बड़ी सरकारी शिक्षा संचालन व्यवस्था कल्याण विभाग, झारखण्ड सरकार का है। पूरे झारखण्ड में लगभग 100 से अधिक आवासीय विद्यालय है। जहाँ सिर्फ आदिवासी बच्चे पढ़ते हैं। इन स्कूलों में भी अबतक की जानकारी के अनुसार, मातृभाषा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा दिये जाने का कार्य आरंभ नहीं हो पाया है। कहने के लिए तो जनजातीय कल्याण के नाम पर अरबों रूपये खर्च हो रहे हैं, पर क्या, कल्याण के नाम पर सिर्फ छात्रवृति बांटे जाएँगे, या फिर मातृभाषा माध्यम से प्राथिमक शिक्षा देने का अलख जगाकर, आदिवासा भाषा–संस्कृति को बचाने एवं जगाने का साहसिक कार्य भी किये जाएंगे ?

इन परिस्थितियों में हमें आंदोलनकारी छात्र एवं छात्रनेताओं की बात याद आती है, जब वे झारखण्ड बनने से पहले आपस में बातें किया करते थे – अगर कल के दिन झारखण्ड बनेगा तो सिस्टम वही रहेगा, जो बिहार में है। अर्थात मंत्री से लेकर संतरी तक और टेक्नोक्रेट से लेकर व्यूरोक्रेट तक वही पुरानी व्यवस्था ही रहेगी, तो फिर हम यह आन्दोलन किसके लिए कर रहे हैं। पढ़ा–लिखा वर्ग तो कहीं भी नौकरी या व्यापार कर लेगा। हमारे गाँव–समाज के लोगों को क्या मिलेगा, जो इस आन्दोलन में जूझ रहे हैं। आदिवासी समाज के पास अपनी भाषा है, संस्कृति है, अपना रीतिरिवाज है। अगर आन्दोलन के माध यम से यह धरोहर बच जाता है तो हम आन्दोलन को सफल मानेंगे। इसके लिए भाषा को बचाना होगा। भाषा बचेगी तो संस्कृति भी बचेगी और भाषा तभी बचेगी जब भाषा की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक हो और आज के भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी आदिवासी भाषा को बचाने एवं निखारने के लिए अपनी भाषा की लिपि का होना आवश्यक है। समाज की पहचान भाषा से है और भाषा की पहचान उसकी साहित्य–लिपि से है!!

शिक्षा विभाग द्वारा जारी अधिसूचना की छाया प्रति आम जनों के समक्ष प्रस्तुत है –

3. अंग्रेजी	4	4
4. गणित	6	5
5. विज्ञान	6	8
6. नागरिक शास्त्र एवं नैतिक शिक्षा	2	नागरिक शास्त्र एवं इतिहास-3
7. इतिहास एवं भूगोल	4	भूगोल-3
8. शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा	3	2
9. कार्यानुभव	3	3
10. चित्रांकन एवं संगीत	2	2

घंटों के हिसाब से उपर्युक्त समय 26 घण्टों का होता है। इसके अतिरिक्त कुछ समय प्रतिदिन कार्यक्रम यथा—समाचार वाचन, आवश्यक सूचनाएँ आदि में लगाए जाएंगे।

Government of Bihar, Education Department Resolution No. 645 E. R. of Ranchi, the 13th August, 1953.

The State Government have recently examined fully and afresh their policy with regard to the medium of instruction in schools and inspite of the sweeping criticisms that have been sometimes made by certain sections, they have not found the policy hitherto followed either lacking in generosity towards the linguistic minorities or departing from the general principle adopted on this matter by the Government of India.

However, this re-examination has revealed the necessity for any ambiguity and remove all doubts on the subject. In accordance with their general policy of giving increasing facilities to linguistic minorities particularly in cultured and educational matters, Government had already given full latitude to such minorities to use their own languages as the medium of instruction in schools started by them even upto the Matriculation standard. They have now decided to further liberalise their policy by allowing an increase by two years of the period of schooling even in the general schools during which the medium of instruction in non-language subjects shall be the mother tongue, the result being that throughout the primary and the middle schools stages, that is for the first eight years, the medium of instruction shall be the mother tongue subject to such adjustments as are indicated below. Government hope that this major liberalisation of policy will remove any difficulties that might have been experienced by any section of people. The policy with regard to the medium of instruction shall be as follows.

(a) The medium of instruction in non-language subjects upto the middle stage i.e. up to class VII in Traditional Schools and upto class VIII in Basic and Sarvodaya Schools, should be the mother tongue of the pupils concerned. As recommended by the Conference of Education Ministers a school in which the total number of students, whose mother-tongue is other than the language which is used as the medium of instruction in that school, is 40 and above or in any individual class the number of such students is 10 and above, the authorities of the school shall be expected to provide at least one teacher who will take classes in non-language subjects through the medium of that language.

(b) The languages to be accepted as mother tongue for the purposes of this resolution will be Hindi, Bengali, Oriya, Urdu, Maithili, Santhali, Oraon, Ho, Mundari and for Anglo-Indian pupils, English.

प्रतिलिपि पत्रांक—आई/भ 7-08/75 शि० 648 दिनांक 8-4-76, प्रेषक—श्री जे० पी० बक्सी, उप शिक्षा निदेशक (विद्यालीय शिक्षा) बिहार, प्रेषित - सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी सभी जिला शिक्षा अधीक्षक ।

विषय—राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में स्वीकृत अल्पभाषा की शिक्षा के माध्यम के रूप में पढ़ाई ।

उपर्युक्त विषय पर सरकारी संकल्प संख्या 645 ई० आर०, दिनांक 10-3-65 (प्रतिलिपि संलग्न) में निहित आदेशों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुए निदेशानुसार कहना है कि राज्य सरकार ने बंगाली, उर्दू, उड़िया, मैथिली, संथाली, उरांव, मुंडारी एवं हो को क्षेत्रीय अल्प भाषा-भाषी क्षेत्रों में माध्यम शिक्षा की मान्यता दी है ।

अतः कृपया बताने की कृपा करें कि आपके अधीनस्थ प्राथमिक विद्यालयों में कितने विद्यालयों में किस अल्प भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है । उपर्युक्त सूचना भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त को भेजनी है, अतः इसे प्राथमिकता देकर उपर्युक्त सूचना एक हफ्ते के अन्दर भेजने की कृपा करें ।

Copy of letter No. VII/G14-C2/55E-6124 dated 20-12-1956 from Sri N. D. J. Rao., Esqr., I.A.S., Special officer to Government, Education Department; To all the Divisional Inspectors of Schools.

Subject :—Medium of instruction and examination in Junior Training Schools in the State.

It has been brought to the notice of Government that no uniform practice is being followed on the above subject. Government have been pleased to decide the followtng.

(i) The medium of instruction in all the Junior Training Schools shall be simple Hindi.

(ii) Hindi shall be taught as a compulsory subject and for those whose mother-tongue is other than Hindi special additional classes in Hindi shall be held to enable them to gain appreciable knowledge in the same. This intensive training in Hindi should be started from the beginning of the session and continued for three months or more according to the attainment of the pupil-teachers concerned.

(iii) The pupil-teachers whose mother-tongue is other than Hindi should be given the option of maintaining their records in their mother-tongue.

(iv) The pupil-teachers should also be given the option of writing their answers in their mother-tongue.

2. Government also feel that instructions issued in the past in the respect of bilingual teaching in the Junior Training Schools, have not been fully implemented. It is therefore, ordered that the following instructions should be followed rigorously from now onwards :—

(i) In every Junior Training School besides Hindi a second mother-tongue as accepted in Government Resolution no. 645ER of the 10th August, 1953 should be invariably taught.

1. प्राथमिक शिक्षा स्तर— (प्राथमिक एवं मध्य स्तर 8 वे वर्ग तक)
2. माध्यमिक शिक्षा स्तर— (वर्ग 9 से 10 तक)
3. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर— (वर्ग 11 एवं 12 तक)

इसके परिणाम स्वरूप विद्यालयों का वर्गीकरण निम्न प्रकार होगा—

(क) वर्ग 1 से 5—	(प्राथमिक विद्यालय)
(ख) वर्ग 1 से 8—	(मध्य विद्यालय)
(ग) वर्ग 6 से 8—	(मध्य विद्यालय)
(घ) वर्ग 6 से 10—	(माध्यमिक विद्यालय)
(ङ) वर्ग 11 से 12—	(इन्टरमीडिएट महाविद्यालय)
(च) वर्ग 9 से 12—	(माध्यमिकेत्तर विद्यालय)
(छ) वर्ग 6 से 12—	(माध्यमिकेत्तर विद्यालय)

2. कोठारी आयोग, एन० सी० ई० आर० टी० तथा ईश्वर भाई जे० पटेल समिति की अनुशंसा को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में निम्नांकित विषयों को रखा गया है—

(1) मातृभाषा—	वर्ग 1 से मातृभाषा के रूप में भारत के संविधान की अनुसूची 8 में सम्मिलित सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त मैथिली, संथाली, उराँव, हो, मुंडारी तथा एंगलो इण्डियन विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी को भी मान्यता होगी।
(2) द्वितीय भारतीय भाषा—	वर्ग 1 से जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं होगी, उनके लिए राष्ट्रभाषा (हिन्दी) और जिनकी मातृभाषा हिन्दी होगी उनके लिए भारत के संविधान की अनुसूची 8 में सम्मिलित कोई भारतीय भाषा, जिनमें संस्कृत भी सम्मिलित होगी। अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों को छुट होगी कि वे हिन्दी निम्न स्तर (राष्ट्रभाषा) अथवा हिंन्दी उच्च स्तर (मातृभाषा) का अध्ययन करेंगें।
(3) अंग्रेजी—	वर्ग 6 से
(4) गणित—	वर्ग 1 से
(5) विज्ञान—	वर्ग 1 एवं 2 में पर्यावरण का अध्ययन के रूप में वर्ग 3 से 5 तक, सामान्य विज्ञान के रूप में, तथा वर्ग 6 से 8 तक पृथक-पृथक विषय—भौतिकी, रसायन एवं जीव विज्ञान के रूप में।
6. समाजिक विज्ञान—	वर्ग 1 एवं 2 में पर्यावरण का अध्ययन के रूप में वर्ग 5 से 5 तक समाज अध्ययन के रूप में तथा वर्ग 6 से 8 तक भूगोल, इतिहास एवं नागरिक शास्त्र के रूप में।
(7) समाजोपयोगी— कार्य तथा सामुदायिक सेवा।	वर्ग 1 से
(8) ललित कला—	(संगीत नृत्य तथा चित्रांकन) वर्ग 1 से
(9) शारीरिक शिक्षा एवं खेल-कूद	वर्ग 1 से

(10) वैकल्पिक विषय— वर्ग 6 से संस्कृत, अरबी, फारसी, मैथिली, संथाली, हो, उरांव तथा मुंडारी में से कोई एक विषय। वैकल्पिक विषय के रूप में वह भाषा नहीं पढ़ाई जा सकती है जो मातृभाषा अथवा द्वितीय भाषा के रूप में ली गई हो। वैकल्पिक विषय के वैसे विषय जो मातृभाषा अथवा द्वितीय भारतीय भाषा में सम्मिलित है, का पाठ्यक्रम उनसे भिन्न होगा। यह विषय अनिवार्य नहीं होगा।

A copy of the Resolution No. 645—E, dated the 10th August, 1953, from Government of Bihar in the Education Department received with Memo. No. II/M4-02-53/29646, dated the 26th August, 1953 from the Deputy Director of Education (General), Bihar.

"The State Government have recently examined fully and afresh their policy with regard to the medium of instruction in schools and inspite of the sweeping criticisms that have been some times made by certain sections, they have not found any higher school taking ingenerosity towards the linguistic minorities or departing from the general principle adopted on this matter by the Government of India.

However, this re-examination has revealed the necessity for a fresh enunciation of the policy in a manner which may leave no room for any ambiguity and remove all doubts on the subject. In accordance with their general policy of giving increasing facilities to linguistic minorities particularly in cultural and educational matters Government have already given full latitude to such minorities to use their own language as the medium of instruction in schools started by them even up to the Matriculation standard. They have now decided to further liberalise their policy by allowing an increase by two years of the period of schooling even in the general schools during which the medium of instruction in non-language subjects shall be the mother tongue the result being that throughout the primary and Middle school stages, that is, for the first eight years, the medium of instruction shall be the mother tongue subject to such adjustments as are indicated below Government hope that this major liberalisation of policy will remove any difficulties that might have been experienced by any section of people. The policy with regard to the medium of instruction shall be as follows—

(a) The medium of instruction in non-language subject up to the Middle stage, i.e. upto class VII in traditional schools and up to class VIII in basic Sarvodaya schools, should be the mother tongue of the pupils concerned. As recommended by the conference of Education Ministers schools in which the total number of students, whose mother tongue is other than the language which is used as the medium of instruction in that school, is 40 and above or in any individual class the number of such students, is 10 and above, the authorities of the schools shall be expected to provide one teacher who will take classes in non-language through the medium of that language.

(b) The language to be accepted as mother tongue for the purpose

लेखक : विभागाध्यक्ष, कुँड़ुख़, डोरण्डा कॉलेज, राँची।

Sarvodaya Schools, should be the mother-tongue of the pupils concerned. As recommended by the Conference of Education Ministers, a school in which the total number of students, whose-mother-tongue is other than the language which is used as the medium of instruction in that schools is 40 and above or in any individual class the number of such students is 10 and above, the authorities of the school shall be expected to provide at least one teacher who will take classes in non-language subjects through the medium of that language.

(b) From class VIII onwards (and in the case of post-Basic schools from class IX onwards), the medium of instruction in all non-language subjects, should be Hindi. But in High Schools run by the linguistic minorities there may be no objection to any other language being the medium of instruction. In the latter schools, however, provision should be made for teaching through the medium of Hindi for Hindi-speaking students if their number be 10 and above in any class, or 40 and above in the four upper classes of the school.

(c) Hindi should be a compulsory subject in all schools without exception from class IV onwards and all local bodies private schools should be directed either to engage for every Middle School or Upper Primary School, an additional Hindi teacher or depute one teacher for a three months or nine months course in Hindi language at the centres being run by the Government under the scheme for the education of the Hindi speaking people in backward areas. Similarly, a duly, qualified Hindi teacher should be engaged for teaching Hindi in the Hindi School Classes to students whose mother tongue is a language other than Hindi.

(d) The School Examination Board should, as far as possible, frame rules regarding the medium of examination in non-language subjects, in conformity with the general policy enunciated in this Resolution and in the case of private candidates also, grant the necessary facilities.

प्रतिलिपि पत्र संख्या—7/सी 8-01/60 शि० 2679 दिनांक 4-6-1960, प्रेषक—श्री सं० मो० अहमद, अपर लोक शिक्षा निदेशक, बिहार, प्रेषित—सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी (नाम से)।

विषय—प्राथमिक वर्गों में मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई के सम्बन्ध में।

निदेशानुसार बिहार सरकार की भाषा नीति के सम्बन्ध में सरकारी संकल्प संख्या 645 दिनांक 10 अगस्त, 63 की एक प्रति संलग्न करते हुए कहना है कि गत बहु-उद्देशीय परियोजना कांफ्रेन्स में जो 25-26 सितम्बर, 1959 में हुआ था, सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया गया था कि कतिपय परियोजना खंडों में जिला अधिकारियों ने आदेश दिया है कि निम्न प्राथमिक वर्गों में भी कुछ हिन्दी तथा देवनागरी लिपि में ही पढ़ाया जाए, किन्तु कोई ऐसा आदेश विभाग से निर्गत नहीं किया गया है। अतएव आपसे अनुरोध है कि संलग्न संकल्प को ध्यान में रखते हुए ही कोई आदेश दें जिससे अल्पसंख्यक वर्गों को शिकायत का मौका न मिले।

प्रतिलिपि पत्र संख्या—7/एफ 6-01/59 शि०-850 दिनांक 5-2-1960, प्रेषक—श्री सं० मो० अहमद, अपर लोक शिक्षा निदेशक, बिहार, प्रेषित—सभी क्षेत्रीय शिक्षोपनिदेशक।

विषय— स्कूलों में शिक्षा का माध्यम।

उपर्युक्त विषय पर इस विभाग के पत्रांक 2230 दिनांक 13-4-59 के क्रम में मुझे कहना है कि प्राथमिक, मिडिल एवं हाई स्कूलों में अल्प भाषा-भाषी लोगों के बच्चों के स्कूल में प्रवेश में निम्नलिखित आदेशों का कार्यान्वयन किया जाए।

प्रतिलिपि पत्र संख्या —2/एम 00248/60 शि० —2896 दिनांक 19-9-62, प्रेषक—श्री के० अहमद, लोक शिक्षा निदेशक बिहार प्रेषित —सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी/सभी जिला शिक्षा अधीक्षक/सभी जिला विद्यालय निरीक्षिका।

विषय —छठे और सातवें वर्गों में उर्दू पढ़ने वाले छात्रों की भाषेतर विषयों में उर्दू भाषा में प्रश्न पत्र चुनने के विषय में।

सरकार को सूचना मिली है कि छठे और सातवें वर्गों में उर्दू पढ़ने वाले छात्रों को भाषेतर विषयों के प्रश्न-पत्र उर्दू में नहीं दिए जाते हैं। अतः सातवें वर्ग तक के उर्दू पढ़ने वाले छात्रों को उर्दू में प्रश्नपत्र देना आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों को आदेश दें कि छठे सातवें वर्गों के उर्दू पढ़ने वाले छात्रों को भाषेतर विषयों में उर्दू में ही प्रश्न पत्र दिये जाएं।

प्रतिलिपि पत्रांक —3242 दिनांक 28-10-71, प्रेषक— श्री अ० प्र० श्रीवास्तव, अपर लोक शिक्षा निदेशक, बिहार, प्रेषित —सभी जिला अधीक्षक/सभी अवर प्रमंडल शिक्षा पदाधिकारी-सह-नगरपालिका शिक्षा पदाधिकारी।

विषय —गैर-सरकारी प्रारम्भिक विद्यालयों में मातृभाषा के अध्ययन से शिक्षण। भाषाधार पर शिक्षकों की नियुक्ति।

आपको विदित है कि प्रारम्भिक विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में निम्नांकित उपबन्ध हैं—

1. भाषेतर विषयों के लिए शिक्षा का माध्यम आठवें वर्ग तक छात्रों की मातृभाषा है।

2. यदि किसी विद्यालय में ऐसे विद्यार्थियों की संख्या, जिनकी मातृभाषा उस विद्यालय के लिये शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकृत भाषा से भिन्न हो, 40 या इससे अधिक है, अथवा किसी वर्ग में ऐसे विद्यार्थियों की संख्या 10 या इससे अधिक है, वहां विद्यालयों के अधिकारियों से आशा की गई है कि वे कम-से-कम एक ऐसे शिक्षक की व्यवस्था करें जो इन विद्यार्थियों को मातृभाषा में भाषेतर विषयों को पढ़ा सके।

3. बिहार में राज्य सरकार द्वारा हिन्दी, बंगला, उड़िया, उर्दू, मैथिली, संथाली, उरांव, हो और मुंडारी मातृभाषा के रूप में स्वीकृत हैं। एंग्लो—इंडियन विद्यार्थियों के लिये अंग्रेजी मातृभाषा मानी गई है।

4. जिन विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी नहीं है वहां चौथे तथा ऊपर के वर्गों में अनिवार्य सहायक विषय के रूप में हिन्दी पढ़ाई जाए।

उपर्युक्त उपबंधों के अनुसार उर्दू, संताली, बंगला, उड़िया, मैथिली, मुंडारी, उरांव आदि भाषाओं में शिक्षकों की नियुक्ति अपेक्षित संख्या में नहीं किए जाने की कुछ शिकायतें प्राप्त हुई हैं। छात्र विकास में अल्प भाषा-भाषियों की भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है, नीचे के वर्गों में बच्चे अपनी भाषा के अलावा दूसरी भाषा नहीं जानते। दूसरी भाषा के शिक्षक उनके अध्ययन में कारगर नहीं होते। फलस्वरूप शिक्षा के हित की पूर्ति नहीं हो पाती। आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों को और अधिक कठिनाई होती है।

उपर्युक्त दशा में अल्प भाषा-भाषियों की भाषा के अभ्यार्थियों की सूची शिक्षक पद पर नियुक्ति के लिए अलग से बनाई जाए और प्रशिक्षित अभ्यार्थियों की अपेक्षित संख्या में उपलब्ध नहीं होने पर अप्रशिक्षित मैट्रिक की नियुक्ति, अपर लोक शिक्षा निदेशक की पूर्वानुमति लेकर की

62. तोलोङ सिकि का कंप्यूटरी अवतार 'केलि तोलोङ' की उद्‌भव यात्रा

हमेशा से हम सुनते आये थे, कोई भाषा तबतक परिपूर्ण नहीं होती, जब तक अपनी लिपि न हो। कल तक कुँड़ुख़ को लिखने के लिए देवनागरी या रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता था। अब इसकी अपनी है, तोलोंग सिकि। प्रसन्नता की बात है, तोलोंग सिकि अब प्रयोग में आ चुकी है। तोलोंग सिकि ने देश–विदेश के कुँड़ुख़ भाषियों को संवाद का नया आयाम दिया है।

मुझे याद आता है, करीब दो दशक पहले, युवा चिकित्सक डॉ नारायण उराँव से परिचय हुआ था। फादर प्रताप टोप्पो इन्हें लेकर मेरे पास आये थे। पत्रकार होने के नाते मुझे लगा कि जरूर चिकित्सा संबंधी कोई समाचार या लेख का मामला होगा। लेकिन, पता चला कि यह महाषय तो साहित्य के धुनी हैं। आदिवासी भाषा की लिपि विकसित करने में जुटे हैं। डाक्टरों के बारे में ठोस धारणा है कि एक बार एम.बी.बी.एस. की डिग्री मिल गई तो आजीवन मुद्रा अर्जन की समस्या से निदान मिल जाता है। सरकारी नौकरी के बावजूद प्राइवेट प्रैक्टिस का लोभ छोड़ना मुष्किल होता है। और यह आदिवासी युवा डॉक्टर लिपि बनाने में धुनी रमाने की बात कर रहा है! थोड़ा सषंकित था।

बहरहाल, फादर टोप्पो ने चर्चा शुरू की .... लिपि तो तैयार हो गई है लेकिन अब समस्या है इसे कंप्यूटर में कैसे लाया जाये। क्योंकि जबतक लिपि का फॉन्ट नहीं बनता, पुस्तकें छपेंगी कैसे? .... उन दिनों मैं एक स्थानीय हिंदी दैनिक अखबार के लिये कंप्यूटर विज्ञान पर 'सूचना तकनीक' नाम से पूरे पन्ने का एक साप्ताहिक मैगजिन का संपादन भी करता था। फादर टोप्पो के सहज व्यक्तित्व का मैं शुरू से ही बहुत सम्मान करता था। लेकिन, उनकी समस्या के बारे में सुनकर मैं भी लाचार हो गया। दरअसल उन दिनों फॉन्ट बनाने की गिनी चुनी कंपनियाँ ही भारत में थीं। जाहिर है उनकी फीस भी मनमानी होगी। वैसे भी फॉन्ट टेक्नोलॉजी से आम कंप्यूटर उपयोगकर्त्ताओं का क्या वास्ता! मैं भी बहुत जानकारी नहीं रखता था। काफी देर बातचीत के बाद मैं उन दो भद्रजनों को इतना ही आश्वस्त कर पाया कि मुझे कुछ वक्त दीजिए, पता करना होगा।

उनके जाने के बाद मैंने इंटरनेट खंगालना शुरू किया। चंद रोज में मुझे इतना अहसास होने लगा कि थोड़ी अतिरिक्त पढ़ाई की जाये तो फॉन्ट विकसित किया जा सकता है, हालांकि काम काफी जटिल था। लेकिन इसी बीच मुझे लगा कि यही अवसर है अपने प्रदेष की माटी और यहाँ के मूलवासियों के साथ अंतरंग संबंध स्थापित करने का। और, मैंने फादर टोप्पो व नारायण जी से संपर्क किया। बातचीत फिर हुई। मैंने कहा कि मैं प्रयास करूँगा, बषर्ते डॉ. नारायण को मेरे साथ समय–समय पर परामर्श के लिये उपलब्ध होना होगा। डॉ० नारायण झट तैयार हो गए। उसके बाद तो सिलसिला चल पड़ा। इस दौरान मैंने महसूस किया कि डॉ० नारायण उराँव की धुन को लेकर मेरी आषंका बिल्कुल निर्मूल थी। यह तो वाकई योगी हैं। दिन हो या रात, नारायण हमेशा उपलब्ध होने को तत्पर होते। फॉन्ट के लिए पेपर पेंसिल पर डिजाईन करने से लेकर आम उपयोगकर्त्ताओं की सुविधा के लिये अनवरत प्रयोग और शोध तक ..... तोलोंग सिकि के उद्‌भवकर्त्ता डॉ० नारायण उराँव को साधुवाद!

इधर, इंटरनेट से फॉन्ट डिजाईनिंग की जानकारी के आधार पर मैं फॉन्ट डिजाईन में लगा रहा। महीनों लगे। इस काम में मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रेवा का भी भरपूर सहयोग मिलता रहा। तोलोंग सिकि फॉन्ट का पहला संस्करण तैयार हुआ। बात सेवा शुल्क की आयी। मैंने डॉ. उराँव से खुलकर कहा, मेरी एक ही बेटी है 'केलि', मेरी इच्छा है इस फॉन्ट के साथ मेरी बेटी का नाम जुड़े और यह फॉन्ट आम लोगों के लिए निःशुल्क उपलब्ध हो। इसपर वे सहमत हो गए और कार्य बढ़ता गया। इस तरह 'केलि तोलोंग (KellyTolong) फॉन्ट का जन्म हुआ। वर्ष 2002 में इसका लोकार्पण हुआ। उसके बाद लगातार सुधार होते गए। कालांतर में इस सॉफ्टवेयर के कई संस्करण तैयार हुए। हालिया संस्करण मैंने 2017 के अंत में तैयार किया जो तोलोंग सिकि डॉट कॉम (Tolongsiki.com) पर पूरी दुनिया के लिये निःशुल्क उपलब्ध है।

– किसलय
वरिष्ठ पत्रकार, राँची।

दिनांक : 15 मार्च 2018

63. तोलोंग सिकि और कुँड़ुख भाषा का विकास

— महादेव टोप्पो

देखा गया है भारत में आधिकांश भाषाओं का विकास अंग्रेजों के आगमन के बाद ही हुआ है। चूँकि अंग्रेजों के आने के बाद ही भारत में छापाखानों का प्रचलन बढ़ा और अंग्रेज अधिकारी विद्वानों के शोध एवं अध्ययन से आधुनिक भारतीय भाषा हों या आदिवासी भाषाएँ, विकास का अवसर मिला। इसी समय कई भाषाओं के साथ कुँड़ुख को भी अपनी आरंभिक रचना प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। अतः, इसका आरंभिक साहित्य रोमन लिपि में लिखा गया फिर देवनागरी लिपि में। है. जैसे संताली भाषा के लिए ओल चिकि के आविष्कारक पं0 रघुनाथ मुर्मू ने प्रचुर मात्रा में साहित्य रचा था. साथ ही इस लिपि की षिक्षण–विधि इस तरह विकसित की गई कि जो भी इसे पढ़ेगा वह संताली जीवन, संस्कृति व अध्यात्म से गहरे जुड़ जायेगा. यही कारण है कि जो लोग लिपि में आधुनिकता और वैज्ञानिकता का रोना रोते हैं वे इस लिपि को पसंद नहीं करते. हांसदा सोवेन्द्र षेखर के अंग्रेजी किताब के कवर में ओल चिकी के प्रयोग पर ऐसे ही लोगों को आपत्ति थी। ऐसा ही कुछ मतभेद कुँड़ुख में आविष्कृत पिछले छह लिपियों को लेकर थी. लेकिन, अब दो राज्य सरकारों द्वारा मान्यता मिल जाने के बाद विद्वानों में मतभेद कम हुआ है। इस वर्ष मातृभाषा दिवस के अवसर पर बंगाल सरकार नें तोलोंग सिकि (लिपि) में लिखी जानेवाली कुँड़ुख को सरकारी प्रयोग के लिए मान्यता दे दी है. इस तरह तोलोंग सिकि को एक नई पहचान एवं मान्यता मिल गई है. लेकिन, भाषा–वैज्ञानिकता के आधार पर तथा कई देषी–विदेषी विद्वानों के सहमति मिलने से कई प्रकार के संषय दूर होने से अब तोलोंग सिकि की स्वीकार्यता बढ़ गई है। अतः रातू, सिसई, घाघरा, विषुनपुर, मांडर के अलावा रांची के कुछ षिक्षण–केन्द्रों के विद्यालयों में तोलोंग सिकि से कुँड़ुख की पढ़ाई हो रही है, वहाँ खुषी की लहर है। इसके अलावा लूरडिप्पा स्कूल में कुँड़ुख की पढ़ाई होती है। साथ ही झारखंड सरकार द्वारा आयोजित दसवीं की परीक्षा में तोलोंग सिकि में लिखने की अनुमति प्रदान की गई है, लेकिन राँची विष्वविद्यालय में इस लिपि में पढ़ाई षुरू नहीं की जा सकी है. फिर भी विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए ही सही, वर्तमान नई पीढ़ी, तोलोंग सिकि में षिक्षित हो रही है। कुँड़ुख पत्रिका "कुँड़ुख डहरे" के संपादक "डॉ हरि उराँव" ने कहा कि अधिक से अधिक लेखक इस लिपि में लिखेंगे तो उन्हें खुषी होगी. इसी तोलोंग सिकि के विकास की कहानी 'लकीरें बोलतीं है" डोक्यूमेन्ट्री फिल्म में दर्षाया गया है। इस फिल्म को झारखंड के पत्रकार, किसलय ने बनाया है. किसलय ने एक और महत्वपूर्ण काम यह किया है कि उन्होंने इस लिपि के फॉन्ट का विकास कंप्यूटर में उपयोग के लिए किया। एम.बी.बी.एस. डॉ0 नारायण उराँव ने अक्षर एवं लिपि बना लिया था लेकिन इस नव आविष्कृत लिपि के विकास में कई तरह की बाधाएँ थी। इसकी तकनीकी जटिलताओं को किसलय ने अपनी कड़ी मेहनत से आसान और कंप्यूटर–फ्रेन्डली बनाया।

डॉ नारायण उराँव बताते हैं कि कई तरह के प्राकृतिक कार्य घड़ी की विपरीत दिशा में होतीं हैं. आदिवासी इसी से प्रेरित होकर अपने कई कार्य जैसे हल चलाना, जाता से पीसने,पूर्वजों को जल अर्पित करने आदि घड़ी की विपरीत दिशा में करते हैं. अतः,उन्होंने जिस लिपि का आविष्कार किया है वह भी ऐसे ही लिखी जाती है. यह लिपि कुँड़ुखों द्वारा नष्त्य के समय पहने जाने वाले परिधान "तोलोंग" से प्रेरित है. यह बारह हाथ का लंबा कपड़ा होता है जिसे कमर पर कई बार घूमा–फिराकर बाँधा, पहना जाता है. डॉ नारायण बताते हैं कि यह लिपि इसी प्रक्रिया से प्रेरित है. इसी कारण इसका नाम तोलोंग सिकि यानी तोलोंग लिपि रखा गया. इस लिपि के विकास के लिए इस एम.बी.बी.एस डॉक्टर ने कई भाषाविदों से लंबी बातचीत की और विचार–विमर्ष किया, भाषा–विज्ञान की कई किताबें पढ़ीं। केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर के भाषाविद् स्व.डॉ. फ्रांसिस एक्का तथा देष के कई भाषा वैज्ञानिकों से भी विमर्ष किया। उन्होंने डॉ रामदयाल मुण्डा से भी विमर्ष किया था। रामदयाल मुण्डा इस लिपि की वैज्ञानिकता से

प्रभावित थे और उन्होंने कहा था कि इस लिपि के माध्यम से झारखंड की समस्त आदिवासी भाषाएँ लिखी जा सकती हैं. किसलय ने बताया कि यह शीघ्र ही यूनिकोड प्रारुप में कंप्यूटर में प्रयोग के लिए उपलब्ध हो जाएगा. आषा की जानी चाहिए कि तब यह उपयोग के लिए सरल हो जायगी और कंप्यूटर, मोबाइल प्रेमी युवा पीढ़ी के बीच ज्यादा लोकप्रिय हो सकेगी. जैसे ओल चिकी को जन–जन तक पहुंचाने के लिए गाँव–गाँव में हजारों कार्यकर्ताओं को प्रषिक्षित कर ओलचिकि में लिखना पढ़ना सिखाया गया. लगभग यही चुनौती तोलोंग सिकि के पास है कि वह अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए क्या करें.जिस तरह तोलोंग लिपि के विकास के लिए फिल्म बनाई गई उसी तरह इसके षिक्षण–प्रषिक्षण के लिए एक प्रषिक्षण सामग्री तैयार की जाय और उसे यू–ट्यूब के माध्यम से या किसी अन्य तरीके से अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाय. एक और चुनौती कुँड़ुख भाषियों के पास है कि इस लिपि में किताबों की मात्रा कम है, पत्रिकाएं भी कम हैं। यह तब और लोगों तक ज्यादा पहुंच सकता है जब इस भाषा के विद्वान, लेखक आदि अधिक से अधिक किताबें विभिन्न विषयों पर लिखें। रेडियों टी.वी. व नए एफ एम चौनलों में अपने लिए स्थान ढूँढ़े जैसा कि संताली में झाड़ग्राम बंगाल के एक एफ एम चौनल से दो घंटे का कार्यक्रम प्रसारित हो रहा है. वे स्थानीय अखबारों में कुँड़ुख भाशा के लिए कॉलम या फिर रेडियो या दूरदर्षन में कुँड़ुख भाशा के लिए कार्यक्रम आयोजित हों तो इसके विकास में सहयोग हो सकेगा. सरकार की भी यह जिम्मेवारी है कि वह स्थानीय भाषा–संस्कृति के संरक्षण व विकास के लिए कार्यक्रम निर्धारित करे क्योंकि इसी लक्ष्य के तहत आकाषवाणी, दूरदर्षन द्वारा स्थानीय, आदिवासी भाषा में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. लेकिन, सबसे बड़ी पहल यह होगी कि कुँड़ुख भाषा के लेखक, विद्वान, शिक्षक, शोधकर्ता विभिन्न विषयों पर अधिक से अधिक लिखने के साथ अनुवाद कर विपुल मात्रा में कुँड़ुख साहित्य का रचना–भंडार करें।

– सेवा निवृत हिन्दी बैंक अधिकारी, साहित्यकार, रंगकर्मी, पता – कार्तिक उराँव चौक, हरमू बाईपास, राँची, (झारखण्ड)।

64. [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible],
[illegible], [illegible] ॥१॥

[illegible]

[illegible]
[illegible],
[illegible], [illegible] ॥१॥

[illegible]

[illegible],
[illegible],
[illegible], [illegible] ॥१॥
[illegible],
[illegible],
[illegible], [illegible] ॥१॥

[illegible]

[illegible],
[illegible],
[illegible], [illegible] ॥१॥
[illegible],
[illegible],
[illegible], [illegible] ॥१॥

65. [illegible]

[illegible],
[illegible].

[illegible],
[illegible].

[illegible],
[illegible].

[illegible],
[illegible].

[illegible],
[illegible],
[illegible],
[illegible] .

– [illegible]

66. कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती हैं!'' का लोकार्पण

दिनांक 17.03.2018 दिन षनिवार को तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ भाषा समारोह, केन्द्रीय पुस्तकालय, राँची विश्वविद्यालय राँची के सभागार में मनाया गया। समारोह में कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती हैं!'' का लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. दिनेष उराँव, अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा, राँची के के कर कमलों सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के साथ फिल्म सीडी का लोकार्पण करते हुए दायें से डॉ. हरि उराँव, डॉ. निर्मल मिंज, डॉ. करमा उराँव, डॉ. दिनेष उराँव, श्री विनोद कुमार भगत, श्री अषोक बाखला, श्रीमती रेवा किसलय, श्री किसलय, डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं डॉ. श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव मंच पर उपस्थित थे। इस डॉक्यूमेंटरी फिल्म के निर्देषक श्री किसलय जी है तथा परिकल्पना डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' का है। फिल्म निर्माण Fact Fold द्वारा किया गया है। इस अवसर पर डॉ. निर्मल मिंज ने कहा कि कुँड़ुख़ भाषा के लिए तोलोंग सिकि (लिपि) का आविष्कार के लिए डॉ. नारायण उराँव को राँची विष्वविद्यालय या किसी भी विष्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधी से नवाजा जाए। इसके लिए समाज तथा प्रषासनिक प्रयास किया जाना चाहिए। समारोह का आयोजन कुँड़ुख़ भाषा विकास छात्र संघ, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा तथा अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा की ओर से श्री जिता उराँव एवं साथियों द्वारा हुआ।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'लकीरें बोलती हैं' का प्रदर्शन

स्क्रीनिंग

67. कुँड़ुख़ भाषा–तोलोंग सिकि विषयक, विभागीय एवं राजकीय सम्मान

दिनांक 28.10.2011 को, कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा माननीय मंत्री श्री सुदेष महतो के कर कमलों, डॉ. नारायण उराँव को कला / संस्कृति / साहित्यि के क्षेत्र में उनके सराहणीय योगदान एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए सांस्कृतिक सम्मान 2011–12 प्रदान किया गया।

दिनांक 30.09.2016 को, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (कोल इंडिया लिमिटेड का एक अंग), राजभाषा विभाग, कोयला भवन, धनबाद–826005 द्वारा डॉ. नारायण उराँव को कुड़ुख़ भाषा एवं साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए बीसीसीएल कोयला भारती राजभाषा सम्मान, वर्ष–2016 प्रदान किया गया।

दिनांक 02.04.2019 को, झारखण्ड केन्द्रीय विष्वविद्यालय, ब्राहम्बे, राँची द्वारा, आदिवासी महोत्सव–2019 के अवसर पर राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष डॉ. नन्द कुमार साय के कर कमलों डॉ. नारायण उराँव को उनके साहित्यिक सेवा (कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग सिकि विकसित करने) के लिए प्रषस्ति पत्र एवं षॉल प्रदान किया गया।

राजधानी

हिन्दुस्तान

डॉ केसरी को भी मिला लाइफ टाइम अवार्ड

प्रभात खबर धनबाद अपडेट 1.10.2016

आज अंतराष्ट्रीय भाषा बन गयी है हिंदी : डीपी

68. कुँडुख़ भाषा–तोलोंग सिकि के संरक्षण एवं संवर्द्धन संबधी कार्य एवं इसके सहयोगी

दिनांक 29.01.2020 दिन बुधवार को ट्राइबल कल्चर सेन्टर, जमषेदपुर में आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए कॉरपोरेट सर्विस टाटा स्टील लिमिटेड के उपाध्यक्ष, श्री चाणक्य चौधरी, बैठे हुए दायें से टाटा स्टील, सी.एस. आर. विभाग के चीफ, श्री सौरभ रॉय, हेड, ट्राईबल सर्विस, टाटा स्टील, श्री जिरेन जेवियर टोपनो, पूर्व विधायक श्री सनातन मांझी, श्री सी0आर0 मांझी, श्री कृष्णा समद, श्री रामेष्वर सिहं कुंतिया एवं श्री ष्याम चरण लागुरी। टाटा स्टील के पदाधिकारियों के साथ डॉ. नारायण उराँव (नीचे)।

दिनांक 12.02.2021 दिन षुक्रवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2021 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का पहला दिन, कार्तिक उराँव आदिवासी बाल विकास विद्यालय, सिसई, जिला : गुमला के प्रांगन में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ. नारायण उराँव तथा विषिष्ट अतिथि के रूप में श्री षिवषंकर कांडेयोंग, टाटा स्टील, टी.सी.सी. के पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर पांच स्कूल के छात्र–छात्रा एवं षिक्षकगण तथा समाजसेवी मौजूद थे। छात्रों ने अच्छा कार्यक्रम प्रस्तूत किया। वे गाते हुए नुत्य कर रहे थे जो भाषा सीखने की ललक को दर्षाता है।

दिनांक 20.02.2021 दिन षनिवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2021 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का अंतिम दिन, संत स्तानिसलास उच्च विद्यालय, पतराटोली, लोहरदगा, जिला : लोहरदगा के परिसर में सम्पन्न हुआ। समारोह में तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ. नारायण उराँव, टाटा स्टील, टी.सी.सी. के पदाधिकारी श्री षिवषंकर कांडेयोंग, स्कूल के हेडमास्टर फा. प्रोभिंसियल फा. रंजीत लकड़ा, फा. सुषील तिरकी, सिस्टर डॉ. आइलिन, सिस्टर उपस्थित थे। इस अवसर पर एराउज संस्था के छात्र–छात्रा एवं समाजसेवी द्वारा मातृभाषा षिक्षा पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तूत किया।

दिनांक 24.02.2019 दिन रविवार को, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (संस्था) के संयोजन में ईन्नलता कुँड़ुख़ कत्थ अईन नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि माननीय सांसद श्री समीर उराँव थे। इस अवसर पर श्री रतन तिर्की, श्री खालिद अहमद, श्री महादेव टोप्पो, श्री बिनोद कुमार भगत, श्रीमती फुदो उराँव, डॉ. हरि उराँव, श्री तेतरू उराँव, लेख़क द्वय डॉ. नारायण भगत तथा डॉ. नारायण उराँव सहित कई शिक्षाविद एवं छात्र उपस्थित थे। फोटो में – सांसद श्री समीर उराँव, पुस्तक की समीक्षा करते हुए।

दिनांक 02.04.2019 दिन मंगलवार को, झारखण्ड केन्द्रीय विष्वविद्यालय, ब्राहम्बे, राँची के आदिवासी महोत्सव–2019 के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष डॉ. नन्द कुमार साय उपस्थित थे। इस अवसर पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ब्राहम्बे, राँची द्वारा डॉ. नारायण उराँव को उनके साहित्यिक सेवा (कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग लिपि विकसित करने) के लिए माननीय अध्यक्ष के कर कमलों प्रषस्ति पत्र एवं षॉल प्रदान किया गया।

दिनांक 05.05.2019 दिन रविवार को,परम्परागत कुँड़ुख़ समाज का 22 पड़हा ग्रामसभा बिसु सेन्दरा वार्षिक 2 दिवसीय सम्मेलन ग्राम : लंगटा पबेया, थाना : सिसई, जिला : गुमला में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में 22 गाँव के गाम सभा के पदधारी एवं परम्पारिक ग्रामीण पुजारी महतो, पहान पुजार उपस्थित थे। बिसु सेन्दरा आयोजन समिति के कोटवार श्री गजेन्द्र उराँव, विगत 9वें वर्ष अपने सहयोगियों के साथ लगातार करते आ रहे हैं। इस अवसर पर अद्‌दी अखड़ा, संस्था के सचिव श्री राजेन्द्र भगत, चिकित्सक डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं कार्तिक उराँव कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो के प्राधानाचार्य श्री अरविन्द उराँव ने ग्रामीणों का मार्ग दर्षन किया।

दिनांक 15.07.2019 दिन सोमवार को, राज्य सभा, भारत के पटल पर माननीय सांसद श्री समीर उराँव द्वारा कुँड़ुख़ भाषा को संविधान की 8वी अनुसूची में शामिल किये जाने का मांग रखा गया। माननीय महोदय द्वारा सदन में विचार रखा गया कि कुँड़ुख़ (उराँव) लोगों की जनसंख्या झारखण्ड एवं इससे सटे सीमावर्ती राज्यों में है। इनकी अपनी विशिष्ट भाषा–संस्कृति है। वर्तमान में इसकी पढ़ाई विश्वविद्यालय स्तर पर होती है। इसे बचाने के लिए सरकारी संरक्षण मिलने पर इसका तेजी से विकास होगा। (श्री समीर उराँव राज्य सभा में अपनी बात रखते हुए)।

दिनांक 29.10.2019 दिन मंगलवार को डॉ. नारायण उराँव द्वारा बिकास भारती बिशुनपुर का भ्रमण किया गया। बिकास भारती द्वारा स्थानीय कुँडुख़ भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं विकास हेतु संस्था द्वारा संचालित दो उच्च विद्यालय में कुँड़ख़ भाषा पढ़ाई–लिखाई की जाती है। यहाँ कुँड़ख़ की पढ़ाई, तोलोङ सिकि लिपि में होती है। इनमें से जतरा टाना भगत विद्या मन्दिर में 1043 छात्र–छात्राओं में से 700 कुँडुख़ भाषा विषय पढ़ने वाले है। फोटो में, उपर दायें से – श्री अजित उराँव, डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं संस्था के कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र भगत।

बीर बुधूभगत लूरकुड़िया, मेरले, किसको, लोहरदगा (झारखण्ड) के छात्र–छात्रा एवं षिक्षकगण। इस विद्यालय में हिन्दी, अंगरेजी एवं कुडुख़ भाषा विषय की पढ़ाई–लिखाई की जाती है। विद्यालय संचालक श्री संजीव भगत द्वारा पढ़ाई के साथ परम्परागत गीत संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पर विषेष अभिरूची दिलाया जाता है। यहाँ कुडुख़ भाषा की पढ़ाई, तोलोंग सिकि के माध्यम से होती है।

बी0के0 इन्डिजिनस एकेडमी, ओपा, कुडु,लोहरदगा (झारखण्ड) के छात्र–छात्रा, अभिभावक एवं शिक्षकगण। इस विद्यालय में हिन्दी, अंगरेजी एवं कुड़ुख़ भाषा (तोलोंग सिकि के साथ) विषय की पढ़ाई–लिखाई की जाती है। विद्यालय संयोजक श्री नागराज उराँव द्वारा पढ़ाई के साथ परम्परागत गीत संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पर विशेष अभिरूची दिलाया जाता है। यहाँ कुड़ुख़ भाषा की पढ़ाई, तोलोंग सिकि के माध्यम से होती है।

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,रांची विश्वविद्यालय राँची के नये भवन का उद्घाटन

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची विश्वविद्यालय के नये परिसर भवन का उद्घाटन दिनांक 13.12 2020 दिन रविवार को राज्यपाल सह कुलाधिपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा किया गया। अपने वक्तब्य में उन्होंने कहा – यह याद रखना होगा कि पद्मश्री रामदयाल मुण्डा जी अमरीका से प्राध्यापक की नौकरी छोड़कर यहाँ आए थे और छात्रों से मिलकर अखड़ा और कक्षा निर्माण का कार्य अपने हाथों से किया था। नये भवन में अच्छी पुस्तकालय भी हो, साथ ही गुणवत्तापूर्ण षोध कार्य, अनुवाद, साहित्य लेखन, भाषा विकास, नाटक मंचन, कविता पाठ, विचार विमर्ष, सेमिनार, झारखंडी भाषा संस्कृति के विकास आदि महत्वपूर्ण कार्य के लिए और अधिक प्रोत्साहन मिले। अब नये शिक्षकों की बहाली हो तथा छात्रों को नए रोजगार का अवसर मिले। आषा है भाषा एवं संस्कृति संरक्षण की दिशा में बेहतर अवसर मिलेगा, जिससे नये भवन की सार्थकता सिद्ध होगी। हम सबों की शुभकामनाएँ राँची विश्वविद्यालय को, विभाग को, विभाग के गुरुजनों को, अध्ययनरत छात्रों को तथा कुलपति महोदय को !

सभी जनजातीय व क्षेत्रीय भाषा के अलग-अलग विभाग होंगे

जमीन विवाद को लेकर बैठक करतीं राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू. मौके पर उपस्थित मुख्य सचिव, कुलपति व अन्य वरीय अधिकारी.

यह कुडुख़–इंगलिस मिडियम स्कूल ''कुँडुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, भगीटोली, डुमरी (गुमला)'' है। इस स्कूल के संस्थापक डॉ0 एतवा उराँव हैं। इस स्कूल में कुँडुख़ भाषा की पढ़ाई तोलोंग सिकि लिपि में होती है। इस स्कूल में आरंभिक कक्षा कुडुख़ में होती है और हिन्दी एक भाषा विषय के साथ इंगलिस मिडियम के साथ मैट्रिक तक की पढ़ाई के लिए एक आवासीय विद्यालय है। फोटो में – डॉ0 एतवा उराँव एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'।

यह ''बुदो उराँव पब्लिक स्कूल, हहरी (कुँडुख़ इंग्लिस मिडियम)'' स्कूल है। विद्यालय के प्राधानाचार्य श्री रामवृक्ष किण्डो जी हैं। इस स्कूल में नर्सरी से 10 कक्षा तक की पढ़ाई होती है। यहाँ भाषा विषय के रूप में हिन्दी, अंगरेजी एवं कुँडुख़ भाषा (तोलोंग लिपि में) की पढ़ाई होती है। स्कूल के प्राधानाचार्य श्री रामवृक्ष उरांव अपने गांव के जमीन में गांव वालों के मदद से स्कूल खड़ा किये। यह गुमला जिला के घाघरा प्रखण्ड के अन्तर्गत हहरी गांव सीमा में अवस्थित है। यह फोटो स्कूल का वार्षिक खेल प्रतियोगिता का है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र उराँव, सदस्य, कार्यकारिणी समिति, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची ने बच्चों को के लगन को देखकर कहा कि – खेल हो या पढ़ाई चाहे कोई भी कार्य हो, लगन के साथ कार्य करने से सफलता जरूर मिलती है।

On 21st Feb, 2018 International Mother Tongue Day/ Bhasa Diwas was celebrated in Nuniadaga, Hooghly (West Bengal) being organized by Shri. Supriyo Kora (Toppo) & Co. At 8 A.M. more than 5000 Adivasi took out rally in their traditional attire. The entire day cultural programme was being observed and thoroughly enjoyed till 8P.M. Shri. James Kujur-Minister, Tribal Development, West Bengal was the Chief guest and gave his speech in Kurukh Language praising Dr. Narayan Oraon Sainda for inventing Tolong Siki, i.e., Kurukh Script and Mamata Banerjee, Chief Minister, West Bengal for her unconditional support for giving recognition to Kurukh Language as one of the official language. Other Guests were from Kurukh Literary Society of India (KLSI), Kolkata Chapter namely Smt. Sushila Lakra (Chapter Chief), Shri. Mahesh Minz (Secretary), Shri. Thaddeus Lakra (Ex- Chapter Chief) delivered their valuable speeches. Shri. Francis Tirkey, Shri. George Tirkey, Shri. Manik Kishore Tirkey (Vice-President), Kuldeep Minz (Assistant Treasurer), Shri. & Smt. Sukirti Tirkey, Binita Lakra, Smt. Mariam Tirkey were also present on that occasion.

दिनांक 28 दिसम्बर 2018 को आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची के पुस्तकालय भवन में कुँड़ुख़ एप्प (कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि मोबाईल एप्प) का लोकार्पन सम्पन्न। यह, कुँड़ुख़ एप्प (Kuruyx Learn) कुँड़ुख़ समाज में अपने तरह का पहला है। फोटो में माईकरोफॉन के साथ एप्प निर्माता सॉफ्टवेयर इंजिनियर श्री जॉन एस. टोप्पो।

सरना नवयुवक संघ, राउरकेला द्वारा करम पूर्व संध्या समारोह – 13 सितम्बर 2018 को सम्पन्न। उपर करम स्मारिका पत्रिका का लोकार्पण करते हुए बाँयें से – तोलोंग सिकि लिपि के जनक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', माननीय सांसद श्री समीर उराँव, माननीय आदिवासी कार्यमंत्री, भारत सरकार श्री जुएल ओराम, श्री कुजूर जी एवं श्री राणा जी तथा करम पूर्व संध्या के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते हुए दर्षक एवं अतिथि गण।

दिनांक 30 दिसम्बर 2018 को राःजी पड़हा, भारत का राजकीय इकाई पाःदा पड़हा ओड़िसा का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में मुख्य रूप से दो बातों पर परिचर्चा हुई। परमपरागत आदिवासियों का ''आदि धर्म'' को भारत सरकार सवैंधानिक मान्यता दे और जनगनना में अलग धर्म कोड दे। दूसरी मांग थी – कुँडूख़ भाषा की लिपि, *तोलोंग सिकि* के माध्यम से स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई शीघ्र लागू हो। मंच में दायें से – श्री मांगे उराँव (पादा बेल), माननीय आदिवासी कार्यमंत्री भारत सरकार, श्री जुएल उराँव, तोलोंग सिकि के जनक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री बागी लकड़ा (राजी बेल) एवं श्री मनचन उराँव (पादा देवान)। इस अवसर पर श्री बागी लकड़ा ने कहा कि कुँडुख़ भाषा की लिपि विकसित हो चुकी है। इस लिपि का नाम तोलोंग सिकि है। इस लिपि को, झारखण्ड सरकार एवं प. बंगाल सरकार में मान्यता प्राप्त है। एक प्रश्न के रूप में केन्द्र सरकार के माननीय मंत्री, आदिवासी कार्य विभाग श्री जुएल ओराम ने पूछा कि तोलोंग सिकि पर मैसूर का क्या मन्तव्य है? इस प्रष्न के उत्तर में डॉ. नारायण उराँव द्वारा बतलाया गया कि इस लिपि के विकास में में भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के प्रो. डॉ. फ्रांसिस एक्का एवं भाषाविद् डॉ. रामदयाल मुण्डा का समर्थन एवं दिशा निर्देश प्राप्त है और यह कार्य अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत पर कार्य हुआ है।

दिनांक 27 एवं 28 अक्टूबर 2018 को कुँड़ुख़ लिटरेरी एकेडमी ऑफ उराँव, प0बंगाल का दो दिवसीय सम्मेलन, सिलिगुड़ी प0 बंगाल में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन माननीय सांसद श्री दशरथ तिर्की के द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री बंधन उराँव, डॉ. श्रीमती शांति खलखो, सांसद श्री दशरथ तिर्की, डॉ0 नारायण भगत, श्री निमाई सरदार, सुश्री कमला लकड़ा, सुश्री शकुनतला उराँव आदि उपस्थित थे।

दिनांक 15.10.2019 दिन मंगवार को राजकीय ऐतिहासिक मुड़मा जतरा, मुड़मा (राँची) के समापन समारोह, झारखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कुँड़ुख़ भाषा के विकास हेतु विकसित प्राथमिक पुस्तक पुना तुंगुल (नया स्वप्न) का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक देवनागरी लिपि, रोमन लिपि एवं तोलोंग सिकि में लिखी गई है। यह कुँड़ुख़ नव सीखओं के लिए उत्साहवर्द्धक है। फोटो में दायें से – सरना प्रार्थना सभा के धरम गुरू श्री बंधन तिग्गा, माण्डर विधायक श्रीमती गंगोत्री कुजूर, माननीय मुख्यमंत्री झारखण्ड सरकार, श्री रघुवर दास, उपायुक्त, राँची एवं पुलिस अधीक्षक, राँची। लेखक – डॉ.नारायण उराँव 'सैन्दा'।

69. टाटा स्टील फाउण्डेशन द्वारा संपोषित कुँड़ुख़ भाषा–तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र का झलक

दिनांक 25 अगस्त 2021 दिन शनिवार को आदिवासी उराँव समाज समिति पुराना सीतारामडेरा, जमशेदपुर में टाटा स्टील फाउन्डेशन, द्वारा संपोषित, कुँड़ुख़ भाषा शिक्षण केन्द्र का उद्‌घाटन हुआ। इस अवसर पर टी.एस.एफ. के ट्राईबल हेड श्री जीरेन जे० टोपनो, कार्यपालक अधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग, अद्‌दी अखड़ा के संयोजक डॉ० नारायण उराँव एवं डॉ. बिन्दु पहान एवं उराँव समाज समिति के पदधारी गण तथा शिक्षिकाएँ एवं बच्चे उपस्थित थे।

दिनांक 29 अगस्त 2021 दिन रविवार को दिन में 7 पड़हा कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, पलमी, भंडरा प्रखंड में चल रहे कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) पठन–पाठन केन्द्र का निरिक्षण, टाटा स्टील फाउन्डेशन, जमशेदपुर के कार्यपालक पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग एवं सहायक श्री बिरेन तिउ एवं सहयोगी संस्था अददी कुंड़ुख़, रांची के संयोजक डॉ. नारायण उराँव द्वारा किया गया। इस अवसर पर टाटा स्टील फाउन्डेषन एवं सहयोगी संस्था अददी कुंड़ुख़ चाला एवं धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, रांची द्वारा प्रकाशित तोलोंग सिकि वर्णमाला चार्ट का वितरण किया गया।

दिनांक 29 अगस्त 2021 दिन रविवार को दिन में कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, मंगलो, सिसई में चल रहे कुँड़ुख़ भाशा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) पठन–पाठन केन्द्र का निरिक्षण, टाटा स्टील फाउन्डेषन, जमशेदपुर के कार्यपालक पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग एवं सहायक श्री बिरेन तिउ एवं अददी कुंड़ुख़ रांची के संयोजक डॉ. नारायण उराँव द्वारा किया गया। इस अवसर पर टाटा स्टील फाउन्डेषन एवं सहयोगी संस्था अददी कुंड़ुख़ चाला एवं धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, रांची द्वारा प्रकाषित तोलोंग सिकि वर्णमाला चार्ट का किया गया।

दिनांक 29 अगस्त 2021 दिन रविवार को कार्तिक उरांव आदिवासी कुंड़ुख़ विद्यालय, छारदा सिसई ग्राम सैन्दा, थाना : सिसई में चल रहे कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) पठन–पाठन केन्द्र का निरीक्षण, टाटा स्टील फाउन्डेषन, जमशेदपुर के कार्यपालक पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग द्वारा किया गया। इस अवसर पर फाउन्डेशन के सहयोग से अददी अखड़ा, संस्था द्वारा प्रकाशित तोलोंग सिकि वर्णमाला चार्ट का वितरण किया गया।

दिनांक 29 अगस्त 2021 दिन रविवार को वीर बुधू भगत कुँडुख़ विद्यालय, छोटका सैन्दा, सिसई में चल रहे कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) पठन–पाठन केन्द्र का निरीक्षण, टाटा स्टील फाउन्डेषन, जमशेदपुर के कार्यपालक पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग द्वारा किया गया। इस अवसर पर फाउन्डेशन के सहयोग से अददी अखड़ा, संस्था द्वारा प्रकाशित तोलोंग सिकि वर्णमाला चार्ट का वितरण किया गया।

दिनांक 29 अगस्त 2021 दिन रविवार को दिन में प्रस्तावित कुँडुख़ विद्यालय, शिवनाथपुर, सिसई प्रखंड में चल रहे कुँडुख़ भाशा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) पठन–पाठन केन्द्र का निरिक्षण, टाटा स्टील फाउन्डेशन, जमशेदपुर के कार्यपालक पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग एवं सहायक श्री बिरेन तिउ एवं सहयोगी संस्था अददी अखड़ा, रांची के संयोजक डॉ. नारायण उराँव द्वारा किया गया। इस अवसर पर टी.सी.एफ. एवं सहयोगी संस्था अददी कुंडुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, रांची द्वारा प्रकाशित तोलोंग सिकि वर्णमाला चार्ट का वितरण किया गया।

दिनांक 04 सितम्बर 2021 दिन शनिवार को आदिवासी उराँव समाज, बिरसा नगर, जॉन न0 6, जमशेदपुर में टाटा स्टील फाउन्डेशन, द्वारा संपोषित, कुँड़ुख़ भाषा शिक्षण केन्द्र का उद्‌घाटन हुआ। इस अवसर पर कार्यपालक अधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग, अद्‌दी अखड़ा के संयोजक डॉ० नारायण उराँव एवं डॉ. बिन्दु पहान एवं उराँव समाज समिति के पदधारी गण तथा शिक्षिकाएँ एवं बच्चे उपस्थित थे।

दिनांक 03 फरवरी 2022 दिन गुरूवार को दिन में टाटा स्टील फाउन्डेशन, जमशेदपुर द्वारा संचालित कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) पठन–पाठन केन्द्र, चक्रधरपुर, प0सिंहभूम का निरिक्षण किया गया। इस अवसर पर टाटा स्टील के कार्यपालक पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग एवं सहायक श्री बिरेन तिउ एवं सहयोगी संस्था अददी अखड़ा, राँची के संयोजक डॉ० नारायण उराँव एवं उराँव सरना समिति, चक्रधरपुर के अधिकारी गण उपस्थित थे।

70. कुँड़ुख़ भाषा सह तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण कार्यशाला की तैयारी बैठक मुड़मा में

दिनांक 12–15 मार्च 2022 को ऐतिहासिक पड़हा जतरा खुटा शक्तिस्थल, मुड़मा, राँची के सांस्कृतिक भवन में चार दिवसीय ''मातृभाषा शिक्षा सह कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया'' विषयक कार्यशाला सम्पन्न कराये जाने हेतु दिनांक 26.12.2021, दिन रविवार को शक्तिखुटा, मुड़मा में राःजी पड़हा सरना प्राथना सभा, मुड़मा, राँची के साथ तैयारी बैठक सम्पन्न हुई। उक्त कार्यशाला टाटा स्टील फाउण्डेशन, के तकनीकी सहयोग से अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा,राँची एवं राःजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, मुड़मा, राँची के संयुक्त तत्वाधान में सम्पन्न किये जाने की योजना बनी। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल को आमंत्रित करने की सहमति बनी। राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, मुड़मा, राँची द्वारा इस कार्यशाला को सफल बनाने हेतु एक विशिष्ट बैठक में अपने सहयोगियों से अपील किया गया।

71 टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर द्वारा कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण

(i) दिनांक 26 – 30 सितम्बर 2021 तक टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर द्वारा सहयोगी संस्था, उराँव सरना समिति, चक्रधरपुर (प०सिंहभूम) एवं अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची के सहयोग से कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण का 5 दिवसीय आवासीय कार्यशाला, टी०सी०एस०, सोनारी (जमशेदपुर) में सम्पन्न हुआ। इस आवासीय कार्यशाला में प० सिंहभूम से 18 सेन्टर के भाषा शिक्षक एवं संयोजक तथा रांची, गुमला, लोहरदगा जिला क्षेत्र से 05 सेन्टर के भाषा शिक्षक एवं संयोजक शामिल हुए।

(ii) दिनांक 13 मार्च 2022 को ऐतिहासिक पड़हा जतरा खुटा शक्तिस्थल, मुड़मा, राँची के सांस्कृतिक भवन में तीन दिवसीय मातृभाषा षिक्षा सह कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया विषयक कार्यशाला का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। यह कार्यषाला टाटा स्टील फाउण्डेषन, के तकनीकी सहयोग सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य अतिथि कार्मिक, प्रषासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल उपस्थित थीं।

(iii) दनांक 13 सितम्बर 2022 से 17 सितम्बर 2022 तक टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर द्वारा सहयोगी संस्था, उराँव सरना समिति, चक्रधरपुर (प०सिंहभूम) एवं अद्‌दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची के सहयोग से कुँड़ुख़ भाषा सह तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण का 5 दिवसीय आवासीय कार्यशाला, टी०सी०एस०, सोनारी (जमशेदपुर) में सम्पन्न हुआ। इस आवासीय कार्यशाला में प० सिंहभूम से 28 सेन्टर के भाषा शिक्षक एवं संयोजक तथा रांची, गुमला, लोहरदगा जिला क्षेत्र से 23 सेन्टर के भाषा शिक्षक एवं संयोजक शामिल हुए।

72. ऑल कुँडुख़ स्टूडेन्ट यूनियन, असम द्वारा आयोजित ''तोलोंग सिकि कार्यशाला'' में डॉ० नारायण उराँव

पारम्परिक सामाजिक शिक्षा एवं व्यक्तित्व सह कौशल विकास केन्द्र
''धुमकुड़िया सैन्दा'', ग्राम : सैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला

कार्यकारिणी सह संयोजन संगोठ –

पच्चो–पचगी कोटवार – श्री उमेश उराँव

धुमकुड़िया नैग कोटवार – श्री पाथो उराँव ''पहान''

धुमकुड़िया महतो़ कोटवार – श्री घखुल उराँव

धुमकुड़िया जोंख़ कोटवार – श्री जुगेश उराँव पहान

धुमकुड़िया पेल्लो कोटवार – श्रीमती झेबा उराँव

धुमकुड़िया भँड़ारी – श्री मंगरा उराँव

धुमकुड़िया संयोजक – श्री जुगेश्वर उराँव (मो०न० 8709410415)

संरक्षक एवं सलाहकार – डॉ० नारायण उराँव, डॉ० बुदू उराँव, श्री गजेन्द्र उराँव,
श्री मुंशी उराँव, श्री रोपना उराँव, श्री बंधना उराँव, श्री महली उराश्व
श्रीमती सदमा उराँव, श्रीमती बुधनी उराँव, श्रीमती कुँवरमुनी उराँव

सदस्य – सैन्दा गांव के सभी युवक–युवती, बड़े–बुजूर्ग महिला–पुरूष।

परिशिष्ट / ANNEXURE

तोलोङ सिकि (लिपि)
के संबंध
में
सहपाठियों एवं
सहयोगियों
के
यादगार पल!

तोलोङ सिकि के विकास के संघर्ष की यादें!

(A) फोटो में – दायें से डॉ0 हरिष्चन्द्र मुर्मू, डॉ0 असीम राज केरकेट्टा एवं डॉ0 नारायण उराँव, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में लिपि विकास की परिकल्पना की पारिस्थितिकि के आरंभिक दिनों के सहपाठी एवं सहयोगी।

दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) के सत्र 1981–82 के हम तीनों सहपाठी हैं। मेडिकल कॉलेज तथा मिथिला नगरी के माहौल में बहुत सी बातें हमें सीखने को मिलीं। हम तीनों आदिवासी परिवार से हैं। वहाँ के परिवेष में उँच–नीच, छोटा–बड़ा, दलित, कमजोर आदि तमाम बातें सुनने को मिलीं। साहित्यिक तौर पर सुर–असुर, आर्य–अनार्य आदि जानकारी मिली। डॉ. नारायण, पहले तो संकोची थे, पर मेडिकल कॉलेज के अंतिम वर्ष में समय एक घटना ने उनको जुझारू बना दिया। एक दिन अपने एक सहपाठी को डॉ0 नारायण ने जाने–अनजाने – ''ओ सरदार जी'' कहा, जिनके प्रत्युत्तर में वह साथी – ''क्या, जंगली जी!'' कहा। डॉ0 नारायण अपने लिए जंगली शब्द के उपहास से विचलित हो उठे और दोनों के बीच वाद–विवाद शुरू हो गया। कुछ देर बाद दोनों पूर्ववत हो गये, पर डॉ0 नारायण के स्वभाव में बदलाव आ गया। उनके दिनचर्या में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य की किताबें जूड़ गयीं और वे भाषा–साहित्य एवं लिपि की बात करने लगे। हमलोगों का सत्र, बाढ़, भूकंप और साईनडाई से दो साल पिछड़ गया था। कई उपापोह के बाद हमलोग वर्ष 1988 में एम.बी.बी.एस. परीक्षा पास कर इंटर्नषीप करने लगे। मैं असीम राज और डॉ0 मुर्मू, हम दोनों डॉ0 नारायण को खरी–खोटी सुनाते रहते, पर उन्होंने इंटर्नषीप के अंत तक वर्ष 1989 में एक पुस्तक छपवायी। उस पुस्तक का नाम है – सरना समाज और उसका अस्तित्व। डॉ0 नारायण का वह जुनून आज अपने रंग में है।

– Dr. Ashim Raj Kerketta & Dr. H. C. Murmu.

(B) फोटो में – दायें से डॉ0 (श्रीमती) करूणा तिर्की तथा डॉ0 सुचित तिग्गा (पति–पत्नी), दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में लिपि विकास के आरंभिक दिनों के साक्षी।

हम दोनों पति–पत्नी दरभंगा मेडिकल कॉलेज लहेरियासराय (बिहार) में 1982–83 से 1990 तक रहे। डॉ0 नारायण उराँव हम दोनों से सीनियर थे। एम.बी.बी.एस. की चुनौती पूर्ण पढ़ाई के बीच कॉलेज के दिनों नारायण सर के साथ हमलोग हमेषा ही आदिवासी समाज एवं संस्कृति के बारे में परिचर्चा करते थे जिसपर वे सिर हिलाकर या कम शब्दों में सटीक उत्तर देकर हमारी जिज्ञासा को विराम लगा दिया करते थे। परन्तु हमें उस समय जरा सा भी आभास नहीं हो पाया कि जिन बातों पर हम विचार–विमर्ष किया करते थे वे बातें आदिवासी समाज की लिपि की परिकल्पना का स्वरूप बुना जा रहा था। हम खुषकिस्मत हैं कि अपनी मातृभाषा की लिपि की परिकल्पना की पृष्टभूमि एवं स्थान का हम गवाह बन पाये। इधर, अपनी मातृभाषा की लिपि तोलोंग सिकि पर डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती है!'' देखकर हम अहलादित हैं। एक आदिवासी होने या कहलाने के लिए समाज, भाषा, संस्कृति आदि महत्वपूर्ण चीजें हैं। अपने पूर्वजों की धरोहरों को आने वाली पीढ़ी तक पहूँचाना हम सबों का परम कर्तब्य है।

हम दोनों की अपनी अवधारना है कि हम सभी अपने रोजगार में जहाँ–कहीं भी हों, वहाँ रहकर भी अपने पूर्वजों की इन धरोहरों को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने में भागीदार बनें, तभी हम सबों की आने वाली पीढ़ी का भविष्य गौरवमय होगा।

– Dr Karuna Tirkey & Dr. Suchit Tigga.

(C) फोटो में – दायें से बैठे हुए डॉ0 एल.एन.पी. बाड़ा तथा बायीं ओर डॉ0 नारायण उराँव तथा साथ खड़ी हैं श्रीमती असिमा तिरकी बाड़ा, जो लिपि विकास के आरंभिक दिनों की साक्षी हैं।

मेरे पति डॉ० ललित निरंजन प्रदीप बाड़ा, वर्ष 1990–91 में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़ (दुमका) में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी थे। इन्हीं दिनों 06 नवम्बर 1990 को डॉ0 नारायण उराँव, चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर योगदान किये। वे सीधा–सपाट, सादगी दिनचर्या किन्तु आदिवासी मामले में अभिरूची रखनेवाले थे। एक अस्पताल के सरकारी क्वाटर में रहते हुए हम पड़ोसियों के बीच अच्छी उठ–बैठ थी। मेरे पति के खानदान के लोग गुमला जिला के भरनो प्रखण्ड निवासी, 'बड़ा' गोत्रीय हैं, इसीलिए सामाजिक रिसते से 'बड़ा' गोत्रीय डॉ0 नारायण उराँव की मैं बड़ी भाभी बन गई। अगल–बगल क्वाटर में रहने के चलते वे डा0 नारायण अकसरहाँ हमारे क्वाटर में आकर Eletronic magazine ले जाया करते थे। मेरे पति प्रत्येक महीने Eletronic magazine मंगाया करते थे और मेरे पति को बताये बिना ही पढ़कर लौटाने के आश्वासन पर दे दिया करती थी। मुझे उस समय तक पता नहीं था कि डॉ. नारायण ने उस मैगजीन में क्या पाया, पर जब 2018 में कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि तोलोंग सिकि पर डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती है!'' बनी तब डॉ0 नारायण ने मुझे याद दिलाया कि वे उसी Eletronic magazine से Tribal Standared Code for Information Interchange (TSCII) का सिद्धांत विकसित किया, जिसके आधार पर कुँड़ुख़ (उराँव) समाज में तोलोंग सिकि (लिपि) को स्थापित करने में मदद मिली।

यह जानकर मुझे अत्यन्त खुशी हुई कि अपनी मातृभाषा कुँड़ुख़ (उराँव) की लिपि की विकास यात्रा का मैं भी साक्षी हूँ तथा इसमें मेरी भी सहभागिता है। मैं, डॉ0 नारायण उराँव एवं उनकी पूरी टीम को ढेरों बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

- Smt. Asima Bara w/o Dr. L. N. P. Bara.

(D) फोटो में – दायें से श्री अनिल कुमार झा, श्री रामप्रसाद पंडित, श्री रमेष कुमार साह एवं डॉ0 नारायण उराँव। आरंभिक कार्यों में 5 वर्षों तक लिपि विकास में सहयोगी रहे साथी।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़ (दुमका) में एक चिकित्सा पदाधिकारी नवम्बर 1990 में आये और 1996 मई में चले गये। पर इन 5 वर्षों में रामगढ़, दुमका का नाम आदिवासी साहित्य के इतिहास में दर्ज करा गये। तत्पष्चात लगभग 20 वर्षों के बाद अचानक डॉ0 नारायण उराँव जी का फोन आया कि वे रामगढ़ (दुमका) हम सबों से मिलने आने वाले हैं। यह समय हम सबों के लिए खुषी की बात थी और एक सीनियर चिकित्सक का अपने साहित्यिक शौक के चलते पूर्व पदस्थापना स्थान के साथियों से मिलने का समय। डॉक्टर साहब, रामगढ़ (दुमका) में रहकर आदिवासी भाषा की लिपि विषयक कार्य कर रहे थे। मैंने, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा से व्याकरण में प्रतिष्ठा किया है। अतएव अपने पाठ्य विषय से संबंधित प्रश्न डॉ0 नारायण से पूछा करता था। मेरा पहला प्रश्न होता था – महर्षि पाणिनी द्वारा संस्कृत के स्वरों को मुर्गे के बांग से तुलना किया गया है। क्या, आदिवासी भाषा में भी ऐसी कोई अवधारणा है? मेरा दूसरा प्रश्न होता था – ''वैदिक संस्कृत में अ, इ, उ (मूल तीन) को मूल स्वर माना गया है और यह 3 स्वर, त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) का प्रतीक माना गया हैं। कहा गया है – जिस तरह, त्रिदेव मिलकर सृष्टि का संचालन कर रहे हैं, उसी तरह तीन स्वर से समस्त भाषा संचालित हो रही है।'' उस समय यह प्रश्न सामयिक था तथा डाक्टर साहब के लिए एक चुनौती भी। साथ ही हमारे साथी श्री रामप्रसाद पंडित (विज्ञान विषय के शिक्षक) एवं श्री रमेश कुमार साह दोनों के उत्साह से Tribal Standared Code for Information Interchange (TSCII) जिसे 22 Segment Display System अथवा Tolong Siki Display System का कार्यरूप देने में सफलता मिली।

हमें यह जानकर खुशी हुई कि डॉक्टर साहब के शोध को झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल सरकार में मान्यता मिली है।

– श्री अनिल कुमार झा, रामगढ़ (दुमका)

(E) फोटो में दायें से – डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'' श्री रामकुमार बेक तथा श्रीमती सीतामनी बेक।

वर्ष 1993–94 में, मैं इलाहाबाद बैंक के दुमका शाखा में पदस्थापित था। डॉ0 नारायण उराँव, कॉलेज समय से मेरे साथी हैं। उस समय वे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका में चिकित्सा पदाधिकारी थे और मुख्यालय दुमका आने पर मुझसे भेंट–मुलाकात कर लिया करते थे। इसी बीच 22 फरवरी 1994 में शाम को मेरे डेरा पर आये और मेरी पत्नी से कहे – ''भाभी जी, आज कुछ स्पेशल बनाईये, आज हमलोग पार्टी करेंगे, क्योंकि आज मुझे कुछ विशेष चीज हासिल हुआ है। आज मुझे कुँडुख़ भाषा–लिपि के संबंध में एक नयी चीज का अनुभव हुआ है और मैंने जो 22 Segment Display System का ईजाद किया है, वह हमलोगों के डण्डा कट्टना पूजा अनुष्ठान चिन्ह से मिलता–जुलता है। नई लिपि के खोज पर कई लोगों ने सवाल खड़े किये हैं। अब मैं उन लोगों के सवाल का जबाब आसानी से दे पाउंगा।''

डॉक्टर साहब के उत्साह को देखकर मेरी पत्नी श्रीमती सीतामनी बेक, भी खुश हुई और शाम को हमलोग पार्टी मनाये। बातचीत के क्रम में डॉक्टर साहब बतलाये कि – मैंने कुँडुख़ भाषा की लिपि पर शोध कार्य किया है। कई पत्रकारों ने इस विषय पर अनेकानेक सवाल किये, जिसका उत्तर हमें खोजना था। अब मैं संतुष्ट हूँ, और उनलोगों के प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूँ। यह प्रसंग हम दोनों पति–पत्नी को हमेशा याद रहेगा।

– श्री रामकुमार बेक, बैंक अधिकारी।

(F) फोटो में – दायें से डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'' तथा सेवानिवृत ए.डी.एम. श्री मनोरंजन लकड़ा।

मुझे अपनी सरकारी सेवा के क्षेत्रीय प्रशिक्षण के समय तथा अपनी सेवा काल में कई बार विभिन्न पदों के पदभार में रहकर दुमका (संताल परगना) में अपनी सेवा दी। इसी क्रम में विभागीय परीक्षा में जनजातीय भाषा ''संताली'' की लिखित एवं मौखिक परीक्षा में उतीर्ण होना पड़ा। कुछ चुने हुए वाक्यों को संताली में बोलना सीख लिया। इस दौरान मैं जान पाया कि क्षेत्रीय कार्यकर्ता/पदाधिकारी को क्षेत्रिय भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। साथ ही अपनी मातृभाषा कुँडुख़ के विषय में भी बराबर सोचता रहा। इन्हीं दिनों इससे संबंधित एक महत्वपूर्ण घटना घटी। उन दिनों मैं डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर, दुमका के पद पर था और सरकारी पदाधिकारियों का हिन्दी बोलने की क्षमता का मौखिक परीक्षा का संचालन किया करता था। इस दौरान एक परीक्षार्थी के लिए प्रश्न था कि ''आप अपने कार्यस्थल के विषय में जो महत्वपूर्ण जानकारी है उसे हिन्दी में बोलें।'' परीक्षार्थी ने रामगढ़ प्रखण्ड मुख्यालय, जिला दुमका की भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि जानकारी देते हुए कहा कि वहाँ एक विद्वान चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव रहते हैं जिन्होंने ''तोलोंग सिकि'' लिपि का आविष्कार किया है। इसपर मैंने कहा – मैं डाक्टर साहब से मिलना चाहता हूँ। फिर मुलाकात हुई और होते गईं।

आज तोलोंग सिकि को समाज के हर स्तर पर सराहा जा रहा है। इसका कम्प्यूटरीकरण एक मील का पत्थर है। डा० नारायण का प्रयास सराहणीय है। उन्होंने ''कुडुख़ भाषायी विकारों'' का सफल सर्जरी कर इसे स्वस्थ्य और मजबूत आधार दिया है – ''तोलोंग सिकि के रूप में।''

– मनोरंजन लकड़ा, सेवानिवृत ए.डी.एम.।

(G) फोटो में दायें से – श्री अरूण मंडल, डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'', श्री राजेन्द्र भगत ''राजू'' एवं दायें से श्रीमती बासंती मंडल तथा श्रीमती बिजिया भगत।

मेरा पैतृक निवास प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द, रामगढ़ (दुमका) से 4 कि0मी0 की दूरी पर है। 20वीं सदी के अंतिम दशक में झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन के दौरान मैं प्रखण्ड एवं जिला स्तर पर आन्दोलनकारियों के साथ सक्रीय था। इसके चलते प्रखण्ड स्तर के पदाधिकारियों के साथ स्वास्थ्य एवं विकास संबधी कार्यो को लेकर भेंट–मुलाकात हो जाया करती थी। इन्हीं दिनों फरवरी 1991 से मई 1996 तक प्रा0 स्वा0 केन्द्र में चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में डॉ. नारायण उराँव पदस्थापित रहे। वे अपने चिकित्सीय कार्य के बाद साहित्यिक शोध एवं अध्ययन में लगे रहते थे। उनका जुनून के बारे में बाद में पता चला कि वे बहुत दिनों से आदिवासी भाषा की लिपि विकसित करने में लगे हुए हैं। वे वर्ष 1994 के हिजला मेला दुमका में अपने द्वारा विकसित तोलोंग सिकि (लिपि) के साथ मेला के प्रदर्शनी में शामिल हुए। उनके इस जुनून पर दुमका के एक व्यवसायी मित्र श्री राजेन्द्र भगत ''राजू'', जिनसे उनका पारिवारिक रिस्ता है, के साथ हमलोग उसहास किया करते थे और बोलते थे – डॉक्टर साहब को प्रैक्टिस करना चाहिए, पैसा कमाना चाहिए, ये कौन सा काम में उलझे हुए हैं ? इनकी लिपि को कौन समझेगा और कौन मानेगा ? आदि....आदि...। पर आज उनका जुनून सार्थक हुआ। आज कुँड़ुख़ समाज और झारखण्ड सरकार ने इस लिपि को मान्यता प्रदान किया है। इस लिपि में पढ़ाई–लिखाई हो रही है और वर्ष 2009 से मैट्रिक की परीक्षाएँ लिखी जा रही हैं। हम दोनों मित्र एवं हमारा परिवार उनके इस जुनून को सलाम करते हैं।

– श्री अरूण मंडल
झारखण्ड आंदोलनकारी सेनानी

(H) फोटो में बायें से – डॉ0 नारायण उराँव, श्री सुशील उराँव (उत्पाद अधीक्षक, दुमका), श्री देवेश भगत एवं श्री भगत के परिवारिक सदस्यगण।

वर्ष 1993–94 में, मैं संताल प्रमण्डल (बिहार) के के दुमका जिला में कार्यपालक अभियन्ता के पद परं पदस्थापित था। डॉ0 नारायण उराँव, उस समय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका (बिहार) में चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर थे और मुख्यालय दुमका आने पर मुझसे भेंट–मुलाकात कर लिया करते थे। मैं कुँड़ुख़ भाषी होने के चलते उनके साथ मेरी बातचीत अपनी मातृभाषा में ही होती थी। उन्हीं दिनों डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर, दुमका के पद पर श्री मनोरंजन लकड़ा पदस्थापित थे। जनवरी 1994 में एक दिन अचानक श्री लकड़ा जी मुझसे बोले कि रामगढ़ (दुमका) में पदस्थापित डॉ. नारायण उराँव को बुलवा दीजिए, मुझे उनसे बात करना हैं। मैंनं डॉ0 नारायण तक खबर भेजवा दिया। वे आये और श्री लकड़ा जी से मिले, पर उन दोनों के बीच क्या बातें हुईं यह उस समय पता नहीं चल पाया।

कुछ ही दिन बाद 22 फरवरी 1994 को आयोजित हिजला मेला, दुमका, जो जिला प्रशासन द्वारा प्रबंधित होता है, के एक स्टॉल में बैनर–पोस्टर लगाकर वे तैनात थे। पोस्टर में लिखा हुआ था – ''कुँड़ुख़ एवं सौंवरिया पहाड़िया भाषा की लिपि का आविष्कार।'' उन लिपि चिन्हों को वे स्वयं द्वारा विकसित 22 Segment Display System पर डिस्प्ले कर रहे थे। एक कुड़ुख़ भाषी होने के चलते मुझे वह दिन आज भी याद है और वर्तमान में वह कार्य झारखण्ड एवं प0 बंगाल राज्य में लागू हो चुका है।

– श्री देवेष भगत, भूतपूर्व मुख्य अभियन्ता,
पी.एच.ई.डी.विभाग (झारखण्ड)

(I) गया (बिहार) के साथियों द्वारा (दिनांक 29.05.1997 से 10.06.2010 तक) डॉ0 नारायण उराँव के प्रति उद्गार। फोटोग्राफ में दायें से – डॉ0 विनय कुमार मिश्र, श्री फणिभूषण प्रसाद सिंह एवं श्री कुमार षान्ति नन्दन षर्मा।

आज भी वो दिन मुझे स्पष्ट रूप से स्मरण है जब लगभग दो दषक पूर्व वर्ष 1997 के जून महीने में दवा व्यवसाय से जुड़े होने के फलस्वरूप मैं डा० नारायण उराँव के सम्पर्क में आया। उस समय डा० साहब, अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया (बिहार) के षिषु रोग विभाग में रेजिडेन्ट मेडिकल ऑफिसर के पद पर योगदान किये थे। एक दूसरे को जानने एवं समझने के पष्चात् हमारे बीच चिकित्सा और औषधि संबंधित बातें तो होती ही थीं, पर वे जब भी मिलते तो अपने उराँव समाज के लोगों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले कुडुख भाषा के लिये स्वतंत्र रूप से एक लिपि विकसित करने की अपनी अवधारणा एवं इसके लिये किये जा रहे अपने प्रयासों की जानकारी भी दिया करते थे। उस समय तोलोंग सिकि, विकास की प्रारंम्भिक अवस्था में थी परन्तु डा० साहब की लगनषीलता और उद्यम से स्पष्ट लग रहा था कि उनके प्रयास अवष्य एक दिन परिणाम में परिवर्तित होंगे। उनके सत्प्रयास तो मुझे काफी प्रभावित करते थे परन्तु मैं उनको इस क्षेत्र में कुछ अधिक सहयोग करने की स्थिति में स्वयं को नहीं पा रहा था। अतः मैंने अपने निकटतम मित्रों डा० विनय कुमार मिश्र जो एल.एस.महाविद्यालय, मसौढ़ी (बिहार) में प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के प्राध्यापक हैं तथा श्री फणिभूषण प्रसाद सिंह जो सरकारी कर्मचारी होते हुए इस प्रकार की गतिविधियों में काफी रूचि रखते है, को डा० साहब से मिलवाया जिन्होंने उनके कार्य को बेहतर समझा और फिर उनके बीच लिपि विकास के मूल उदेष्य पर चर्चाएँ होती रहीं तथा यह निर्णय लिया गया कि तकनीक का सहारा लिये बिना और कार्य को बिना तकनीक–अनुकुल बनाए वांछित सफलता प्राप्त नहीं होगी। हमलोगों ने डा. साहब को टेकनोफ्रेंडली होने के लिये प्रोत्साहित किया और वे इस दिषा में अग्रसर होते गए। एक चिकित्सक के रूप में उन्होंने अस्पताल तथा मरीजों के लिए भरपूर समय दिया तथा अपने स्वास्थ्य सेवा से समय निकालकर कम्प्युटर आधारित शोध कार्य करने में लगे रहे। गया में कार्यरत रहकर डॉक्टर साहब ने तोलोंग सिकि पर कई पुस्तक प्रकाषित कराया तथा ''22 सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम'' का परिमार्जित स्वरूप यहीं रहकर स्वयं विकसित किये। यहाँ रहते हुए वे कई राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सेमिनार में शामिल हुए और अपने षोध कार्य को आगे बढ़ाये। तोलोंग सिकि के विकास की कहानी का साक्षी हम सभी मित्र हमेषा याद करेंगे।

यह जानकर हमें काफी प्रसन्नता हो रही है कि झारखण्ड में कुँड़ुख़ भाषा विषय की मैट्रिक परीक्षा तोलोंग सिकि में भी लिखी जा रही है तथा पष्चिम बंगाल सरकार ने कुँड़ुख़ भाषा (तोलोंग सिकि लिपि के साथ) को राज्य की 8वीं सरकारी भाषा के तौर पर मान्यता प्रदान किया है। साथ ही दिनांक 17 मार्च 2018 को तोलोंग सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती हैं! का लोकार्पण हुआ है, जिसे देखकर हम सभी गौरवान्वित हुए हैं।

हमें विष्वास है कि डा० उरॉव का परिश्रम विभिन्न बाधाओं को पार करता हुआ सभी उदेष्यों की प्राप्ति करेगा। हम तीनों मित्र की ओर से डा० नारायण उराँव एवं उनके पूरे परिवार को हार्दिक बधाई एवं षुभकामनाएँ।

– कुमार षांति नन्दन षर्मा, गया (बिहार)

(J) फोटो मे दायें से – डॉ0 ए0 के0 झा (एसोसिएट प्रोफेसर) एवं डॉ0 एन0 के0 पासवान (ए0 प्रोफेसर)।

29 मई 1997 को डॉ0 नारायण उराँव, अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया के षिषु रोग विभाग में रेजिडेन्ट मेडिकल ऑफिसर के पद पर योगदान दिये। हम सभी रेजिडेन्ट चिकित्सकों में से डॉ0 नारायण सबसे कनीय थे, जिसके चलते हम सबों के बीच स्नेहपात्र थे। अस्पताल में मेडिसिन एवं सर्जरी विभाग का आकस्मिकी सेवा एक ही भवन में स्थापित था। पी.ओ.डी. एवं एस.ओ.डी. के लिए एक ही कमरे में बैठने की व्यवस्था थी। इसलिए इमरजेंसी ड्यूटी में अकसरहाँ हम सबों की मुलाकात हो जाया करती थी। फुर्सत के समय अन्य कार्यों के अलावा झारखण्ड बनने से पूर्व झारखण्ड आंदोलन का घटनाक्रम के बारे चर्चा भी हुआ करती थी।

इसी क्रम में दिनांक 20 फरवरी 1998 को कुछ कागजात लेकर डॉ0 नारायण द्वारा डॉ.ए.के.झा के पास गये और बोले – आप एक सर्जन के हिसाब से मेरे साहित्यिक कार्य के बारे में अपना मंतव्य दीजिए। मैं इसे अपनी पुस्तक में छपवाउंगा। उनके आग्रह पर डॉ. झा अपना मंतव्य लिखे, जो वर्ष 2003 में ''तोलोंग सिकि का उद्भव एवं विकास'' पुस्तक में छपा। वैसे, इस पुस्तक के संपादन में डॉ. झा की महती भूमिका रही। कई वर्षों तक एक कैम्पस में रहते हुए, बिहार राज्य पुनर्गठन–2000 के अन्तर्गत 06 जून 2010 को डॉ0 नारायण, गया (बिहार) से राँची (झारखण्ड) चले गये। इधर जानकारी मिली कि डॉ0 नारायण द्वारा विकसित लिपि को झारखण्ड एवं प0बंगाल सरकार में मान्यता है तथा इसके माध्यम से कुँड़ुख़ (उराँव) समाज में पठन–पाठन हो रहा है एवं मैट्रिक परीक्षा भी लिखी जा रही है। इस विलक्षण प्रतिभा को हम दोनों चिकित्सक की ओर से हार्दिक बधाई एवं ढेरों शुभकामनाएँ।

– डॉ.ए.के.झा एवं डॉ.एन.के.पासवान
ए.एन.एम.एम.सी.एच, गया (बिहार)

(K) फोटो में, दायें से – डॉ0 तारक बाखला, एसोसिएट प्रोफेसर, सर्जरी विभाग, डॉ0 नारायण उराँव, व्याख्याता (वरीय रेजिडेन्ट) षिषु रोग विभाग एवं डॉ0 ए0 एन0 वर्णवाल, प्रोफेसर, सर्जरी विभाग (सभी पी.एम.सी. धनबाद)।

मैं सरकारी सेवा के दौरान वर्ष 1997 में बिहार सरकार के ए.एन.एम.एम. कॉलेज, गया के सर्जरी विभाग में आर.एस.ओ के पद पर कार्यरत था। इन्हीं दिनों एक दिन रविवार को जिला कृषि पदाधिकारी, गया (बिहार) श्री अगस्तुस तिग्गा अपने साथ अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया के षिषु चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव के साथ मुझसे मिलने आये। बातें हुई और परिचय बढ़ा। इसी क्रम में डॉ0 नारायण ने आदिवासी भाषा के लिए विकसित तोलोंग सिकि लिपि के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा – हमलोग संगठित होकर समाज के लिए कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि में तैयार प्राथमिक पुस्तक को छपवाकर निःषुल्क वितरण करवाएँ। डॉ0 नारायण का यह प्रस्ताव मुझे अच्छा लगा और मैं भी आदिवासी समाज सेवियों के साथ कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि में तैयार पुस्तक कईलगा को छपवाकर बँटवाने में सहयोगी बना।

इस संबंध में डॉ0 ए0 एन0 वर्णवाल, सहायक प्रोफेसर, सर्जरी विभाग ए.एन.एम.एम. कालेज,गया के साथ संबंधित विषयों पर अकसरहाँ विचार–विमर्ष किया करते थे। बड़े भाई डॉ. वर्णवाल एवं मैं तारक बाखला, डॉ0 नारायण उराँव के साथ ऐतिहासिक एवं साहित्यिक विषयों में शोध पर डॉ0 नारायण का मनोबल बढ़ाया करते थे।

हमें यह जानकर खुषी हो रही है कि डॉ. नारायण उराँव द्वारा किया गया यह शोध कार्य एक लिपि के रूप में झारखण्ड एवं प0 बंगाल सरकार में राज्य भाषा बनने में सहायक हुआ है। इसके लिए डॉ0 नारायण को ढेरों बधाई।

–डॉ0तारक बाखला, एसो0 प्रोफेसर, पी.एम.सी.धनबाद।

(L) फोटो में दायें से – सेवानिवृत जिला कृषि पदाधिकारी श्री अगस्तुस तिग्गा, डॉ0 नारायण उराँव, श्रीमती प्रेमलता तिग्गा एवं श्री अनुप वेलेरियन मिंज।

मैं वर्ष 2003 में बिहार सरकार, कृषि विभाग में जिला कृषि पदाधिकारी के पद पर कार्यरत था। सरकारी सेवा में आने से पहले मैं बरवे–चैनपुर जैसे कुँड़ुख़ भाषी क्षेत्र में अपना बचपन बिताकर और खेती–बारी करते हुए जिला कृषि पदाधिकारी के पद तक पहुँचा। इसी वर्ष एक दिन अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया के षिषु चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव मुझसे मिलने मेरे कार्यालय पहुँचे। बातें हुई और परिचय बढ़ा। कुँड़ुख़ भाषी होने के चलते हमलोग ददा–भईया रिस्ता तक जल्द ही पहुँच गये। इसी क्रम में डॉ0 नारायण ने कुँड़ुख़ भाषा के लिए विकसित तोलोंग सिकि लिपि के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा – हमलोग गाँव–समाज के सहारे अपने पद तक पहुँच पाये हैं। अब हमलोगों की बारी है कि हम सभी संगठित होकर समाज के लिए कुछ करें।

इसके लिए एक सही अवसर हम सबों के पास है। हम सभी नौकरी पेसा वाले मिलकर कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि में तैयार प्राथमिक पुस्तक को छपवाकर निःषुल्क वितरण कराएँ। डॉ0 नारायण उराँव का यह प्रस्ताव मुझे अच्छा लगा। मैं अपने साथियों के साथ कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि में तैयार पुस्तक कईलगा का 5000 प्रति छपवाकर बँटवाने में सहयोगी बना। मुझे इस बात की खुषी है कि मैं भी अपनी मातृभाषा की विकास यात्रा का सहभागी हूँ।

– श्री अगस्तुस तिग्गा

पूर्व जिला कृषि पदाधिकारी, गया (बिहार)।

(M) फोटो में, दायें से – पूर्व केन्द्रीय कारा अधीक्षक, गया (बिहार) श्री अब्राहम मिंज एवं पूर्व डी.आई.जी गया (बिहार) श्री पियूष अमृत बेक।

मैं कुँड़ुख़ भाषी क्षेत्र महुवा टाँड़ क्षेत्र का रहनेवाला हूँ। मैं सरकारी सेवा के दौरान वर्ष 2003 में बिहार सरकार के केन्द्रीय कारा विभाग में केन्द्रीय कारा अधीक्षक, गया के पद पर कार्यरत था। इन्हीं दिनों एक दिन रविवार को जिला कृषि पदाधिकारी, गया (बिहार) श्री अगस्तुस तिग्गा अपने साथ अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया के षिषु चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव को मुझसे मिलाने लाये। बातें हुई और परिचय बढ़ा। इसी क्रम में डॉ0 नारायण ने आदिवासी भाषा के लिए विकसित तोलोंग सिकि लिपि के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा – हमलोग संगठित होकर समाज के लिए कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि में तैयार प्राथमिक पुस्तक को छपवाकर निःषुल्क वितरण करवाएँ। डॉ0 नारायण उराँव का यह प्रस्ताव मुझे अच्छा लगा। मैं भी गया जिला आदिवासी समाज सेवियों के साथ कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि में तैयार पुस्तक कईलगा को छपवाकर बँटवाने में सहयोगी बना।

इस संबंध में हमलोग डी.आई.जी. श्री पियूस अमृत बेक के साथ अकसरहाँ विचार–विमर्ष किया करते थे। बड़े भाई श्री बेक एवं मैं अब्राहम मिंज, डॉ0 नारायण उराँव से कहा करते थे – एवन्दा उल्ला नाम नन्नर गही गोहला–कुड्डी ती ख़ल्ल उयोत। खोंड़हन उरूब मना गे गा तंगआ गोहला–कुड़डी कमना मनो। एन्ने गेम एःम तंगआ अयंग कत्था ही लिपि तोलोंग सिकिन परदआ गे संग्गे मंज्जकम।

आइये हम सभी अपनी मातृभाषा के विकास यात्रा में सहभागी बने।

– श्री अब्राहम मिंज

सेवानिवृत, केन्द्रीय कारा अधीक्षक, झारखण्ड।

(N) फोटो में दायें से – डॉ0 नारायण उराँव''सैन्दा'' फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं श्री सिरिल हंस। वर्ष 2009 के राष्ट्रपति शासन में, किये गये कार्यों को याद करते हुए।

कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि की विकास यात्रा में, मैं 1998 से षामिल हूँ। आदिवासी भाषा विकास के कई कार्यषालाओं में भाग लेने के क्रम में मुझे डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' से मुलाकात हुई और उनके विचारों से अवगत हुआ। वे आदिवासी भाषा–संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन की बात किया करते थे। यह बात हमें भी अच्छी लगी और इस अभियान में जुड़ गया। डॉ0 नारायण एक षिषु चिकित्सक हैं अतएव अपनी व्यस्तता के चलते उनका कहीं जाना संभव नही हो पाता, तो मैं वैसे जगहों पर लिपि का प्रचार–प्रसार का कार्य करने लगा। इससे मुझे, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा का अध्यक्ष नामित किया गया। इस हैसियत से मेरी कई जिम्मेदारियाँ आ पड़ी। इनहीं दिनों ''कुँडुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा,'' भगीटोली, डुमरी, गुमला के छात्रों को मैट्रिक परीक्षा में कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि में लिखने से रोका गया। जैक के पदाधिकारियों का कहना था कि जबतक तोलोंग सिकि में सिलेबस का किताब नहीं दिखाएगा तबतक अनुमति मिलना संभव नहीं है।

इस विषय पर कई बैठक कर मैं स्वंय राँची से डॉ0 नारायण के यहाँ ए.एन.एम.मेडकल मेडिकल कॉलेज गया जाकर, उनकी मदद से तथा कैथलिक प्रेस राँची के कर्मियों की मदद से किताब की छपाई तोलोंग सिकि में हो पाया। उसके बाद श्री सिरिल हंस, डॉ. निर्माल मिंज एवं 2009 के राष्ट्रपति षासन में राज्यपाल के सलाहकार रहीं श्रीमती सुनिला बसंत के सहयोग से षिक्षा विभाग से तोलोंग सिकि में परीक्षा लिखने की अनुमति प्राप्त हुआ और बच्चे तोलोंग सिकि में परीक्षा लिख पाये। यह रोमांचकारी सामाजिक कार्य आज भी याद है।

– फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, राँची।

(O) फोटो मे दायें से – डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं फा0 जेफ्रेनियुस बखला उर्फ डा0 एतवा उराँव।

मैं डॉ0 जेफ्रेनियुस बखला वर्तमान में सिलोंग (मेघालय) में ईश–शास्त्र का प्रोफेसर हूँ। मेरा जन्म बरवे–चैनपुर गुमला (झारखण्ड) के एक कुँडुख़ भाषी उराँव इसाई परिवार में हुआ। बचपन के सामाजिक परिवेश में पल बढ़कर मुझे डानवॉस्को ग्रूप के अपस्तोलिक में दाखिला मिला। अपनी पढ़ाई में आगे बढ़ते हुए मैं धर्म समाज में ब्रदर बना और कुछ दिन बाद फादर। इसी बीच मुझे उच्च शिक्षा के लिए इजराईल जाना पड़ा। इजराईल में यहूदी समाज से बहुत कुछ सीखने को मिला। आज का यहूदी समाज भले ही संख्या में कम हो पर वे सामाजिक ढाँचागत जीवन में बहुत आगे हैं। आज यहुदी लोग विश्व के दूरदराज अनेकानेक उच्च संस्थानों में शीर्ष पदो में मिलेंगे, पर छुट्टी के दिनों में अपना देश इजराईल आकर अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा हिब्रू जरूर सिखलाते हैं तथा जो जन्म से इजराईल में रहें हों वे पहले हिब्रू सीखते हैं उसके बाद अन्य भाषा। वहाँ की संस्कृति ने ही मुझे मातृभाषा के लिए कुछ नया करने को उत्प्रेरित किया और मैं आप सबों तक पहूँचा।

डॉ. नारायण उराँव से मेरी मुलाकात पहले नहीं थी। वे हमारे स्कूल, अबतक तीन बार आये हैं। पहली बार 2005 में पहूँचे थे। वहाँ आकर वे मुझसे प्रश्न किये – दुनियाँ में इजराईल और जर्मनी, भाषा को आधार लेकर इतना आगे बढ़ा। आप कहाँ से प्रेरित हैं ? इस प्रश्न पर मैं हतप्रद हुआ, पर आशय समझा और बोला – मैं इजराईल गया था। उसके बाद हम दोनों में संवाद बढ़ता ही गया। वर्तमान में एक नई सोच के साथ गाँव स्तर पर कुँडुख़, अंगरेजी एवं हिन्दी यानि केन्द्र एवं राज्य सरकार के त्रिभाषा फार्मूला के जैसा के.के.के.लूरएड़पा, लूरडिप्पा, नामक इंगलिश मिडियम स्कूल डुमरी, गुमला (झारखण्ड) में चल रहा है। यहाँ मुझे लोग डॉ. एतवा उराँव के नाम से पुकारते हैं।

– डॉ.एतवा उराँव, संस्थापक, के.के.के. लूरएड़पा।

(P) फोटो में, दायें से – श्रीमती शान्ता फिलोमिना मिंज, श्रीमती वॉयलेट तिर्की, श्री पोलिकार्प तिर्की श्री अनुप वेलेरियन मिंज एवं डॉ0 नारायण उराँव।

(Q) फोटो में – दायें से श्री अनुप वेलेरियन मिंज, श्रीमती वेरोनिका टोप्पो मिंज, श्री यूजिन मिंज एवं डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा''।

वर्ष 2008–09 में मैं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची में सचिव के पद पर कार्यरत था। इसी दौरान एक आवेदन पर नजर पड़ी। आवेदन में कहा गया था कि हमारे स्कूल के छात्रों ने कुँड़ुख़ भाषा विषय की तैयारी कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोंग सिकि में ही की है, अतएव हमारे बच्चों को तोलोंग सिकि में परीक्षा लिखने की अनुमति दी जाए। पहले मुझे अटपटा सा लगा क्योंकि इसके बारे में पूर्व में जानकारी नहीं थी, पर समीक्षोपरांत तत्कालीन जैक अध्यक्ष स्व0 डॉ0 शालिग्राम यादव के साथ विमर्श किया। अध्यक्ष महोदय ने कहा – राज्य सरकार का वर्ष 2003 का निर्णय उल्लेखणीय है, परन्तु इस लिपि में पाठ्य पुस्तक देखे बिना अनुमति दिया जाना संभव नहीं है। इस आशय को आवेदकों को पहुँचा दिया गया।

आवेदकों ने मेहनत कर 3 महीने में पाठ्य पुस्तक का लिप्यन्तरण स्वरूप प्रस्तुत किया। एक आदिवासी होने के नाते मेरा इसपर ध्यान गया कि भाषा की पहचान लिपि से हैं और समाज ने इसे अंगिकार कर लिया है और राज्य सरकार का सरकारी निर्णय अधिसूचित हैं। यदि शिक्षा विभाग से मान्यता मिल जाए तो इसके विकास में तेजी आ जाएगी। इसी विचार धारा के साथ जैक अध्यक्ष से स्वीकृति लेकर, शिक्षा विभाग के सचिव से आदेष प्राप्त कर लिया गया। विभाग का कार्य 19.02.2009 को पूरा हुआ, जो विज्ञापन के माध्यम से 20.02.2009 को लोगों तक पहुँचा और स्कूल के बच्चे परीक्षा लिखे। इस बात से मुझे खुशी हुई है कि मैं भी अपनी मातृभाषा के विकास में सहयोगी बन पाया।

– श्री पोलिकार्प तिर्की

सेवानिवृत, क्षेत्रिय शिक्षा निदेशक, झारखण्ड।

मैं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची में उपसचिव के पद पर कार्यरत हूँ। अपने कार्यालय में दैनिक कार्यों का निष्पादन करने के क्रम में वर्ष 2012 में एक दिन एक फाईल पर नजर पड़ी। फाईल में कुँड़ुख़ समाज के कुछ लोगों ने एक स्वयं सेवी संस्था के माध्यम से मांग की कि अद्दी अखड़ा, संस्था की ओर से एक विद्यालय चलाया जा रहा है, जिसमें हिन्दी, अंगरेजी के साथ कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई तोलोंग सिकि लिपि में की जाती है। यहाँ के बच्चे मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तालोंग सिकि लिपि में लिखने की अनुमति चाहते हैं। अपने आवेदन में वे यह भी लिखते हैं कि पूर्व में एक विद्यालय के छात्रों को इस लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई है।

इस मांग पर जैक अध्यक्ष के साथ विचार–विमर्श हुआ, पर बात नहीं बनी। अध्यक्ष के सामने कार्यालय की ओर से तर्क आया कि जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के विभागाध्यक्ष ने लिखित सूचना दी है कि उनके यहाँ इस लिपि के जानकार नहीं हैं। फिर भी वैसा आवेदन वर्ष 2013, 2014 एवं 2015 में लगातार मांग किया जाता रहा। सरकारी विद्यालयों में तब तक कुँड़ुख़ भाषा विषय के कई शिक्षक नियुक्त हो चुके थे और अहर्तता पूरा कर रहे थे। आखिरकार, अनेक उतार–चढ़ाव के बाद 12 फरवरी 2016 को सार्वजनिक रूप से सभी विद्यालयों के लिए अनुमति मिल गई और बच्चे लगातार परीक्षा लिख रहे हैं। मुझे खुशी है कि मैं भी अपनी मातृभाषा के विकास में सहभागी बन पाया।

– श्री यूजिन मिंज

झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची।

(R) दिनांक 22.02.2016 को डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी राँची के सभागार में तोलोङ सिकि सम्मान सह कुँड़ुख़ भाषा जनजागृति समारोह सम्पन्न हुआ। यह समारोह, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा दिनांक 12.02.2016 को कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) में लिखे जाने की अनुमति प्रदान किये जाने के आशय पर समाज द्वारा, सरकार का आभार व्यक्त करने के उदेष्य से आयोजित किया गया था। मुख्य रूप से इसका आयोजन अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (रजि0) एवं अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, केन्द्रीय कार्यालय राँची तथा कुँड़ुख़ समाज के लोगों द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि झारखण्ड विधान सभा, अध्यक्ष, डॉ0 दिनेष उराँव, विषिष्ट अतिथि डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत, डॉ0 विषप निर्मल मिंज, विधायक श्री शिवशंकर उराँव, आदिवासी कल्याण आयुक्त श्री गौरीषंकर मिंज, वरीय पत्रकार श्री किसलय जी, श्री बंधन तिग्गा, श्री जिता उराँव, श्री सरन उराँव, डॉ. शान्ति खलखो आदि उपस्थित थे। सभी वक्ताओं ने तोलोंग सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखे जाने की अनुमति प्रदान किये जाने के लिए झारखण्ड सरकार एवं षिक्षा विभाग का आभार व्यक्त किया और इसे कुँड़ुख़ समाज के लिए एक उपलब्धि की बात कही।

इस अवसर पर षिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान डॉ0 निर्मल मिंज ने अपने संबोधन में कहा कि – (1) अक्कु गूटी कुँड़ुख़ कत्था ख़ेबदा नु मेन्दरआ लगिया एकला, मुन्दा अक्कु ईद ख़न्न गे एथेर'ओ। नेड़्डा 12.02.2016 गे झारखण्ड सरकार तरती झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची, मैट्रिक परीक्षा 2016 ती कुँड़ुख़ विषय ही परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) नु लिखआ गे अनुमति चिच्चा। अक्कु नाम उज्जना–ओक्कना नु कुँड़ुख़ कत्थन कछनखरआ अरा तंगआ चिनहाँ तुरू टूःड़ा ओङगोत। बरा नाम अक्कु कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ोत–बचओत दरा एःदना जोःगे कमओत। (2) एका बाःरी नमन देवनागरी लिपि ती तंगआ अयंग कत्थन टूड़ना मनो, असन नाम अदिन कुँड़ुख़ घोख बेसे टूःड़ोत, तबेम नमहँय उबार रअ़ई। (3) कुँड़ुख़ समाज के लिये तोलोङ सिकि की रचना करने वाले डॉ0 नारायण उराँव को राँची विष्वविद्यालय की ओर से डी0लिट0 की उपाधी प्रदान हो, इसके लिए सामाजिक सह प्रषासनिक प्रयास किया जाना चाहिए। प्रोफेसर डॉ0 करमा उराँव ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर संविधान की 8वीं अनुसूची में कुँड़ुख़ भाषा को शामिल करवाने हेतु कार्य करें। डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत ने कहा कि कुँड़ुख़ भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु कुँड़ुख़ भाषा सप्ताह मनाया जाय तथा जगह–जगह पर अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ। माननीय विधायक, गुमला श्री षिवषंकर उराँव ने कहा कि तोलोङ सिकि, एक सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली लिपि है, अतएव भाषा–संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्द्धन के लिए तोलोङ सिकि को अपनाना ही पड़ेगा। आदिवासी कल्याण आयुक्त श्री गौरी शंकर मिंज ने कहा कि कल्याण विभाग ही ओर से संचालित विद्यालयों में तोलोंग सिकि से पढ़ाई आरंभ करने की व्यवस्था आरंभ की जाएगी, इसके लिए 1ली से 3री कक्षा तक पुस्तक की छपाई की जाएगी। राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के धरम गुरू श्री बंधन तिग्गा ने कहा कि धुमकुड़िया के माध्यम से तोलोंग सिकि में पढ़ाई–लिखाई की जाएगी। मुख्य अतिथि डॉ0 दिनेष उराँव ने कहा – मुझे अत्यंत खुषी हो रही है कि यह महती कार्य का शुभारंभ, संयोग से मेरे विधान सभा क्षेत्र से हुआ है। अतएव इस कार्य में मैं भी आप सबों के साथ जुड़ा हुआ हूँ। इसके विकास में मेरी आवष्यकता जहाँ भी होगी वहाँ मैं समाज के साथ हूँ। समारोह में लिपि के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव ने कहा – ''मैंने अपना कार्य पूरा किया, अब बारी, समाज के लोगों की है। समाज के लोग मिलकर इसे आगे ले चलें।'' मंच का संचालन श्री राजेन्द्र भगत द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के केन्द्रीय अध्यक्ष, फादर अगुस्तिन केरकेट्टा ने किया।

भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह में बोले विधानसभा अध्यक्ष डॉ. दिनेश उरांव

तोलोंग सिकि को मान्यता मिलने से कुड़ख को मिला भाषा का दर्जा

तोलोंग सिकि सम्मान सह कुड़ुख भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह में स्पीकर ने कहा

अनमोल उपहार है तोलोंग सिकि लिपि

(S). साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान (कुँड़ुख़) से सम्मानित निर्मल मिंज का वक्तव्य

परम आदरणीय डॉ॰ विष्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी, डॉ॰ के॰ श्रीनिवास राव, सचिव, साहित्य अकादेमी।

मेरी मातृभाषा कुँड़ुख़ की छोटी सेवा के लिए इतना बड़ा भाषा सम्मान देकर, आपने मुझे और कुँड़ुख़ (उराँव) समाज को सम्मानित किया है, इसके लिए मैं आप लोंगों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा को 8वीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त नहीं होते हुए भी, आपने इस भाषा के सेवक को सम्मान दिया है, इसके लिए कुँड़ुख़ समाज साहित्य अकादमी के प्रति धन्यवाद अर्पित करता है।

आपको मालूम है कि कुँड़ुख़ भाषा, द्रविड़ भाषा परिवार की है, पर उत्तर भारत में इस भाषा की आबादी पायी जाती है। भारत में झारखण्ड, बिहार, असम, बंगाल, ओड़िसा, छत्तीसगढ़, अण्डामन द्वीप समूह और दिल्ली में यह समाज पाया जाता है। भारत में लगभग 40 लाख से अधिक कुँड़ुख़ समाज के लोग है और भारत से बाहर नेपाल के तराई क्षेत्र, बंगलादेष के पष्चिम दिनाजपुर जिले में कुँड़ुख़ भाषा बोली जाती है। इस भाषा का सीधा संबंध मालतो (राजमहल पहाड़ी) और किसान भाषा ओड़िसा से है। कुँड़ुख़ भाषा का संबंध बलूचिस्तान के ब्रहुई भाषा से है। कई कारणों से इस भाषा के व्यवहार और साहित्य निर्माण में कमी रही है। इससे संघर्ष करते हुए भाषा प्रेमियों ने इसे जीवित रखने और विकसित करने का प्रयास किया है। सबसे पहले विदेषी मिषनरियों ने कुँड़ुख़ भाषा को रोमन और देवनागरी लिपि में लिखित रूप दिया। इन लेखकों में मिषनरी फर्दिनेन्द हॉन का नाम लेना उचित है। उन्होंने अंग्रेजी में 'कुँड़ुख़ ग्रामर' पुस्तक लगभग सन् 1911 में प्रकाषित की, जिसका अनुवाद कुँड़ुख़ में हो चुका है। इसके बाद डॉ॰ षान्ति प्रकाष बखला, डॉ॰सी॰एम॰ तिग्गा, श्री अहलाद तिर्की ने कुँड़ुख़ में लिखा है। वर्तमान में इस भाषा को उजागर करने के लिए डॉ॰नारायण उराँव (मेडिकल डॉक्टर) ने तोलोंग सिकि (लिपि) का आविष्कार किया और वह व्यवहार में लाई जा रही है। परन्तु अधिक पुस्तकें देवनागरी लिपि में ही लिखी गई है। इस सेवा को आगे बढ़ाने में ''कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली'', 'एःन कुँड़ख़न' पत्रिका के सम्पादक फादर अगापित तिर्की, पत्थलगाँव, छत्तीसगढ़ से प्रकाषित कर रहे हैं, तथा राँची विष्वविद्यालय, आदिवासी और क्षेत्रीय भाषा विभाग तथा कॉजेजों में साहित्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, पर वह काफी नहीं है।

कुँड़ुख़ भाषा के पढ़े लिखे सदस्यों की जड़ कट गई है। जिस दिन वे स्कूल गए, उसी दिन उसकी मातृभाषा की जड़ कटनी आरंभ हुई। वे हिन्दी और इंगलिष भाषा के माध्यम से पढ़ना–लिखना शुरू करके उच्च षिक्षा भी पा रहे है।

अतः मेरी प्रार्थना है कि राज्यों के कुँड़ुख़ क्षेत्रों/ग्रामीण स्कूलों में प्राईमरी स्कूल (1 से 5) की पढ़ाई कुँड़ुख़ भाषा के माध्यम से की जाए, साथ–ही–साथ बच्चे हिन्दी और अंग्रेजी भी सीखते जाएंगे और उचित तरह से वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय भाषा में आगे पढ़ाई करेंगे। तब कुँड़ुख़ भाषा की जड़ पक्की होगी और भविष्य में इस भाषा का साहित्य भी उभरेगा।

मैंने कुँड़ुख़ भाषा को जिन्दा रखने का प्रयास 1943 ई॰ कक्षा 9 में रहते हुए आरंभ किया और अब भी करता जा रहा हूँ। राज्य का सहयोग, कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास के लिए आवष्ययक है, पर इसके लिए कुँड़ुख़ समाज की ही मुख्य रूप से जवाबदेही है।

मैं आषा करता हूँ कि भविष्य में इस भाषा का विकास अधिक तेजी से होगा और इस भाषा की जड़ मजबूत होती जाएगी।

निर्मल मिंज

दिनांक : 21 फरवरी 1917

(T) दिनांक 17.03.2018 दिन शनिवार को केन्द्रीय पुस्तकालय, राँची विष्वविद्यालय राँची के सभागार में कुँड़ुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती हैं!'' का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। यह समारोह मुख्य अतिथि माननीय विधान सभा अध्यक्ष डॉ. दिनेष उराँव के कर कमलों सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के साथ फिल्म सीडी का लोकार्पण करते हुए दायें से डॉ. हरि उराँव, डॉ. निर्मल मिंज, डॉ. करमा उराँव, डॉ. दिनेष उराँव, श्री विनोद कुमार भगत, श्री अषोक बाखला, श्रीमती रेवा किसलय, श्री किसलय, डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं डॉ. श्रीमती ज्योति टोप्पो उराँव मंच पर उपस्थित थे। इस डॉक्यूमेंटरी फिल्म के डायरेक्टर श्री किसलय जी है तथा परिकल्पना डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' का है। फिल्म निर्माण Fact Fold द्वारा किया गया है। समारोह का आयोजन कुँड़ुख़ भाषा विकास छात्र संघ, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा तथा अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा की ओर से श्री जिता उराँव एवं साथियों द्वारा हुआ। समारोह में अपना उद्‌गार व्यक्त करते हुए शिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान डॉ0 निर्मल मिंज ने कहा कि – (1) अब हमलोग अपनी भाषा को अपनी आंखों से देख सकते हैं। हमारी भाषा की अपनी लिपि तोलोंग सिकि है। झारखण्ड सरकार ने इस लिपि से परीक्षा लिखने की अनुमति दे दी है। (2) हमें जब देवनागरी लिपि से अपनी बातें लिखनी होगी उस समय कुँड़ुख़ विचारधारा से लिखेंगे। (3) अब, हम सभी मिलकर कुँड़ुख़ भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने हेतु मांग करें। इस शुभ अवसर पर डॉ. निर्मल मिंज ने कहा – आदिवासी भाषा एवं तोलोङ सिकि के विकास के लिए निरंतर प्रयास करने वाले डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' के लिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि उन्हें राँची विश्वविद्यालय, राँची की ओर से डी.लिट.की उपाधी मिले। समाज इसके लिए पहल करे। इसका समर्थन पूर्व बैंक अधिकारी श्री लवहरमन उराँव तथा सेवा निवृत पुलिस अधिकारी श्री जिता उराँव ने किया और उन्हें इस पहलु पर आगे की कार्य योजना हेतु अधिकृत किया गया। ।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'लकीरें बोलती हैं' का प्रदर्शन

(U) फोटो में दायें से – श्री मनिलाल केरकेट्टा, ओड़िसा एवं सेल के इंजिनियर श्री हेमू टोप्पो।

मैं मनीलाल केरकेट्टा वर्तमान में राउरकेला, ओड़िसा का वासी हूँ और राउरकेला इस्पात कारखाना में कार्यरत हूँ। अपने दैनिक जीवन में कारखाना से निकलने के बाद पारिवारिक कार्यों के अलावे, सामाजिक कार्यों के लिए समय निकाल लिया करता हूँ। विगत दो दषक से सामाजिक कार्यों में अभिरूची रखने के चलते अपनी मातृभाषा कुँड़ुख़ के विकास की अवधारणाएँ मेरे मन में कौंधती रहती थी। इसी क्रम में मुझे जानकारी मिली कि झारखण्ड में डॉ0 नारायण उराँव द्वारा कुँड़ुख़ भाषा की लिपि विकसित कर ली गई है और सरकार द्वारा इसे स्वीकृति मिल चुकी है तथा स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई आरंभ कर दी गई है।

सचमुच, परम्परागत कुँड़ुख़ समाज के सामने दो महत्वपूर्ण समस्या है। पहला – अपनी मातृभाषा के पहचान एवं बचाव की समस्या। दूसरा – परम्परागत धार्मिक आस्था–विश्वास के पहचान की समस्या। इन दोनों समस्याओं का निराकरण, केन्द्र सरकार के अधीन है। यदि केन्द्र सरकार चाहेगी तो कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि को 8वीं अनुसूची में शामिल कर भाषा की पहचान एवं बचाव में समाज का मददगाार सिद्ध होगी, साथ ही परम्परागत धार्मिक आस्था–विश्वास को एक नाम देकर समाज को बिखरने से बचाव करेगी। फोटो में मेरे साथ बैठे बड़े भाई, इंजिनियर हेमू टोप्पो जी द्वारा अपने गाँव में एक स्कूल का संचालन किया जाता हैं, जहाँ हिन्दी एवं अंगरेजी के साथ कुँड़ुख़ भाषा तथा तोलोंग सिकि लिपि की पढ़ाई होती है। मैं कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि के विकास हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।

– श्री मनीलाल केरकेट्टा, राउरकेला, ओड़िसा।

(V) फोटो मे दायें से – श्रीमती भगत एवं श्री मुरारी भगत।

मैं मुरारी भगत, पेषे से इंजिनियर हूँ। मेरा जन्म स्थान गुमला जिला, बरवे परगना है। प्राचीन बरवे परगना में मेरा बचपन बीता, इसलिए कुँड़ुख़ मेरा जीवन शैली है। स्कूल एवं कालेज के दिनों में अपने साथियों के साथ कुँड़ुख़ भाषा में ही बातचीत किया करता था। मुझे कभी भी ऐसा नही लगा कि एक आदिवासी भाषा की जानकारी रखने से अंगरेजी और विज्ञान विषयों में अभिरूची कम होगी, बल्कि अपनी मातृभाषा ने मेरी पहचान को और अधिक निखारा। सरकारी सेवा में विभिन्न जगहों पर उच्च तकनीकि पदों पर पदस्थापित होते हुए मातृभाषा का ज्ञान हमें गौरवान्वित ही किया है। कॉलेज के दिनों में मुझे अपनी मातृभाषा के विकास के प्रति अभिरूची थी, पर मैं अपना वौद्धिक सहयोग दे पाने में सहभागी नहीं बन पाया। डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' से मेरा परिचय कॉलेज के समय से ही है। उन्होंने अपना कैरियर चिकित्सा क्षेत्र में बनाया और मैं इंजिनियरिंग क्षेत्र में। डॉ० नारायण, पेषे से एक चिकित्सक होने के बाद भी अपनी मातृभाषा के विकास के लिए जो योगदान दिया है, वह समाज में हमेषा याद किया जाएगा। उनके द्वारा विकसित कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि), आज झारखण्ड सरकार में मान्यता प्राप्त है और इससे मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा विगत 10 वर्षों से लिखी जा रहीं है। साथ ही प0 बंगाल सरकार में भी मान्यता प्राप्त है। यह जानकर हमें प्रषन्नता हो रही है कि राँची, गुमला, लोहरदगा आदि क्षेत्रों में समाज के लोग भाषायी विद्यालय चला रहे हैं, जहाँ हिन्दी एवं अंगरेजी के साथ कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई–लिखाई पर प्रथमिकता दी जा रही है। डॉ० नारायण को बधाई।

– श्री मुरारी भगत, सिलम, गुमला, झारखण्ड।

(W) फोटो में दायें से – माननीय विधायक श्री शिवशंकर उराँव एव कार्यपालक अभियन्ता, श्री विनोद कच्छप।

मैं विनोद कच्छप, पेषे से इंजिनियर हूँ। मेरा जन्म स्थान राँची में खेलगाँव के बगल में गाड़ी सरनाटोली है। यह एक मुण्डारी भाषी गाँव है। जिसके चलते एक उराँव परिवार का सदस्य होते हुए भी मैं कुँड़ुख़ भाषा नहीं सीख पाया। चाहता तो मैं भी हूँ कि फटाफट कुँड़ुख़ भाषा में बात करूँ पर हो नहीं पाया। सरकारी सेवा में विभिन्न जगहों पर पदस्थापित होते हुए जब मैं गुमला पहुँचा तो मुझे कई जगहों पर भाषायी पीड़ा का अहसास हुआ। अपने कार्य के दौरान जब मैं गुमला विधायक श्री षिवषंकर उराँव के सामने होता हूँ तो वे इस बात पर जोर देते हैं कि आप बोलने का प्रयास कीजिएगा तो जल्द सीख जाइएगा। इस दिषा में मैं भी प्रयासरत हूँ। इसी दौरान एक दिन माननीय विधायक के आवास पर डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा' से मेरा परिचय हुआ। पेषे से चिकित्सक ने अपना बहुमूल्य समय देकर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि विकसित करने में अपना योगदान दे रखा है। लिपि का नाम तोलोंग सिकि है। इस लिपि को झारखण्ड सरकार में मान्यता प्राप्त है और इससे मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा लिखने की अनुमति प्राप्त है। यह जानकर मुझे खुषी हुई कि डॉ० उराँव के अथक प्रयास के बाद आदिवासियों की संस्कृति को कायम रखने हेतु इस लिपि का अन्वेषण हुआ है, जिसका आधार आदिवासियों का पहनावा, रीति–रिवाज, परम्परागत पुजा–पाठ तथा दैनिक कार्य कलाप है। हमें इन धरोहरों को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने की दिषा में सहभागी बनना चाहिए।

– श्री विनोद कच्छप, गाड़ी सरनाटोली, राँची।

(X) फोटो मे दायें से – श्री सत्यदेव मुण्डा एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'।

छोटानागपुर की धरती रत्नगर्भा तो है ही, यह धरती – पारम्परिक भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाज, संस्कार से भी अत्यन्त सम्पन्न है। मेरी नजर में यह धरती भाषा वैज्ञानिकों एवं लोक साहित्य के अध्यताओं के लिए भी एक अक्षय निधि मानी जा सकती है।

इन्हीं रत्नगर्भा धरती में मुण्डा, उराँव, खड़िया, हो, संताली आदि मुख्य जनजातियाँ रहती हैं, जिनकी अपनी अति प्राचीन समृद्ध भाषा शैली है।

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्कृति का श्रृंगार उसकी अपनी भाषा है तथा उस भाषा का श्रृंगार उस भाषा की अपनी लिपि है। इन समृद्ध भाषाओं की समृद्ध परम्पराओं में से कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की अपनी लिपि न होने के चलते यह अपने मूल अस्तित्व से कटते जा रही थी। ऐसे ही समय में डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' जी, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोङ सिकि तैयार कर कुँड़ुख़ भाषा में जान डाल दिये हैं। मेरा यह विष्वास है कि निकट भविष्य में तोलोङ सिकि से प्रेरणा ग्रहण कर छात्र एवं षोधार्थी ऐसे अनेक षोधग्रंथ लिख सकेंगे जो कुँड़ुख़ भाषा की समग्र सम्पदा को उजागर कर पाने में समर्थ सिद्ध होगा।

– सत्यदेव मुण्डा
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर
भारतवाणी परियोजना
रिसोर्स पर्सन
झारखण्ड एवं बिहार।

(Y) फोटो में, दायें से – डॉ0 देवषरण भगत एवं श्रीमती सुचित्रा भगत।

स्कूल के दिनों की चर्चा के दौरान डॉ0 देवषरण भगत बतलाते हैं कि वर्ष 1978 में वे संत तुलसी दास उच्च विद्यालय, सिसई (गुमला) से मैट्रिक के बाद राँची कॉलेज राँची में विज्ञान की पढ़ाई करने लगे। 1 वर्ष बाद वहीं से एक छात्र का राँची आना हुआ। वह बोला कि वह विज्ञान पढ़ना चाहता है। नामांकन हुआ और हमलोग दोनों आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची में रहने लगे। गाँव से बाहर आना तथा एक अच्छे कालेज में, हिन्दी माध्यम से अंगरेजी माध्यम में पारगमन करना एक चुनौती भरा कार्य होता है। 2 साल बाद देवषरण जी आगे की पढ़ाई के लिए बिरसा कृषि विष्वविद्यालय, राँची चले गये और वह छात्र, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) चला गया। आज वह छात्र कुँडुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि का जनक हैं। उनका नाम है डॉ0 नारायण उराँव।

मेरे पति बतलाते हैं कि वे और डॉ0 नारायण, स्व. लोहरा उराँव (मेरे ससुर जी) की बातें ध्यान से सुनते थे। मेरे ससुर जी हमेशा कहा करते थे कि अपनी भाषा कभी मत छोड़ना। भाषा छोड़ने पर तुम्हारी पहचान मिट जाएगी। उन्हीं के प्रेरणा से हमलोग भाषा बचाव की दिषा में कार्य करने लगे। बाद में डॉ0 भगत अपने साथियों के साथ झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन में सक्रीय हो गये जहाँ भाषा–संस्कृति बचाव की बात भी उठने लगी। छात्र आन्दोलन में जुड़े रहने के चलते डॉ0 नारायण ने भी प्रण लिया कि आदिवासी जन आन्दोलन की सेवा में नौकरी के साथ साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक योगदान देंगे और उन्होंने वैसा ही किया। मेडिकल की पढ़ाई एवं सेवा के साथ वे आदिवासी भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को स्थापित किया और छात्र आन्दोलन की अवधारणाओं को मूर्त रूप दिया, यह उनका अमूल्य योगदान है।

– श्रीमती सुचित्रा भगत
सिसई, गुमला, झारखण्ड।

(Z) फोटो में दायें से – श्री जयराम उराँव (झारखण्ड आंदोलनकारी सेनानी) एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'।

मैं 'झारखण्ड आन्दोलनकारी सेनानी' जयराम उराँव भरनो थाना गुमला जिला के अलगोड़ी गाँव का एक साधारण उराँव आदिवासी हूँ। छात्र जीवन में झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन में हमलोगों ने अपना सबकुछ दाँव पर लगा दिया। आनेवाले समय में हमलोगों का क्या होगा इसकी चिन्ता हमें नहीं थी। आज हम जहाँ जन्म लिये वहीं पर रोजी–रोटी तलाश रहे हैं। इस दौरान कई उतार–चढ़ाव हुए। वर्तमान में सरकार की ओर से 'झारखण्ड आन्दोलनकारी सेनानी' कहकर 3000 रू0 मासिक मानदेय दिया जा रहा है। पर क्या हम इस मानदेय के लिए सबकुछ दाँव पर लगाये थे या और कुछ हासिल करना था ? जिस सोच और जिज्ञासा के साथ हमलोग आन्दोलनरत रहे, वह झारखण्ड बनने के बाद धुमिल सा हो गया और हम ठगा हुआ महशूस करते हैं। इस उधेड़बुन में समय गुजरता गया। इस किंकर्तव्यविमुढ़ मानसिक दशा में एक दिन एक त्रैमासिक पत्रिका में एक लेख पढ़ा। लेख का आशय था – जिस समय हमारे पूर्वजों के पास स्कूल, कॉलेज, थाना, पुलिस, कोर्ट, कचहरी, मन्दिर, मस्जिद, गिरजा आदि कुछ भी नहीं पहुँचा था, उस समय किन शक्तियों के बल पर हमारे पूर्वजों ने हम सबों को बचाकर एकजूट रखा। यदि हम उस शक्तियों को पहचान लेंगे और उसे फिर से संगठित करेंगे तो हमारा गाँव–घर फिर से जाग उठेगा। तथ्य है कि हमारी पहचान हमारी भाषा–संस्कृति से है। संस्कृति को बचाने के लिए भाषा को बचाना होगा और भाषा को बचाने के लिए स्कूली शिक्षा में भाषा एवं लिपि (तोलोंग सिकि) को माध्यम बनाकर मातृभाषा के माध्यम से बच्चों की षिक्षा आरंभ करना ही होगा। इसी सोच के तहत हमलोगों ने ग्राम स्तर पर कार्य आरंभ कर दिया है। सरकार एवं संस्थाएँ इस जन–अभियान (हुही) में मददगार बने।

– श्री जयराम उराँव,
झारखंड आन्दोलनकारी सेनानी, अलगोड़ी, भरनो।

(ZA) फोटो में दायें से – श्री विनोद भगत 'हिरही' (आंदोलनकारी) एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'।

मैं 'झारखण्ड आन्दोलनकारी सेनानी' विनोद भगत लोहरदगा सदर थाना, लोहरदगा जिला के हिरही गाँव का मामूली सा उराँव आदिवासी हूँ। छात्र जीवन में झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन में हमलोगों ने अपना भविष्य दाँव पर लगाया। आनेवाले समय की चिन्ता नहीं थी हमें। आज हम अपने खेतों में ही अपना रोजगार कर रहे हैं। वैसे, सरकार की ओर से 'झारखण्ड आन्दोलनकारी सेनानी' कहकर 3000 रू0 मासिक सम्मान मानदेय दिया जा रहा है। जिस ओज और लगन के साथ हमलोग आन्दोलन में थे, वह झारखण्ड बनने के बाद धाराशायी हो गया और हम भी ठगा हुआ महशूस करते हैं। कहने को झारखण्ड प्रदेश एक सांस्कृतिक प्रदेश है, पर संस्कृति बचेगी कैसे ?

संस्कृति तभी बचेगी, जब उस समाज की भाषा बचेगी और भाषा तभी बचेगी, जब उस भाषा को शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाएगा तथा उस भाषा में रोजगार मिलेगा। झारखण्ड सरकार ने इस दिशा में कुछ कार्य भी किया है, पर सामाजिक रूझान में भी कमी है। क्या, समाज के लोगों को इसकी चिन्ता नहीं है? मैंने 2010 में एक कुँड़ुख़–अंगरेजी माध्यम स्कूल में एक निदेशक के रूप में कार्य किया है। अब मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि भाषा–संस्कृति को बचाने के लिए स्कूली शिक्षा में भाषा एवं लिपि (तोलोंग सिकि) को माध्यम बनाकर मातृभाषा के माध्यम से बच्चों की शिक्षा आरंभ करें। इस दिशा में सिसई–भरनो थाना क्षेत्र में हो रहे सामाजिक कार्यों की सराहना करता हूँ। सिसई–भरनो थाना क्षेत्र में ग्राम स्तर पर धुमकुड़िया को पुनर्जीवित किया जा रहा है तथा कई गाँव मिलकर स्कूल स्तर में नई एवं पुरानी पठन–पाठन व्यवस्था को कार्यरूप दिया जा रहा है। उम्मीद है, सरकार एवं सरकारी संस्थान इस अभियान में सहभागिता निभाएँगे।

– श्री विनोद भगत, झारखण्ड आन्दोलनकारी सेनानी।

(ZB) फोटो में दायें से – डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री मंगरा उराँव एवं श्री जिता उराँव।

मुझे अपनी सांस्कृतिक पहचान की घोर कमी का अनुभव सन् 1963 ई0 में हुआ, जब मैं एच0ई0सी0 रांची में सेवा योगदान दिया। एच0ई0सी0 का निर्माण कार्य चोकोस्लोवाकिया एवं रूस के सहयोग से आरंभ हुआ। चेकोस्लोवाकिया एवं रूस के जितने भी विशेषज्ञ आये उनके साथ एक महिला अनुवादक होती थी, जो भारतीय विशेषज्ञों के साथ दुभाषिया (interpreter) का कार्य करती थी। अर्थात रूस एवं चेकोस्लोवाकिया के विशेषज्ञ, अंग्रेजी नहीं बोलते थे। वे सिर्फ अपनी मातृभाषा में ही बात करते थे। इससे पता चलता है कि रूस की अपनी सांस्कृतिक पहचान कितनी सुदृढ़ है! अर्थात भाषा की गरिमा और पहचान, विज्ञान की उँचाई से भी उपर है।

इस परिपेक्ष्य में, मेरा परिचय डॉ. नारायण उराँव के साथ 1993–94 में हुआ। लिपि के संबंध में जानकारी हुई। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। माननीय डॉ. उराँव के अथक प्रयास से आदिवासी संस्कृति को संवर्द्धित करने निमित्त तोलोंग सिकि का आविष्कार कर समाज के लिए एक स्तंभ प्रतिपादित किया है। यह हम उराँव आदिवासियों के लिए गौरव की बात है, जिसका आधार आदिवासियों का पहरावा, रीतिरिवाज, परम्परागत पूजा–पाट एवं दैनिक क्रिया कलाप के चिन्ह है। जो हमें अपने पूर्वजों द्वारा एक धरोहर के रूप में प्राप्त हुआ है। आदिवासियों की संस्कृति, विशेषकर कुँड़ुख़ संस्कृति के रक्षार्थ इस पुनित कार्य के लिए डॉ. नारायण उराँव को कोटि–कोटि धन्यवाद एवं आदिवासी भाईयों से मेरी प्रार्थना है कि यह कार्य प्रशंसनीय ही नहीं, बल्कि अति आवश्यक रूप से स्वीकार्य हो।

आपके निष्ठापूर्ण प्रयास से आदिवासियों का प्रबुद्ध सम्पन्न और आदर्श समाज का निर्माण होगा, ऐसी मेरी शुभकामना है।

– श्री मंगरा उराँव, सेवा निवृत, कनीय अभियन्ता।

(ZC) फोटो मे दायें से – श्रीमती सरस्वती उराँव एवं श्री झुबा उराँव (सेवानिवृत पुलिस उपाधीक्षक)।

कुँड़ख़र गही अयंग कत्था, कुँडुख़ कत्था तली। ढेर उल्ला गूटी कुँडुख़ गही तंगआ लिपि मल रहचा। मुन्दा अक्कु कुँडुख़ गही तंगआ लिपि उरखा केरा। बअ़नर, कत्था गही दरजा ख़क्खा गे कछनखरना गने टूड़ना गही ढचर हूँ दरकार मनी। बेगर लिपि गही एकअम कत्था पोकता मल मनी। संग्गे–संग्गेम लिपि गने अदी गही कत्थअईन गही मनना हूँ दरकार मनी, तबेम अदी गही कत्थपण्डी परपन्द डहरे नु का:ला उंग्गी।

अक्कुन ता बेड़ा नु तंगआ अयंग कत्थन, ए:दआ अरा तेंग्गा गे टूड़ना–बचना जो:गे कमना मनो। इदी गे तंगआ अयंग कत्था गही लिपि ही दरकार मनो। तंगआ लिपि अयंग कत्थन दहदर ननो दरा अयंग कत्थन खोंड़हा मुन्दहारे उईय्यो। नाम खोंड़हा नु नमहँय ख़द्दर गे ए:रर की बुझुरना दरा सिखिरना जोगे ढचर चिआ पोलका रअ़दत। एंगहय अख़ाना नु अक्कुन गूटी कुँड़ख़ कत्था गही लिपि तोलोंग सिकि ती लिखाई–पढ़ाई यूनिवर्सिटी नु ओ:रे मल्ला मंज्जका। यूनिवर्सिटी नु पढ़ाई मल मनो होले ग्रेजुएट मनु जों:ख़र–पेल्लर एका बेसे सिखिरओर। आर मल सिखिरओर होले स्कूल ता ख़द्दारिन ने पढ़ाबओ ? तोलोंग सिकिन सिंगिरू'उ डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' सिन ए:न जोंख़ बेड़ा तिम अख़ादन। आस गही डाक्टरी पढ़ाई नना गे का:लो बा:री धिरजा चिअ़ना नु ए:न हुँ संग्गे मंज्जका रअ़दन। तोलोंग सिकिन झारखण्ड सरकार अरा प0बंगाल सरकार मान्यता चिच्चा, इबड़ा कत्थन अख़अर एंगहय जिया गे अकय द:व लग्गिया। खोंड़हा ता इबड़ा दव नलख गे ओरमारिन धईनमोंजरा।

– श्री झुबा उराँव

सेवा निवृत पुलिस उपाधीक्षक, झारखण्ड सरकार।

(ZD) फोटो मे दायें से – श्री धरमसाय उराँव (सेवानिवृत ए.डी.एम.) एवं श्री सरन उराँव (सेवानिवृत लेखा पदा0)।

दिनांक 17.03.2018 को सेंटरल लाईब्रेरी, राँची कॉलेज, राँची के सभागार में कुँडुख़ भाषा की लिपि तोलोंग सिकि पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म ''लकीरें बोलती हैं!''दिखलाया गया। इस अवसर पर कई बुद्धिजीवी एवं लिपि प्रेमी पधारे थे। मैं भी श्री सरन उराँव के साथ उपस्थित था। उपस्थित सभी लोगों ने तोलोंग सिकि के आविष्कारक डॉ. नारायण उराँव के कार्यों को सराहा और उन्हें बधाई दी। बिशप डॉ. निर्मल मिंज ने तो यहाँ तक कहा कि डॉ. नारायण उराँव को तोलोंग सिकि के आविष्कार के लिए ''डी.लिट्.'' की उपाधि मिलनी चाहिए और समाज के सभी लोग मिलकर कुँडुख़ भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किये जाने हेतु कार्य करना चाहिए।

वर्षों का मेहनत तथा सामाजिक सहयोग के फलस्वरूप आज यह लिपि झारखण्ड एवं प. बंगाल सरकार में मान्यता प्राप्त है और अब परीक्षाएँ लिखी जा रही है। डॉ. नारायण ने 1989 में इस लिपि पर शोध कार्य आरंभ किया और 10 वर्ष बाद समाज सेवियों एवं बुद्धिजीवियों के माध्यम से मई 1999 में सामाजिक व्यवहार के लिए लोकार्पित हुआ। इस लिपि से कुँडुख़ भाषा विषय की मैट्रिक परीक्षा लिख सकने की अनुमति मिलने में सामाजिक लोकार्पण के बाद 10 वर्ष का समय लगा और 2009 में एक स्कूल के लिए सफलता मिली और वर्ष 2016 से सभी स्कूल के लिए अनुमति मिल गया है।

डॉ० नारायण की सास श्रीमती सीता टोप्पो को मैं बड़ी दीदी मानता हूँ, जिनकी डाँट और उत्साहवर्द्धन से मैं अपने जीवन में इस उँचाई तक पहुँच पाया। साथ ही यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि लिपि निर्माण में श्रीमती सीता टोप्पो ने ही इसे सर्वप्रथम आगे आकर सर्पोट किया।

– श्री धरमसाय उराँव

सेवानिवृत ए.डी.एम. (झा0स0)

(ZE) फोटो मे दायें से – डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा', श्रीमती सतमी उराँव (भाभी जी) एवं श्री जे.बी. सी. डी. उराँव।

मैं जे.बी.सी.डी.उराँव, मेकन, राँची से सिनियर मैनेजर के पद से सेवानिवृत हूँ। मैंने, वर्ष 1972 में संत तुलसी दास उच्च विद्यालय, सिसई (गुमला) से मैट्रिक कर आई.एस.सी. के लिए सत्र 1972–74 में राँची कॉलेज, राँची में दाखिला लिया। तब जे0पी0आन्दोलन जोरों पर था, जिसके चलते मैं आई. एस.सी. की परीक्षा लिख नहीं पाया और राजकीय पॉलिटेकनिक, राँची में नामांकन लेकर अपनी यात्रा आरंभ किया। मेरे पिता स्व0 श्री मंगलाचरण उराँव एक प्राईमरी स्कूल के षिक्षक थे। परिवार में मुझसे छोटे एक भाई और एक बहन की पढ़ाई को देखते हुए मैं यूनिवर्सिटी की डिग्री छोड़कर तकनीकि षिक्षा से जुड गया।

सामाजिक रिष्ते में डॉ. नारायण उराँव मेरा छोटा भाई हैं। डॉ. नारायण भी संत तुलसी दास उच्च विद्यालय, सिसई (गुमला) से 1979 में मैट्रिक कर सत्र 1979–81 में राँची कॉलेज, राँची से आई.एस.सी. किया। एक गांव के छात्र के लिए, विज्ञान विषय, एडवांस मैथ के साथ ''आगे बढ़ना सचमुच, ''आगे नाथ न पीछे पगहा'' वाली कहावत जैसा है। एक बड़े भाई के नाते मुझसे जो बन पड़ा, मैंने अपना ज्ञान बाँटने की कोषिष की। अपनी पढ़ाई में आगे बढ़ते हुए वह 1982 में एम. बी.बी.एस. के लिए दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में दाखिला लिया और डिग्री लेकर वर्तमान में सरकारी सेवा में हैं।

इन्होंने आदिवासी समाज के लिए एक अनूठा कार्य किया है, जिसे कुँडुख़ भाषा की लिपि ''तोलोंग सिकि'' के रूप में झारखण्ड तथा प. बंगाल सरकार में मान्यता प्राप्त है। अब समाज के लोग आगे आयें और अंगरेजी–हिन्दी के साथ कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि में पढ़ाई करने–करवाने की दिषा में कार्य करें।

– जे.बी.सी.डी.उराँव, सिसई, गुमला

(ZF) फोटो मे दायें से – श्रीमती ज्ञानमणी किण्डो भगत एवं श्री राजेन्द्र भगत।

मैं राजेन्द्र भगत, पिता स्व0 बिरी भगत, ग्राम तिलसिरी अम्बा टोली, थाना घाघरा, जिला गुमला का निवासी हूँ। वर्ष 1985 में स्नातक करने के बाद मैं बैंक सेवा ग्रहण किया। बचपन से ही मेरी मातृभाषा कुँडूख़ रही, पर षिक्षा ग्रहण करने के दौरान मेरी अभिरूची अंगरेजी पर अधिक थी। बैंक सेवा के दौरान अधिकतर कार्य अंगरेजी में ही करना होता था, परन्तु बैंक सेवा में दौरान यदि कोई कुँडुख़ भाषी मिलता तो बेझिझक अपनी भाषा का प्रयोग करता था। ऐसा करने में मुझे खुषी होती थी। डॉ. नारायण उराँव से मेरा परिचय स्कूल के समय से ही है। वर्ष 1979 में मैटिक करने के बाद अलग–अलग विषयों में पढ़ाई हुई एवं रोजगार के हेतु विभिन्न जगहों में रहने के चलते आपस में भेंट मुलाकात कम हुई।

इसी बीच वर्ष 1996 में मुझे जानकारी मिली कि डॉ. नारायण ने अपनी चिकित्सीय सेवा के साथ कुँडुख़ भाषा की लिपि का विकास किया है। इस बात से मुझे बहुत खुषी हुई और मेरे मन में भी अपने समाज के बीच रोजगार उन्मुख षिक्षा विषय पर कार्य करने की इच्छा जगी। आज कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि को झारखण्ड तथा प. बंगाल सरकार से मान्यता प्राप्त है। अब समाज के लोग आगे आयें और भाषा–साहित्य के विकास में अपनी भूमिका निभाएँ। इसी सोच के साथ मैंने बैंक सेवा के स्केल 4 के पद से ऐच्छिक सेवानिवृति लेकर गाँव लौट आया। मेरी इच्छा हैं – गाँव में एक अच्छा सामाजिक स्कूल खुले जहाँ अंगरेजी–हिन्दी के साथ कुँड़ख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि में पढ़ाई हो और इस ओर कदम बढ़ चुका है ।

– राजेन्द्र भगत, सेवानिवृत बैंक अधिकारी। संस्थापक, लिटिबीर कुँडुख़ एकेडमी, घाघरा, गुमला।

(ZG) फोटो – श्री दषरथ भगत, श्री कैलाष उराँव, श्री गजेन्द्र उराँव, श्री राजेन्द्र भगत श्री अरविन्द उराँव एवं अन्य सिसई, गुमला क्षेत्र के बिसु सेन्दरा के अवसर पर।

मैं अरविन्द उराँव, आदिवासी समाज द्वारा संचालित गैर सरकारी ग्रामीण विद्यालय में एक षिक्षक हूँ। मैं 2004 में प्रोजेक्ट हाई स्कूल महादेव चैगरी, भरनो (गुमला) से मैट्रिक कर 2010 में बी.एन.जालान कॉलेज, सिसई से बी.ए. किया। झारखण्ड बनने के बाद अपने साथियों के साथ शहरों में रोजगार तलाषते रहे, पर रोजगार नहीं मिलने पर वापस गांव लौट गए। इसी में आभाष हुआ कि क्यों न हम मिलकर गांव में एक स्कूल चलाएँ, जिससे हमारी छोटी बहनों को पढ़ने के लिए गांव से दूर न जाना पड़े। फिर गांव वालों से बातचीत हुई, सभी तैयार हो गये और ग्रामीणों के सहयोग से वर्ष 2010 से स्कूल चलने लगा।

इसी बीच वर्ष 2011 में 9 पड़हा एवं 7 पड़हा अर्थात 9 +7 = 16 गांव द्वारा 16 पड़हा बिसु सेन्दरा महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस महासम्मेलन में षिषु चिकित्सक डॉ. नारायण उराँव भी पहूँचे थे। गांव स्तर पर स्वास्थ्य एवं षिक्षा विषय पर उनका विचार सुनने को मिला। उनका विचार हमें प्रभावित किया। मैं उनसे मिला और अपनी बातें रखी। गावों में बहुत सारी समस्याएँ हैं, पर संभावनाएँ भी हैं। उन्होंने कहा – एवन्दा उल्ला नाःम नन्नर गही गोहला–कुड़्डी तुरू ख़ल्ल उयोत, नमहँय गोहला–कुड़्डी एन्देर मंज्जा ? ऐसा कहकर उन्होंने मुझे एक पुस्तक दिया। उस पुस्तक का नाम है – कइलगा। उनकी बातों को समझने में मुझे घंटों लगे। कई लोगों से उनकी बातों का अर्थ पूछा। जब समझा तो उस पुस्तक को 3 घंटे में लिखना–पढ़ना शुरू कर दिया और एक नई सोच एवं दिषा के साथ हिन्दी, अंगरेजी और कुँड़ुख़ (त्रिभाषा फार्मूला) पर गांव में शान से स्कूल चल रहा है।

– श्री अरविन्द उराँव, संस्थापक प्रधानाचार्य
कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो।

(ZH) फोटो में सामने खड़े हुए दायें से – श्री मटकु उराँव, श्री कैलाष उरांव एवं दो महिलाएं। साथ में धुमकुड़िया सोहरई जतरा के अवसर पर पूजा का प्रसाद ग्रहण करते हुए बच्चे।

मैं कैलाष उराँव, आदिवासी उराँव समाज में परम्परागत पड़हा का 9 पड़हा करकरी–अताकोरा का पूर्व में कोटवार रह चुका हूँ। इन 9 गावों का पड़हा में करकरी गांव बेल अर्थात राजा गांव है। अताकोरा, देवान गांव अर्थात मंत्री गांव है। मैं सैन्दा गांव का रहने वाला हूँ तथा इस 9 पड़हा में सैन्दा गांव का पद कोटवार एवं सिपाही का है। इस 9 पड़हा के अन्य गांव में से बुड़का, मंगलो, लंगटा पबेया, बघनी, सियांग तथा पंडरानी है। वैसे जवानी में मैं पड़हा बैठकों में हमेषा ही तन, मन और धन से समाज सेवा में लगा रहता था, पर कमोवेष एक कमी खलती थी कि इतना करते हुए भी हमारी भाषा, संस्कृति दिनों–दिन छिन्न–भिन्न होते जा रही है। बाद में अपने ढलती उम्र के चलते पड़हा कोटवार का कार्य, अपने छोटे भाई श्री गजेन्दर उरांव को सौंपा।

इसी दौरान जनवरी 2013 में सैन्दा गांव के डॉ. नारायण उराँव अपने पैतृक निवास में धुमकुड़िया आरंभ कर चुके थे और 2014 में मेरे घर के बगल में समाज द्वारा संचालित एक कुडुख़ भाषा स्कूल खोलने का प्रस्ताव आया। यह सुनकर मुझे अच्छा लगा और मैं भी इस योजना का में षामिल हुआ। एक नई सोच एवं दिषा के साथ हिन्दी, अंगरेजी और कुँड़ुख़ (त्रिभाषा फार्मूला) भाषा पढ़ाई किया जाने वाला कई स्कूलों में से एक स्कूल मेरे घर के बगल में खड़ा होने लगा। मैं गांव के अन्य लोगों से भी कहूँगा कि अपने बच्चों को हिन्दी, अंगरेजी के साथ अपनी मातृभाषा का भी पढ़ाई कराएं। ऐसा करने से पढ़ाई के साथ बच्चे भाषा–संस्कृति भी सीखेंगे।

– श्री कैलाष उराँव, पूर्व कोटवार, 9 पड़हा, अताकोरा।

(ZI) फोटो मे दायें से – श्री गजेन्द्र उराँव, डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री दषरथ टाना भगत, श्री जयराम उराँव आदि।

मैं गजेन्द्र उराँव, पिता – स्व. डुका उराँव, ग्राम छोटका सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमला (झारखण्ड) का निवासी हूँ। मैं अपने माता–पिता के तीन पुत्रों में से सबसे छोटा हूँ। बचपन से मुझे पढ़ने–लिखने की इच्छा थी पर परिवार में मुझे चरवाही के कार्य में लगा दिया गया। बाद में मेरे जिद्द पर घर का काम करते हुए मुझे भी अपने जोड़ीदारों से काफी पीछे स्कूल जाने का मौका लगा। कई कारणों से मैं स्कूल में अच्छा नहीं कर पाया और 9वीं कक्षा तक ही पढ़ाई की। परिवार में पिताजी के अचानक गुजरने के बाद मुझे भी धनबाद–बोकारो आदि क्षेत्रों में कोयला ढोने के लिए जाना पड़ा। इस तरह अनेकानेक उतार चढ़ाव के बाद मैं फिर से अपने गाँव वापस आया और अपना जीवन तलाषने लगा। इस क्रम में निर्णय कि मैं जीवन भर शादी नहीं करूंगा और अपना जीवन समाजिक कार्यों में लगाउंगा।

इसी बीच वर्ष 2011 में 9 पड़हा एवं 7 पड़हा अर्थात 9 +7 = 16 गांव द्वारा 16 पड़हा बिसु सेन्दरा का आयोजन ग्राम षिवनाथपुर, सिसई, गुमला में हुआ था। इस बिसुसेन्दरा में षिषु चिकित्सक डॉ. नारायण उराँव भी पहूँचे थे। उन्होंने कहा – आदिवासी शिक्षित वर्ग, गाँव से षहर, षिक्षा एवं रोजगार के लिए गया और वहीं रह गया। आज, गांव के बच्चे को शहर के बच्चों के साथ बराबरी करना पड़ रहा है जहाँ वह कमजोर पड़ रहा है। इसलिए गाँव में षिक्षा को अपनी भाषा–संस्कृति से जोड़ने की जरूरत है। उनका विचार हमें अच्छा लगा और नई सोच एवं दिषा के साथ हिन्दी, अंगरेजी और कुँड़ुख़ भाषा यानि त्रिभाषा फार्मूला में स्कूल चला रहे हैं।

– श्री गजेन्द्र उराँव, पड़हा कोटवार, सैन्दा।

(ZJ) फोटो मे दायें से 8वें स्थान पर – श्रीमती सुमति कुमारी उराँव। साथ में विभिन्न कुँड़ुख़ भाषा विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं कुँड़ुख़ भाषा–तोलोंग सिकि के समर्थक।

मैं श्रीमती सुमति कुमारी उराँव, पति : श्री रामेष्वर उराँव, ग्राम सैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) की निवासी हूँ। मेरे पिता का नाम स्व0 अमर भगत ग्राम : लावागांई, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) है। मेरे पिता स्व0 कार्तिक उराँव के सहयोगी थे और स्व0 कार्तिक उराँव द्वारा स्थापित, अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद (विकास परिषद) के माध्यम से संचालित विद्यालय जो अब राजकीय उच्च विद्यालय फोरी, गुमला है के संस्थापक प्राधानाचार्य रहे। बचपन से पिताजी के क्रिया–कलाप को देखने से मेरे अन्दर भी सामाजिक कार्यों में अभिरूची जगी। वर्तमान में मैं एक षिक्षिका हूँ तथा एक कल्याण छात्रावास का अधीक्षक भी। मेरा ससुराल भी ऐसे परिवार में है, जहाँ के एक सदस्य ने देष की आजादी से पूर्व, सिसई थाना क्षेत्र में सर्वप्रथम स्कूली षिक्षा की नींव रखी। उनका नाम था मास्टर रामा उराँव 'महतो'। रिस्ते में वे मेरे परदादा ससुर थे। उसी परिवार के सदस्य, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि के जनक डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' हैं जो मेरे जेठ (भँयसुर) हैं।

इस पारिवारिक रिस्ते से अलग, समाज के लोगों ने मुझपर एक जिम्मेदारी सौंपी, वह जिम्मेदारी है – कुँड़ुख़ कत्थ तोलोंग सिकि सुसार सभा के अध्यक्ष पद का। एक महिला होकर भी मैंने इस पद के लिए नामित होने में हामी भर दी और विगत 3 वर्षों से निभा रही हूँ। इस सभा की जिम्मेदारी है कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि की षिक्षा में सामंजस्य स्थापित करना। इस सभा द्वारा प्रत्येक वर्ष 12 फरवरी को कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि भाषा दिवस मनाया जाता है। यह भाषा दिवस, बच्चे और अभिभावक साथ मिलकर आयोजन किया करते हैं।

– श्रीमती सुमति उराँव, अध्यक्ष,कुँ.भा.तो.सि.सु.सभा।

(ZK) फोटो मे दायें से – फा0 जेम्स टोप्पो, डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं फा0 एलेक्स तिर्की।

तोलोंग, आदिवासियों के बीच नर्तक पुरूष विषेषज्ञों की परंपरागत वेषभूषा थी। आज भी सामुहिक नृत्यों में यहाँ–वहाँ इसकी प्रदर्षनी हो जाया करती है। गायन और नृत्य, आदिवासियों के दुःखपूर्ण जीवन में भी आषा, अपनी मेहनत में संतुष्टि और कुछ भी हो, हम साथ रहकर खुष हैं अर्थात सामाजिकता में खुषहाली का सांकेतिक चिन्ह है। आदिवासी जीवन के इस अपरिहार्य आयाम में तोलोंग का महत्व अपने ही ढंग का अनूठा है। इसी तोलोंग को सजाने की प्रक्रिया में आदिवासी भाषाओं के लेखन के लिए लिपि या सांकेतिक चिन्ह को पहचानना तालाब की गहराई से कमल के फूल का खिलना है, भले ही तालाब की गहराई कीच भरी ही क्यों न हो। तोलोंग सिकि, आदिवासी संस्कृति के सरोवर से पैदा होकर निकलने वाले सौंदर्य–पुष्प में सुकोमलता का चटकना है। आदिवासी भाषाओं में कुडुख़, उत्तरी द्रविड़ परिवार की भाषा है, यह तो सभी जानते और मानते हैं। किन्तु द्रविड़ कहते की अनार्य संस्कृति का बोध होता है, इस दूरी तक लोग सोचना और समझना नहीं चाहते हैं। कैसी विडंबना है यह कि अनार्य या द्रविड़ भाषा के लेखन के लिए आर्य संस्कृति की लिपि देवनागरी को आँख मूँद कर स्वीकार करने का प्रयास रखा जाय। डॉ0 नारायण उराँव ने तोलोंग सिकि का आविष्कार कर तथा इस आविष्कार में वर्तमान वैज्ञानिकता की मोहर छाप डालकर इतिहास में एक नये युग का प्रादुर्भाव कराया है।

– फा0 जेम्स टोप्पो, एस0जे0

(साभार : तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास) पृष्ठ संख्या : III - IV

(ZL) फोटो मे दायें से – फा0 फिलमोन एक्का एवं फा0 रंजीत लकड़ा, एवं फा0 सुषील तिरकी।

तोलोंग सिकि, एक उतरी द्रविड़ भाषा, कुडुख़ की लिपि है। इसे कुडुख़ समाज के लोगों द्वारा ही विकसित किया गया है। वर्ष 2008–09 में मैं काथोलिक प्रेस, राँची का प्राषासनिक निदेषक था। इसी दौरान 2008 के अक्टुबर महीने में डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं फा. अगस्तिन केरकेट्टा मुझसे मिलने आये और एक प्रष्न किया। डॉ. नारायण ने कहा – कुडुख़ कत्थन नीनिम बछाबआ ओंग्गोय ! इदी गे नीन नलख नना चिआ। ऐसी बात सुनकर मुझे अटपटा लगा तथा मुझपर किया गया व्यंग जैसा लगा। फिर भी मैं पूछा – एंग्गन एन्देर ननना मनो? तब उन्होंने कहा – एक टाईपिस्ट दे दीजिए! इस पर मैंने कहा – एक टाईपिस्ट देने से यदि कुडुख़ भाषा का बचाव होता है तो ले लीजिए। इसपर दोनों बहुत खुष हुए और तब अपना प्रयोजन बतलाया। फिर लगभग 3 महीने तक लम्बे जद्दोजहद के बाद 10वीं कक्षा का पुस्तक, तोलोंग सिकि में लिप्यन्तरण किया हुआ पहला किताब 2009 के जनवरी महीने में छपा, जो झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची एवं मानव संसाधन विभाग के अधिकारियों के लिए तोलोंग सिकि लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति दिलाने में मददगार बना।

इस बात की चर्चा स्वयं डॉ. नारायण उराँव ने दिनांक 20 फरवरी 2021 को पतराटोली, लोहरदगा में अयोजित कुडुख़ भाषा दिवस, समारोह के अवसर पर कहा। आज तोलोंग सिकि, को झारखण्ड एवं पष्चिम बंगाल में मान्यता मिल चुका है। मुझे खुषी है कि इसके विकास में मैं भी सहभागी बन पाया।

– फा0 रंजीत लकड़ा, एस0जे0, लोहरदगा।

(ZM) फोटो मे दायें से – श्री षिवषंकर कांडेयोंग, कार्यपालक पदाधिकारी, सी.एस.आर., टाटा स्टील एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'।

मैं षिवषंकर कांडेयोंग, टाटा स्टील फाउन्डेषन के सी.एस.आर. विभाग में कार्यपालक पदाधिकारी हूँ। मेरा जन्म जमषेदपुर षहर के एक हो आदिवासी परिवार में हुआ। हो परिवार का सदस्य होने के चलते मैं अपने माता–पिता से हो भाषा सीखा तथा जमषेदपुर षहर में रहते हुए हिन्दी, अंगरेजी, बंगला, संताली, मुण्डारी, भूमिज आदि सीख लिया। स्कूली षिक्षा जमषेदपुर में पूरी की और उच्च षिक्षा हेतु जे.एन.यू, नई दिल्ली चला गया। टाउन प्लानिंग में ग्रेजुएषन करने के बाद मुझे टाटा स्टील फाउन्डेषन के सी.एस. आर. विभाग में कार्यपालक पदाधिकारी के पद पर कार्य करने का अवसर मिला।

मुझे अपने विभागीय कार्यों में आदिवासी मामले का कार्य देखना पड़ता है, जिसमें सी.एस.आर. की ओर से आदिवासी विकास कार्य हेतु झारखण्ड में कोलहान क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में आदिवासी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन पर कार्य किया जा रहा है। इस दिषा में संताली, हो, मुण्डारी, भूमिज, कुँड़ुख़ एवं बिरसाईत समाज के बीच भाषा एवं लिपि संरक्षण हेतु कई सेन्टर चलाये जा रहे हैं। इसी क्रम में दिनांक 29 जनवरी 2020 को विभागीय पदाधिकारियों तथा आदिवासी समाज के लोगों के बीच आपसी विमर्ष हेतु बैठक हुई जिसमें डॉ. नारायण उराँव भी षमिल हुए। बैठक में डॉ. नारायण ने मांग रखी कि टी.सी.सी का कार्य गुमला–लोहरदगा क्षेत्र में भी किया जाए, जिससे कुँड़ुख़ (उराँव) लोग भी लाभन्वित हो सकें। उनके सुझाव पर मैं कुँड़ुख़ भाषा दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम सिसई (गुमला) में 12 फरवरी 2021 को तथा पतराटोली (लोहरदगा) में 20 फरवरी 2021 को षामिल हुआ। इन क्षेत्रों में कुँड़ुख़ भाषा तथा तोलोंग सिकि (लिपि) के संवर्द्धन हेतु किया जा रहा कार्य प्रषंसणीय एवं उत्साह वर्द्धक है।

– षिवषंकर कांडेयोंग, जमषेदपुर।

(ZN) फोटो मे दायें से – फा. अगस्तिन केरकेट्टा, फा. रफाएल टोप्पो एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा',।

मैं रफाएल टोप्पो, गुमला जिला के छेछाड़ी क्षेत्र का रहने वाला हूँ। मेरा जन्म कुँड़ुख़ भाषी परिवार में हुआ। जिसके चलते बचपन से ही मातृभाषा कुँड़ुख़ सीखने का अवसर मिला। स्कूली षिक्षा के दौरान मुझे हिन्दी एवं अंगरेजी सीखना पड़ा और आगे बढ़ते हुए सेमिनरी का सदस्य बना तथा वर्तमान में एक पुरोहित हूँ। मुझे मानवषास्त्र में एम.ए. तथा पी.एच.डी. करने का अवसर मिला। अध्ययन तथा अध्यापन के दौरान अपनी मातृभाषा और संस्कृति के संरक्षण की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ।

वर्षों पहले पढ़ाई के दौरान ज्ञात हुआ कि कुडुख़ भाषा की लिपि विकसित हुई है तथा स्कूलों में पढ़ाई होती है। मैट्रिक में कुडुख़ विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि में लिखी जा रही है। इस लिपि की मान्यता झारखण्ड सरकार में है। ऐसी स्थिति में अपने अल्पसंख्यक स्कूलों के षिक्षकों एवं पुरोहितों के साथ विमर्ष किया। विमर्ष में दो तरह की बातें प्रकाष में आयी। कुछ लोग देवनागरी लिपि में ही पढ़ाई की बातें करते दिखे तथा धर्म समाज के कई लोगों में यह झिझक है कि यदि एक भाषा को प्रोत्साहन मिलने पर दूसरे भाषी नाराज होंगे। परन्तु वर्तमान परिवेष में नई षिक्षा नीति 2020 के आरंभ होने पर झारखण्ड में पांच आदिवासी भाषा को मातृभाषा के रूप में षिक्षण का अवसर मिलेगा। ऐसे में हिन्दी तथा अंगरेजी के साथ तीसरा भाषा विषय के रूप में मातृभाषा की पढ़ाई अपनी लिपि में होनें से आदिवासी भाषा और संस्कृति के बचाव का रास्ता सुगम होगा। इन बातों पर फा. अगस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ. नारायण उराँव के साथ अल्पसंख्यक स्कूलों में पढ़ाई हेतु आर्चविषप, राँची धर्मप्रांत के साथ विमर्ष हुआ। स्वामी जी ने कहा – नई षिक्षा नीति विषय में सामाजिक स्तर पर कार्य करें। मेरा आषीष आपलोंगों के साथ हैं।

दिनांक 15.03.2021 – फा. रफाएल टोप्पो, राँची।

(ZO) फोटो मे दायें से – श्री जिता उराँव एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'।

(ZP) फोटो मे दायें से – डॉ0 बिरसा उराँव एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'।

मैं जिता उराँव, झारखण्ड पुलिस सेवा से सेवानिवृत हूँ तथा वर्तमान में अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा का अध्यक्ष हूँ। सरकारी सेवा में रहते हुए कई सामाजिक कार्यों पर अभिरूची होते हुए भी कुछ नहीं कर पाया। सेवा निवृति के बाद आदिवासी भाषा–संस्कृति के बचाव की दिषा में कार्य किया जाना हमें उचित लगा और अपने साथियों के सहयोग से इस दिषा में कार्य करने लगा। इसी क्रम में अद्दी अखड़ा नामक एक संस्था बनी जिसमें मैं सचिव की जिम्मेदारी में हूँ। काम करते–करते आभास हुआ कि – संस्कृति को बचाना है तो भाषा को बचाना होगा और भाषा को बचाना है तो उस भाषा को वर्तमान षिक्षा व्यवस्था में षामिल करना होगा, तभी भाषा बचेगी। भाषा विकास के क्रम में डॉ0 नारायण उराँव, कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि के रूप में वर्ष 1993 में तोलोंग सिकि, नामक लिपि को समाज के सामने प्रदर्शित किये।

इसी दौरान झारखण्ड सरकार ने वर्ष 2003 में तोलोंग सिकि, लिपि को कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि की मान्यता दी। फिर वर्ष 2009 से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा इस लिपि में लिखे जाने की अनुमति एक विद्यालय को मिली। फिर 2014 में सिसई क्षेत्र के कुछ विद्यार्थी एवं अविभावक तोलोंग सिकि में मैट्रिक परीक्षा लिखने की अनुमति हेतु आवेदन किये। जिसे जैक ने यह कहते हुए इनकार किया कि उनके यहाँ इस लिपि के जानकार नहीं है। उस समय मैं अद्दी अखड़ा के सचिव की हैसियत से सिसई विधान सभा क्षेत्र के विधायक एवं झारखण्ड विधान सभा, राँची के माननीय अध्यक्ष, डॉ0 दिनेष उराँव से तथा जैक के अधिकारियों से कई बार मिला और सबके सहयोग से 12 फरवरी 2016 को तोलोंग सिकि से परीक्षा लिखने की सार्वजनिक घोषणा हो गई।

– श्री जिता उराँव,

दिनांक : 12 फरवरी 2016 सचिव, अद्दी अखड़ा, राँची।

मैं डॉ0 बिरसा उरांव, वेटनरी ग्रेजुएट हूँ। मेरा जन्म गरीब आदिवासी उराँव परिवार में ग्राम – होचाई , पोस्ट – पदमा, थाना – ओरमांझी , जिला – रांची में हुआ। चूँकि मेरा जन्म मुंडा राजा मदरा मुंडा के 22 पड़हा क्षेत्र पिठोरिया कांके सुतियाम्बे गढ़ (रांची) में हुआ, जिसके कारण मेरा मातृभाषा मुंडा से प्रभावित रहा। परन्तु आदिवासी धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ सीखने में बचपन से जुड़ा रहा। यही कारण है कि वर्ष 1993 में एक आम सभा में मुझे केंद्रीय सरना समिति रांची का सर्वसहमति से अध्यक्ष चुना गया। इस पद पर रहकर परम्पारिक आदिवासी सामाजिक एवं धार्मिक जमीन की रक्षा के कार्य करने का मौका मिला। इसी दौरान मुझे महसूस हुआ कि मेरा जन्म एक उरांव कुड़ुख़ परिवार में हुआ है। अतएव मुझमें कुड़ुख़ भाषा संस्कृति को जानने की अभिलाषा जगी। इसी दौरान उरांव भाषा के विद्वान एवं लिपि अविष्कारक डॉ नारायण उरांव से मुलाकात हुई उन्होंने मुझे एवं मेरे तमाम साथियों को तोलोंग सिकि का आविष्कार के संबंध में विस्तार पूर्वक तोलोंग सिकि को लिखकर पढ़ कर दिखाया एवं समझाया और कहा कि इसके प्रचार में मदद करें। उसके बाद मैं इसके प्रचार–प्रसार के लिए छपाई करवाने एक ब्लॉग बनवाया और वर्ष 1994–95 में लगभग 20 हजार तोलोंग सिकि पम्पलेट छपवाकर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम में वितरण किया।

इधर जानकारी मिली है कि इस लिपि को झारखण्ड एवं प0बंगाल में राजकीय भाषा का दर्जा मिल गया है। इस अथक परिश्रम के लिए इससे जुड़े बुद्धिजीवियों एवं समाज सेवियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

– डॉ बिरसा उराँव, पूर्व अध्यक्ष,
केंद्रीय सरना समिति, राँची (पूर्ववर्ती बिहार)

(ZQ) फोटो मे दायें से – श्री एल.एम. उराँव एवं डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा'।

कुँड़ुख़ भाषा, साहित्य एवं लिपि विकास के इतिहास में, मेरे लिए वर्ष 1994 का समय अत्यंत सुखद था, जब मैं TRACE बुलेटिन, प्रवेषांक 13.04. 1994 को सिरासिता प्रकाषन, करमटोली चौक, राँची–1 के बैनर से छपवा कर लोगों तक पहूँचाने में माध्यम बना। TRACE का अर्थ है Tribal Research Analysis Communication & Education. इस संस्था के पदाधिकारी निम्नवत मनोनित थे – डॉ0 नारायण उराँव : निदेषक, श्री ए.एम.खलखो : अध्यक्ष, श्री राजेष कुजूर : उपाध्यक्ष, श्री विवेकानन्द भगत : महासचिव, श्री एल. एम. उराँव : संयुक्त सचिव तथा श्री बहुरा उराँव : कोषाध्यक्ष। TRACE के माध्यम से स्व0 कार्तिक उराँव की जीवनी तथा कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि (आरंभिक वर्णमाला़) प्रकाषित की गई थी। वर्तमान में कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में झारखण्ड एवं प0 बंगाल राज्य में सरकारी स्तर पर स्थापित हो चुका है।

यह निर्विवाद है कि पेषे से चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव द्वारा प्रकाषन सामगी संकलित किया गया था, जिसे आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए माधुरी प्रिटिंग प्रेस, गोन्दा टाउन, कांके रोड राँची से मुद्रित एवं सिरासिता प्रकाषन से प्रकाषित करवाया गया था। इस साहित्य सेवा के लम्बे अंतराल में कई साथी जुड़े तथा कई बिछड़ गये। परन्तु उस समय में लगाया गया पौधा अब फल देने लगा है। वर्तमान में इस लिपि से मैट्रिक परीक्षा लिखी जा रही है। इस बात का हमें गर्व है। मैं कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि विकास में लगे सभी साथियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

– एल.एम.उराँव, पूर्व बैंक अधिकारी, एस.बी.आई।

(ZR) फोटो मे दायें से :– डॉ. नारायण उराँव ''सैन्दा'', एवं डॉ0 बिन्दु पहान।

मैं ए.बी.एम.कॉलेज, जमषेदपुर में अर्थषास्त्र विषय में वरीय व्याख्याता के पद पर कार्यरत हूँ। मेरी षिक्षा–दीक्षा राँची विष्वविद्यालय, राँची से हुई है। अपनी पढ़ाई के दौरान मैं गांव में जो चीजें देख पाया वह साहित्य में, कहीं नहीं मिला और इन दिनों जब मैं सूचना प्राद्यौगिकी के बीच गोते लगाता हूँ तो मेरा बचपन कहीं नहीं ठहरता है। अर्थात मैं जिन बातों पर बचपन में गौर किया करता था वे बातें टेलिविजन–इंटरनेट में नहीं मिलता है। इन बातों पर चर्चा–परिचर्चा करने से पता चलता है कि सूचना जगत की सारी चीजें बड़े समूह के बीच बंधी पड़ी है और बड़े समूह के लोग संचार साधन का दोहन कर रहे हैं तथा दुनियाँ की सच्चाई भी छुपा रहे हैं। अपने देष भारत में ही एक समूह सदियों से अपने सभी क्रिया–कलाप आधुनिक घड़ी की विपरित दिषा में सम्पन्न करते हैं। वहीं पर बहुसंख्यक समाज अपनी सभी क्रिया–कलाप आधुनिक घड़ी की दिषा में सम्पादित करते हैं। बहुसंख्यक समाज इस छोटे समूह को आदिवासी के नाम से जानता है। आदिवासी भी मानते है कि यह ज्ञान उनके पूर्वजों ने प्रकृति से सीखकर हमें सौंपा है। यदि यह ज्ञान षाष्वत है तो पूरी दुनियाँ को सीखना चाहिए ! पर मिडिया द्वारा इसे दिखलाने के बजाय छुपाया गया है।

इन्हीं तथ्यों के आधार पर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि स्थापित है और वर्तमान में झारखण्ड एवं प0 बंगाल राज्य में सरकारी स्तर पर स्थापित हो चुका है। इस लिपि से मैट्रिक परीक्षा लिखी जा रही है। इस बात का हमें गर्व है।मैं कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि विकास में लगे सभी साथियों को हार्दिक बधाई एवं षुभकामनाएँ देता हूँ।

– डॉ0 बिन्दु पहान, ए.बी.एम.कॉलेज, जमषेदपुर।

(ZS). तोलोङ सिकि लिपि का कम्प्यूटर वर्जन 'केलि तोलोङ फॉन्ट' का लोकार्पण :–

दिनांक 20 नवम्बर 2002 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन Kellytolong फॉन्ट के प्रथम संस्करण का लोकार्पण।

राजधानी

आदिवासी भाषाओं की लिपि के सॉफ्टवेयर की सीडी का लोकार्पण

(ZT). दिनांक 03 अप्रैल 2007 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन केलितोलोंग फॉन्ट के द्वितीय संस्करण का लोकार्पण।

जनजातीय भाषा एकेडमी का गठन इसी माह : बंधु

(ZU). 03 मार्च 2017, दिन षुक्रवार को कोलकाता से अंगरेजी दैनिक THE HINDU 'द हिन्दु' कुँड़ूख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि पर विस्तृत लेख छपा। षीर्षक था Revitalising a language.

THE HINDU
FRIDAY, MARCH 3, 2017

Revitalising a language

Kurukh is a tribal tongue that belongs to the Dravidian family

SHIV SAHAY SINGH
KOLKATA

Kurukh, an endangered tribal language of the Dravidian family, is set to get a new lease of life in West Bengal. It is spoken by the Oraon tribal community.

"We are taking steps for the recognition of the Kurukh language of the Oraon community who live in Dooars [in north Bengal]... We are proud of our languages. We love and respect all languages," West Bengal Chief Minister Mamata Banerjee said. The language was given official status in the State last month.

Experts say that while most of the tribal languages in the State have their origins in the Austro-Asiatic and Tibeto-Burman families, Kurukh is an exception.

"The only example of a tribal language having its origin from the Dravidian family is Malto, which is not spoken in West Bengal, but in the Rajmahal hills of Jharkhand," Shyam Sundar Bhattacharya, former head of the linguist division of the Office of Registrar General of India in Kolkata, told *The Hindu*. He said the Santhali, Munda and Hoe languages belong to the Austro-Asiatic family, while the languages spoken by the Lepcha, Tamang and Bhutia tribes of the Darjeeling hills were of the Tibeto-Burman group.

The cover of *Bokkhuhi*, a magazine printed in Kurukh.

Jharkhand has recognised Kurukh as a language, and students can write their school final examination in its script. "The decision to allow students to write their school final examination in Kurukh was taken by the Jharkhand government in February 2016. In 2003, the State officially recognised the language and its script," said Narayan Oraon, one of the leading exponents of the language.

Dr. Oraon, a paediatrician by training, said the Kurukh script reflected the socio-cultural aspects of the tribal community.

"The script is called Tolong Siki. It resembles that of any Dravidian language. We started working on it in 1989. By 1999, the script was ready. In at least two private schools of Jharkhand, students now write the examination in the Kurukh script," Dr. Oraon said.

According to the 2001 census report (the latest official data on language speakers), the language is spoken by about 17 lakh persons.

Mr. Bhattacharya said that since the Oraons were in different States, many members of the community picked up languages like Hindi and Bengali.

"To develop and popularise an endangered language like Kurukh, we need a standard script and grammar, a standard dictionary and textbooks," he said.

(ZV). कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि मोबाईल एप्प का लोकार्पन :–

दिनांक 28 दिसम्बर 2018 को आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची के पुस्तकालय भवन में कुँड़ुख़ एप्प (कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि मोबाईल एप्प) का लोकार्पन हुआ। यह, कुँड़ुख़ एप्प, कुँड़ुख़ समाज में अपने तरह का पहला है। फोटो में माईक्रोफॉन के साथ एप्प निर्माता सॉफ्टवेयर इंजिनियर श्री जॉन एस. टोप्पो। ऐसा एप्प 1. KuruxLearn, 2. KuruxPrimer, 3. KuruxGrammer के नाम से है जिसे अपने android mobile पर playstore से install कर सकते है।

(ZW). कुँड़ुख़ भाषा संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन :–

(i) प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ा सम्मेलन, राँची (झारखण्ड), भारत में दिनांक 15–16 दिसम्बर 2012 को सम्पन्न। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि झारखण्ड के महामहीम राज्यपाल डॉ0 सैयद अहमद थे।

1st International Conference 15th-16th December 2012, Ranchi, India

रांची विवि के आर्यभट्ट सभागार में प्रथम अंतरराष्ट्रीय कुड़ुख सम्मेलन शुरू, राज्यपाल ने कहा

नहीं बोलेंगे, तो लुप्त हो जायेंगी भाषाएं

(ii) द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ सम्मेलन, विराटनगर, नेपाल में दिनांक 16–17 मई 2015 को सम्पन्न। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि नेपाल के उप प्रधानमंत्री थे ।

2nd International Conference 16th-17th May 2015, Biratnagar, Nepal

(iii) तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ सम्मेलन, फुलसिलिंग (भूटान) में दिनांक 12 जनवरी 2019 को सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य अतिथि सांसद श्री दषरथ तिरकी।

(ZX). कुँड़ुख़ भाषा–तोलोंग सिकि विषयक सामाजिक एवं राजकीय सम्मान :–

राजधानी

हिन्दुस्तान

डॉ केसरी को भी मिला लाइफ टाइम अवार्ड

प्रभात खबर धनबाद अपडेट 1.10.2016

आज अंतराष्ट्रीय भाषा बन गयी है हिंदी : डीपी

धनबाद. हिंदी आज अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है. राजभाषा पखवाड़ा आयोजन का उद्देश्य है कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने का है, ताकि इसका प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक हो सके. उक्त बातें बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) विनय कुमार पैरा ने कही. वह शुक्रवार को कोयला नगर स्थित सामुदायिक केंद्र में आयोजित बीसीसीएल राजभाषा पखवारा समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे. मौके पर मुख्य अतिथि कथाकार नारायण सिंह, विशिष्ट अतिथि सह कुड़ुख भाषा विशेषज्ञ डॉ नारायण उरांव आदि थे. कंपनी की ओर से दोनों को कोयला भारती राजभाषा सम्मान दिया गया. पूरे पखवारा के विजयी प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया. मौके पर निदेशक (वित्त) केदार राजशेखर, मुख्य महाप्रबंधक (समन्वय) आरएन प्रसाद, महाप्रबंधक (कुसुंडा) देवेंद्र प्रसाद, महाप्रबंधक (लोदना) पी चंद्रा, महाप्रबंधक (बरताकोला) पीके दुबे, महाप्रबंधक (सिविल) आरएस प्रसाद, महाप्रबंधक (खनन) ज्योतिष चंद्र व एसके सिंह, बी सिंह, आरआर प्रसाद के अलावा बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे.

(ZY). दिनांक 18 दिसम्बर 2020 को कुँडुख़ भाषा की तोलोङ सिकि (लिपि) एवं देवनागरी लिपि में 2री से 5वीं कक्षा तक की पुस्तक का लोकार्पण डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची में सम्पन्न।

1 ली कक्षा

1 ली कक्षा

2 री कक्षा

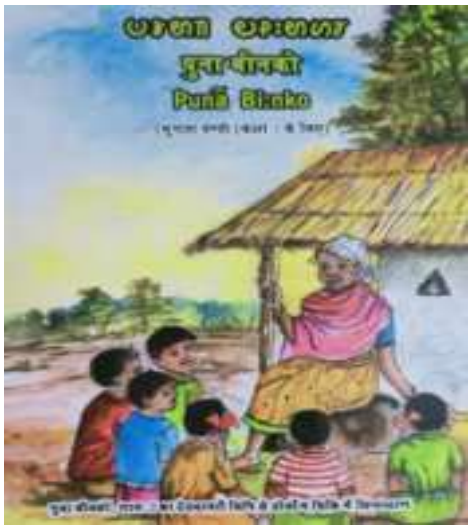

3 री कक्षा

4 थी कक्षा

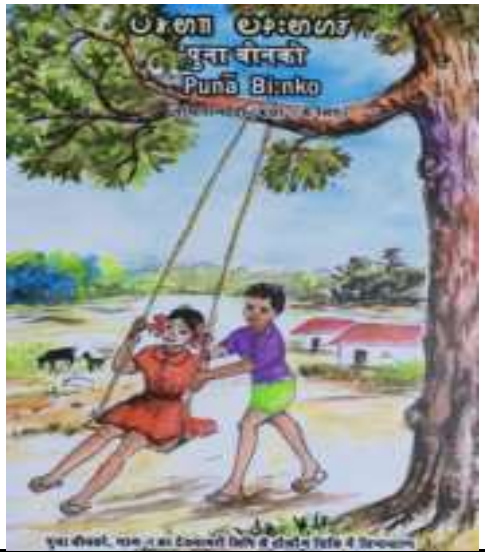

5 वीं कक्षा

(ZZ).

ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी, टाटा स्टील फाउंडेशन के अंतर्गत हाशिये पर आ चुके समुदायों विशेषतः अनुसूचित जनजाति के लिए ही कार्यरत इकाई है। यह एक अव्यवसायिक और स्वंयसेवी संगठन है। ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी की यात्रा 1974 में तब शुरू हुई जबकी इसके जनजातीय मामलों के लिए एक संयुक्त समिति के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 1983 में समिति पंजीयन अधिनियम के तहत इसका एक समिति के रूप में पंजीयन कराया गया । टाटा ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी का मुख्य उद्देश्य जनजाति अस्मिता और धरोहर को प्रोत्साहित करना है। यह जनजातीय जीवन, संस्कृति तथा अजीविका के विभिन्न पक्षो में आर्थिक पहल के जरिए जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन से सम्बद्ध गतिविधियों पर केन्द्रित है।

कार्य के प्रमुख क्षेत्र है :–

- जनजातीय समुदायों की देशज अस्मिता या मौलिक पहचान का संरक्षण और संवर्धन।
- सशक्त समाजो के निर्माण हेतु शिक्षा को विशेषतः युवाओं के मध्य प्रोत्साहित करना।
- कौशल विकास के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना।

Address :-

In association with

TRIBAL CULTURE SOCIETY, JAMSHEDPUR
(An Ethnicity wing of TATA STEEL FOUNDATION)

E.Road Northen Town Bistupur
Jamshedpur - 831001 (Jharkhand)
Contact No : +918579015646
jiren.topno@tatasteel.com
shiv.kandeyong@tatasteelfoundation.org